पुष्टिमार्ग के आराध्य

श्रीमहाप्रभुजी - श्रीनाथजी - श्रीयमुनाजी

॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

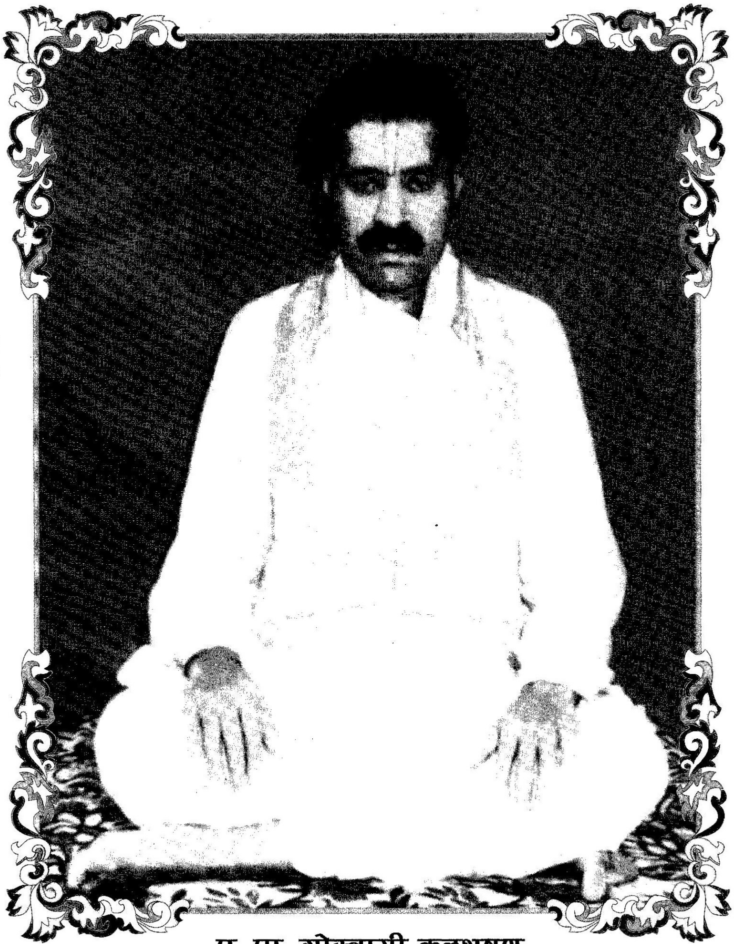

पू. पा. गोस्वामी कुलभूषण

श्री १०८ श्री विट्ठलेशरायजी महाराजश्री

प्राकट्य - श्रावण कृष्ण एकादशी वि. सं. २००५ ❋ नि.ली.गो.पू.पा. २०५९

॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

शुभाशीर्वाद

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता का पुनः प्रकाशन वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास द्वारा किया जा रहा है। पुष्टिमार्गीय जनों के लिये वार्ताजी का महत्व दैनिक सत्संग के रूप में सर्वोपरि रहा है। नित्य प्रति मन्दिर तथा घरों में शिक्षा पत्र, चौरासी एवं दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, षोडश ग्रंथ, मूल पुरुष वल्लभाख्यान इत्यादि का पठन पाठन होता आ रहा है।

पिछले चालीस वर्षों से दो सौ बावन वैष्णवन की तीन जन्म की भावना सहित वार्ता ग्रंथ की प्रतियाँ उपलब्ध होना अलभ्य हो गया था। अन्त में पू.पा. गोस्वामी नि.ली. श्री ब्रजभूषणलालजी महाराजश्री (कांकरोली) के सफल सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई। तत्पश्चात् कांकरोली वाले महाराजश्री से आज्ञा लेकर इसका प्रकाशन किया।

''प्रकट है मारग रीति दिखाई'' ऐसा गोस्वामी श्रीगुसांईजी के विषय में कहा जाता है। श्री ठाकुरजी के राग, भोग, श्रृंगार की रीति को श्री गुसांईजी ने बढ़ाया तथा उनके दो सौ बावन वैष्णवन ने आपके आशीर्वाद से उसे ग्रहण करके तदनुसार सेवा की और ठाकुरजी के स्वानुभव का भी लाभ उन्हें प्राप्त हुआ। यही सब उनके अनुभव इन वार्ताजी में कहे गए हैं अतः इन ग्रंथों का नित्य घरों में सत्संग होते रहने से पुष्टिमार्ग के सिद्धान्तों को वार्ताजी के माध्यम से ही वैष्णव ज्ञात कर लेते हैं, उन्हें संस्कृत के सैद्धान्तिक ग्रंथों को पढ़ने की तथा समझने की आवश्यकता नहीं होती है।

ऐसे अलभ्य ग्रंथ को वैष्णवों ने बहुत मानपूर्वक खरीदकर घरों में पधराया तथा उससे लाभान्वित हुए और ग्रंथ तो समाप्त होते रहे, परन्तु वैष्णवों के हृदय की लालसा समाप्त नहीं हुई, यह उन पर श्री ठाकुरजी की कृपा है तथा श्रीगुसांईजी के आशीर्वाद है। इसीलिये यह ग्रंथ पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। अतः वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास के सदस्यों को एवं इस कार्य में जुड़े हुए अन्य सभी कार्यकर्ताओं को हम हृदय से आशीर्वाद देते हैं।

ग्रंथ के संग्रहकर्ता एवं ग्रंथ के सत्संग करने वाले सभी वैष्णव वृन्द को भी हार्दिक शुभाशीर्वाद प्रदान करते हैं।

विजयदशमी वि.सं. २०६६ — गो. रुक्मणिबहुजी

॥ श्री हरिः ॥

नम्र निवेदन

पुष्टि प्रवर्तक जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी के परम पावन सिद्धांतों को अपने सदाचार से साकार रूप प्रदान करने वाले चौरासी कृपापात्र भगवदीय जनों की तथा पितृ प्रवर्तित पथ प्रचारक सुविचारक परम दयाल श्रीमद् प्रभुचरण श्रीगुसांईजी श्री विट्ठलनाथजी के परम कृपापात्र भगवदीय दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ताएँ पुष्टि-सृष्टि के लिए नित्य सत्संग मंडली हेतु परमोपयोगी सिद्ध हुई हैं। इन वार्ताओं के द्वारा पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणाली के साथ-साथ अत्यंत गूढ़ रहस्यों की, सिद्धान्त-भावनाओं का विशद विवेचन भी वैष्णव समाज को सहज रूप से प्राप्त होता है।

इधर पिछले लगभग ४० वर्षों से ब्रजभाषा और नागरीलिपि में दो सौ बावन वैष्णवों की तीन जन्म की भावना वाली वार्ता का मिलना सहज नहीं हो रहा था। अतः तृतीय पीठस्थ पू.पा.गो. श्री १०८ श्री ब्रजेशकुमारजी महाराजश्री बड़ौदा की आज्ञा प्राप्त कर, न्यास ने इसका प्रकाशन कार्य अपने हाथ में लिया है। इसको प्रकाशित कर न्यास हर्ष और संतोष का अनुभव कर रहा है।

वैष्णव समाज में पुष्टिमार्ग का प्रचार, सेवा का प्रचार तथा संगठन की भावना को दृढ़ करना न्यास का मूल उद्देश्य है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये हम सतत् प्रयत्नशील हैं।

वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजनिक न्यास ने एक अभिनव योजना प्रस्तुत की है जिसमें आजीवन सदस्य केवल रुपये १५०१/- जमा करके प्रति वर्ष भेंट स्वरूप एक विशिष्ट ग्रंथ प्राप्त कर सकते हैं।

पू.पा. द्वि.पीठाधीश श्री १०८ श्री कल्याणरायजी महाराजश्री की उपाध्यक्षता में न्यास को आपश्री के आशीर्वाद के साथ पूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। इसी प्रकार पू.पा.गो. १०८ श्री गोकुलोत्सवजी महाराजश्री एवं पू.पा.गो. १०८ श्री देवकीनंदनजी महाराजश्री के महदनुग्रह

के साथ-साथ ग्रंथ प्रकाशन पर आपश्री का समुचित मार्गदर्शन भी न्यास को सदैव प्राप्त होता रहता है।

इस वार्ता ग्रंथ को साकार रूप देकर सम्पादन करने के महत्त्वपूर्ण कार्य में श्री घनश्यामदासजी मुखिया का नाम विस्मरित नहीं कर पाता हूं जिन्होंने न्यास के अनेक ग्रंथों को सुव्यवस्थित संपादित करके उत्तरदायित्व का निर्वाह नाम सेवा रूप में किया है।

मुद्रण कार्य को कुशलतापूर्वक करने का श्रेय अप्सरा फाईन आर्ट प्रिंटर्स के प्रबंधक श्रीमान् मुरलीधर माहेश्वरी को है जिन्होंने शीघ्रता से वार्ता के तीनों खण्डों को मुद्रित करने में सहयोग किया है। मैं सभी न्यासियों एवं अन्य सहयोगियों का भी आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोग दिया है।

इन्दौर
विजया दशमी वि.सं. २०६६

श्री वल्लभ चरणानुरागी
दासानुदास
बालकिशन गब्बड़
का सादर जयश्रीकृष्ण
सचिव वै.मि.मंडल सा. न्यास

द्वि.पी.पू.पा. गोस्वामी श्री १०८ श्री कल्याणरायजी महाराजश्री के शुभाशीर्वाद

विजयते श्रीमद्विट्ठलेश प्रभु:

द्वितीय पीठाधीश्वर
गोस्वामी श्री कल्याणरायजी महाराजश्री
श्रीविट्ठलनाथजी मन्दिर
श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) पिन-३१३३०१

श्रीगिरिधर निकुंज
श्रीगोवर्धननाथजी मंदिर
१, साऊथ यशवंतगंज
इन्दौर (म.प्र.) पिन-४५२००२
दिनांक १७/२/१९९९

इन्दौर नगरी से वैष्णव वार्ताओं के पुनश्च नूतन मुद्रण के शुभारंभ को अवलोकन कर संतोष के साथ आनन्दानुभव कर रहा हूँ। वैष्णव मित्र मण्डल एवं अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् शाखा-इन्दौर के द्वारा सुनिश्चित हुआ कि अप्राप्य भावप्रकाश सहित २५२ वैष्णव वार्तायें प्रकाशित की जायें। अतएव शीघ्र ही प्रस्ताव पारित हुआ और अब संस्था, शाखा के सुप्रयास से वार्ताओं के तीन खण्डों में से द्वितीय खण्ड आप के हाथों में है।

अपने पुष्टि भक्ति मार्ग में नाम सेवा का विशेष महत्व होने के कारण "हमारी ब्रजवानी ही वेद" के अनुसार भी ब्रजभाषा को (पुरुषोत्तम भाषा) के रूप में मान्यता प्राप्त है ही। इसलिए भी श्री हरि, गुरु, वैष्णव परायणता युक्त अपने स्वधर्म-दर्शन-संस्कृति को हृदयंगम करने के लिये यह साहित्य पर्याप्त है। अतः नाम सेवा के साथ ही प्रस्तुत वार्ता ग्रंथ को संग्रहित कर अलभ्य लाभ लेते हुये समय का सदुपयोग वल्लभीय वैष्णव करेंगे।

इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ

(हस्ताक्षर)
गोस्वामी कल्याणराय
द्वितीय गृहपीठ
नाथद्वारा-इन्दौर

॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

नि.ली.द्वि.पी.पू.पा. गोस्वामी श्री १०८ श्री गिरधरलालजी महाराजश्री

जन्म मार्गशीर्ष शुक्ल १३ ✷ वि.सं. १९८१ नि.ली.प्र. ✷ कार्तिक कृष्ण ३ ✷ वि.सं. २०२

|| श्री कृष्णाय नमः ||

|| श्री गोवर्धननाथो विजयते ||

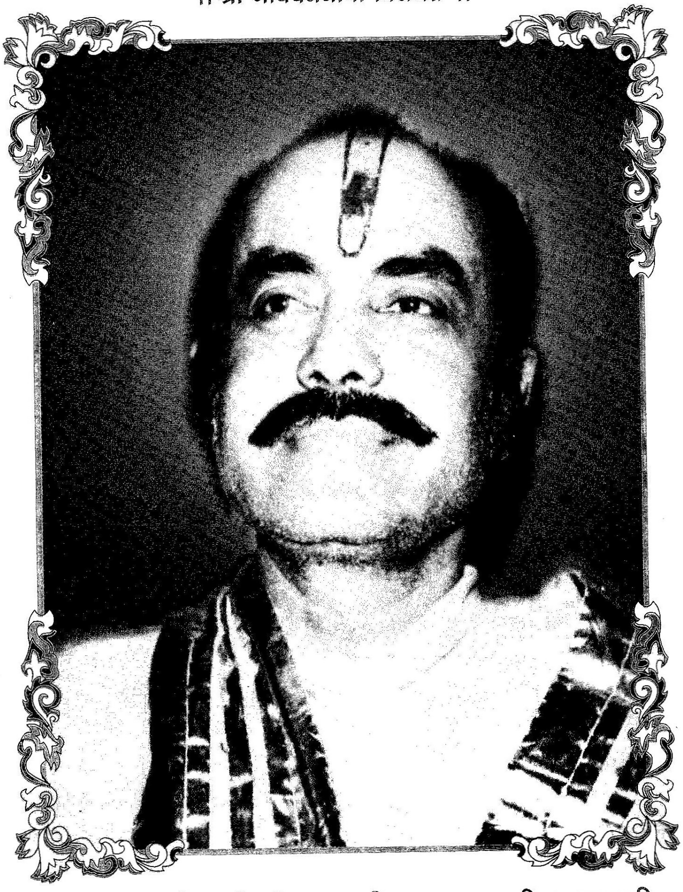

पू.पा.द्वि.पी. गोस्वामी श्री १०८ श्री कल्याणरायजी महाराजश्री

जन्म दिन : वि.सं. २०११ श्रावण कृष्ण त्रयोदशी

॥ श्री हरिः ॥

आमुख

वाजपेययाजी अग्निचित् सोमयाजी दीक्षित ज.पी.

पू. पा. गोस्वामी श्री १०८ श्रीगोकुलोत्सवजी महाराजश्री के आशीर्वचन

वस्तुतः विस्तृत विषय को अधिगत करने हेतु आमुख प्रमुख होता है। तद्नुसार वार्ता साहित्य के आमूलचूल अवलोकन करने पर हरि गुरु (आचार्य) एवं वैष्णव का अलौकिक स्वरूप पुष्टिभक्तिमार्ग में कितना महत्वपूर्ण व्याहति, बिंदु में सिंधु समाने समान है, यही प्रतिपाद्य विषय है। प्रभुकृपा एवं शास्त्र कृपा का समावेश गुरु कृपा एवं भगवदीय वैष्णवों के सत्संग से सहज प्राप्त हो जाता है। जिस प्रकार गिरि कंदरा निकुंज का द्वार है उसी प्रकार "उक्षिप्त हस्तः पुरुषो भक्तानाकारयत्युत" इस न्याय से श्रीगोवर्द्धननाथजीः श्रीनाथजीः निकुंज की नित्य लीला संपादनहेतु "द्वारभूत" हो, गिरिकंदरा के द्वार पर ठाड़े होकर भक्तों को ऊंचा श्री हस्त करके बुला रहे हैं। श्री गिरिराजजी की कंदरा, निकुंज का द्वार है वहां द्वारभूत श्रीनाथजी है। यहां द्वार शब्द का अर्थ समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है। जैसे मुख द्वार शरीर में मुख ही प्रमुख होता है। मुख ही मुख्य होता है। घर का द्वार अर्थात् मुख ही मुख्य होता है। इसीलिए मांगलिक प्रसंगों पर प्रमुख मुख्य द्वार पर बंदनवार बांधी जाती है, देहरी पूजन एवं देहरी मांडी जाती है। रांगोली बनाई जाती है। यह सर्वविदित है। उसी प्रकार निकुंज द्वार लीला (क्रीडा) में अधरसुधारस दान में मुखद्वार, "कृष्णाधरामृतास्वादसिद्धिरत्र न संशयः।" के न्याय से अधरामृतपान कराने में मुख ही प्रमुख मुख्यद्वारभूत है तथा श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुधर्मी स्वरूप द्वारभूत हैं। श्रीमहाप्रभुजी धर्मी स्वरूप गुरुद्वार हैं "मुखं हि परमानन्दरूपं, मुखं हि भक्त्यात्मकं मुखस्य भक्तिरूपत्वात् मुख एव रसः ॥ सुबोधिनी श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुः

"धर्मे हि गुरुर्मूलं स च भगवान् तन्मुखत्वात्" - सुबोधिनी। "लौकिकगुर्वपेक्षया भगवन्मुखस्य अत्यन्तगुरुत्वात् नितरां गुरुः ॥ सुबोधिनी श्रीवल्लभाचार्यमहाप्रभु ॥ यहां तात्पर्य है कि साधारण शिक्षा देने वाला सामान्य (लौकिक) गुरु नहीं अपितु भगवन्मुखारविन्दरूप वल्लभकुल अलौकिक दीक्षा देने वाले ही गुरु हैं। भगवान का मुख भी पूर्णरूपेण गुरु अर्थात् धर्मीभूत गुरुद्वार है।

"भविता भावसम्बन्धस्ततः पुष्टिफलिष्यति।"

बिना द्वारं हि जीवानां तत्सम्बन्धो (ब्रह्मसम्बन्धो) पि दुर्लभः सिद्धान्तरहस्य विवृतिः श्री हरिरायजी महाप्रभु

भाव संबंध से पुष्टि फलित होगी वह संबंध (ब्रह्म संबंध) जीवों का गुरुद्वार के बिना सम्भव नहीं है।

श्री महाप्रभुजी मुखारविन्दस्वरूप "अग्निं यश्चक्र आस्यम्।।" अथर्व. १०-७-३२ अग्निः वाग्भूत्वा मुखमाविशत्। ऐ. उप. १-२-१ आचार्य भगवत्स्वरूप हैं एवं भगवान के मुखारविंद वदनानलावतार है। पराश्यंतीवैखरी मध्यमा आदि से भगवान् अपनी आचार्यचरण के द्वारा अभिव्यक्ति व्यक्त करते हैं। वाण्या यदा तदा स्वास्यं प्रादुर्भूतं चकार हि। सर्वोः अभिव्यक्ति में हेतु भूत (द्वारभूत) श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु हैं। स वै वाचमेव प्रथमामत्यवहत् "प्रथमामत्यमुच्यत" (उद्गीथब्राह्मण) बृहदा. भगवतो मुखमग्निः "अग्निर्वै मुखं अग्नि मुखम् (श्रुति)" आचार्यं मां विजानीयात् इन सिद्धांतसूत्र न्याय प्रभृति से आचार्य भगवत्स्वरूप "वैश्वानरो वल्लभाख्यः" वैश्वानर अग्निरूप हैं। अतः अपनी निज इच्छा को प्रकट करने हेतु प्रभु ने ही "वाण्या यदा तथा स्वास्यं प्रादुर्भुतं चकार हि" इस न्याय से "आनंदः परमानंदः श्रीकृष्णास्यं कृपानिधिः" अपने आस्य प्रमुख मुख द्वार के स्वरूप में आचार्य श्रीवल्लभाचार्यजी के रूप में स्वयं को दैवीजीवों के उद्धारार्थ इस अवनीतल पर प्रादुर्भाव (प्रकट) किया।

इस पुष्टिभक्ति वल्लभ सम्प्रदाय में मुखारविंद की सेवा प्रमुख मुख्य मानी जाती है अतः आचार्य गुरु सेवा एवं भगवत्सेवा का सर्वोपरि फल दो सौ बावन, चौरासी वैष्णव तथा अद्यतन पुष्टिसृष्टि में आस्वादन करने तथा अलौकिक स्वरूप के दर्शन का सौभाग्य गुरुकृपा के फलित रूप में देखने को मिलता है।

" भगवदुक्तौ प्रकारविशेषा वहव एव सम्भवन्ति। क्वचिद्भगवान् स्वोक्तिं सेवक द्वारा ज्ञापयति, क्वचित् स्वप्नद्वारा...... अत्र तु उक्तसम्भावितप्रकाराभाव पूर्वकं स्वयं साक्षात् पूर्ण प्राकट्येनाचार्यनुपदिष्टवान् साक्षात् भगवता प्रोक्तम्" श्री गोकुलनाथजी। भगवान के वचन उनकी वाणी उनका हार्द समझना जीव की गति से परे है। श्री मदाचार्यचरण कृष्ण हार्दवित् हैं। तभी भगवद्वाक्य श्री दामोदरदासजी को समझ में नहीं आये। "दमला ते कछु सुन्यो" सुन्यो तो सही पर समुझ्यो नाहीं। कभी भगवान अपने सेवकों के द्वारा तो कभी स्वप्न द्वारा अनेक प्रकारान्तर से जताते हैं परन्तु वह मनुष्य की बुद्धि से परे है अतः आचार्य

स्वरूप स्वयं को प्रकट कर के "श्री कृष्णज्ञानदो गुरुः" का सेव्यसेवक आचार्य गुरुभाव सिद्धांत स्थापित कर अथवा "परमात्मानं परमानंद विग्रहम् इस न्याय से ।" आनंदमात्रकरपादमुखोदरादि रूप से प्रकट हो आचार्यश्री को यह आज्ञा दी कि आप जिस जीव का मेरे से संबंध ब्रह्मसंबंध कराओगे उस जीव का अंगीकार मैं करूंगा। अतः धर्मी स्वरूप गुरुद्वार रूप आचार्यचरण श्रीगोपीनाथजी, श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलेश्वर प्रभुचरण द्वारा गद्यमंत्र ब्रह्मसंबंध दीक्षा द्वारा अंगीकृत जीवों को ऐसा अलौकिक सौभाग्य प्राप्त हुआ जो अनिर्वचनीय है। कुछ वैष्णवों को स्वरूप सेवा तो कुछ वैष्णवों को प्रसादी वस्त्र सेवा, हस्ताक्षर सेवा तथा स्वयं के चरणारविंद की सेवा पधरा कर मन का निरोध सिद्ध कराया। नंदालय की लीला का अलौकिक आनंद का अनुभव करा दिया। तो एक पटेल वैष्णव को श्रीगोवर्द्धनधरण की गायों की सेवा से ही मन का निरोध सिद्ध करा दिया। इस प्रकार आचार्यचरणों ने कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं का स्वरूप प्रकट कर दिखाया। यह सेवा का सौभाग्य एवं अधिकार ब्रह्मसंबंध द्वारा प्राप्त होता है।

भगवत्सेवा के अधिकार प्राप्त करने हेतु तथा जन्मजन्मान्तर के सेवा में प्रति-बंध करने वाले दोषों को दूर करने के लिए गद्यमंत्र दीक्षा ब्रह्मसंबंध अत्यावश्यक है। अब हम सिद्धान्तरहस्य के प्राचीन विवृत्तिकारों के सैद्धान्तिक प्रमाणों का उल्लेख करते हैं। "ब्रह्मसंबंधोनाम स्वमार्गाचार्य द्वारा भगवति निवेदनम् गोस्वामी श्रीकल्याणरायचरण, ब्रह्मसंबंधकरणं नाम साक्षात् पुरुषोत्तम संबंधकरणम् तच्च स्वमार्गीय श्रीमद् आचार्य द्वारा शरण गमन पूर्वकम् गोस्वामीश्री व्रजोत्सवचरण। "ब्रह्मसंबंध करणं नाम एतन्मार्गीयाचार्य द्वारा भगन्निवेदनम् गोस्वामी श्री गोकुलोत्सवचरण। "बीजभाव स्वरूपं शुद्धपुष्टिमार्गीयाचार्यानुग्रहपूर्वकं स्वमार्गप्रकारक भगवन्निवेदनान्तरं भगवदंगीकार एव बीजभावः" गोस्वामी श्रीगोकुलनाथचरण श्रीवल्लभ "(सिद्धांत रहस्य पर विवरण टीका) उक्तसैद्धांतिक प्रमाणों से ब्रह्मसंबंध "स्ववंशेस्थापिताशेषस्वमाहात्म्यं" न्याय से श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु के वंश में आप स्वयं ने अशेषमाहात्म्य अपना स्थापित किया है "भुवि भक्तिप्रचारैककृते सान्वयकृत्पिता" इस न्याय से वल्लभवंश पुष्टिमार्गीय आचार्यों के द्वारा पुष्टिभक्तिमार्गीय गद्यमंत्र ब्रह्मसंबंध ग्रहण करना चाहिये। जिस प्रकार श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु प्रभु के धर्मी स्वरूप मुख द्वार रूप अर्थात् आस्य स्वरूप है उसी प्रकार वल्लभवंशज समस्त आचार्यकुल गोस्वामी आचार्य महानुभाव धर्मरूप द्वार हैं अर्थात् श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु धर्मी स्वरूप प्रभु के मुखारविंदरूप गुरु द्वार हैं तथा समस्त वल्लभवंशज आचार्यकुल

धर्म रूप गुरुद्वार हैं। "चत्वारस्ते कलौ भाव्याः सम्प्रदाय प्रवर्तकाः" इस न्याय से पद्मपुराण के प्रमाण के अनुसार सम्प्रदाय दीक्षा अनिवार्यतः आवश्यक है। दीक्षा अर्थात् ब्रह्मसंबंध ग्रहण करने से जीव "मनुष्य" का सरनेम पलट जाता है। जिस तरह कन्या का विवाह होने पर उस का गौत्र बदल जाता है, उसकी अटक बदल जाती है, उसका सरनेम बदल जाता है, उसी प्रकार पुष्टिस्थ भगवान के साथ संबंध होने पर जीव केवल जीव नहीं रह जाता वह भगवान से संबंध होने पर भगवदीय भक्त हो जाता है। **"विक्रीडितं व्रजवधूभिरिदं च विष्णुः"** रासमध्यपाती पुष्टिस्थ भगवान विष्णु स्वरूप भाव पोषणार्थ वपु धारण करते हैं। उन रसात्मक विष्णु से ब्रह्मसंबंध होने पर जीव वैष्णव कहलाता है। जिस प्रकार स्त्री का नाम न लेकर उस के पति का सरनेम जैसे श्रीमती शाह इत्यादि से सम्बोधित किया जाता है उसी प्रकार विष्णु से वैष्णव सरनेम बदल जाता है। भगवान से भगवदीय भक्त सरनेम बदल जाता है। केवल भगवदीय वैष्णव होना अपने आप में बड़ी भारी उपलब्धि है। समस्त पुरुषार्थों की सिद्धि हो जाती है। जब मनुष्य आत्मा नहीं बल्कि परमात्मा की पहचान से पहचाना जाता है। तब उसे भगवत्सेवा का अधिकार प्राप्त होता है "यो यदंशः स तं भजेत्" वल्लभवंशजाचार्य से यह ब्रह्मसंबंध होने के लिए दीक्षा ग्रहण करनी चाहिये। यहां एक बात स्पष्ट करना बहुत आवश्यक है कि कतिपय लोग कहते हैं कि हम ने तो गुरु बना लिये हैं ? परन्तु यह समझना बहुत आवश्यक है कि गुरु बनाये नहीं जाते परन्तु आचार्य परम्परा में गुरु स्वतः होते हैं। सामान्य गुरु केवल शिक्षा देता है परन्तु परम्परानुगत आदि आचार्य परम्परा के आचार्य गुरु दीक्षा देते हैं। गुरु कोई भी हो सकता है परन्तु गुरु आचार्य नहीं होता। अर्थात् हर आचार्य गुरु है परन्तु प्रत्येक गुरु आचार्य हो यह आवश्यक नहीं। गुरु केवल शिक्षा देता है परन्तु आचार्य दीक्षा भी देता है और शिक्षा भी देता है। अतः **"चत्वारस्ते कलौ भाव्याः सम्प्रदायप्रवर्तकाः"** इस पद्म पुराण के आद्य आचार्य परम्परा आचार्यकुल परंपरा से अनादि सम्प्रदाय परंपरा की दीक्षा लेनी चाहिये। जो दीक्षा लिये बिना स्वतः केवल मंत्र बोलने लगते हैं, वे तो केवल आनुपूर्वी हैं, वह मंत्र नहीं है। मंत्र दीक्षा में तो आचार्य परंपरा का तेज और आचार्य गुरु मंत्र दाता की शक्ति विराजमान रहती है। अतः आचार्य द्वारा दीक्षा लेनी चाहिये। स्वयं मंत्रों के उच्चारण करने से अहंकार उत्पन्न होता है। **"स्वतः करणे अहंकारो भवति"** (सुबोधिनी १०-४-३३) **"स्वतः करणे सर्वत्र दोषः"** (सुबोधिनी १०-४-६२) जब कृष्णदास मेघन पर उनके गुरु क्रोधित हो गये थे कि तूने दूसरा गुरु क्यों किया तब कृष्णदास मेघन ने कहा कि मैंने साम्रान्य गुरु नहीं किया मैंने तो पूर्ण पुरुषोत्तम "आचार्यं मां विजानीयात्" के अनुसार आचार्य

गुरु किये हैं। अतः सिद्ध होता है कि गुरु केवल शिक्षा देता है और आचार्य आध्यात्म दीक्षा और शिक्षा दोनों देता है।

''सर्वलक्षण सम्पन्नः श्रीकृष्णज्ञानदो गुरुः'' जिस प्रकार अनुग्रहाय भक्तानां मानुषीं देहमास्थितः। भजते तादृशी क्रीड़ा या श्रुत्वा तत्परो भवेत्'' । भगवान् ने अनुग्रह करने के लिए मनुष्य रूप धारण किया। मनुष्य थे नहीं परन्तु अप्राकृत वपु धारण प्रभु ने किया था ''बभूप प्राकृतः शिशुः'' इस न्याय से प्राकृतवत् मात्र आकृति धारण की थी। आचार्यचरण त्रिविधिनामावली में आज्ञा करते हैं ''नराकृतये नमः।'' ''नरवत् आकृतिर्यस्येति। लौकिक एव दृष्टान्तः परन्तु कृष्ण शब्देन सदानंद रूपे नराकृतिः नतु लौकिकीति सूचितम् ।'' (गोस्वामी श्रीगोकुलोत्सवचरण कृत टीका त्रिविध नामावली) यहां साकार ब्रह्मवाद का सिद्धान्त प्रतिपादित हुआ है। तदैव सामृतजला यमुना निर्विषाभवत्। अनुग्रहात् भगवतः क्रीडा मानुषरूपिणः। (महापुराण १०-१३-६७) यदोर्वंशं नरः श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्युते। यत्रावतीर्णविष्णवाख्यं परब्रह्मनराकृतिः (विष्णुपुराण) इन समस्त सैद्धांतिक प्रमाणों से पुष्टि होती है कि प्रभु ने आत्मसात करने के लिए मानुषतनु धारण किया था। जब पृथ्वी के उद्धार के लिए भगवान ने वाराह अवतार धारण किया था। आपने अपनी दाढ़ पर पृथ्वी को स्थित किया। तब पृथ्वी ने वर मांगा कि मुझे मानुषतनुधारण करके अधरामृत के आस्वादन का सौभाग्य प्राप्त हो ऐसी अभिलाषा है भगवान् ने आज्ञा की कि यह मनोरथ रामावतार में पूर्ण होगा। यह वरदान दिया और रामावतार मानुषतनु धारण कर पृथ्वी को सीता के रूप में स्वीकार कर मनोरथ पूर्ण किया है। यह प्रभु का विरुद्ध धर्माश्रय है जो अखिल ब्रह्मांड के नायक हैं वे श्री यशोदोत्संग लालित है। अतः पुष्टिभक्तिमार्ग में प्रभु योगियों के, ज्ञानियों के वश नहीं हुए हैं तो वे हमारे वंश में कैसे होंगे इस बाधक माहात्म्यज्ञान को नहीं स्वीकारा गया है। अपितु प्रभु बालक हैं उन्हें प्रसन्न रखना हमारा स्वधर्म है। प्रभु को प्रसन्न किया नहीं जाता अपितु सतत् प्रसन्न रखा जाता है। यह पुष्टि मार्ग की विशेषता है। अतः कांत भाव से तथा बाल भाव से प्रभु को लाड़ लड़ाया जाता है। ''धर्म्युत्कर्षेण धर्मोत्कर्षेण च माहात्म्यं द्विविधम्।'' (१०-४३-३) ''माहात्म्यज्ञानपूर्वस्तु'' नारदपंचरात्र ''माहात्म्यं च'' सुबोधिनी ''हरि सर्वात्मना सेव्यो ज्ञात्वा माहात्म्यमादरात्'' भगवान् के प्रति गोपियों की तरह सरल सहज स्नेह आत्मभाव होना ही पुष्टिमार्गीय साधक माहात्म्यज्ञान है। दैत्यों को मारने गिरिराज उठाने पर भी भगवान् के प्रति परमात्माभाव उन के हृदय में पैदा नहीं हुआ। (सुबो. ३-९-३१)। ''माहात्म्यात् देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयते'' (निरुक्त)।

''सर्वत्रालौकिकेषु पदार्थेषु माहात्म्य श्रवणान् रुचिरुत्पद्यते (सुबो. १-२-२५) | निरंजन अंजन दिए सो नंद के आंगन माई | नंददास जाकी माया सब जगत भूल्यो सो भूल्यो अपनी परछाई | जो प्रभु यशोदोत्संगलालित नराकृतिमानुषतनु धारण किये हुए हैं वे अखिल ब्रह्मांड के नायक स्वयं अपने आप को देख भी नहीं सकते, उन्हें तो श्रीयशोदाजी श्रीस्वामिनीजी ब्रजभक्तादि दर्पण दिखाते हैं तब अपने मुखारविंद को निरख कर प्रभु रीझते हैं प्रसन्न होते हैं। सर्व समर्थ को असमर्थ बना देना, यही पुष्टिजीवों का महत्सौभाग्य है | 'त्रिपुर भूमि नापी तब न आलस भयो और अब जो कठिन भयो दोहरी उलंघना | ''हरि को विमल जस गावत गोपांगना |'' कौन सुकृत इन ब्रजवासिन को वदत विरंचि शेष | श्री हरि जिन के हेत प्रकटे मानुष वेष | ज्योतिरूप जगधाम जगत गुरु जगतपिता जगदीश | जोग यज्ञ तप व्रत दुर्लभ से गृह गोकुल के ईश | जाके उदर लोक त्रय जलथल पंच तत्व चौखान | बालक व्है झूलत व्रज पलना जसुमति भवन निधान | ऐरी जाको नाम फन पति रटत निसदिन पार पावे न पवन | जाको उच्चरत चारों वेद ब्रह्मा विचारों कवन | सोही नंद गृह अवतरे खेले जसोदा भवन | पियबिहारी लाल ललित सोही श्रीराधारमण | 'धर्म ही ते पायो यह धन' धनुर्धर पार्थ अर्जुन ने भी भगवान से यही कहा है कि हे प्रभो मैं आपका विराट् रूप पुनः नहीं देखना चाहता | मेरे हृदय को यह असाधारण विराटस्वरूप न तो भाता है ना ही जी को लुभाता है | मैं तो वही मनुष्याकृति सरल, सौम्य स्वरूप देखना चाहता हूँ | जो सभी को आत्मसात् कर लेता है | 'दृष्टवेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन | इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः' या रब ! मेरे खुलूस की बारफ्तगी तो देख, किस सादगी से तुझ को खुदा कह गया हूं मैं | अतः सादगी से सहजता से परमात्मा के स्वरूप को ग्रहण कर लेना ही शुद्ध हृदय की पहचान है | 'अत्यन्त शुद्ध चित्तस्य युक्तिर्नापेक्ष्यते क्वचित्' (भागवतार्थ निबन्ध ३-४८) अतः 'जन्म कर्म च मे दिव्यं' गीतोपनिषद् के अनुसार भगवान् के जन्म कर्म जिस प्रकार दिव्य है उनका मानुषवपु दिव्य है उसी प्रकार भगवान् आज्ञा करते हैं आचार्यं मां विजानीयात् नावमन्येत कर्हिचित् | न मर्त्यबुध्यासूयेत सर्वदेवमयोगुरुः | भगवान् आज्ञा करते हैं मैं ही आचार्य स्वरूप हूं | मुझे मनुष्य समझ कर मेरे आचार्यस्वरूप से असूया ईर्ष्या नहीं करना चाहिए | आचार्य सर्वदेवमय तथा गुरु हैं | आचार्य रूप धारण कर ही मैं शरीरधारी समस्त जीवों के अशुभ पापों को धो देता हूं 'योन्तर्बहिस्तनुभृतां अशुभं विधुन्वन् आचार्यचैत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्ति |' अतः श्री विट्ठलेश्वर प्रभुचरण वल्लभाष्टक में आज्ञा करते हैं कि 'भूमौ यः सन्मनुष्याकृरितिकरुणस्तं प्रपद्ये हुताशम् |' ''प्राकृतानुकृतिव्याजमोहितासुरमानुषः'' सर्वो 'अंगीकृत्यैव गोपीश-

वल्लभीकृतमानवः' (सर्वोत्तम स्तोत्र) यह तन धर बहुरयो नहीं पईये वल्लभवेष मुरारी। परमानन्द स्वामी के ऊपर सर्वस्व डारोंगी वार री' जै वसुदेव किये पूरण तप सो हि फल फलित श्री वल्लभ देव (देह) । जे गोपाल हते गोकुल में तेई अब आन बसे कर गेह ॥१॥ जे वे गोपवधू ही ब्रज में सो अब वेद ऋचा भई जेह । छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल जेई तेई तेई एही कछू न संदेह ॥२॥ भव तारन हार जुग तारन हार ये ही हमारे श्रीनाथजी । अतः आचार्य भगवत्स्वरूप हैं उन से ब्रह्म संबंध लेने के पश्चात् भगवत्सेवा का अधिकार प्राप्त होता है।

वल्लभवंश के गोस्वामी आचार्य से ब्रह्म संबंध लेने के पश्चात श्रीठाकुरजी की सेवा का अधिकार प्राप्त हो जाता है । श्री ठाकुरजी घर में विराजते हैं तो घर घर नहीं रह जाता वह प्रभु की क्रीड़ा का स्थल बन जाता है । उस का संसार निवृत्त हो जाता है । नन्दालय की लीला का स्थल बन जाता है । 'यथा पक्षी स्वपक्षाभ्यां शिशून् संवर्द्धयेत् शनैः । स्पर्शदीक्षोपदेशश्चः कथित ह्यागमे प्रिये । दृष्टिदीक्षोपदेश्च तादृशः कथितः प्रिये । स्वापत्यानि यथा मत्स्यो वीक्षणेनैव पुष्यति यथा कूर्मो स्वतनयान् ध्यानमात्रेण पुष्यति । वेध दीक्षोपदेशश्च तादृशः कथितो ह्यागमे प्रिये (कुलार्णव तन्त्र) यह हमारे पुष्टि मार्ग में दृष्टिपुष्ट स्पर्शपुष्ट के प्रकार । अन्यथा बिना आचार्यश्री से पुष्ट कराये प्रभु चित्र की सेवा करना चित्रकार की कला या परिश्रम की ही सेवा है। जिस प्रकार कर्म ज्ञान मार्ग मर्यादा मार्ग में श्रोतस्मार्तपरम्परानुगत प्राण प्रतिष्ठा आव्हाहन विसर्जनादि होते हैं । उसी प्रकार पुष्टिभक्तिमार्ग में प्राण प्रतिष्ठा नहीं होती अपितु पूर्ण पुरुषोत्तम प्रतिष्ठा होती है । आचार्य श्री गुरु से पुष्टिकराकर उन की आज्ञा से सेवा करनी चाहिये । 'सेवा कृतिर्गुरोराज्ञा' सेवा गुरु की आज्ञानुसार स्वमार्गीयप्रणालिकानुसार होनी चाहिये । यह आवश्यक नहीं कि सेवा स्वरूप सेवा या चित्र सेवा हो । वस्त्र सेवा चरणारविन्द के छपे वस्त्र की सेवा । मोजा (जी) की सेवा से भी स्वरूपानुभव होता है और जीव कृतार्थ हो जाता है । यह आचार्य चरणों के प्रताप का फल है कि आप ने अन्यथा कर्तुं होकर नारायणदास कायस्थ को हस्ताक्षर लिख कर पधरा दिये और आज्ञा की कि तोसौं स्वरूपसेवा न निभेगी सो इनकूं भोग धर के महाप्रसाद लीजियो। मुकुन्ददास जी ने ब्रह्मसंबंध गद्यमंत्र लिखकर पधराया था तथा भोग धरके महाप्रसाद लेने की आज्ञा की थी । रामदास सांचोरा के माथे पादुका जी पधराये थे । 'परे की वार्ता तो प्रसिद्ध है। आनन्ददास विश्वम्भरदास को आचार्यश्री ने श्री नवनीतप्रियजी के वस्त्र सेवा पधराए थे । किशोरीबाई को श्री यमुनाजी की वालुका की थैली पधराकर सेवा की, भोग धरके प्रसाद लेना ऐसी आज्ञा दी थी । रामानन्द पंडित को श्रीमद्भागवत की पुस्तक पधराई । उनका सेवा में

अनधिकार देखा। जीवनदास क्षत्री के माथे श्रीनवनीतप्रियजी के वस्त्र पधराये। भगवानदास सारस्वत के घर आचार्यचरण पधारे वहां चौतरां सिद्ध कर भगवानदासजी सेवा करते थे। भगवानदास सांचोरा को गद्यमंत्र अष्टाक्षर लिखकर सेवा करने की आज्ञा दी। वे हस्ताक्षरजी का भोग धर के महाप्रसाद लेते थे। कृष्णदास एवं उनकी स्त्री बाड चौडाईला गांव के वैष्णव को श्री नवनीतप्रियजी के वस्त्र पधराए। गोपालदास क्षत्री नरोडा को गद्यमंत्र पंचाक्षर लिखकर सेवा में पधराए। बादरायणदास पुष्पकरणा बादा को नवनीतप्रियजी के वस्त्र सेवार्थ पधराए। महावन की एक क्षत्राणी को कुंकुम के चरणारविन्द छाप कर पधराए। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण वार्ता साहित्य में मिलते हैं। इन महानुभावों ने श्री ठाकुरजी का साक्षात्कार नहीं अपितु सामीप्य के साथ सब सुख लिया है, इन्होंने श्रीनाथजी में तथा घर के ठाकुरजी में भेद नहीं समझा। जिस प्रकार एक बार कृष्णभट्टजी ने वसन्त पंचमी जान के अपने घर के श्री ठाकुरजी को खेल खिलाया वहां श्रीनाथजी फाग खेल लिये। रामदासजी भीतरिया को श्रीनाथजी के गुलाल-अबीर से रगमगे दर्शन हुए। रामदासजी भीतरिया ने श्री गुसांईजी से पूछा कि श्रीनाथजी को आज कौन ने खिलाए हैं ? तब श्री गुसांईजी ने आज्ञा की कि 'कृष्ण भट्ट' ने वसन्त पंचमी जान के खिलाए हैं। श्री ठाकुरजी भक्त के वश में है। दक्षिण वाले जमनादासजी ने तुरक के आगे बढ़ते-बढ़ते श्री ठाकुरजी को वो फूल अंगीकार करवाने के लिए एक लाख रुपया लगा दिये परन्तु प्रभु के उपयोगी पुष्प को म्लेच्छ के हाथ में नहीं जाने दिया। वो एक लाख रुपये का गुलाब का पुष्प अपने घर के श्रीठाकुरजी के मस्तक पर धराया। वहां श्रीनाथजी का श्रीमस्तक झुक गया। श्रीगुसांईजी पधारे तो देखते हैं श्री ठाकुरजी का श्रीमस्तक झुका हुआ है। तब आपने पूछा, बाबा आज झुके झुके कैसे। तब श्रीनाथजी ने आज्ञा की कि आप के सेवक ने आपकी कानि से यह पुष्प धराया है। उनके भाव का स्नेहभरे भार से मेरा मस्तक झुक गया है। अतः अपने यहाँ भी साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम आचार्य गुरुस्वरूप एवं प्रभु स्वरूप उभयभाव से बिराजते हैं।

एक वैष्णव कुणबी पटेल गुजरात के वैष्णव के समूह के साथ ब्रजयात्रा के लिए चले। सभी वैष्णवों की सेवा मजदूरी मेहनत करते हुए अपना निर्वाह करते हुए यात्रा कर रहे थे। द्रव्य का अभाव था। उन्हें ज्वर आ गया। उन सम्पन्न वैष्णवों ने उन का साथ छोड़ दिया तब उन्हें बहुत विरह हुआ। अब श्रीनाथजी तथा श्रीगुसांईजी के दर्शन कैसे होंगे यह विरह श्रीनाथजी सह न सके। श्रीगुसांईजी को आज्ञा दी वाकूं मेरे दर्शन की आतुरता है और मोकूं भी है। मोकूं नींद नहीं आवे सो वाकूं वेगी बुलाओ। तब श्रीगुसांईजी ने उस गरीब वैष्णव के

लिए गाड़ी भेजी उस वैष्णव को दर्शन करते से ही मूर्छा आ गई। श्रीनाथजी ने रुष्ट होकर श्रीगुसांईजी से कहा कि जिन वैष्णव समूह ने इस वैष्णव को छोड़ दिया है उन लोगों को मेरे दर्शन मत कराना। श्री गुसांईजी से विनती की कृपानाथ, जीव सदा अपराध से भरा हुआ है। इनने इसे वैष्णव नहीं जाना था। तब श्रीनाथजी ने आज्ञा की कि वैष्णव ज्ञान के अपराध करे तो मैं कभी अंगीकार नहीं करूंगो। अंगीकार और संबंध में भेद है। रामानन्द पंडित का अंगीकार किया था परन्तु आचार्यचरण तथा वैष्णव का अपराध करने से उनको अन्तराय हुआ। इसी प्रकार दया भवैया की वैष्णव वेष धारण करने से हत्या निवृत्त हो गई। एक विरक्त वैष्णव ने कोकिला बन में रसोई करी उस दिन दोलोत्सव था। रसोई करने के बाद दोलोत्सव की याद आई तब लता पत्ता कुंज में बांध कर डोल सिद्ध कर श्रीठाकुरजी को झुलाए और तीनों भोग में दाल बाटी समर्पी और उधर जतीपुरा (गोपालपुर, श्रीनाथद्वारा) में श्रीनाथजी डोल झूले ऐसी सूचना श्रीगुसांईजी ने उनको भेजी। तब उन्होंने विनन्ती कराई कि यह सब श्रीठाकुरजी आपकी कानि सो मानते हैं। अतः गुरु की कानि 'सेवाकृतिर्गुरोराज्ञा' के बिना सेवा नहीं करनी चाहिये।

श्रीठाकुरजी अपने निधि अर्थात् सर्वस्व हैं। वहां कोई भी विधि जो भाव को चुराले ऐसे ज्ञान की मर्यादाविधि की क्या आवश्यकता। एक क्षत्राणि महावन की थी। उनको चार स्वरूप प्राप्त हुए श्रीयमुनाजी में से। श्रीनवनीतप्रिया-गञ्जनधावन को पधराए। जीयदाससूरी को श्री लाडिलेशजी पधराए। देवाकपूर को श्रीललितत्रिभंगीलालजी पधराए। नारायणदास ब्रह्मचारी की श्रीगोकुलचन्द्रमाजी पधराए। तब आचार्यचरण ने यह कह कर पधराए कि ये मेरे सर्वस्व हैं, हों अपनो सर्वस्व देत हों। अतः सेवा से सब सिद्धि प्राप्त होती है। भगवद्भक्तों को न तीर्थ करने की आवश्यकता है न ज्ञान की न कोई ऐसे शास्त्रों की जो प्रभु सन्मुख न करें और विमुख बना दे। 'तीर्थदावपि या मुक्तिः कदाचित् कस्य चित् भवेत्। कृष्णप्रसादयुक्तस्य नान्यस्येति विनिश्चयः। (शास्त्रार्थ प्रकरण) जिस समय भगीरथ ने अपने पूर्वजों के उद्धार के लिये मृत्यु लोक में गंगाजी को पधराने की विनन्ती की तब गंगाजी ने कहा 'किचाहं न भुवं यास्ये नरामय्यामृजन्त्यघं। हरामि तदघं कुत्र राजन्स्तत्र विचिन्त्यताम्। 'लोग मेरे में पाप धो जाते हैं मैं पापमयी बन जाऊंगी। हे राजन् मैं अपने पाप कैसे धोऊंगी। तब वे कहते हैं 'साधवो न्यासिनः शान्ता ब्रह्मिष्ठा लोकपावनाः हरन्त्यघं तेंगसंगात् तेष्वास्तेह्यघभिद्धरिः। 'जिन्हे भगवत्स्वरूप का ज्ञान है ऐसे साधुवैष्णव जब तुम्हारे जल में स्नान करेंगे तब तुम्हारे सारे पाप धुल जाएंगे। तुम पवित्र हो जाओगी।

युधिष्ठिर ने विदुरजी से कहा था "भवद्विधा भागवतास्तीर्थीभूताः स्वयं प्रभो। तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तस्थेन गदाभृता। आप जैसे भगवदीय जिन के हृदय में साक्षात् प्रभु विराजते हैं। आप से तो तीर्थ भी पवित्र होकर तीर्थ बन जाते हैं। "वैष्णवा वै वनस्पतयः" गंगादितीर्थ पवित्र करन अवनी पर डोलें। तीन तूम्बा वाले वैष्णव के वे तीन तूम्बा नहीं थे उन्होंने तो सत्व रज और तम की शुद्धि कर उन तीनों गुणों को अलौकिक भगवदुपयोगी निर्गुण गुण भाव प्रदान किया था।

इसी प्रकार एक बार सेठ पुरुषोत्तमदासजी की बेटी रुक्मिणी ने कार्तिक स्नान करने का व्रत लिया। तो यह व्रत लिया कि रोज नित्य नूतन श्रीठाकुरजी को सामग्री सिद्ध कर के अरोगाती। एक दिन सेठ पुरुषोत्तमदासजी ने रुक्मिणी से पूछा कि मैंने कभी तेरे को कार्तिक स्नान करते हुए नहीं देखा। तब रुक्मिणी ने कहा मेरे तो ये ही कार्तिक स्नान है भगवत्सेवा ही सब से बड़ा व्रत हैं। एकादशी व्रत भी एकादश इन्द्रियों की शुद्धि करने वाले हैं। परन्तु वृद्धावस्था में यदि यह व्रत भगवत्सेवा छुड़वादे तो यह व्रत नहीं अव्रत है। क्योंकि पुष्टिसृष्टि प्रभु की सेवा के लिए ही प्रकट है। "भगवद्रूपसेवार्थं तत्सृष्टिः !" परन्तु भगवत्सेवा साधक किंवा वैष्णवों को एकादशी व्रत चार जयन्ती व्रत अवश्य करने चाहिये। परन्तु एकादशी व्रत, प्रधान हो जाए और भगवत्सेवा गौण हो जाए तो ये व्रतादि कोई काम के नहीं है। यदि ऐसा ही होता तो जगन्नाथपुरी आदि में एकादशी को उल्टी (ऊंधी) क्यों टांगते। अतः पातिव्रत, पर्वव्रतअन्यव्रत ये सब व्रत भगवद्भक्तों के लिए अव्रत हैं। भगवद् व्रत ही भगवदीयों का व्रत है। भगवद्व्रत ही वैष्णवों का व्रत है वह व्रत है प्रतिदिन प्रभु की सेवा और भगवदीय जीवन का निर्वाह। जो व्रत अन्याश्रय करा दे ऐसा व्रत पाखंड है। उसमें पराए पन की बदबू है। जो व्रत गह्यो सो और न भायो मर्यादा को भंग। परमानन्द लाल गिरिधर को पायो मोटो संग। "कानि न काहू की चित धरीये, व्रत अनन्य ले रहिये हो। सब व्रत भंग भये सखि तब से एक हि व्रत निश्चय कर लीनो अथवा जब ते यह अनन्य व्रत लीनो। यह मार्ग उत्तम है, सर्वोत्तम है। "मार्गोयं सर्वमार्गाणां उत्तमः परिकीर्तितः। यस्मिन् पातभयं नास्ति मोचकः सर्वतो यथा। (शास्त्रार्थ प्रकरण) यह पुष्टिभक्ति मार्ग सब मार्गों में सर्वोत्तम है इसमें पतन का भय नहीं है। सब दोषों से जीव मुक्त हो जाता है। "काहे को देह दमत साधन कर मुरखजन विद्यमान आनन्द तज चलत क्यों अपाथे।" हमें तो शास्त्रों की समझ नहीं श्रीठाकुरजी के सुख की, सेवा की समझ होनी चाहिये और कोई समझे तो समझे हम को इतनी समझ भली। ठाकुर नंद किशोर हमारे ठकुराइन वृषभानली। मोहे बल है दोऊ ठोर को (एक भरोसो

हरिभक्तन को दूजो नंदकिशोर को मनसा वाचा और कर्मणा नहीं भरोसो और को। छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल वल्लभकुल सिरमोर को। अतः रुक्मिणी ने कार्तिक स्नान को फल मान कर व्रत नहीं लिया उसने जो भगवत्सुखार्थ सेवा के लिए भगवदीय व्रत लिया था। जब रुक्मिणी ने अशक्त होने पर देह छोड़ी तो एक वैष्णव ने श्री गुसाँईजी से कहा कि रुक्मिणी ने गंगा पाई तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा की "ऐसा मत कहो कि रुक्मिणी ने गंगा पाई पर ऐसे कहो कि गंगा ने रुक्मिणी पाई।" वैष्णव से तीर्थ धन्य होते हैं, पवित्र होते हैं गंगादितीर्थ पवित्र करन अवनी पर डोले। ऐसे भक्तों के भाव के आगे श्रीठाकुरजी बिक गये। तोल तोल के देत सबन कूं भाव अटल कर राख्यों अटरी। यहां मिष्ठान्न का मोल नहीं, भाव का तोल है। "**अहं भक्त पराधीनो ह्य स्वतन्त्र इव द्विज**' हो जीवन सब जगत को मेरे जीवन मेरे दास "भगवान का न कोई भाव है न स्वभाव है, भक्तों का भाव ही भगवान् का स्वभाव है। श्रीठाकुरजी का मन तो भगवदीयों ने, व्रजभक्तों ने चुरा लिया है। व्रजभक्तों के मनोरथ पूरन करने पर श्रीठाकुरजी के भावों का पोषण होता है। इसीलिये पुष्टिमार्ग में प्रभु सुख के लिए मनोरथ होते हैं न कि प्रदर्शन के लिए होते हैं।

यह भगवदीय जीवन की विधा हमें वार्ताजी से जानने को मिलती है। यह चौरासी, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता केवल वार्ता नहीं बल्कि वर्तन के स्वरूप में समझना चाहिये। जो भगवदीय जीवन जीना चाहते हैं उन्हें अवश्य मनन करना चाहिये। यह उन वैष्णवों की डायरी 'दैनन्दिनी' है। इन वैष्णवों ने आत्मनिवेदन द्वारा सर्वस्व प्रभु के चरणारविन्द में समर्पित किया था। भले ही भगवदीयों ने वन गमन नहीं किया परन्तु घर को ही तपोवन बना लिया था। "कृष्ण विरह गोकुल की गोपी घर ही में वन कीनो।" जिस प्रकार सेठ पुरुषोत्तमजी की बेटी रुक्मिणी ने '**गृहे स्थित्वास्वधर्मतः**' के अनुसार स्वधर्म का निर्वाह सहज में कर लिया था। ज्ञानी या सन्यासी का त्याग त्याग नहीं अपितु श्रीमद् भागवद् गीता के सिद्धांतानुसार मिथ्याचार पाखंड है। जिस ने इन्द्रियों को भले ही रोक दिया हो, परन्तु विषयों से मन नहीं हटाया, मन वासनामय रहा है तो उपासना व्यर्थ है। साधना व्यर्थ है। भक्त तो त्याग का भी परित्याग करता है। कहीं अनुराग होता है, तभी विराग होता है। तभी त्याग होता है उससे भिन्न वस्तु का। हर विरक्त कहीं न कहीं अवश्य अनुरुक्त रहता है। विरक्त भक्त भगवान् में अनुरक्त रहते हैं। जो भगवान में अनुरक्त है वही सच्चा विरक्त है। ज्ञानी का मन भटकता है। भक्त का मन मनोरथ करता है। मन को तो विषय चाहिये। उसे सब्जेक्ट चाहिये। मन कभी शून्य नहीं रहता। मन कभी वेक्यूम नहीं रहता। उसे विषय सब्जेक्ट तो चाहिये। बस भगवान् को

सब्जेक्ट बना लो तो मन की सारी खटपट दूर हो जाएगी। जब भगवान विषय बन जाएंगे तो हमारा खाना, बैठना, सोना, हंसना, हंसाना आदि सब भगवत्संबंधी हो जाएंगे। अतः इसके लिए मन अलौकिक होना आवश्यक है। 'अलौकिकमनः सिद्धौ सर्वार्थे' शरणं हरिः' मन की अलौकिकता शरण भावना करने से होती है। मन खराब नहीं है, मलिन नहीं है। बहुत अच्छा है। मन ही मुक्ति का मार्ग है . मन नहीं होगा तो मनन कैसे करोगे। मन नहीं होगा तो मानसी सेवा कैसे होगी ? मन नहीं होगा तो मनोरथ कैसे करोगे ? अतः भगवान् गीता में आज्ञा करते हैं कि 'इंद्रियाणां मनश्चास्मि' श्रुति कहती है 'स मानसीनात्मा जनानाम्' आचार्यश्री आज्ञा करते हैं 'इंद्रियैरेव भगवत्सेवा भवति। इंद्रियाणां च प्रवृत्यर्थं मनसः सृष्टिः (सुबोधिनी १०-३८-२) इन्द्रियों से भगवत्सेवा होती है। अतः इन्द्रियों की प्रवृत्ति हेतु मन की सृष्टि की है। 'मेरो मन अनत कहां सुख पावे।' जैसे उड़े जहाज को पंछी पुनि जहाज पे आवे। भले मन भटके परन्तु अटका रहे प्रभु चरणारविन्द में तो मन का भटकना भी सार्थक है। तभी मनोरथ मय मन होगा। जिस प्रकार पैर चलने के लिए गतिशीलता के लिए चंचल गति वाले है यदि उन्हें रोक देंगे तो पैर चलने के लिए गतिशीलता के लिए चंचल गति वाले है यदि उन्हें रोक देंगे तो पैर अटक जाएंगे उनका (पैरों का) काम चलने का है। अन्यथा पंगु हो जाएगा व्यक्ति। इसी प्रकार मन चंचल है। उसे मनन करने दो, मनोरथ करने दो, नहीं, तो मन नहीं होगा तो मनोरथ कैसे होंगे इसलिए आचार्य श्री 'मनस्तत् प्रवणं सेवा' नहीं कहते हैं। अपितु 'चेतस्तत् प्रवणं सेवा' ऐसी आज्ञा करते हैं। मन की तृतीय अवस्था को चित्त भी कहा है। अतः त्याग तन से नहीं अपितु मन से होना चाहिये। 'त्यागोपि मनसैवहि'। त्यागो वांग्मनसोरेव भगवति विनियोगो न सर्वेन्द्रियाणां, गृहिणस्तु सर्वैः प्रकारैः भजनं भवति परिजनश्च कृतार्थो भवति इति भजने कृत्स्नता। (ब्रह्मसूत्राणुभाष्यम् ३-४-४७)

त्याग करने पर वाणी और मन का ही प्रभु में विनियोग होता है। परन्तु जो घर में रहकर प्रभु की सेवा करते हैं वे स्वयं तो कृतार्थ होते ही हैं किन्तु उनके परिवार के परिजन भी कृतार्थ होते हैं। अतः भजन सेवा ही परिपूर्ण है। 'वृथा त्यागापेक्षया भगवति समर्पणं उत्तमम् इति भक्तौ अपि आत्मसमर्पणम्' (सुबोधिनी ३-२९-३३) वृथा ही त्याग करने के बजाय प्रभु के चरणारविन्दों में आत्म निवेदन पूर्वक सर्वस्व समर्पण करना उत्तम है। इंद्रियां संसार के आवेश से दुष्ट हो गई हैं। अतः 'संसारावेशदुष्टानामिन्द्रियाणां हिताय वै कृष्णस्य सर्ववस्तूनि भूम्न ईशस्य योजयेत्' यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति' संसार के आवेश से दुष्ट इंद्रियों की प्रवृत्ति भगवत्सेवा स्मरण में हो तो सहज संसार से निवृत्ति हो जाती है।

जिस तरह ब्रह्मानन्दे प्रविष्टानां आत्मनैव सुखप्रमा संघातस्य विलीनत्वात् भक्तानां तु विशेषतः सर्वेन्द्रियैस्तथान्तः करणैरात्मनापि हि ब्रह्मभावात्तु भक्तानां गृह एव विशिष्यते (शास्त्रार्थप्रकरण ५१) ब्रह्म ज्ञानियों को केवल आत्मा से ही अनुभव होता है परन्तु भक्तों को केवल आत्मा से ही नहीं अपितु सभी इंद्रियों से अन्तःकरण से भजनानन्द का अनुभव घर में रहकर श्रीठाकुरजी की सेवा से हो जाता है 'ब्रह्मानन्दात् समुद्धृत्य भजनानन्द योजने' कारिका (सुबोधिनी) अतएव ब्रह्मानंद से भजनानंद श्रेष्ठ है। इसलिये घर में आचार्य श्री गुरुचरण से पुष्ट करके श्री ठाकुरजी पधराओ और समय को सेवामय बनाओ।

सेवा का सेतु स्नेह है। समय को सेवा मय बना लेने पर सेवा सर्वदा हो पाएगी। स्नेह पूर्वक सेवा प्रभु के स्वरूप ज्ञान से हो पाती है। 'स्नेहो माहात्म्यं च मिलितं भक्तिर्भवति (सुबोधिनी ३, ९, ३१) सेवा समय की सीमा में समाई हुई नहीं है। स्नेह की सीमा में समाई हुई है। स्नेह सेवा की अंतिम सीमा है। सीमित होते हुए भी असीम सीमा है। LIMITATION भी UNLIMITED है। स्नेह से ही सेव्य को सन्तोष मिल पाता है। 'दशविधलीला विनोदी च नाना सृष्टि प्रवर्तकः। अनेकसृष्टिकर्ता च सर्वदोष विवर्जितः। (पुरुषोत्तम सहस्रनाम)। 'अनेक सृष्टिकर्ता च दशधा सृष्टिकारकः' प्रभु की दशविधलीला निरन्तर चलती है पुष्टिभक्त के लिए स्वभावानुरूप निजानां इच्छातः करिष्यति, निजेच्छातः करिष्यति' हो जाती है। निजजनों की इच्छा से लीला सिद्ध होती है। पुष्टिसृष्टि तो प्रभु के श्रीअंग से प्रकट है। 'पुष्टिं कायेन निश्चयः' (पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद) 'पुष्टिवंशप्रणेता च पुष्टिमार्गप्रवर्तकाय नमः (त्रिविधनामावली) 'पुष्टिप्ररोहहेतुश्च अतः 'अन्येव काचित् सा सृष्टिर्विधातृव्यतिरेकिणी' बृहद्वाराहपुराण के अनुसार यह सृष्टि ब्रह्मा ने नहीं रची है, परन्तु पूर्ण पुरुषोत्तम के श्रीअंग से प्रकट है। 'सर्वलीला पुष्टिमध्ये प्रविशन्तीति मे मतिः अतः सृष्टिस्तु निखिला कृष्णार्थेति विनिश्चयः। ६, ९८ तस्मात् सिध्यन्ति कार्याणि भक्तयैवाश्रयणाद्धरेः। (भागवतार्थ प्रकरणनिबन्ध ६, ९९), सभी लीलाओं का समावेश पुष्टिलीला में हो जाता है। यथा भगवान् जगत्कृतवान् तथा स्वार्थ भक्तिमार्गमपि पृथक् कृतवान् (शास्त्रार्थ प्रकरण निबन्ध)। यह 'पृथक्शरणमार्गोपदेष्टा' आचार्यचरण हैं, तदनुसार पृथक् शरण मार्ग है 'कृष्णदास पंचबरन थाप थापी।' इस की सिद्धि आश्रय से होती है। मार्ग सुगम हो जाता है। जिस तरह हम अपने आप को नहीं भूलते। हमें अपना अनुसंधान सर्वदा सदा बना रहता है उसी प्रकार हम प्रभु को नहीं भूलें। इस से आश्रय सिद्ध होता है।

कुछ लोग कहते हैं कि सत्संग करते हैं पढ़ते हैं हमें याद नहीं रहता, भूल जाते हैं। हम

पूछते हैं क्या आपको यह याद है कि आपने दो महीने के पहले क्या खाया था। चार दिन पहले क्या खाया था ? यह कौन याद रखता है। परन्तु याद नहीं रहने पर भी वह अन्न शरीर को लगता है। शरीर पुष्ट होता है। उसी प्रकार सत्संग के लिए मन सत्संगी होना चाहिए। मन और बुद्धि का विनियोग निरन्तर प्रभु में होना चाहिये। 'तस्मात् सर्वेषु कालेषु मां अनुस्मर युध्य च अर्जुन को भगवान आज्ञा करते हैं 'मय्यर्पित मनो बुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयः' अतः मन बुद्धि का निरन्तर अर्पण करना चाहिये। सदासर्वदा प्रभु की शरण भावना रहनी चाहिये। यह अष्टाक्षर शरण मंत्र से सहज सिद्ध हो जाती है। सब कार्य सिद्ध होते हैं आश्रय सिद्ध होता है। सर्वं आश्रयतो भवेत्। यदुक्तं तातचरणैः श्रीकृष्णाः शरणं मम। तत एवास्ति नैश्चिन्त्यं ऐहिकेपारलौकिके (श्रीप्रभुचरण विज्ञप्तिः)। 'अस्माकं साधनं साध्यं श्रीकृष्णः शरणं मम' (श्री हरिराय महाप्रभु) 'तस्मात् सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम। वददिभरेव सततं स्थेयमित्येव मे मतिः (श्रीमदाचार्यचरण-नवरत्नम्) 'किं मन्त्रैर्बहुभिर्विनश्वर फलैरायाससाध्यैर्मखेः। किंचिल्लोपविधानमात्र विफलैः संसार दुःखावहैः एक सन्नपि सर्वमंत्रफलदो लोपादिदोषोज्झितः। श्रीकृष्णः शरणं ममेति परमो मन्त्रोयमष्टाक्षरः। अतः यह अष्टाक्षर मंत्र राज है। इससे ऐहिक और पारलौकिक कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं।

हमारे साधन और साध्य श्रीकृष्ण श्रीठाकुरजी है। अतः श्रीकृष्ण का आश्रय मन से, वाणी से सभी इन्द्रियों से ग्रहण करना चाहिये। तभी मन अलौकिक होगा एवं भगवत्सेवा सहज रूप से स्नेहपूर्वक हो पाएगी। अन्यथा श्रीठाकुरजी के स्वरूप को गुरु के स्वरूप को तथा वैष्णव के स्वरूप को समझे बिना मन में नास्तिकता एवं आस्तिकता के, विषमता के ज्वारभाटे आते रहेंगे। इस दशा में मन बहिर्मुख हो जाएगा भरोसे का (भ) ऐसे समय छूट जाता है। भक्ति का (भ) छूट जाएगा, धैर्य टूट जाता है और भिखारी का (भ) रह जाता है। स्वार्थी, भक्त के बजाय भिखारी बन जाता है। श्री ठाकुरजी के दर्शन के लिए भक्त तो आते ही हैं, परन्तु भिखारी कहीं अधिक आते हैं। जो सांसारिक कामना, कामपिपासा के पोषण के लिए दर्शन या सेवा करता है तो वह भक्त नहीं भिखारी है। भक्त नहीं भगवान से विभक्त है। भक्त भगवान से विभक्त नहीं होता। कुछ लोग अपनी सांसारिक काम पिपासा हेतु श्रीकृष्ण को छोड़ कर अन्य देवों की पूजा करते हैं। यह अपनी-अपनी स्थिति है। अपना-अपना स्तर है। कोई अपने हृदय को शिवालय बनाता है। कोई सांसारिक काम पिपासा की पूर्ति के लिए अपने हृदय को वेश्यालय (गणिकालय) बनाता है। जिन पर भगवान की पूर्ण कृपा दृष्टि होती है वे ही अपने हृदय को नन्दालय बना पाते हैं। भक्त का हृदय नन्दालय होता है। उसमें दो

नहीं समाते। 'ऊधो मन न भये दस बीस। एक हुतो सो गयो श्याम संग, को आराधे ईस। अतः सांसारिक लोकार्थी होकर प्रभु से मांगने पर दुःख हाथ लगता है। 'मांगे सर्वस्व जात है परमानन्द भाखे '**लोकार्थी चेत् भजेत् कृष्णं क्लिष्टो भवति सर्वथा**' जो सांसारिक कामना से श्रीठाकुरजी का भजन अर्थात् दर्शन स्मरण सेवा करता है उसे क्लेश ही हाथ लगता है। जो भगवान को सर्वज्ञ अन्तर्यामी नहीं समझते वे ही प्रार्थना करते हैं। वे नास्तिक हैं। वे अपने काम बनाने हेतु भगवान् से भृत्य सेवक का काम लेते हैं। उन्हें अपने सुखों का साधन बनाते हैं। यह कितना बड़ा अपराध है। वे प्रभु को लौकिक समझते हैं। **लौकिक-प्रभुवत्कृष्णो न दृष्टव्यः कदाचन**' (अन्तःकरण प्रबोध) '**अन्यथाभावमापन्नः तस्मात् स्थानाच्च नश्यति** (सिद्धान्तमुक्तावली) **न लौकिकः प्रभुः कृष्णो मनुते नैवलौकिकम्;** न तो लौकिक प्रभु स्वीकारते हैं नहीं श्रीठाकुरजी का लौकिक स्वरूप है। मनुष्याकृति होने पर भी अलौकिक है।

अन्यथाभाव आने पर मनुष्य का पतन हो जाता है। 'अतः सेव्यःस एवं गोपीशः विधास्यत्यखिलं हि नः '(शिक्षा श्लोक) श्रीठाकुरजी गोपीजनवल्लभ की सेवा से सब कुछ प्राप्त हो जाता है। अपने इष्ट सेव्य प्रभु का आश्रय ही लेना चाहिये। ये ही है कुल देव हमारो' 'गोकुल को कुल देवता प्यारो गिरधरलाल'। अतः हमारे कुलदेव पुष्टि प्रभु है। अतः अन्य देव का भजन या अन्य देव को कुल देव मानना या ब्रह्मसंबंध होने के पहले कुल परम्परा में चले आ रहे देव को कुल देवता मानना पुष्टि भक्तों के लिए सर्वथा बाधक व दुःख दायक है। इस बात की श्रीगुसांईजी विट्ठलेश्वर प्रभुचरण पुष्टि करते हुए आज्ञा करते हैं श्री सुबोधिनीजी की टिप्पणी में कि '**इतरभजनं न कार्यम्पारम्पर्यगतमपि**' (टिप्पणी १०, १९, १) दूसरे देव का भजन न करे भले वो कुल परम्परा से चलता आया हो। जो पतिव्रता होगी उसे अन्य की बात कभी नहीं भाएगी। ना ही वो किसी को ऐसी सीख देगी जिनके मन में चोर है वे ही 'यह अन्याश्रय नहीं है, ऐसी सीख देकर समझौता करते हैं! पतिव्रता कभी अपने व्रत से समझौता नहीं करती। स्नेह में दूजा कैसे समाये ? तुलसी की कंठी हमारा मंगलसूत्र है, तिलक हमारा सौभाग्य चिन्ह (टीकी) है। एक ने हम से कहा कुछ भक्त लोग एक ही भगवान को मानते हैं पर हम सब को मानते हैं। तब हम ने उत्तर दिया कि हम भी सब को मानते हैं उन्होंने कहा कैसे ? हमने कहा 'हम गाय को गाय मानते हैं, घोड़ा नहीं मानते। हाथी को हाथी मानते हैं घोड़ा नहीं मानते। जड़ को जड़ मानते हैं चेतन नहीं मानते। इसी प्रकार शंकरजी को शंकरजी मानते हैं ब्रह्माजी नहीं मानते। ब्रह्माजी को शंकरजी नहीं मानते ब्रह्माजी ही मानते हैं। सभी देव देवर जेठ आदि हैं। परन्तु हमारे सर्वस्व स्वामी के रूप में एक को ही जानते हैं वे

श्री गोवर्द्धनधरण पूर्ण पुरुषोत्तम नन्दराजकुमार हैं। यह अन्तर समझो। स्नेह में दूजा कैसे समाये? कर्म में तर्पण है ज्ञान में अर्पण तथा भक्ति में आत्मसमर्पण है। भगवद्भक्त का केवल एक (सब्जेक्ट) विषय है, वह है भगवान। अतः उसका स्वार्थ-परमार्थ लौकिक नहीं अलौकिक है। 'अलौकिकभोगो फलानां मध्ये प्रथमे प्रविशति' अलौकिकस्तु ग्राह्यः। (सेवाफल ग्रन्थ) अलौकिक भोग प्रसादग्रहण करना भले स्वार्थ के लिए हो परन्तु ऐसा स्वार्थ परमार्थ के रूप में चरितार्थ हो जाता है अनन्य भक्त का। और वह कृतार्थ हो जाता है। ऐसा अनन्य भगवद् भक्त का भगवद्भाव भव भय से निर्भय बनाता है। अतः प्रभु में लौकिक बुद्धि कदापि नहीं करनी चाहिये। प्रभु से कुछ मांगों मत। न लौकिके मतिः कार्या भगवद्भावबाधिका। लौकिकं वैदिकं चापि स्वयं साधयिता प्रभुः (शिक्षापत्र) हमारे लौकिक वैदिक सब के साधक प्रभु हैं। तस्य सेवां प्रकुर्वीत यावज्जीवं स्वधर्मतः। न फलार्थं न भोगार्थं न प्रतिष्ठा प्रसिद्धये। (शिक्षापत्र १८-१२)

जीवन पर्यन्त सेवा करनी चाहिये परन्तु न फल के लिए न भोग के लिए, न प्रतिष्ठा या प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए सेवा करनी चाहिये अपितु सेव्यप्रभु के संतोष के लिए सेवा करनी चाहिये। यह बड़ा भाग्य है कि हम प्रभु के सन्मुख हो जाते हैं। और वह महत् बड़ा सौभाग्य है कि प्रभु हम से सेवा लेते हैं। 'दुर्लभं मानुषं जन्म। सेवा का सुख तो मनुष्य योनि में सर्वाधिक है। यह मनुष्य जन्म दुर्लभ है। जिन पशु-पक्षियों के पंख हैं पर उनके हाथ नहीं हैं, वे श्रीठाकुरजी की सेवा नहीं कर सकते हैं। जिन पशु बंदर आदि के हाथ-पांव हैं वे भी श्रीठाकुरजी की सेवा नहीं कर सकते हैं। उनकी देह सेवा योग्य नहीं है वे भाग्यवान् नहीं हैं। हमारा यह बड़ा सौभाग्य है कि हम श्रीठाकुरजी को श्रृंगार धरा सकते हैं। श्रीठाकुरजी को जगा सकते हैं, पोढ़ा सकते हैं सामग्री सिद्ध करके अरोगा सकते हैं। हम श्रीमदाचार्यचरण तथा श्रीगुसांईजी की कानि से बहुविध सेवा से लाड़ लड़ा सकते हैं अपने प्रभु को। आचार्यश्री ने ऐसा धन हमें सौंपा है। यह धन धर्म ही ते पायो। ऐसे पूर्ण पुरुषोत्तम श्री नन्दराजकुमार को श्रीमहाप्रभुजी ने हमारी गोदी में पधराकर हमें सौभाग्यशाली बनाया है। यह अलौकिक निधि (धन) देकर हमें धन्य बनाया है। इससे बड़ा और कौन सा फल है। भगवन्तं प्राप्य स्वयं न किंचित् प्रार्थनीयम्। भगवानेव यत् करिष्यति तत्करोतु अन्यथा कुमनीषा एव। (सुबोधिनी १०, ४५, ११) भगवान् फलरूपत्वात् (संन्यासनिर्णय) भगवानेव हि फलम् '(पुष्टिप्रवाह मर्यादा) घर के श्रीठाकुरजी ही सर्वस्व हैं। घर में श्री ठाकुरजी पुरुषोत्तम भाव तथा गुरुभाव से बिराजते हैं। प्रभुत्वेन सेवितो भगवान् गुरुत्वेनापि सेवितः तीर्थशब्देन गुरुरेवोच्यते।

(सुबोधिनी ३,४,२०) फल हैं। वे ही नित्य लीला के आनंद का अनुभव कराएंगे। वे हमारे पति हैं जो भय से रक्षा एवं सुरक्षा भी करते हैं। क्या कोई स्त्री अन्य जगह जाकर किसी की सेवा कर सकती है ? कदापि नहीं। यह दूसरों को बर्दाश्त नहीं होगा। घर के परिजनों को बर्दाश्त नहीं होगा। केवल ऊपर की सेवा या कार्य भले ही करे। इसी प्रकार जो अपने माथे श्रीठाकुरजी घर में बिराजते हैं उन्हें हम चाहे जैसे नये-नये पुष्टिमार्गीय मनोरथ करके, सामग्री सिद्ध करके लाड़ लड़ा सकते हैं, परन्तु यह अधिकार किसी दूसरे ठिकाने थोड़ी मिल सकता है। अतः 'घरके ठाकुर के सुत जायो नन्ददास तहां सब सुख पायो' श्रीनाथजी को भी देवालय की लीला छोड़ कर नन्दालय की लीला करने हेतु श्रीगुसांईजी के घर पधारना पड़ा। **'व्याजं लौकिकमाश्रित्य श्री विट्ठलगृहेऽगमत्** । अतः श्रीनाथजी का यह पाटोत्सव ही मुख्य माना गया है जो फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को आता है। वैसे "द्वितीया पाट सिंहासन बैठे अविचलराज तिहारा" द्वितीय पाट तथा अक्षय तृतीय का भी पाटोत्सव है, लेकिन फाल्गुन कृष्ण सप्तमी का घर का श्रीनाथजी का पाटोत्सव ही मुख्य है। अतः घर के श्रीठाकुरजी का स्वरूप समझना बहुत आवश्यक है।

त्रिपुरदास कायस्थ को श्रीनाथजी से अत्यधिक ममत्व था। हर वर्ष श्रीनाथजी को रूई का दगला (बंडी) रजाई भेजते थे। श्रीगुसांईजी देवोत्थान के दिन प्रबोधिनी को श्रीनाथजी का अंगीकार करवाते। श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न होकर धारण करते। एक बार त्रिपुरदास का घर म्लेच्छ ने लूट लिया। उन्हें द्रव्य का बहुत संकोच हो गया। जब श्रीनाथजी का भेटिया आया तब उन्होंने दवात का चांदी का ढक्कन बेचकर एक थान जैसे तैसे भेजा। मन में बड़ा संकोच कि पहले की तरह सेवा अंगीकार नहीं हो सकी। भेटिया ने भंडारी को सौंप दी। भंडारी ने कहीं रख दी। जब देव प्रबोधिनी एकादशी आई उस समय श्री गुसांईजी ने देवोत्थापन कर श्रीठाकुरजी को रूई को दगला धराये परन्तु श्रीनाथजी तो ठंड से श्रमित होने लगे। श्रीअंग धूजते हुए देख श्रीगुसांईजी ने और दगला कवाय ओढ़ाई तो श्रीनाथजी की शीत नहीं गई। फिर श्रीगुसांईजी ने सोने की अंगीठी में आंच डाल कर पास में सन्मुख धरवाई फिर भी ठंड शीत नहीं गई। तब आप ने आज्ञा करी भंडारी से कि त्रिपुरदास की जड़ावदार दगला कवाय आई के नहीं। तब भंडारी ने कही के जै महाराज त्रिपुरदास को द्रव्य को बहुत संकोच है सो केवल थान भेजो हे। तब श्री गुसांईजी ने आज्ञा की थान की जल्दी से कवाय दगला भरवाय लाओ। जब त्रिपुरदास के थान की दगला रजाई कवाय भरके आई श्री गुसांईजी ने अंगीकार कराई। उसी क्षण श्रीनाथजी की शीत चली गई। आप बहुत प्रसन्न हुए। जब यह बात

त्रिपुरदास को खबर पड़ी कि प्रभु ऐसे भक्त वत्सल हैं तो त्रिपुरदास गद्गद् हो गये, हृदय भर आया, नेत्र से अश्रु, छलक गये और उन्होंने पद गाया- 'नवरंग बिहारी लाड़िलो मेरा मोहे कहे, जाड़ो मोहे अधिक सुहाय। 'पहरि कवाय ओढ़ लई फल्गुल तो हू सीत सतावत आय। अचरज भये श्रीवल्लभनन्दन कनक अंगीठी धरी मंगाय। पुनि जिय सोच मंगाय उढ़ाई भजी गई सीत हंसे जदुराय। ऐसे परम कृपाल दयानिधि बिसरत नाहीं सुधि करत सहाय। त्रिपुरारी गिरिधारी की बातें कहो कौन पे जाय सुनाय। कितनी कृपा की श्रीठाकुरजी ने जो अखिल ब्रह्माण्ड के नायक हैं जो गोलोक के नाथ है उन्हें भगवदीयों व्रजभक्तों ने गोकुल का नाथ बना दिया। गो अर्थात् इंद्रियां उनका कुल यह शरीर है। जिस प्रकार दूध में घी एवं माखन (क्रीम) घनीभूत होता है, उसी प्रकार श्रीठाकुरजी में व्रजभक्तों (वैष्णवों) का तथा व्रजभक्तों में श्रीठाकुरजी का रसमय भाव घनीभूत है। जैसे सभी पुष्पों का रस मधु में घनीभूत होता है। **मधुविद्या अयमात्मा सर्वेषां भूतानां मधु अस्यात्मनः सर्वाणि भूतानि मधु (श्रुति) मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्तिसिन्धवः (सरित इवार्णवे मधुनि लिंल्युरशेषरसाः)** वेदस्तुति इस प्रकार श्रीठाकुरजी के प्रत्येक श्रीअंग में रस जो घनीभूत है उसका आस्वादन व्रजभक्तों ने किया। तथा यहीं नहीं अपने भावात्मक मनोरथों से मथ कर अपने भावों के रस का रस पान श्रीठाकुरजी को कराया। भले वे गोलोक के नाथ हैं उन्हें गोकुलनाथ बना दिया। फिर भी कहीं नाथत्व में न्यूनता देखी तो सुरतनाथ बना कर प्रभु को सनाथ किया। इसीलिये छप्पन भोग में प्रथम नवनीत माखन आता है। क्योंकि छप्पन प्रकार की यूथ के भाव से तथा बहुविध व्रजभक्तों के, गोपीजनों के भाव से सामग्री सजती है, यह प्राचीन प्रकार है। सामग्री दूर-दूर बिराजती है सबकी अहम् अहमिकया प्रवृत्ति है। पहले मैं पहले मैं अतः सब के साथ में मनोरथ पूर्ण करने के लिए व्रजभक्तों का भाव माखन में घनीभूत है। उन के नित्य नूतन नव भाव को नीत अर्थात् श्री ठाकुरजी ने लिया है, नव, (भाव) नीत नवनीत इसलिये प्रथम माखनमिश्री आती है। माखन प्रथम अरोगने से सभी गोपीजनों के मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। सारासार विचार मतो करि श्रुति बिच गोधन लियो है निचोय, तहां नवनीत प्रकट पुरुषोत्तम सहज ही गोरस लियो है बिलोय। 'सरित इवार्णवे मधुनि लिल्युरशेषरसाः यह पुष्टिमार्ग की विशेषता है कि यह भक्ति रस पूर्ण को भी सम्पूर्ण बनाता है। रस तभी सरस होता है। भक्ति रस बन जाए। भक्तिरस ही रस को महारस के रूप में सरस बनाता है। पुष्टि महारस देन प्रकटे अतः इस महारस का आस्वादन सेवारस के बिना नहीं होता।

"शरणमन्त्र श्रवण सुनाइके पुरुषोत्तम कर गहाएरी।"

श्री महाप्रभुजी ने सर्व अर्थ स्वरूप प्रभु का दान दिया है। तभी यह भक्तों में सामर्थ्य आया कि जब श्रीगिरिराजजी की तलहटी में छोकर के नीचे श्री दामोदरदासजी हरसानीकी गोद में महाप्रभुजी पोढ़ रहे थे। वहां श्रीनाथजी पधारे। तब श्री दामोदरदासजी ने हाथ का इशारा देकर श्रीठाकुरजी को रोका-मना किया। क्योंकि श्रीठाकुरजी चंचल चपल हैं कहीं श्री महाप्रभुजी जाग न जायें। यह भक्तों का ही प्रबल बल है **नायमात्मा-बलः (भक्ति) हीनेन लभ्यः** के अनुसार महत् सामर्थ्य को त्रिलोकी के नाथ अखिल ब्रह्मांड की सत्ता को रोक दिया। इतने में आचार्यचरण जाग गये। दामोदरदासजी को पूछा कि तुम श्रीठाकुरजी को यहां आयवे सूं बरजे क्यों ? मना क्यों किया ? तब उन्होंने विनन्ती की कि महाराज आप जाग जाते। प्रभु तो चंचल हैं, यह सेवक का धर्म है '**सेवा हि सेवकधर्मः**' आप ने ही प्रभु का दान हमको दिया है। आपने अदेय दान दिया है। तो महाराज दान बड़ो के दाता ? 'हरखे ते सामाआविया श्री गोवर्धनउद्धरण' कितनी बड़ी भक्त की सामर्थ्य। भक्त बड़ा है भगवान् छोटे हैं। जो पहले होता वह बड़ा होता है। भतीजा पहले हुआ तो बाद में काका बना। पुत्र हुआ उसके बाद पिता बना। पहले पुत्र हुआ बाद में पिता बना। जो पहले होता है वह बड़ा होता है। पहले भक्त है तो बाद में भगवान् है। इस प्रकार यह पुष्टिमार्ग, ईश्वरमार्ग नहीं अपितु भक्तिमार्ग हैं भगवदीयों का मार्ग है। साधनदशा में जीव को श्रीठाकुरजी के हाथ में सौंपा जाता है।

"जे जन शरण आये अनुसरही ग्रही सौंपत श्रीगोवर्धननाथे।"

परन्तु ब्रह्म संबंध द्वारा समस्त आवरण दोष दूर करके फल दशा में जीव के हाथ में श्रीठाकुरजी सौंपे जाते हैं। "कर आवरण दूर निज जन के हाथ दिये पुरुषोत्तम।"

श्री महाप्रभुजी ने इतना बड़ा दान हमें दिया है। कुछ लोग ध्रुवदान करते हैं जैसे जनता जनार्दन के लिए नित्य उपयोग हेतु कुंआ, बोरिंग, नलकूप, धर्मशाला। कुछ लोग नित्य दान करते हैं। सदाव्रत प्याऊ ट्रस्ट। कुछ लोग काम्यदान करते हैं। स्वार्थ से या अपेक्षा से घूंस, उत्कोच देना या भगवान् को साधन बनाकर मानना चढ़ावा मनौति से काम निकालना। काम पड़ा तो भगवान को आव्हान करके बुला लिया। काम निकल गया तो विसर्जन करके बिदा कर दिया। अतिथि की कोई तिथि नहीं होती। उन्हें अतिथि बनाकर काम ले लेना आदि। कुछ लोग नैमित्तिक दान करते हैं जैसे ग्रहण में दान, पर्वदान, ग्रहों के लिए काम्य दान, गोदान कन्यादान एवं अमावस्या एवं अमावस्या चतुर्दशी पूर्णिमा आदि का। जिस समय राजा बलि ने वामन भगवान् को दान देने के लिये संकल्प करना चाहा। शुक्राचार्य ने इस में विघ्न डाल दिया। आखिर कुशा से उनका नेत्र बिंध जाने से उन्हें शुक्राचार्य होकर रहना पड़ा। जब राजा

बलि ने संकल्प छोड़ दिया। कि जो भी मांगों मैं दूंगा। तब भगवान् 'यस्यानुग्रहमिच्छामि हरिष्ये तद्धनं शनैः इस न्याय से अनुग्रह करने हेतु तीन पैर, चरण पृथ्वी मांग कर उनका सर्वस्व हरण कर लिया। वामन भगवान् ने दो चरण में ही सारी पृथ्वी एवं लोकादि नाप लिया। फिर बोले तीसरा चरण कहां रखूं। तब बलि ने कहा 'पदं तृतीय कुरु शीर्ष्णि मे निजम्।' तृतीय चरणारविन्द आप मेरे मस्तक पर रखेंगे। राजा बलि ने अपना सर्वस्व सब कुछ दे दिया था। उनके पास केवल उनका सत्व ही बचा था। वे स्वयं खुद ही बचे थे। उन्होंने सब का समर्पण नहीं किया था। तुम से तुम न छिन जाए हम से हम न छिन जाए, अहं से मैं न छिन जाए तब तक समर्पण अधूरा है उस अहं से मैं छिन जाना चाहिये तभी तो दासोहं सिद्ध होगा। अतः जैसे उन्होंने अपने को आत्म समर्पित किया वैसे ही भगवान् वामनजी का विशाल चरणारविन्द उनके मस्तक पर आते आते एकदम छोटा हो गया। तृतीय चरणारविन्द बलि राजा के मस्तक पर रखा। यह भगवान् का चरण चिह्न ही उर्ध्वपुण्ड्र तिलक है। तिलक भगवान् का चरणारविन्द है। इसे ही बलि दान कहा जाता है। श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी के चरणारविन्द को धारण करते हैं तथा वैष्णवजन श्रीठाकुरजी के चरणारविन्द को धारण करते हैं। वामनजी को राजा ने और सर्वस्व दान देने में स्वयं असमर्थ पाया तो स्वयं को ही समर्पित कर दिया। इसीलिये कहा है -''बलि राजा को समर्पण सांचो'' अतः दान बड़ो के दाता ? वामनो ह विष्णुरास् इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्, विष्णुः समूढमस्य पांसुरे। शतपथ ब्राह्मण १-२-५-५ मध्ये वामनमासीनं विश्वेदेवा उपासते (कठवल्ली ५ श्रुति ३) त्रीणि पादा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्य (ऋक् १-२२-१८) कोई काम्यदान देता है, किसी ने ध्रुव दान दिया, किसी ने नित्य दान दिया राजा बलि ने बलि दान दिया। भगवान् ने भक्तों को अभय दान दिया। परन्तु महाप्रभुजी वल्लभाचार्यजी ने तो अदेय दान दिया। श्रीठाकुरजी को ही हमें सौंप दिया है। अतः दान बड़ों के दाता ? ''अदेयदानदक्षश्च महोदार चरित्रवान्।' कितने उदार नहीं महाउदार है आपश्री। यह वैष्णवों का परम सौभाग्य है कि ऐसे निधि उन ने पाए।

वैष्णव महाप्रभुजी की नादसृष्टि, नादकुल है तथा वल्लभकुल बिन्दुसृष्टि है। वैष्णव का मन विषमता भरा नहीं होता है, विविधता भरा होता है। जिस प्रकार बादल मेघ का खारा जल लेकर मीठा जल करके बरसाते हैं उसी प्रकार वैष्णव का संग करने से समूल दोष निर्मल हो जाते हैं। ''वैष्णवत्वं हि सहजम्'' वैष्णवता सहजता का रूप है। वैष्णव का व्यवहार सरल, सहज, सौम्यतापूर्ण होता है। जिस प्रकार जल की शीतलता सहज है, नैसर्गिक है, उसे

चाहे कितना भी गरम करो फिर ठंडा हो जाएगा। जिस प्रकार जलचर सहज रूप से तैरते हैं पक्षी का उड़ना कितना सहज है, सब उतना ही सहज वैष्णव का व्यवहार है वहीं श्रीठाकुरजी को प्रिय है। जो ऐसा नहीं है वह वैष्णव नहीं बल्कि वैष्णवाभास है। वैष्णव का यश तो पद्मपुराण, ब्रह्मवैवर्तादि में वर्णित है। ''यः कश्चिद् लोके मिथ्याचारोप्यनाश्रमी'' ध्यायन्तेवैष्णवाः शश्वत् गोविन्दपदपंकजम्। ध्यायते तांश्च गोविंदः शश्वत्तेषां च सन्निधौ। सुदर्शनं संन्नियोज्य भक्तानां रक्षणाय च। तथापि न हि निश्चिन्तो यतिष्टेद् भक्त संन्निधौ। (ब्रह्मखंड ११, ४४, ४५) अहं प्राणा वैष्णवानां मम प्राणाश्च वैष्णवाः। तानेज दृष्टि यो मूढ़ो ममासूनां च हिंसकः। पुत्रान् पौत्रान् कलत्रांश्च राज्यं लक्ष्मी विहाय च। ध्ययान्ते सततं ये मां को मे तेभ्यः परं प्रियः। ये द्विषन्ति च मद् भक्तान् प्राणानामधिकं प्रियान्। तेषां शास्ता त्वहं तूर्णं परत्र निरयं चिरम्। प्रभवोहं च सर्वेषामीश्वरः परिपालकः न च व्यापी स्वतन्त्रोहं भक्ताधीनो दिवानिशम्। ब्रह्मवैवर्तपुराण कृष्णजन्म खंड। अवैष्णववाद् द्विजाद्विप्रः चाण्डालो वैष्णवो वरः सगणः श्वपचो मुक्तोब्राह्मणो नरकं व्रजेत्। (ब्रह्मखंड ११, ३९) अहं भक्त पराधीनो ह्यस्वतन्त्र इव द्विज।'' अतः वैष्णव का स्वरूप अत्यन्त अलौकिक है। श्रीठाकुरजी इन के वश में है ''नेहाभिक्रम नाशोस्ति प्रत्यवायो न विद्यते। स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्'' (गीता) ''पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते। न हि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति। वैष्णव हो जाना, ब्रह्मसंबंध ग्रहण कर लेना अपने आप में पूर्णता है। भगवान् तो आज्ञा करते हैं थोड़ा सा किया हुआ धर्म महान् भय से रक्षा करता है। उसका कभी नाश नहीं होता। जो थोड़ा सा भी कल्याणकारी कार्य कर लेता है उसकी कभी दुर्गति नहीं होती। ''अपि चेत्सुदुराचारो भजते मां अनन्य भाक्'' जो दुराचारी भी हुआ हो और अनन्य भाव से वैष्णव होकर जो मेरा भजन करता है वह ''साधुरेव स मन्तव्यः सम्यक् व्यवसितो हि सः' (गीता)।

वह वैष्णव है इसलिए भगवदीयों के साथ ''अतःस्थेयं हरिस्थाने तदीयैःसह तत्परैः रहकर ''निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथातादृशैः जनैः' सत्संग करना चाहिये। चौरासी, दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता तथा इन में आए हुए चरित्र श्रीठाकुरजी तथा महाप्रभुजी, श्री गुसांईजी के चरित्र उपदेश सिद्धांत का सतत मनन चिन्तन पठन करना चाहिये। इससे हृदय निर्मल होता है। संसार का आवेश छूटता है। प्रमाद जाता है, विषाद जाता है, प्रभु का कृपा प्रसाद मिलता है। ऐसा नहीं सोचना चाहिये कि रोज रोज या हर बार पुनरावृत्ति (रिपिटेशन) क्यों किया जाए। देखिये हम रोज उसी घर में जाते हैं। उन्हीं पत्नी बच्चों का मुँह देखते हैं कांचमें वही

अपना चेहरा देखते हैं जो हम बीसों सालों से देखते आए हैं। वहीं भोजन करते हैं जो हम वर्षों से करते आए हैं। क्या यह रिपिटेशन है ? नहीं। परन्तु प्रत्येक नित्य नूतन अनुभूति लिये हुए होता है हमारा व्यवहार। यह तो बड़ा आनन्ददायक है। बार-बार आवृत्ति से अनुभव होता है। आवृत्तिः सर्वशास्त्रानां बोधादपि गरीयसी।

इसी प्रकार वैष्णवों की स्वधर्म सेवा परायण होना चाहिये। केवल कीर्तन या पठन-पाठन प्रभु के गुणगान से ही प्रभु संतुष्ट नहीं होते। ''सेव्य-संतोषजनिका क्रिया सेवा'' सेवा से प्रभु संतुष्ट होते हैं। कोई पत्नी अपने पति की सेवा न करे, उसके गुणगान ही करती रहे कि आप कितने व्यवहारिक हैं, कितने सुंदर हैं, कितने विद्वान् हैं यह कहे मगर सेवा न करे तो क्या पति संतुष्ट होगा ? इसी प्रकार ''स्वधर्मकर्मविमुखा-कृष्ण कृष्णेतिरागिणः। ते हरद्वेषिणो ज्ञेया धर्मार्थं जन्म यध्दरेः (विष्णु पुराण)। जो कृष्ण-कृष्ण गुणगान करते रहते हैं, परन्तु सेवा स्वधर्म से विमुख रहते हैं वे हरि के द्वेषी हैं। अतः सेवा से सेव्य का संतोष मिलता है यही वैष्णव का स्वधर्म है।

पुष्टिमार्ग आत्मधर्म है परमात्मा के द्वारा आत्मा का पोषण देहेन्द्रियादि सहित होता है। मेरे विचार से जैसे माँ बालक का पोषण स्पून फीडिंग SPOON FEEDING से, स्तनपान BREAST FEEDING से करती है उसी प्रकार परमात्मा आत्मा का पोषण करता है अर्थात् पुष्टिमार्ग में SOAL FEEDING आत्मपोषण होता है यह SOALONAL APPROCH पुष्टिमार्ग या भारतीय शास्त्रीय संगीत में ही है। साधन अवस्था जैसे डाक्टर साइकोथेरौपी स्पीच थैरोपी फीजियोथेरौपी या भिन्न-भिन्न थेरोपी से रोगी को स्वास्थ्य लाभ कराता है। वैसे ही आत्म निवेदन सोल थेरोपी है।

अतः पुष्टि के दिव्य सिद्धांतों को अपनाइये एवं अपने जीवन को उज्ज्वल तथा धन्य बनाइये।

शुभाशीर्वाद पूर्वक मैं विराम लेता हूं
आचार्य गोस्वामी
श्री गोकुलोत्सवजी महाराजश्री इन्दौर।

॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

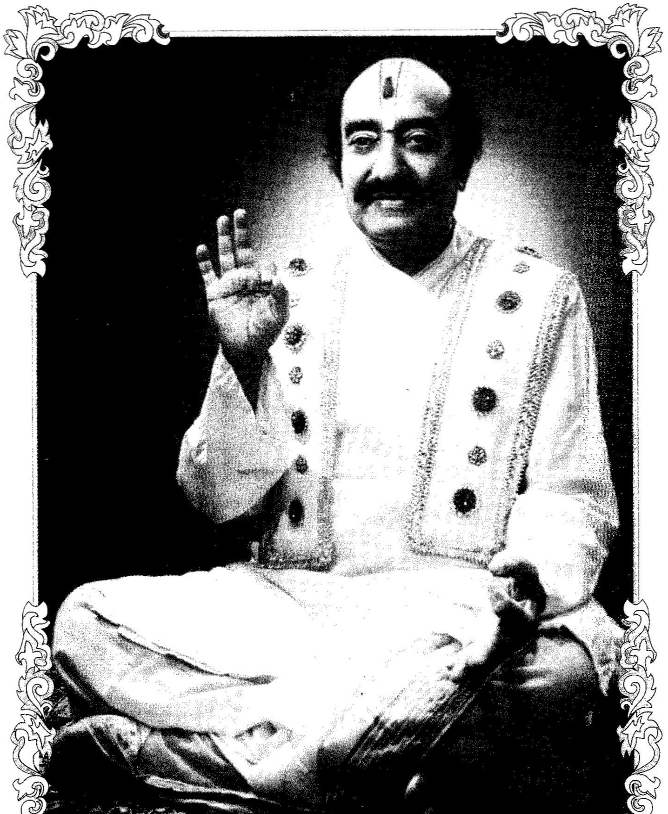

पू.पा. गोस्वामी श्री १०८ श्री गोकुलोत्सवजी महाराजश्री

जन्म वि.सं. २०१२ पौष शुक्ल पंचमी

|| श्री कृष्णाय नमः ||

|| श्री गोवर्धननाथो विजयते ||

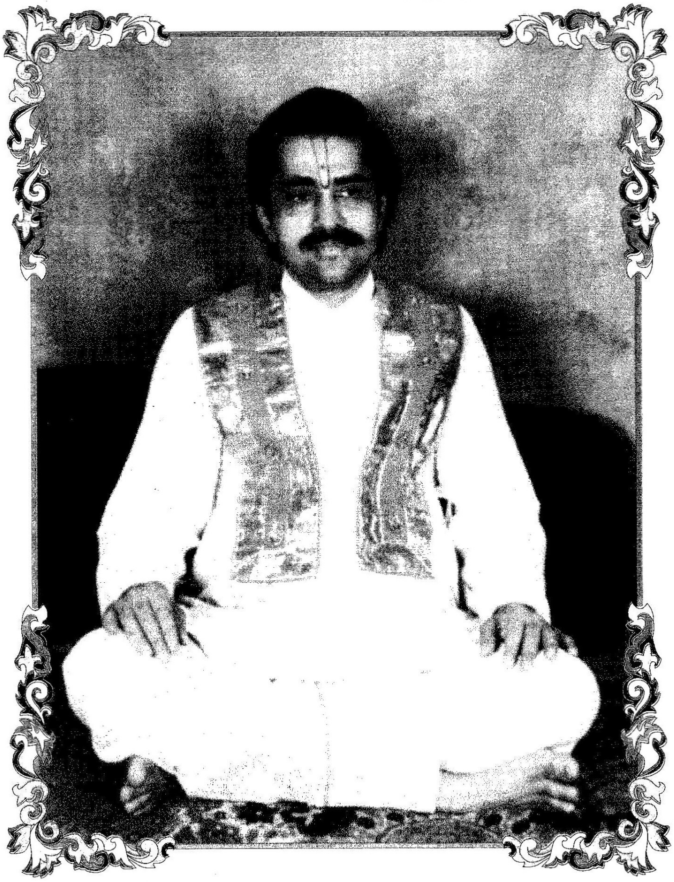

पू.पा. गोस्वामी श्री १०८ श्री देवकीनंदनजी महाराजश्री

जन्म वि.सं. २०१४ आषाढ शुक्ल चतुर्दशी

पू.पा.गो. श्री देवकीनंदनजी महाराजश्री के शुभाशीर्वाद

मुझे यह जानकर अत्यंत ही हर्ष हो रहा है कि वैष्णव मित्र मण्डल, इन्दौर ने २५२ वैष्णवन की वार्ता (तीन जन्म की भावना सहित) का प्रकाशन-कार्य अपने हाथों में लिया है जो पूरे वैष्णव-समाज के लिए बहुत ही उपादेय और स्तुत्य प्रयास है। इस उपयोगी ग्रन्थ की पिछले कई वर्षों से मांग की जा रही थी। क्योंकि हिन्दी भाषा में इसकी उपलब्धि नहीं हो रही थी अब इस अभाव की पूर्ति भी प्रकाशन से हो जायेगी और नित्य सत्संगियों को इनके तीनों खण्ड सहज रूप में प्राप्त हो जायेंगे।

ब्रजभाषा का अपना स्वतंत्र महत्त्व रहा है और इनके साथ वार्ताओं के माध्यम से पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणाली, भाव-भावना तथा सिद्धान्तों का सूक्ष्मतर ज्ञान भी वैष्णव समाज को सरलता से होता रहेगा। मेरी शुभ कामनाओं के साथ मेरा शुभाशीर्वाद है।

वि.सं. २०४८
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा

(हस्ताक्षर)
गोस्वामी देवकीनन्दन महाराज

ग्रंथ में प्राप्ति पुष्टि - भक्ति के अनुकरणीय और मननीय सूत्रों की सूची

द्वितीय खण्ड

संख्या	सूत्रा	वार्ता पृष्ठ
१५०	'श्रीयमुनाजी ब्रजलीलाकी अधिष्ठात्री हैं। ब्रजलीला कौ सौभाग्य तो इनही की कृपा तें प्राप्त होत हैं।	१
१५१	'कदाचित जीवकों धीरज न रहे और वह प्रार्थना करें तोऊ श्रीगोवर्द्धननाथजी सों करे।	३
१५२	'गोकुल-जो भक्तकुल-तिनके देवता श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं। तातें उनको आश्रय करनो, और कौ आश्रय, सर्वथा न करनो।'	३
१५३	'गोपीतलैया पे पुष्टि स्वरूप के आवेश सों बेणुनाद कियो है।'	७
१५४	'वैष्णव कों श्रीगुसांईजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी में भिन्न बुद्धि सर्वथा न करनी, स्वामिसेवक भाव प्रगट करनार्थ आप दोई रूप धरि लीला करत हैं।	९
१५५	'शुद्ध मनपूर्वक जो जीव आत्मनिवेदन करत हैं और गुरु जो शुद्ध मनपूर्वक निवेदन करावत है तिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी कृपा तें दृढ़ आश्रय तत्काल सिद्ध होत हैं। और अलौकिक हू दृढ़ होई। और पुष्टिमार्ग की लीला कौ दान होई।'	१४
१५६	'श्रीआचार्यजी आप साक्षात् स्वामिनी रूप हैं। सो श्रीस्वामिनीजी की कृपा बिनु लीला संबंधी दान न होई।'	१६
१५७	जाको श्री आचार्यजी की दृढ़ आश्रय है तासों काल हू डरपत है। हरिजन सदा निर्भय रहते हैं।'	२८
१५८	'पुष्टिमार्ग में सब कार्य कामना रहित व्है करिवे कौ कह्यो है।'	२९
१५९	'पुष्टिमार्ग में पतिव्रता धर्म की नाई जो कोऊ वैष्णव ठाकुर की सेवा करत है ताको स्वामिनीवत् सौभाग्य की प्राप्ति होत है।'	३२
१६०	वैष्णव प्रीतिपूर्वक जा ठौर जैसे प्रकार सों श्रीठाकुरजी कों भोग धरत है ता ठौर तैसे प्रकार सो श्री ठाकुरजी आप श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी की का'नि सो साक्षात् श्रीमुख में अंगीकार करते हैं। तातें वैष्णव कों उत्तम वस्तू जा भांति बनि आवे जा भांति श्रीठाकुरजी कों समर्पनी।'	३४
१६१	'तादृशी वैष्णव कों कछू वस्तु की अपेक्षा होइ नाहीं और जो होई तो इनमें भगवद् कृति जाननी, जीवन की उपर कृपा करनार्थ है।'	४२
१६२	'महादेव मर्यादा भक्त है।'	४८
१६३	'वैष्णव के कहे कौ विश्वास राखनौ, वैष्णव उपरांत और कोई पदार्थ नाही।'	४९
१६४	'गुरु कौ कार्य निष्काम व्है भक्तिभाव संयुक्त करनो।'	५१
१६५	'जाकों दृढ़ आश्रय होई ताकों जो चाहे सोई होई, जाकों दृढ़ आश्रय नाहीं ताकों पश्चाताप क्लेश होई।'	५२

संख्या	सूत्रा	वार्ता पृष्ठ
१६६	'दंडवती सिला हरिदासवर्य के चरण हैं।'	५७
१६७	'सामर्थ्य होंई और गुरु (के यहां) को (प्रसाद) लेई सो बाधक व्है।'	७१
१६८	'प्रभुन तें सांचो रहनो।'	७५
१६९	'या मार्ग में श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा सानिध्य रहत है।'	७९
१७०	'पुष्टिमार्ग की सेवा विरह-आतुरता की है। विरह-आतुरता बिना अनुभव न होई। विरह-आतुरता कार लोक वेद के धर्म विस्मृत होत है। हृदय में प्रभु कौ आवेस होत है।'	८२
१७१	'अहंकार भगवद्धर्म में बाधक है।'	८३
१७२	'वैष्णव निवेदन कौ सदा सर्वदा स्मरण करे, अपने द्रव्यादिक कौ और ठौर खर्च करे नाहीं। अन्य विनियोग होन न दे।'	८६
१७३	'अनन्यता करि भक्त कों तन्मयता होय है। और भक्ति मार्ग में लीला भेद सों स्वरूप भेद है।'	८८
१७४	'ज्ञानमार्ग में भक्तिमार्ग विलक्षण है।'	८८
१७५	'सर्वात्मभाव सिद्ध होई तब पुष्टि-मर्यादा बुद्धि रहत नाहीं सर्वत्र भावात्मा को ही अनुभव होत है।'	८९
१७६	'भगवद्धर्म आगें लौकिक वैदिक तुच्छ करि जानने।'	९४
१७७	'कोऊ बुरो करे ताहू कौ भलो करनो।'	१०१
१७८	'श्रीगुसांईजी की बानी स्वरूपात्मक है, जो कोऊ जा भाव सों वाकों अनुसरत है ताको तेसें फलित होत है।'	११०
१७९	'भगवदीय वैष्णव के लक्षण- (१) सदा सब के उपर कृपा राखे। (२) कोई भगवदीय वैष्णव के ऊपर क्रोध नाहीं करे। द्रौह नाहीं करनो। (३) कोई भगवदीय वैष्णव दुर्वचन बोले तो अपनो अपराध माने। तिनके बचन सुनि के मन में विगारे नाहीं। (४) मधुरे बचन बोले। (५) वैष्णव सों सांचो रहे। (६) निर्मल बुद्धि राखे। (७) ईन्द्रियजीत रहे। (८) महाप्रसाद मात्र को अंगीकार करे। (९) अपने अर्थ उधम न करे। (१०) बहिर्मुख लोग चर्चा करे तहा मौन रहे। (११) धीरज कबहू न छोडे।'	१२९
१८०	'भगवद्वार्ता किये तें श्रीठाकुरजी आप सुखी होत है।'	१३५
१८१	'जीवको अपने रंच दोष कों हू बोहोत बड़ो करि जाननो तो दीनता होई।'	१३९
१८२	'सेवा भयप्रीति संयुक्त करनी, गुरुन पै दोष बुद्धि सर्वथा न करनी।'	१४०
१८३	'पुष्टिमार्ग में जा भांति श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न रहे सोई कर्तव्य है पुष्टिमार्ग कौ सोई धर्म है।'	१५३
१८४	'पुष्टिमार्ग में ठाकुरजी जीवकौ जैसो स्वभाव होत है ता भांति वाकों अंगीकार करत है।'	१५६
१८५	'गुरुन के आरोगे पहेले सेवक कों महाप्रसाद लेना सर्वथा उचित नाहीं।'	१५८
१८६	'ठाकुर तें गुरुन की सेवा दुर्लभ है।'	१६०
१८७	'रात्रि को घर में श्रीठाकुरजी कों अकेले न छोरने।'	१६०
१८८	'वैष्णव की सेवा अत्यंत दुर्लभ है।'	१६१

संख्या	सूत्रा	वार्ता पृष्ठ
१८९	'गुरुन के आगे झूंठ बोलनो नाहीं, काहू बात कौ दुराव करनो नाही।'	१६८
१९०	'श्रद्धापूर्वक सुद्ध बुद्धि सों सर्वोत्तम स्तोत्र को पाठ करे तो वाकौ मन स्थिर होई, उत्तम फल की प्राप्ति होई।'	१६८
१९१	'शीतल जल सों घर में न्हानो दोष है।'	१७०
१९२	'प्रभुन कौ द्रव्य अपने कार्य में नाही लावनो। लावे तो बहिर्मुखता प्राप्त होइ,'	१९५
१९३	'या मार्ग में श्रीआचार्यजी ने चार प्रमान माने हैं, वेद, गीता, ब्रह्मसूत्र, श्रीभागवत।'	२१२
१९४	'वाणीद्वारा मिलाप होत है। तातें अन्य सो वार्तालाप करे तो अन्य संबंध होई।'	२१८
१९५	'पुष्टिजीव को लोकवेद रीति राखिवे कों तीर्थादिक सब करने परि उनके फल की इच्छा राखनो नाहीं।	२२२
१९६	'वैष्णव कों टेक ही बड़ो पदार्थ है तातें भगवद्धर्म सिद्ध होई।'	२२४
१९७	'सांचे स्नेही तो एक नंदनंदन ही है और सब मतलब के है।'	२४०
१९८	'श्रीआचार्यजी की मर्यादा कौ पालन करे तें श्रीठाकुरजी प्रसन्न होत है।'	२५७
१९९	'वैष्णव कों भगवत्सेवा बिना जीवनो व्यर्थ है।'	२६२
२००	'सेवा में संयोग-विप्रयोग दोऊ भाव राखने तातें रूचि बढे।'	२६८
२०१	'जीव कों जा भांति बनि आवे ता भांति गुरु की सेवा करनी।'	२७२
२०२	'वैष्णवको महिनत करि कै द्रव्य कमावनो। महिनत कौ द्रव्य प्रभु अंगीकार करत है।'	२८१
२०३	'काहू के यहां प्रसाद ले तो वाके घर की कछू टहल करि कै ले। नाँतरु दासपनो रहे नाहीं।'	२८१
२०४	'अविश्वास आसुर धर्म है।'	३०४
२०५	'श्रीगुसांईजी कौ नाम फलरूप है। जाकों वे कृपा करि दान करें वाही को वा नामकौ अधिकार प्राप्त होई।'	३४९
२०६	'भगवद्वार्ता स्वरूपात्मक है। प्रीतिपूर्वक धारण किये तें देह के अध्यास सब छूटि जात है।'	३५३
२०७	'प्रभु द्रव्य के आधीन नाहीं।'	३५६
२०८	'भगवदीय वैष्णव में जाति-बुद्धि सर्वथा नाहीं करनी।'	३६३
२०९	'भगवत्सेवा में जो-नित्यनौतन सामग्री सिंगार उत्साहपूर्वक करने।'	३७९
२१०	'झारि भरवि के बराबरि कोऊ फल नाहीं।'	३८२
२११	'भगवदीय की परीक्षा करे ते वाकों बाधक होई।'	३८८
२१२	'गोवर्द्धन पर्वत महा अलौकिक हैं, उनमें सकल लीला विद्यमान है, तातें उनके ऊपर पांव नाहीं धरनो। भगवत्सेवा, दर्शनार्थ ऊपर चढनो परे तो हू दंडवत् करि पाछें गेल गेल जानो। और ठौर पांव नाहीं धरनो। नांतर जीव लीला तें बाहिर परे।'	३९०
२१३	'पुष्टिमार्ग में स्वरूप भावना, लीला भावना, भाव भावना मुख्य हैं। सो निरंतर करी। तातें मन अलौकिक होई।'	३९९
२१४	'पुष्टिमार्ग में प्रभु जीवकी कृति देखत नाही। शरण आये को छोडत नाहीं।'	४०४
२१५	'अनप्रसादी वस्तू-सामग्री द्रव्यादिक सों वैष्णव को सर्वथा सावधान रहनो।'	४१५
२१६	'नित्य एक वैष्णव को महाप्रसाद लिवाय के पाछें प्रसाद लेनो। यह वैष्णव कौ धर्म है।'	४२३

२५२ वैष्णवों के आधिदैविक स्वरूपों की सूची (द्वितीय खण्ड)

वा.सं.	नाम	स्वरूप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुणवैष्णव	८४ वा.सं.
८५	एक गूजरके बेटाकी	बहू परमेसुरी	बिमला कौ	तामस भाव	पद्मा रावल	२९
८६	एक क्षत्री चंदनवारो	भ्रमिता	बिमला कौ	राजस भाव	पद्मा रावल	२९
८७	गोपालदास भीतरिया	सहोदरी	बिमला कौ	सात्विक भाव	पद्मा रावल	२९
८८	एक क्षत्री आत्मनिवेदनवारी	कृष्णाप्रिया	गुनचूडा कौ	सात्विक भाव	पुरुषोत्तम जोशी	२९
८९	खंडन सनाढ्य ब्राह्मन	कृशोदरी	गुनचूडा कौ	राजस भाव	पुरुषोत्तम जोशी	३०
९०	एक कुनबी, प्रेतवारो	सत्यव्रता	गूनचूडा कौ	तामस भाव	पुरुषोत्तम जोशी	३०
९१	एक साहूकार मथुरा कौ	मनोरूपा	छबिसिंधि कौ	राजस भाव	जगन्नाथ जोशी की माता	३१
	(१-२) स्त्री-पुरुष	रति-गति(यशोदा की सखी)				
९२	एक बनिया, गुजरात कौ	आनंददायिनी	छबिसिंधि कौ	तामस भाव	जगन्नाथ जोशी की माता	३१
	(१) बेटी	सुलोचना (आनंददायिनी की सखी)				
९३	तीन तुंबावारौ विरक्त	जयश्री	छबिसिंधि कौ	सात्विक भाव	जगन्नाथ जोशी की माता	३१
९४	परमानंद सोनी	चंद्रिका	नागवेलिकाकौ	राजस भाव	राणा व्यास	३२
९५	रामदास खंभाइच के	कामेसुरी	नागवेलिकाकौ	सात्विक भाव	राणा व्यास	३२
९६	रेंडा उदंवर ब्राह्मण	संगिनी	नागवेलिकाकौ	तामस भाव	राणा व्यास	३२
	(१) डोकरी	श्यामा (श्रीचंद्रावलीजी की सखी)				
९७	स्त्री-पुरुष, साडी बेची	रामबाला	सुभगा कौ	सात्विक भाव	रामदास साँचोरा	३३
	(१) स्त्री	श्यामबाला				
९८	अजब कुंवरि	रूप-आधिनी	सुभगा कौ	राजस भाव	रामदास साँचोरा	३३
९९	एक ब्राह्मन,जनेऊ तोरी	आतुरी	सुभगा कौ	तामस भाव	रामदास साँचोरा	३३
१००	एक कुनबी	सत्या	तन्मध्या कौ	सात्विक भाव	गोविंददुबे	३४
१०१	देवा कुनबी	रतिशूरि	तन्मध्या कौ	राजस भाव	गोविंददुबे	३४
१०२	एक वैष्णव की बेटी	कृष्णानुचरी	तन्मध्या कौ	तामस भाव	गोविन्ददुबे	३४
१०३	दोई भाई साँचोरा,	वैष्णवी	कुंजरी कौ	सात्विक भाव	राजादुबे	३५
	(१) छोटो	वल्लभा (श्रीयशोदाजी की सखी)				
१०४	एक राजा	गोरोचनी	कुंजरी कौ	राजस भाव	राजादुबे	३५
१०५	स्त्री-पुरुष प्रयाग के	छाया-माया	कुंजरी कौ	तामस भाव	राजादुबे	३५
१०६	एक ब्रजवासी, परे वारो	रेली गोप	सुसीला कौ	तामस भाव	उत्तमश्लोकदास	३६
१०७	जन-भगवानदास	जलतरंगिनी	सुशीला कौ	राजस भाव	उत्तमश्लोकदास	३६
	(१) भगवानदास	एकतारी				

वा.सं.	नाम	स्वरूप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुणवैष्णव	८४ वा.सं.
१०८	कल्यानभट्ट	मधुरिमा	सुशीला कौ	सात्विक भाव	उत्तमश्लोकदास	३६
	(१) देवका	देवका (सुशीला की सखी)				
१०९	दोई भाई पटेल, राजनगर के	कांची, कामना	मैना कौ	सात्विक भाव	ईश्वरदुबे	३७
११०	एक ब्राह्मनी, अडेल की	अनन्या	मैना कौ	तामस भाव	ईश्वरदुबे	३७
१११	मा-बेटा	प्यारी, दुलारी	मैना कौ	राजस भाव	ईश्वरदुबे	३७
११२	एक चोर दिल्ली कौ	तुरंगा गोप	मनसुखा कौ	तामस भाव	वासुदेवदास छकड़ा	३८
११३	तानसेन	दीपा गोप	मनसुखा कौ	राजस भाव	वासुदेवदास छकड़ा	३८
११४	एक दलाल	स्नेहलता	मनसुखा कौ	सात्विकभाव	वासुदेवदास छकड़ा	३८
११५	वेणीदास दामोदरदास	वीरा-धीरा	सौनसेनी कौ	सात्विक भाव	बाबा वेनु	३९
११६	जनार्दनदास चोपड़ा क्षत्री	चपला	सौरसेनी कौ	राजस भाव	बाबा वेनु	३९
११७	ताराचंद	वचन-चातरी	सौनसेनी कौ	तामस भाव	बाबा वेनु	३९
११८	एक म्लेच्छ महावन रहतो	गोहनी	माधुरी कौ	तामस भाव	जगतानंद	४०
११९	एक क्षत्रानी आगरे की	व्रजांगना	माधुरी कौ	राजस भाव	जगतानंद	४०
१२०	दोइ भील	पुलिंदीनीके यूथ में	माधुरी कौ	सात्विक भाव	जगतानंद	४०
१२१	एक छोहरा सकरवा कौ	मनोरूपा	नागरी कौ	तामसभाव	आनंददास	४१
१२२	एक सन्यासी कासी कौ	महामाया	नागरी कौ	सात्विक भाव	आनंददास	४१
१२३	आसकरन	विकला	नागरी कौ	राजस भाव	आनंददास	४१
१२४	मोची	ब्रह्मानंदिनी	शशीकला कौ	सात्विक भाव	एक ब्राह्मणी अडेलकी	४२
१२५	एक सेठ आगरे को	उल्लासिनी	शशीकला कौ	राजस भाव	एक ब्राह्मणी अडेलकी	४२
१२६	एक वैष्णव गुजरात कौ	दोहिनी	शशीकला कौ	तामसभाव	एक ब्राह्मणी अडेल की	४२
१२७	दामोदर झा	इंद्रप्रभा	नीला कौ	तामस भाव	एक क्षत्रानी प्रयाग की	४३
१२८	मधुसूदनदास क्षत्री	वीरबाला	नीला कौ	तामस भाव	एक क्षत्रानी प्रयाग की	४३
१२९	एक राजा पूर्व कौ	मनमोदिनी	नीला कौ	राजस भाव	एक क्षत्रानी प्रयाग की	४३
१३०	मुरारी आचार्य	हंसिनी	नंदा कौ	सात्विकभाव	गोरजा	४४
१३१	एक बनिया राजनगरको	अनसूया	नंदा कौ	तामस भाव	गोरजा	४४
१३२	एक क्षत्री पूरव कौ	गायत्री	नंदा कौ	राजस भाव	गोरजा	४४
१३३	दोई भाई पटेल	भक्तिनि	व्रजमंगला कौ	तामसभाव	कृष्णादासी	४५
	(१) छोटाभाई	आवेसिनी				
१३४	एकविरक्तक्षत्रानीवारौ	विरहात्मिका	व्रजमंगला कौ	सात्विकभाव	कृष्णादासी	४५
१३५	एक क्षत्री आगरे कौ	नागर-रंजनी	व्रजमंगला	राजस भाव	कृष्णादासी	४५
१३६	मेहा धीमर	मंजिरा	सुमन्दिरा कौ	तामस भाव	बूलामिश्र	४६
१३७	हृषिकेस	मन-आतुरी	सुमन्दिरा कौ	राजस भाव	बूलामिश्र	४६
१३८	एक पटेल	ब्रह्मविद्या	समन्दिरा कौ	सात्विक भाव	बूलामिश्र	४६

वा.सं.	नाम	स्वरूप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुणवैष्णव	८४ वा.सं.
१३९	स्त्री-पुरुष राजनगर के	दीनवत्सला	कंदर्पा कौ	सात्विक भाव	रामदास मेवाड़ा	४७
	(१) स्त्री	प्रेमवत्सला				
१४०	हरिदास मोहनदास	श्रवनप्रिया	कंदर्पा	तामस भाव	रामदास मेवाड़ा	४७
	(१-२) हरिदासकी स्त्री और पुत्र	'प्रीतिपूर्वा 'भावरूपा'				
	(३) मोहनदास	प्रानवल्लभा				
१४१	देवजीभाई	गुनप्रिया	कंदर्पा	राजसभाव	रामदास मेवाड़ा	४७
१४२	एक डोकरी दांतिनवारी	भावप्रवीना	मधुएनी कौ	सात्विक भाव	रामदास चौहान	४८
१४३	स्त्री-पुरुष मथुरा के	देहनी-गेहनी	मधुएनी कौ	तामसभाव	रामदास चौहान	४८
१४४	एक डोकरी आठ बेर कालको फेर्यो	अभयपूर्णा	मधुएनी कौ	राजस भाव	रामदास चौहान	४८
१४५	एक विरक्त गुजरात कौ	पेंचुगोप	तमचर कौ	सात्विक भाव	रामानन्द पंडित	४९
१४६	एक नाऊ गुजरात कौ	अनन्या	तमचर कौ	तामस भाव	रामानन्द पंडित	४९
१४७	एक पठान कौ बेटा	रासो	तमचर कौ	राजस भाव	रामानन्द पंडित	४९
१४८	स्त्री-पुरुषकनोजियाब्राह्मण	मृदुभाषिनी	कमला कौ	सात्विक भाव	विष्णुदास छीपा	५०
	(१) स्त्री	कोमलांगी				
१४९	साहूकार के बेटा की बहू	नवोढा	कमला कौ	तामस भाव	विष्णुदास छीपा	५०
१५०	उद्धव त्रवाडी	रेणुका	कमला कौ	राजसभाव	विष्णुदास छीपा	५०
१५१	सीताबाई अचलवाई	गोवर्द्धनी	ईश्वरी कौ	तामस भाव	जीवनदास क्षत्री	५१
	(१) अचलबाई	शीला				
१५२	श्रोता-वक्ता	श्रवनमाधुरी	ईश्वर कौ	सात्विकभाव	जीवनदास क्षत्री	५१
	(१) वक्ता	वचनमाधुरी				
१५३	एक कायस्थ आगरे कौ	दर्शनातुरी	ईश्वर कौ	राजस भाव	जीवनदास क्षत्री	५१
१५४	एक ब्रजबासी	रोहितगोप	सुगंधिनी कौ	तामस भाव	भगवानदास सारस्वत	५२
	(१) मोची बनिया	कालिका				
	(२) ब्राह्मण	संसया (कालिका की सखी)				
१५५	एक बनिया	रसावेसिनी	सुगंधिनी कौ	राजस भाव	भगवानदास सारस्वत	५२
	(१) स्त्री,	सरसावेसनी				
	(२) ब्राह्मण	प्रकासिनी	(रसावेसिनी की सखी)			
	(३) ब्राह्मन की सखी	विलासिनी				
१५६	बीनकार	वीणा	सुगंधिनी कौ	सात्विक भाव	भगवानदास सारस्वत	५२
१५७	प्रेमजी लुहाणा	प्रेमप्रकाशिका	सुंदरीकौ	राजस भाव	भगवानदास साँचोरा	५३
१५८	वृंदावनदास	आराधिका	सुंदरीकौ	तामस भाव	भगवानदास साँचौरा	५३
	(१) छबीलदास	प्रबोधिका				

वा.सं.	नाम	स्वरूप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुणवैष्णव	८४ वा.सं.
१५९	स्त्री-पुरुष (१) पुरुष	कलसिका, कर्णिका	सुंदरीकौ	सात्विक भाव	भगवानदास साँचौरा	५३
१६०	एक भगवदीय (१) तादृशी	कमलाक्षी हिरणाक्षी	मधुराकौ	राजस भाव	अच्युतदास सनोढिया	५४
१६१	एकवैष्णवगिरिराजवारौ	मुक्ता	मधुराकौ	तामस भाव	अच्युतदास सनोढिया	५४
१६२	एक विरक्त ब्राह्मण	भावनिपूना	मधुराकौ	सात्विक भाव	अच्युतदास सनोढिया	५४
१६३	एक क्षत्री पूर्व को	कीरति	मोहिनीकौ	सात्विकभाव	अच्युतदास गौड	५५
१६४	एक अन्यमार्गीय स्मसानवालो	कांता	मोहिनीकौ	तामसभाव	अच्युतदास गौड	५५
१६५	एक राजा कोढवारो	सुव्रता	मोहिनीकौ	राजस भाव	अच्युतदास गौड	५५
१६६	रूपा पोरिया	रासो गोप	रसात्मिका	राजस भाव	अच्युतदास सारस्वत	५६
१६७	चूहडो गोवर्द्धनकौ	बनरानी	रसात्मिका	तामस भाव	अच्युतदास सारस्वत	५६
१६८	स्त्री-पुरुष राजनगर के (१) स्त्री	पीतवर्णी, कंकुमवर्णी	रसात्मिका	सात्विक भाव	अच्युतदास सारस्वत	५६

स्वरूपों की सूचि
द्वितीय खण्ड
समाप्त

२५२ वैष्णवों की वार्ताओं की सूची

(क्रमशः खण्ड-२)

वार्ता सं.	नाम	ज्ञाति	पृष्ठ सं.	प्रसंग सं.
८५	एक गूजर के बेटा की बहू..	..(गूजर)...	...१	...२
८६	एक वैष्णव क्षत्री, चंदनवारो	... (क्षत्री)...	...६	...१
८७	गोपालदास भीतरिया...	... (साँचोरा ब्राह्मन)	...९	...१
८८	एक क्षत्री, आत्मनिवेदन वारो	... (क्षत्री)...	...१२	...१
८९	खंडन ब्राह्मन...	...(सनोढ़िया ब्राह्मन)	...१७	...१
९०	कुनबी पटेल, जाने प्रेत कों पांच ताल कौ पून्य जियो...	...(कुनबी)...	...२४	...२
९१	एक साहूकार (आम की मंडलीवारौ)	...(वैश्य)...	...३०	...९
९२	एक बनिया, जाने अपनी बेटी जैन धर्मी कों दीनी....	... (वैश्य)...	...३४	...१
९३	तीन तूंबा वारौ विरक्त वैष्णव	... (ब्राह्मन)...	...४०	...१
९४	परमानंद सोनी...	... (सोनी) ...	...४९	...२
९५	रामदास खंभाइच के...	... (ब्राह्मन)...	...५२	...१
९६	रेंडा ...	... (उदंबर ब्राह्मन)	...५८	...३
९७	स्त्री-पुरुष, साडी बैचि कै सामंग्री ल्याये	... (क्षत्री)...	...७२	...१
९८	अजब कुंवरि...	... (क्षत्री)...	...७९	...२
९९	एक ब्राह्मन पंडित, जिनने जनेऊ तोरि बुहारी बांधी...	... (ब्राह्मन)....	...८०	...१
१००	एक कुनबी पटेल, चोखावारो	...(कुनबी)...	...८२	...३
१०१	देवा भाई....	...(कुनबी)...	...८५	...२
१०२	एक वैष्णव बनिया की बेटी, जाकौ रामानंदी सों ब्याह भयो	... (वैश्य)...	...८६	...२
१०३	दोई भाई साँचोरा, जिनने वैष्णव कौ समाधान कियो...	... (ब्राह्मन)...	...८९	...१
१०४	एक राजा, दोई भाई साँचोरा के संग तें वैष्णव भयो...	... (क्षत्री)...	...९४	...१
१०५	स्त्री-पुरुष, हीरान की धरती पहचानते	... (क्षत्री)...	...१०१	...१
१०६	एक ब्रजबासी, जाकों श्रीगुसांईजी ने परे कह्यो...	... (सनाढय ब्राह्मन)	...१०७	...१

वार्ता सं.	नाम	ज्ञाति	पृष्ठ सं.	प्रसंग सं.
१०७	जन-भगवानदास दो भाई...	...(गौरवा क्षत्री)	...११८	...१
१०८	कल्यान भट, खंभालिया के...	... (गिरनारा ब्राह्मन)	...१२४	...५
१०९	दोई भाई पटेल, राजनगर के	... (पटेल)...	...१३१	...२
११०	एक ब्राह्मनी, उपरावारी...	... (ब्राह्मन)...	...१३५	...१
१११	माँ-बेटा जिनने श्रीगुसांईजी की सेवा करी...	... (ब्राह्मन)...	...१४०	...१
११२	एक चोर दिल्ही कौ...	... (?)....	...१४६	...१
११३	तानसे, पात्साह कौ गवैया	... (ब्राह्मन)...	...१५३	...२
११४	एक दलाल, निन्यानवे हजार रुपैयावारो	... (वैश्य)....	...१५८	...१
११५	बेनीदास, दामोदरदास, सूरत के	... (वैश्य)...	...१५६	...३
११६	जनार्दनदास आगरे के...	... (क्षत्री)...	...१६३	....२
११७	ताराचंदभाई...	.... (वैश्य)....	...१६६	...२
११८	एक म्लेच्छ, महावन कौ...	... (म्लेच्छ)...	...१६९	...१
११९	एक क्षत्रानी, आगरे की...	... (क्षत्री)...	...१७१	...१
१२०	दोई भील...	... (भील...)	...१७३	...१
१२१	एक ब्रजबासी कौ छोहरा, सकरवा कौ	... (गूजर)...	...१७६	...१
१२२	एक सन्यासी, कासी कौ...	... (?)...	...१७८	...१
१२३	राजा आसकरन, नरवरगढ़ के	... (क्षत्री)...	...१८१	...६
१२४	एक मोची...	... (मोची)	...२०१	... ४
१२५	एक सेठ खरबूजा वारौ...	... (वैश्य) ...	... २०२	...१
१२६	एक वैष्णव जाकों, श्रीगुसांईजी ईश्वर की महिमा कहे...	.... (?)...	...२०९	...२
१२७	दामोदर झा बडनगर कौ...	... (नागर ब्राह्मन)	...२११	...१
१२८	मधुसूदनदास...	... (क्षत्री)...	...२१२	...१
१२९	एक राजा, पूरब कौ, जो वैष्णव बिना काहू तें रिझतो नाहीं	... (क्षत्री) ...	...२१७	...१
१३०	मुरारी आचार्य ...	... (ब्राह्मन)...	...२१९	...४
१३१	एक बनिया वैष्णव, जाने भोग में चेली धरी...	... (वैश्य) ...	...२२६	...१
१३२	एक क्षत्री, जाकौ द्रव्य श्रीयमुनाजी में पधरायो...	... (क्षत्री)...	...२२८	...१
१३३	दोई भाई पटेल, जिनने देवी कों कुआँ में पटकी...	... (पटेल)...	...२२९	...१

वार्ता सं.	नाम	ज्ञाति	पृष्ठ सं.	प्रसंग सं.
१३४	एक विरक्त गोकुल कौ, जाकौ एक क्षत्रानी सों स्नेह हतो...	... (?)...	...२३४	...१
१३५	एक क्षत्री वैष्णव आगरे कौ, वस्त्र की गांठि वारौ...	... (क्षत्री)...	...२४०	...१
१३६	मेहा धीमर...	... (धीमर)...	...२४५	...१
१३७	हृषिकेश आगरे के...	...(क्षत्री)...	...२६२	...२
१३८	एक पटेल, दरांति बेचि कै टका भेट किया...	... (पटेल)...	...२७८	...१
१३९	स्त्री-पुरुष, राजनगर के, गौहत्या वारे	... (?)...	...२८१	...१
१४०	हरिदास, मोहनदास...	... (वैश्य)...	...२८६	...१
१४१	देवजीभाई, पोरबंदर के...	... (वैश्य)...	...२९०	...१
१४२	एक डोकरी, जाने दांतिन भोग में धरी	...(वैश्य)...	...२९२	...१
१४३	स्त्री-पुरुष, मथुराजी के, जो मंडली में चना बांटते...	... (क्षत्री)...	...२९३	...१
१४४	एक डोकरी, जाने आठ बेर काल कों फेर्यो...	...(?)...	...३०४	...२
१४५	एक विरक्त, गुजरात कौ जाने वैष्णव के बेटा कों जिवायो	...(?)...	...३०१	...१
१४६	एक नाऊ...	... (नाऊ)...	...३०४	...१
१४७	एक पठान कौ बेटा ...	... (पठान)...	...३०५	...१
१४८	स्त्री-पुरुष आगरे के, जिनके सालिग्राम में ते श्रीठाकुरजी भए...	... (कनोजिया ब्राह्मन)	...३०८	...२
१४९	एक साहूकार, सूरत कौ, जाके बेटा को बहू कों म्लेच्छ ले चल्यो	... (वैश्य)...	...३५४	...२
१५०	उद्धव त्रवाडी...	... (नागर ब्राह्मन)...	...३५०	...१
१५१	सीताबाई, अचलबाई...	... (नागर ब्राह्मन)	...३५२	...१
१५२	एक श्रोता एक वक्ता...	... (वैश्य)...	...३५५	...१
१५३	एक कायस्थ, आगरे कौ	... (कायस्थ)...	...३५९	...१
१५४	एक ब्रजबासी, एक मोची, एक ब्राह्मन	(ब्राह्मन, मोची, ब्राह्मन)	...३६७	...१
१५५	एक बनिया, एक ब्राह्मन, देवी के किवाड उतारे...	... (बनिया, ब्राह्मन)	...३६३	...२

वार्ता सं.	नाम	ज्ञाति	पृष्ठ सं.	प्रसंग सं.
१५६	एक बीनकार, श्रीनाथजीद्वार में रहतो	(सनाढ़य ब्राह्मन)	...३६९	...१
१५७	प्रेमजी...	... (लुहाणा)...	...३७३	...१
१५८	वृन्दावनदास, छबीलदास...	... (क्षत्री)....	...३७५	...१
१५९	स्त्री-पुरुष ब्राह्मन, सो स्त्री रुख के नीचे द्रव्य लेइवे गई...	... (ब्राह्मन)...	...३७९	...१
१६०	एक भगवदीय, एक तादृसी, जिनने परीक्षा करी...	... (?)...	...३८२	...१
१६१	एक वैष्णव, जो गिरिराज ऊपर चढ्यो	... (वैश्य)...	...३८८	...१
१६२	एक विरक्त ब्राह्मन, गुजरात कौ, जाकों श्रीगुसांईजीने सात स्वरूपन की भावना कही...	... (ब्राह्मन)...	...३९०	...१
१६३	एक क्षत्री, पूरब कौ, जाकों श्रीनाथजी झारी बंटा दिए...	... (क्षत्री)...	...३९९	...१
१६४	एक अन्यमारगी, जानें स्मसान में बैठि कै खायो...	... (?)...	...४०३	...२
१६५	एक राजा, पूरव कौ, जानें स्मसान में जूंठनि खाई...	... (क्षत्री)...	...४०८	...१
१६६	रूपा पोरिया...	... (सनाढय ब्राह्मन)	...४१२	...२
१६७	एक चूहडा...	... (चूहडा)....	...४१६	...१
१६८	स्त्री-पुरुष, राजनगर के, जिनके पांच रत्न निकसे...	... (?)...	..४२२	...१

वार्ताओं की सूची
द्वितीयखण्ड
समाप्त

न ला तिलक वाले पुष्टिमार्ग के संरक्षक चतुर्थलालजी वार्ताकार श्री गोकुलनाथजी महाराजश्री

प्राकट्य मार्गशीर्ष शुक्ल ७ वि.सं. १६०८   तिरोधान-फाल्गुन कृष्ण ९ वि.सं. १६९७

शिक्षा सागर वार्ता भावप्रकाश श्रीहरिरायजी महाप्रभु

प्राकट्य आश्विन कृष्ण पंचमी वि.सं. १६४७ ✶ तिरोधान – वि.सं. १७७२

॥ श्री हरिः ॥

श्री कृष्णाय नमः श्री गोपीजनवल्लभाय नमः

दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता

(क्रमशः खण्ड -२)

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक गुजर के बेटा की बहू, आन्योर में रहती, जाकीं भैंसि श्रीगोवर्द्धननाथजी आप मिलाइ दिये, तिनकी वार्ता कौ भाव कहते हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'परमेसुरी' है। सो पहिले ये द्वारिका लीला में 'बिमला' की सखी ही। बिमला तें प्रगटी हैं। सो बिमला श्रीरुक्मिनीजी की अंतरंग सखी हैं। तिनके ये भावरूप हैं।

सो एक समै द्वारिकाजी में श्रीठाकुरजी श्रीरुक्मिनीसों ब्रजलीला की बातें कहत हे। ता समै 'परमेसुरी' कछू कार्यार्थ तहां आई। सो इन दूरि तें सब बात श्रीठाकुरजी के मुखकी सुनी। तब याके मन में यह आई, जो - हों ब्रजलीला कौ अनुभव करों ऐसो भाग्य मेरो कब होइगो ? सो इनकों बोहोत आरति भई। तब सब खानपान हू छूट्यो। चित्त में रात्रि-दिन खेद रहे। कछू सुहाई नाहीं। काहू कार्य में मन लागे नाहीं। सो श्रीठाकुरजी तो आप अंतर्यामी हैं। तातें इनके मन की जानी। तब श्रीठाकुरजी परमेसुरी कों बुलाइ, आज्ञा किये, जो - तू ऐसो खेद क्यों करति हैं ? श्रीयमुनाजी कौ भजन करि। काहेतें, जो-श्रीयमुनाजी ब्रजलीला की अधिष्ठात्री हैं। ब्रजलीला कौ सौभाग्य तो इनही की कृपा तें प्राप्त होत है। तातें तू उन कौ भजन करि। तेरो मनोरथ सिद्ध होइगो। या प्रकार श्रीठाकुरजी याकों बर दे कै श्रीरुक्मिनीजी के पास पधारे। ता पाछें परमेसुरी विरह-ताप करि कै श्रीयमुनाजी कौ भजन करन लागी। सो कछूक दिन में श्रीयमुनाजी प्रसन्न व्है याकों दरसन दिये। और कहें, जो - तू वर मांगि ! मैं तो पर प्रसन्न हों। तब परमेसुरी ने दोऊ हाथ जोरि कै बिनती करी, जो - अहो श्रीमहारानीजू ! जैसें आपने कुमारिकान कौ मनोरथ पूरन कियो, ता भांति मेरो हू मनोरथ है, सो कृपा करि पूरन कीजिये। हों आप की सरनि हूं। तब श्रीयमुनाजी कृपा करि वासों पूछे, जो - तेरो कहा मनोरथ है ? सो तू कहि। तब परमेसुरीने कह्यो, जो - अहो श्रीमहारानीजू ! आप ब्रज की अधिष्ठात्री हो, ऐसो श्रीठाकुरजी आप मोसों कहे हैं। तातें आप मैं दीन पर ऐसी कृपा कीजिए, जो-मेरो ब्रजलीला में अंगीकार होंई। ओर मोकों कछू चाहना नाहीं है। तब श्रीयमुनाजी प्रसन्न व्है आज्ञा किये, जो-

तथास्तु ! ऐसें ही होइगो । या प्रकार श्रीयमुनाजी वाकों बर दे कै अंतर्धान भए । पाछें कछूक दिन में परमेसुरी कौ ब्रज में जनम भयो ।

सो 'सखीतरा' में एक गुजर के जन्मी । सो बरस बारह की भई । तब याकौ ब्याह एक ब्रजबासी के लरिका सों भयों । सो वह गुजर हतो । श्रीगुसांईजी के पास कुटुंब सहित बिनती करि कै नाम पायो हतो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वह ब्रजबासी आन्योर में रहतो । सो एक समै वह अपने बेटा कों विवाह कै अपने घर बहू ले कै आयो । सो वह बहू बड़ी हुती । सो वाके सास-ससुरने वाकों श्रीगुसांईजी सों नाम दिवायो । तब वह श्रीगुसांईजी की सेवकिनी भई । ता दिन तें वह बहू नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों जाँइ । सो वाकों श्रीगोवर्द्धननाथजी में आसक्ति भई । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये बिनु अन्न - जल न ले । ऐसी याकी टेक । सो वह बहू बड़ी भगवदीय भई ।

वार्ता प्रसंग - २

और जब तें वह बहू घर में आई ताके थोरेइ दिन पाछें वा ब्रजबासी की भैंसि खोइ गई । तब घर के मनुष्य तो सगरे भैंसि कों खोजन गए। सो एक वा बहू की सास बृद्ध हती । सो घर की रखवारी द्वारें बैठि करति हती । और वह बहू भीतर कौ काम-काज करति हती । तब वा बहू की सास कों परोसिन ने कही, जो-तुम्हारी बहू कौ पाँव आछौ नाहीं । जो - याकों देखो ! घर में आवत थोरेई दिन भए और भैंसि खोई गई । तब यह बात वा बहू ने अपने कानन सुनी । तब वह बहू भीतर जाँइ बोहोत संताप करि कै रोवन लागी । ता पाछें वा बहू ने

श्रीगोवर्द्धननाथजी सों बिनती कीनी, जो - महाराज ! अब तो इहां कोई तुम बिनु मेरे है नाहीं। जो - मेरी पुकार सुनें। तातें हे गाढ़े दिन के मीत गोपाल ! अब मेरे माता-पिता तो दूरि भए। और इन सगरेन तो मेरे माथे कलंक धर्यो है। तातें आजु जो ए अपने घर भैंसि लेकै आवेंगे तो मैं एक दिन कौ माखन आरोगाउंगी। ऐसें कहिकै वा ब्रजबासिनी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सुद्ध भाव सों बोहोत ही प्रार्थना करि कै दंडवत् करि कही, जो - हे देवदमन ! या संकट में तें तू छुटावेगो तो हों छूटूंगी। नाँतरु अपने घर में प्रानत्याग करोंगी। सो याकी बिनती सों श्रीगोवर्द्धननाथजी ने उन ब्रजबासिन कों भैंसि मिलाइ दीनी। सो वे ब्रजबासी सब अपने घर भैंसि लेकै अति आनंद सों आए। ता पाछें भैंसि कों तो बांधि दीनी। और वह ब्रजबासी सगरे आपस में बतरान लागे, जो - भाई ! यह बहू कौ पाँव बोहोत आछौ है। जो-गई भैंसि पाई। या प्रकार सगरे ब्रजबासी बहू की उपमा करन लागे। परि वह बहू तो अपने मन में कहे, जो - यह भैंसि तो श्रीगोवर्द्धननाथजी के प्रताप सों पाई है। सो वह बहू ऐसी भगवदीय हती। वाकौ ऐसो सरल सुभाव हतो।

भाव-प्रकाश - या वार्ता में यह जतायो, जो - वैष्णव कों कैसो हू कलंक आइ लगे तोऊ श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ आश्रय न छोरनो। काहेतें, जो - श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने जन की लाज आपु राखत हैं। तातें वैष्णव कों एक श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ आश्रय राखनो। और जो कदाचित् जीव कों धीरज न रहे, और वह प्रार्थना करें तोऊ एक श्रीगोवर्द्धननाथजी सों करे। और सर्वथा न करे। और कछू मानता हू करे तोऊ देवदमन की करे। और की न करे। काहेतें ? जो - गोकुल के कुलदेवता श्रीगोवर्द्धननाथजी आप हैं। सो गोकुल कहियत हैं, भक्तकुल, ताके नाथ आप ही हैं। तासों उन के बिनु और कौ आश्रय सर्वथा न करनो। काहेते ? ये देवदमन हैं। सौ इन सब देवन कौ दमन कियो है। उन तें यम-काल हू डरपत हैं। सो सूरदासजी गाए हैं, सो पद -

राग : बिलावल

गोकुल कौ कुलदेवता प्यारो श्रीगिरिधरलाल।
कमलनयन घनसाँवरो वपु बाहु विसाल।
बेगि करो मेरे कहे तुम पकवान रसाल।
बलि मघवा बल लेत हैं कर करि घृत गाल॥
इनके दिये वाढ़ी हैं गैया बच्छ बाल।
संग मिलि भोजन करत हैं जैसें पसुपाल॥
गिरि गोवर्द्धन सेइये जीवन श्रीगोपाल।
'सूर' सदा डरपत रहे जातें यम-काल॥

तातें देवदमन तें और कोऊ बड़ो देव नाहीं। सो वैष्णव कों एक इन ही कौ आश्रय करनो, यह सिद्धांत भयो।

ता पाछें वह बहू दूसरे दिन तें थोरो - थोरो माखन भेलो करति जाती, सो न्यारौ एक बासन में धरति जाती। पाछें पांच-सात दिन में भैंसि कौ माखन भेलो भयो। तब वा भैंसि कौ एक दिन कौ सब माखन न्यारो काढ़ि राख्यो। और वह बटोर्यो माखन सब एकठो करि कै घी तायो। पाछें वा दिन मन में निश्चय करी, जो-आजु यह सद्य माखन श्रीगोवर्द्धननाथजी कों आरोगाउंगी। सो बेगि-बेगि रसोइ करि कै सास-ननद कों तो छाक देन कों पठाई। ता पाछें वह अपने घर तें माखन लेकै निकसन लागी। परि अपने मन में तो डरपन लागी। जो - मति कोऊ मोकों माखन लेकै जाँत देखि लै। और जो - कहूं काहू ने देख्यो तो वह कहा कहेगो ? जो तू वह माखन लेकै कहाँ जात है ? तो हों वासों कहा उत्तर करोंगी ? सो या प्रकार आंगन में लिये वह बहू माखन कौ सोच करन लागी। ता पाछें वाने वह माखन घर में पाछौ जाय धर्यो। सो ताही समै

श्रीगोवर्द्धननाथजी एक हाथ में लाल छरी लेकै वा ब्रजबासिनी के आगें आइ कै ठाढ़े रहे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी सात बरस के लरिका कौ स्वरूप करि कै आइ ठाढ़े रहे। तब वा ब्रजबासिनी सों श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो – मेरो माखन अमूकी ठौर आज कौ तू अब ही आंगन तांई ल्याइ कै पाछें धर्‍यो है, सो लोंदा मेरो ल्याऊ। तब वा ब्रजबासिनी ने बिचार्‍यो, जो – यह प्राकृत बालक होंइ तो यह भेद की बात कहा जानें ? तासों ये सर्वथा श्रीगोवर्द्धननाथजी ही मेरी दया बिचारि कै आए हैं। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कृपा करि पधारे हैं। तब वह बहू वह माखन कौ लोंदा ल्याइ कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के श्रीहस्त में दीनो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी याही के हाथ सों वह माखन आरोगे। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मंदिर पधारे तब वा ब्रजबासिनी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों बिनती करी, जो – लाल ! मोसों तुम्हारे पास आयो जाँत नाहीं। तासों हों जा समै दधिमंथन करति होंहि ता समै जो आप इहां पधारो तो हों तुमकों एक माखन कौ लोंदा सद्य करि कै नित्य आरोगायो करों। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी या ब्रजबासिनी सों यह आज्ञा करी, जो – हों तेरे घर नित्य आयो करूंगो। और कदाचित् काहू दिन आय सकत नाहीं तो तू मेरे तांई मेरो माखन काढ़ि न्यारौ धरि कै राखियो। सो ता दिन तें वह ब्रजबासिनी जब दधिमथान (कों) बैठती तब ही श्रीगोवर्द्धननाथजी वा पास आइ बिराजते। सो वह ब्रजवासिनी प्रथम एक लोंदी श्रीगोवर्द्धननाथजी के श्रीहस्त में देती। सो वाही ठौर

श्रीगोवर्द्धननाथजी वह माखन आरोगि कै बन कों पधारते। तासों जाकौ ऐसो सरल सुभाव होइ ताकी बस्तू-सामग्री श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु या प्रकार अंगीकार करें। ता पाछें वा ब्रजबासिनी तें श्रीगोवर्द्धननाथजी तें बोहोत एकताचारी भई। तातें ये सुद्धभाव के लच्छन हैं।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो - अनन्य भाव श्रीगोवर्द्धननाथजी कों बोहोत प्रिय है। जाकों अनन्य भाव है ताके श्रीगोवर्द्धननाथजी आधीन व्है रहत हैं।

* * * *

सो वह आन्योर की गुजरी श्रीगुसांईजी की तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहाँ तांई कहिए। वार्ता ॥८५॥

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वैष्णव क्षत्री, चंदनवारौ, श्रीगोकुलजी में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'भ्रमिता' है। सो पहिले ये द्वारिका लीला में 'बिमला' की सखी ही। बिमला तें प्रगटी हैं, ताते इनके भावरूप हैं।

सो एक समै श्रीरुक्मिनीजी ने श्रीठाकुरजी सों कह्यो, जो-तुमने जा भांति ब्रज में बेनुनाद करि ब्रज-गोपिन कों बुलाई, तिन संग रास कियो, ताही प्रकार हम हू सों रास करो। ऐसो हमारो सबन कौ मनोरथ है। तब श्रीठाकुरजी मुसिक्याइ कै आज्ञा किये, जो - तुम सब राजकुमारी हो। तातें ब्रज - गोपिन की सी लोक-लज्जा तुम सों छूटेगी नाहीं। और रात्रि में बन में कैसे आवोगी? तब श्रीरुक्मिनीजी कहें, जो-हम आवेंगी। तुम बन में बेनुनाद करो। ता पाछें श्रीरुक्मिनीजी ने सब पटरानीन तें कह्यो, जो-तुम सब सोरह हू सिंगार करि कै तैयार रहो। जब बेनुनाद होइ तब आपुन सब बन में जाँइगी। तहां प्रभुन सों मिलि कै रास करेंगी। तब सत्यभामा आदि सब पटरानी प्रसन्न व्है अपने-अपने मंदिर में जाँइ, निज सखी-सहचरिन सहित सिंगार करन लागी। ता पाछें श्रीठाकुरजी 'गोपीतलैया' पै जाँई बेनुनाद कियो। सो सुनि कै श्रीरुक्मिनीजी आदि सब पटरानी निज सखी-सहचरिन कों संग लेकै सोरह हू सिंगार किये अपने-अपने मंदिर तें निकसी। सो सिंघपोरि पै आई। तहां देखे तो वसुदेवजी आदि सब यादव बैठे हैं। तब इन सब आपुस में बिचार कियो, जो - रात्रि के समै हम सब या प्रकार सिंगार किये घर तें बाहिर जाति हैं सो ये गुरुजन हम कों देखि कै कहा कहेंगे? और कदाचित् हम सों पूछेंगे, जो-तुम सब मिलि सोरह हू सिंगार किये या रात्रि के समै कहां जात हो? तो हम

उनकों कहा उत्तर करेंगे ? तातें या समै घर बाहिर जानो सर्वथा उचित नाहीं । सो या प्रकार गुरुजन के डर तें ये सब जनीं अपने-अपने मंदिर में फिरि आई । सो बात श्रीठाकुरजी ने जानी। तब श्रीठाकुरजी बिचारी किये, जो - मैंने तो पुष्टि स्वरूप के आवेस सों बेनुनाद कियो है । और रास रमिवे कौ संकल्प कियो है । और ये तो आई नाहीं ? सो मेरो संकल्प मिथ्या कैसें होई ? तातें अब ब्रज में तें कुमारिकान कों बुलाई, तिन संग मिलि रास करनो चाहिये । या प्रकार बिचारि कै श्रीठाकुरजी ने कुमारिकान कों बुलाई । ता समै श्रीरुक्मिनीजी की सखी 'बिमला' अरु श्रीसत्यभामाजी की सखी 'तन्मध्या' (हू) अपने परिकर सहित गोप्यरीति सों तहां आई । सो कुमारिकान के संग मिलीं । पाछें रास कौ अनुभव कियो । सो वा परिकर में 'भ्रमिता' हू ही । सो इन पुष्टिलीला कौ अनुभव कियो । पाछें ये द्वारिका गई नाहीं । विरह करि वाही ठौर अपनी देह छोरी । सो भ्रमिता के संग बिमला की एक सखी 'सहोदरी' ही । सो वाकी हू याही प्रकार देह छूटी । ता पाछें 'तन्मध्या' की तीन सखी ही । तिनके नाम -'कृष्णानुचरी, 'रतिशूरी', 'सत्या'। सो उनहू ने विरह करि अपनी-अपनी देह छोरी । सो ये पांचों सखी ब्रजलीला में प्राप्त भई । ता पाछें लीला कौ परिकर सगरो भूतल पै प्रगट्यो । तब ये हू आईं । सो उनकी वार्ता आगें कहेंगे ।

और ये आगरे में एक द्रव्यपात्र क्षत्री के जन्म्यो । सो वह क्षत्री श्रीगुसांईजी कौ सेवक हुतो । सो श्रीगुसांईजी आगरे पधारे तब याने अपने बेटा कों श्रीगुसांईजी पास नाम-निवेदन करवायो । ता पाछें वह क्षत्री अपनो कुटुंब ले श्रीगोकुल आइ रह्यो । तहां कछूक दिन में इन की देह छूटी । पाछें बेटा श्रीगोकुल ही में रह्यो । सो वैष्णवन कौ संग करे । कथा - वार्ता नित्य सुने । सो वाकी प्रीति श्रीगुसांईजी में बढ़ी । सो वह श्रीगुसांईजी की सेवा में नित्य तत्पर रहतो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक दिन श्रीगुसांईजी आपु उष्णकाल में मंदिर सों पहोंचि भोजन करि कै बैठक में बिराजे हते । तब मध्याह्न समै प्रभु अपने श्रीअंग में चंदन लगावते । सो वैष्णव अपने-अपने घर तें एक-एक दिवस अति सुगंध कौ अरगजा ल्यावते । सो प्रभु अंगीकार करते । सो एक दिवस या वैष्णव कौ ओसरा आयो । तब वह अपने हाथ सों श्रीगुसांईजी के श्रीअंग को अरगजा समर्पन लाग्यो । ता समै वा वैष्णव के मन में आई, जो - सगरे वैष्णव श्रीनाथजी कौ और श्रीगुसांईजी कौ एक स्वरूप कहत हैं । और ये तो मनुष्य देह धरि दरसन देत हैं ! सो

यह मेरे मन कौ संदेह कौन भांति सों निवृत्त होइगो ? यह वाके मन की बात श्रीगुसांईजी जानें। तब वह वैष्णव चंदन लगाइ के दंडवत् करि के घर कों जान लाग्यो। तब श्रीगुसांईजी पोंढते समै वासों यह आज्ञा करे, जो वैष्णव ! तुम थोरी सी बार पंखा करि कै पाछें घर कों जइयो। तब वह वैष्णव श्रीगुसांईजी को पंखा करन लाग्यो। और श्रीगुसांईजी अति झीनो उपरेना ओढ़ि के पोढ़े। पाछें वा वैष्णव कों प्रभुन उपरेना भीतर साक्षात् श्रीनाथजी के दरसन पंखा करत समै दिये। तब तो वह वैष्णव अपने मन में बिचार करन लाग्यो, जो – यह मोकों सपनो सो कहा होत है ? सो वह आंखि मींडि-मींडि कै फिरि-फिरि कै देखन लाग्यो, जो-मोको यह भ्रम तो नाहीं भयो ? सो जहां लगि वाके मन में संदेह रह्यो, तहां लगि वाकों श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कौ दरसन दिये। तब जान्यो, जो – सब वैष्णव कहत हते सो साँची बात है। तब वा वैष्णव ने वाही समै दंडवत् करी। तब ही वाके मन में विस्वास आयो। तब ही श्रीगुसांईजी उठि बैठें। पाछें श्रीगुसांईजी यह वैष्णव की ओर देखि कै याकों पूछे, जो - वैष्णव ! तेरे मन कौ संदेह निवृत्त भयो ? तब तो यह वैष्णव दोरि कै दंडवत् करि प्रभुन आगें बिनती कियो, जो – राज ! आप की कृपा तें आप कौ स्वरूप अब जान्यो। तातें अब मेरे मन कौ संदेह निवृत्त भयो।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव कों श्रीगुसांईजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी में भिन्न बुद्धि सर्वथा न करनी। सो गोपालदास वल्लभाख्यान में गाये हैं, सो कारिका

"रूप बेऊ एक ते भिन्न थई विस्तरे विविध लीला करे भजन सार।"

सो श्रीगुसांईजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी एक-रूप हैं। परि स्वामी सेवक भाव प्रगट करनार्थ आप दोइ रूप धरि लीला करत हैं। तातें वैष्णव कों श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप अलौकिक करि जाननो।

सो यह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥८६॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक गोपालदास भीतरिया, साँचोरा, ब्राह्मण, गुजरात के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सहोदरी' है। ये पहिले द्वारिका लीला में 'बिमला' है, ताकी सखी ही। सो बिमला तें प्रगटि हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

ये भ्रमिता के संग 'गोपीतलैया' पै आई ही। सो इन हू कों पुष्टि-लीला कौ अनुभव भयो है। तातें ये ब्रजलीला कों प्राप्त भई। सो बात ऊपर कहि आए हैं।

सो गोपालदास भगवद् ईच्छा तें गुजरात में एक साँचोरा ब्राह्मण के प्रगटे। सो ये बरस बीस के भए तब इन के माता-पिता मरे। ता पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे। सो गोपालदास के गाम में डेरा किये। तब गाम के वैष्णव सब मिलि कै श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। सो उनके साथ गोपालदास हू आए। सो गोपालदास ने श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी गोपालदास की ओर देखि कै आज्ञा किये, जो गोपालदास! श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा में कब आवेगो? तब तो गोपालदास चक्रत से व्है रहे। सो अपने मन में बिचारे, जो - ये कोई महापुरुष हैं। नाँतरु मेरो नाम कैसें जानें? तातें इनकी सरनि जाँइ अपनो जनमः कृतारथ करों, तो आछौ है। पाछें गोपालदास दोऊ हाथ जोरि कै बिनती किये, जो - महाराज! हों आपकी सरनि हूं। तातें कृपा करि कै अपनो सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है गोपालदास कों नाम - निवेदन कराए। ता पाछें गोपालदास ने बिनती कीनी, जो - महाराज! कृपा करि कै मोकों अपने चरनारविंद की टहल दीजिए तो आछौ। तब श्रीगुसांईजी गोपालदास सों कहे, जो - गोपालदास! तुम श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करो। और हमारो हू टहल करो। तब गोपालदास बिनती किये, जो - महाराज! मेरी हू यही इच्छा है, तातें आप मोकों अपनो जानि चरनारविंद के निकट राखिए।

पाछें गोपालदास श्रीगुसांईजी के संग द्वारिकाजी गये। सो मारग में श्रीगुसांईजी के वस्त्र नित्य धोवे। और श्रीगुसांईजी की आज्ञा तें रसोई की परचारगी हू करे। ऐसें करत कछुक

दिन में श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी तें श्रीनाथजीद्वार पधारे। सो गोपालदास हू श्रीगुसांईजी के संग श्रीनाथजीद्वार आए। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये।

वार्ता प्रसंग - ९

सो गोपालदास कौ सुभाव सरल बोहोत । तातें श्रीगुसांईजी आप इन कों श्रीगोवर्द्धननाथजी की रसोई की सेवा दीनी। सो ये बोहोत प्रीति सों करन लागे। सो कछूक दिन में इन कों सानुभावता जनाए। सो गोपालदास सों श्रीनाथजी प्रत्यच्छ वार्ता करें। ये समाचार श्रीगुसांईजी आछी भांति सब जाने, जो-गोपालदास ऊपर श्रीनाथजी की ऐसी कृपा भई है। ता पाछें गोपालदास सों श्रीगुसांईजी कब हू श्रीनाथजी की वार्ता पूछते। सो सर्व गोपालदास श्रीगुसांईजी आगें आछी भांति कहते।

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार हते। तब एक दिन श्रीगुसांईजी आप भोजन करि कै अपनी बैठक में बीरा आरोगत हते। सो आधौ बीरा तो आरोगे हते, और आधौ बीरा प्रभुन के हस्त में हतो। ता समै गोपालदास श्रीगुसांईजी की बैठक में धोवती सुकाइ कै आई कै दंडवत् करि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो - राज! मैं अपछरा कुंड तें धोवती धोइ कै आवत हतो, सो श्रीनाथजी पूंछरी की ओर बिराजे हुते। सो मोकों देखि कै श्रीनाथजी कहे, जो - हम भूखे हैं। तासों सीतल भोग की सामग्री तहां मँगाई है। तब श्रीगुसांईजी वाही समै स्नान करि पर्वत ऊपर पधारि सामग्री सर्व सिद्ध करि परात में धरि ऊपर वस्त्र लपेटि कै अपने कांधे

पर धरि लेकै उरहाने पांइन पधारे। सो धर्मदास ग्वाल उत तें आवत हुतो। सो धर्मदास श्रीगुसांईजी कों मार्ग में मिल्यो। तब श्रीगुसांईजी सों धर्मदास ने पूछी, जो - महाराज! तुम या समै उरहाने पगन कहां चले हो ? तब श्रीगुसांईजी ने धर्मदास सों कही, जो - हम इहां श्रीनाथजी बैठे सुने हैं। सो तुम हम कों बताइ देहु। तब श्रीगुसांईजी कों धर्मदास ने मरोली (बरोली?) कौ ढाक दूरि तें दिखाई दियो। जो – वा ढाक के नीचे श्रीनाथजी बिराजे हैं। तब श्रीगुसांईजी वा ढाक के पास पधारे। ता ठौर श्रीनाथजी श्रीदाऊजी सहित सखा-मंडल में बिराजे केलि करत हैं। सो श्रीगुसांईजी जाँइ दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी सामग्री कौ थाल सब श्रीनाथजी आगें जाँइ भोग समर्प्यो। तब श्रीनाथजी और श्रीदाऊजी और सगरे सखान सहित अति आनंद सों आरोगे। पाछें श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी कों आज्ञा दिये, जो - तुम बोहोत श्रमित भए हो, तातें अब घर पधारो। और आज पाछें काहू कौ कह्यो मति मानो। और या भांति आओ मति। मोकों जो-कछू चहियेगो सो होंही तुम सों आप तें मांगि लेहुंगो। यों कहि कै श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी ऊपर अति प्रसन्न भए। पाछें श्रीगुसांईजी तो अपने घर पधारे। और श्रीनाथजी आप बन में खेलिवे कों पधारे। या प्रकार श्रीनाथजी श्रीवृंदावन में खेलते और श्रीगुसांईजी या भांति श्रीनाथजी की सेवा में तत्पर रहते।

भावप्रकाश - या वार्ता में यह संदेह होंई, जो - पहिले तो श्रीनाथजी आप गोपालदास पास सामग्री की कहवाये। और अब श्रीगुसांईजी सों ऐसें क्यों कहे, जो - "आज पाछें काहू

कौ कह्यो मति मानो, और या भांति आओ मति"। तहां कहत हैं जो श्रीनाथजी आप गोपालदास सों सामग्री की कहवाये। तामें श्रीगुसांईजी कों ल्याइवे की नहीं कही। श्रीगुसांईजी आप गोपालदास द्वारा सामग्री भेजते तोऊ श्रीनाथजी आप आरोगते। परि श्रीगुसांईजी कौ श्रीनाथजी में घनो ममत्व हैं। तातें आप लेकै पधारे। सो या भांति दास भाव पगट किये। सो या प्रकार तो पहिले हू आप स्याम ढाक में सामग्री आरोगाई हैं। सो ऊपर गोपीनाथदास की वार्ता में कहि आए हैं। तातें बारबार श्रीगुसांईजी पधारें तो उन कों श्रम होंई। सो श्रीनाथजी सों सह्यो न जाँई। क्यों ? जो यह स्नेह की रीति है, जो - अपने स्नेही कों तनक हू श्रम होंई तो महाकष्ट होंई। तातें श्रीनाथजी आप श्रीगुसांईजी कों या भांति बरजे। यह भाव जाननो।

सो वे गोपालदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए

वार्ता ॥८७॥

* * * *

अब श्री गुसांईजी कौ सेवक एक क्षत्री, पूरब कौ, जाकों आत्मनिवेदन करवायो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'कृष्णप्रिया' है। इन में कृष्ण की उनिहार है। तातें सब कोऊ इनकों 'कृष्णप्रिया' कहत हैं। सो इनकौ स्वभाव सरल बोहोत है। ये 'गुनचूडा' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

ये पूरब में श्रीजगन्नाथरायजी तें उरे कोस बीस पर एक गाम है। तहां एक द्रव्यपात्र क्षत्री के जन्म्यो। सो बालपने तें इन की कथा-वार्ता में रुचि बोहोत हुती। सो जहाँ कहुँ कथा-वार्ता होंई तहां ये जाँई। और साधु संत जो कोऊ गाम में आवे तिनकी प्रीतिपूर्वक टहल करे। पाछें यह बरस अठारह कौ भयो तब इन के माता-पिता मरे। तब यह क्षत्री और हू मन लगाय कै संत-महंत महापुरुषन की टहल करन लाग्यो। जो - काऊ साधु-संत गाम में आवे नयो, ताकौ यह क्षत्री आछी भांति समाधान करे। जाकों खाइवे कौ न होंई ताकों खाइवे कों देई। कपड़ा न होंई ताकों कपड़ा देई। या प्रकार समाधान करे। रात्रि कों संत-महंतन के पाँउ दाबे। या भांति बोहोत भक्ति-भाव संयुक्त व्है सेवा करे। सो या क्षत्री कौ जस बोहोत फैल्यो। सो सब कोऊ जस सुनि कै इनके यहां आवते।

सो एक समै एक वैरागी या क्षत्री के द्वार पर आधी रात्रि कों आयो। सो सीतकाल के दिन हते। सीत बोहोत हुती। सो वाके पास ओढ़िवे-बिछायवे कौ कछू हतो नाहीं। तातें वह सीत में कांपन लाग्यो। तब वाने वा क्षत्री कौ घर खटखटायो। सो वह क्षत्री वा दिन घर हतो नाहीं। कछू कार्यार्थ बाहिर गयो हुतो। सौ वह वैरागी निरास व्है उहांई द्वार पर पर्‌यो रह्यो। सो

मारे सीत के वाके प्रान निकसि गए। पाछें सवेरो भयो तब वह क्षत्री अपने घर आयो। सो देखें तो द्वार पर वैरागी पर्‌यो है। सो याके प्रान निकसि गए हैं। तब या क्षत्री ने अपने मन में बिचार्‌यो जो - देखो! यह बिचारो मेरो नाम सुनि कै मेरे द्वार पर आयो होइगो। सो हों तो हतो नाहीं। सो सीत में याके प्रान गए। सो यह मोकों भारी अपराध लग्यो। तातें अब कहा करनो। या भांति वह क्षत्री चिंता कर्‌यो करे।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप पूर्व देस श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन करिवे कों पधारे हते। तहां वा क्षत्री कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। तब वा क्षत्री के मन में बिचार भयो, जो - मैं इन की सरनि जाउंगो। तब वा क्षत्री वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो - महाराजाधिराज! कृपा करि कै मोकों नाम सुनाइए। और मेरो अपराध क्षमा करिए। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीमुख तें आज्ञा कीनी, जो - तू स्नान करि आउ। तब वह क्षत्री वैष्णव स्नान करि आयो। तब श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री के ऊपर कृपा करि कै नाम सुनायो। तब वा क्षत्री वैष्णव ने यथासक्ति भेंट करी। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहांई रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग धर्‌यो। पाछें भोग सराय आप भोजन किये। और सब ब्रजबासी टहलुवान कों महाप्रसाद लिवायो। और वा क्षत्री वैष्णव कों पातरि धरी। तब वा क्षत्री वैष्णव ने महाप्रसाद लियो। और रात्रि को उहांई सोई रह्यो। पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़े। ता पाछें प्रातःकाल आप उहां ते विजय किये। सो पुरुषोत्तम क्षेत्र जगन्नाथरायजी के दरसन कों आप पधारे। सो केतेक दिन उहां रहि कै दरसन किये। ता पाछें श्रीजगन्नाथरायजी सों बिदा होंइ कै चले। सौ कितनेक

दिन में श्रीगोकुल पधारे। सो श्री नवनीतप्रियजी के दरसन किये।

ता पाछें एक समै वह क्षत्री वैष्णव के साथ में श्रीगोकुल आयो। तब श्रीगुसांईजी के दरसन करे, साष्टांग दंडवत् कर्‌यो। पाछें सब वैष्णवन नें श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करे। पाछें सब वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। सो दरसन करि दंडवत् करि बैठें। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन कों पधारे। सो भोजन करि मुख सुद्धार्थ आचमन करि ता पाछें प्रसादी बीरा आरोगि कै पाछें श्रीगुसांईजी आपनें सब वैष्णवन को महाप्रसाद की पातरि पठाई। सो सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवाए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप पोंढ़े। सो छिनक विश्राम करि कै जागे। सो उत्थापन तें पहिले जागे। सो कथा कहन लागे। तब और हू वैष्णव बैठे हते। तब वह क्षत्री वैष्णव हू कथा में बैठ्यो हतो। ताही समै श्रीगुसांईजी आपने आत्मनिवेदन कौ प्रसंग चलायो। तामें कह्यो, जो-सुद्ध मन पूर्वक जो जीव आत्मनिवेदन करत है। और गुरु जो सुद्ध मन पूर्वक निवेदन करावत है। तिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की कृपा तें दृढ़ आश्रय तत्काल होंइ। और अलौकिक (वस्तू) हू दृढ़ होंई। और पुष्टिमार्ग की लीला कौ दान होंइ। और मारग कौ सब अनुभव होंई। और अलौकिक दृष्टि होंई। तब या क्षत्री वैष्णव ने मन में बिचार कियो, जो - श्रीगुसांईजी आप कृपा करें तो मैं आत्मनिवेदन करों। पाछें श्रीगुसांईजी उत्थापन किये। पाछें सेन पर्यंत की सेवा पहोंचि कै माला बीरा लेकै श्रीनवनीतप्रियजी

के मंदिर कों दंडवत् करि कै श्रीगुसांईजी बाहिर पधारे। पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन करि कै इकेले ही गादि तकियान के ऊपर बिराजे हते। तब वा क्षत्री वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो - महाराज ! एक मेरी बिनती है। सो आप तो श्रीप्रभुजी हो सो सर्व करन समर्थ हो। और मैं तो जीव हों। सो याही तें मेरो मनोरथ पूरन कर्ता हो। तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो - तू कहा कहत है ? और कहा मनोरथ है ? सो मोसों कहि। तब वा वैष्णव नें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो - महाराज ! मोकों पुष्टि मार्ग कौ लीला संबंधी दान कीजिये। सो आप कृपा करि कै मोकों आत्मनिवेदन करवाइये। और मेरी आरति पूरन करिए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगिरिधरजी सों बुलाई कह्यो, और श्रीमुख तें आज्ञा दिये, जो - काल्हि या क्षत्री वैष्णव कों आत्मनिवेदन करावो। जो - श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की पलिंगडी के सानिध्य पुष्टिमार्ग की लीला संबंधी दान कराओ।

भावप्रकाश - यामें संदेह बोहोत है, जो - श्रीगुसांईजी आपु वा क्षत्री कों आत्मनिवेदन क्यों नाहीं कराए ? श्रीगिरिधरजी सों क्यों कहे ? और श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की पलंगड़ी के सानिध्य निवेदन की क्यों कहे ? यह तो रीति नाहीं। काहेतें ? जो - श्रीआचार्यजी कों तुलसी कैसें समर्पी जाय ? तहां कहत हैं, जो - श्रीगुसांईजी अपने अनुरूप पुत्रन कों प्रगट किये हैं। तातें श्रीरघुनाथजी 'नामरत्नाख्यस्तोत्र' में श्रीगुसांईजी आप कौ नाम 'स्वानुरूपसुतप्रसुः' ऐसें कहे हैं। तासों आत्मनिवेदन बड़े पुत्र श्रीगिरिधरजी द्वारा आपु ही कराये यह भाव जाननो और श्रीगिरिधरजी आप धर्मी रूप हैं। सो उनमें विप्रयोग झलकत हैं। तातें विप्रयोग कौ दान दै या क्षत्री वैष्णव कों लीलान कौ अनुभव तत्काल करावनो है। यातें श्रीगिरिधरजी कों आज्ञा किये। यहू अभिप्राय है।

और श्रीआचार्यजी के पलंगड़ी सानिध्य आत्मनिवेदन की आज्ञा किये, सो यातें जो - श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप साक्षात् स्वामिनीरूप हैं। सो पादुकाजी के स्वरूप करि आप श्रीठाकुरजी के पास नित्य बिराजत हैं। सो श्रीस्वामिनीजी की कृपा बिनु लीला संबंधी दान न होंइ। सो बात आगें कृष्ण भट की वार्ता में कहि आए हैं। तातें श्रीगुसांईजी आप पलंगड़ी के सानिध्य आत्मनिवेदन करायवे की कहे। यामें स्वामिनी - भाव जतायो। जैसें इलम्मागारूजीकों श्रीनवनीतप्रियजी ने ब्रह्मसंबंध दियो। तब दूसरे स्वरूप के चरनारविंद में तुलसी समर्पाये। यह भाव जाननो। सो यह असाधारन प्रमेय कार्य है।

पाछें दूसरे दिन वा वैष्णव कों श्रीगिरिधरजी ने बोहोत प्रीति सों आत्मनिवेदन करवायो। तब वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी के पासे आयो। सो साष्टांग दंडवत् कर्‌यो। पाछें श्रीगुसांईजी आप के सन्मुख वह वैष्णव बैठ्‌यो। तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें बचन कह्यो, जो-पुष्टिमार्ग कौ लीला संबंधी तो दान नाहीं भयो है। ता पाछें श्रीगिरिधरजी कों बुलाय कै पूछ्‌यो, और खीझे, जो - तुम याकों कहा दान करवायो है ? सो याकों पुष्टिमार्ग की लीला संबंधी दान तो भयो नाहीं है। सो याही ते याकों एक ब्रत करवाओ। पाछें सुद्ध मन सों दान करवाइयो। तब एक ब्रत या क्षत्री वैष्णव सों करवायो। ता पाछें सुद्ध मन होंइ श्रीआचार्यजी के सन्मुख निवेदन मार्ग की रीति सों करवायो। पाछें श्रीगुसांईजी पास आय कै वैष्णव ने साष्टांग दंडवत् करी। तब फेरि श्रीगुसांईजी आप वैष्णव के साम्हे देखि कै श्रीमुख सों कहे, जो - आत्मनिवेदन तो सुद्ध भयो नाहीं है। तब श्रीगुसांईजी फेरि श्रीगिरिधरजी कों बुलाय कै कह्यो, जो - तुम एक ब्रत या क्षत्री वैष्णव कों और हू करवाओ। और देह सुद्धि के लिये एक उपवास तुम हू करियो।

भावप्रकाश – सो यातें, जो – तुम हू कों विप्रयोग कौ अनुभव होंई।

ता पाछें मोकों पूछि कै दान करवाइयो। तब एक ब्रत और हू वा क्षत्री वैष्णव ने कियो। और एक उपवास श्रीगिरिधरजीने कियो। ता पाछें दूसरे दिना श्रीगिरिधरजी और वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी के पास आइ दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री वैष्णव सों कहें, जो - अज हू तेरो अंतःकरन सुद्ध भयो नाहीं है। तब एक उपवास और करवायो । तब श्रीगिरिधरजी कों आज्ञा किये, जो अब इन कों आत्मनिवेदन करवाओ। तब श्रीगिरिधरजीने श्रीआचार्यजी की पलंगडी के सन्निधान वा क्षत्री वैष्णव कों आत्मनिवेदन करायो। ताही समै श्रीगिरिधरजी कों और वा क्षत्री वैष्णव कों पुष्टिमार्ग की लीला संबंधी ब्रजभक्तन के संग श्रीठाकुरजी कौ दरसन भयो। सो ता दिन वह क्षत्री वैष्णव देहानुसंधान भूलि गयो। सो बैठक ही में पर्‍यो रह्यो। जो - महाप्रसाद लेवे की सुधि रही नाहीं। ऐसो रसाविष्ट भयो। ता पाछें उन के कान में श्रीगुसांईजी अष्टाक्षरमंत्र कहे। सो इतने ही में सावधानता भई। ता पाछें महाप्रसाद लियो। पाछें वा क्षत्री वैष्णव कों अलौकिक ज्ञान भयो। सो सदैव भगवद्रस में छक्यो रहतो।

सो वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥८८॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक खंडन सनोढ़िया ब्राह्मन, सिंहनंद कौ बासी, तिनकी

वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'कृसोदरी' है। ये 'गुनचूडा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

सो ये सिंहनंद सनाढ्य ब्राह्मन के जन्म्यो सो यह बरस पांच कौ भयो। तब याकी माता मरी। पाछें पिता ने वाकों एक पंडित के उहां पढ़िवे कों बैठायो। सो वह पढ्यो बोहोत। ता पाछें यह बरस तीस कौ भयो। तब याकौ पिता मर्‍यो। तब यह घर में इकलो रहे। याकौ ब्याह भयो नाहीं। सो जो - कोऊ पांच मनुष्य मिलि गाम में कछू वार्ता-कीर्तन करें, तहां ये जांई। और सबन सों वाद-विवाद करे। सो मारे विद्या के मद सों यह काहू कों बदे नाहीं। जो - कोऊ कछु कहे ताकौ यह ब्राह्मन खंडन करे। सो यह लोग याकों खंडन ब्राह्मन कहन लागे। सो सिंहनंद में वैष्णव बोहोत हुते।

वार्ता प्रसंग - 9

सो वह खंडन ब्राह्मन वैष्णव की बोहोत ही निंदा करतो। और वह वैष्णवन के पास ही रहतो। परि वैष्णव गोप्यवार्ता - कीर्तन करते। सो एकांत में बैठि कै करते। सो एक समै श्रीगुसांईजी कौ जनमदिवस आयो। तब उहां के सब वैष्णव जुरि कै कीर्तन करत हते। सो यह खंडन ब्राह्मन कीर्तन सुनि कै आयो। तब वैष्णव तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के तथा श्रीगुसांईजी के कीर्तन करत हते। तब वा खंडन ब्राह्मन नें कह्यो, जो - तुम हों गाऊं तैसें कीर्तन करो। तब वैष्णवन नें कह्यो, जो - हम कों तो तुम्हारे जैसें कीर्तन आवत नाहीं। तब वह खंडन ब्राह्मन बोल्यो, जो - मैं गाऊं। तुम मेरे संग गावो। और मोकों तो सब आवत है। तब वह खंडन ब्राह्मन और देवतान के गावन लाग्यो। और वैष्णव तो श्रीठाकुरजी के मिलि कै गावत हते। तब ऐसें कीर्तन सुनि कै एक वैष्णव कों क्रोध आयो। तब वा वैष्णव ने खंडन ब्राह्मन सों कह्यो, जो - तुम कों किनने बुलायो है ? और तुम बिना बुलाए पराए घर क्यों आये

हो ? और तू कहा समझे, कहा जाने ? तातें तू यहां तें उठि जा। नाँतरु दोऊ हाथ पकरि कै तोकों उठाय देउंगो। तब तू बुरो मानेगो। तब वह खंडन ब्राह्मन बोल्यो, जो - कहा तुम्हारो मार्ग संसार तें न्यारो है ? सो ऐसें संसार में नाहीं है ? तब वा वैष्णव ने खंडन ब्राह्मन सों कह्यो, जो - हम गनेस, देवी, सिव काहू देवता कों नाहीं मानत। सब देवता तो श्रीठाकुरजी की विभूति हैं। तब वा खंडन ब्राह्मन ने कह्यो, जो - सब एक ही हैं। जो - चलो पंडित ब्राह्मन सों पूछो। जो - मेरी बात सत्य है। तब उन वैष्णव ने खंडन ब्राह्मन सों कह्यो, जो - हमारे पंडित ब्राह्मन सों और देवतान सों कहा काम है ? जो - हम तो नंदनंदन बिनु और काहू कों जानत नाहीं। सो याही तें तू काहे कों माथो उठावत है ? तातें यहां तें जात रहि। सो ऐसें कहि कै वा खंडन ब्राह्मन कों हाथ पकरि कै उठाय दियो। तब खंडन ब्राह्मन बाहिर जाँइ कै दस-पांच ब्राह्मनन सों मिलि कै उन वैष्णवन की निंदा करन लाग्यो। ता पाछें सब वैष्णव बैठें हते तहां जाँइ के ऊपर तें भाठान की मार करन लाग्यो। ता पाछें सब वैष्णव उठि कै अपने घर गए। और कीर्तन तो रहि गए। ता पाछें सब वैष्णव सोय रहे। सो जब अर्द्धरात्रि भई तब कोऊ चारि जनें आय कै वा खंडन ब्राह्मन कों खाट तें ओंधो करि कै बोहोत मार्‌यो। और सगरे सरीर की खाल और हाड़ न्यारे किये। ऐसें बोहोत मार्‌यो। तब वह खंडन ब्राह्मन तो बोहोत ही बिलबिलायो। और बोहोत रोवन लाग्यो, और कह्यो, जो - तुम मोकों क्यों मारत हो ? तब उनन कही, तेनें श्रीगुसांईजी के सेवकन की

निंदा क्यों करी ? और कीर्तन में विघन क्यों कियो ? सो याहीं तें हम तोकों मारत हैं। और वैष्णव तो परम कृपापात्र भगवदीय हैं। और श्रीगुसांईजी तो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं। तातें अब जो - तू वैष्णवन तें बोलेगो तो हम तोकों नित्य याहीं भांति मारेंगे। ऐसें कहि कै वे तो गए।

भावप्रकाश - या वार्ता में यह जतायो, जो - भगवदीय वैष्णवन कौ अपराध श्रीठाकुरजी सहि नाहीं सके। और जहां कहूँ भगवद् वार्ता - कीर्तन होंई तहां श्रीठाकुरजी आप रहत हैं। यह श्लोक श्रीभागवत में पाया नहिं जाता। सो श्लोक -

नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।

तातें जो कोऊ भगवद् वार्ता - कीर्तन में विघ्न करे और वैष्णव कों दुःख देइ ताकों प्रभु आप या भांति सिक्षा देत हैं।

ता पाछें वा खंडन ब्राह्मन कौ सरीर बोहोत ही पीड़ा करन लाग्यो। सो याही तें निद्रा तो आवे नाहीं। सो इत कौ उत लोटत फिरे। जो - कब सवारो होंई ? और कब मैं जाँय कै उन वैष्णवन सों बिनती करों। और मेरो दुःख निवृत्त होंई। सो ऐसें करत सवारो भयो। तब वह हरुवे-हरुवे उठि कै वैष्णवन के पास गयो। तब उन वैष्णवन के पाँवन पर्‍यो। और कह्यो, जो- मैं जैसो तुम सों बोल्यो तैसो ही फल पायो। जो - तुम तो बड़े ही कृपापात्र भगवदीय हो। और हौं तो महा अधम पापी हों। ऐसें कहि कै अपनो सरीर दिखायो। और रात्रि के सब समाचार कहे। और मार खाई सो सब कहे। और कहे, जो -मेरे सरीर में पीड़ा बोहोत होत है। तब वा खंडन ब्राह्मन कों देखि कै वैष्णवन कों बोहोत ही दया आई। तब घर में तें चरनोदक ल्याय कै वाके सरीर में लगायो। और कह्यो, तू मुख में डारि।

श्री आचार्यजी श्रीगुसांईजी का नाम लीनो। तब वा खंडन ब्राह्मन सों कह्यो, जो - अब तुम अपने घर जाऊ। तब वा खंडन ब्राह्मन ने कह्यो, जो - मोकों कहूँ ठौर नाहीं। सो अब तुम कृपा करि कै मोकों वैष्णव करो। तब उन वैष्णवन ने खंडन ब्राह्मन सों कह्यो, जो - श्रीगुसांईजी कृपा करें तब ही ये बात होंई। सो यातें तुम्हारे मन में जो ऐसी आई है तो तुम श्रीगोकुल जाउ। तुम्हारो मनोरथ पूरन होइगो। ता पाछें वह खंडन ब्राह्मन वैष्णव सों बिदा मांगि कै चल्यो। सो केतेक दिन में श्रीगोकुल आय पहोंच्यो। तब वा खंडन ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, और कह्यो, जो - महाराजाधिराज ! मोकों नाम सुनाइए। जो - आप तो भक्तवत्सल हो। सो जीवन के अपराध साम्हें कहा देखत हो ? तब वा खंडन ब्राह्मन के बचन सुनि कै वाके ऊपर कृपा करि कै नाम सुनायो। तब श्रीगुसांईजी आप खंडन ब्राह्मन कों आज्ञा किये, जो - तुम एक उपवास करो। पाछें तुम कों निवेदन करावेंगे। ता पाछें एक उपवास करवाय कै वा खंडन ब्राह्मन कों दूसरे दिन आत्मनिवेदन करवायो। पाछें वा खंडन ब्राह्मन ने यथासक्ति भेंट करी। ता पाछें वह खंडन ब्राह्मन थोरे से दिन श्रीगोकुल में रह्यो सो मार्ग की सब रीति सीखी। और हू सब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै वा खंडन ब्राह्मन सों कहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वा खंडन ब्राह्मन कों ग्रन्थ पढ़ाए। सो सब मार्ग की रीति हृदयारूढ़ भई। सो ऐसें करत कितनेक दिन तांई वह श्रीगोकुल में रहि कै श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों

स्वरूपन के दरसन किये। पाछें एक दिन श्रीगुसांईजी आप प्रातः काल उठि कै देहकृत्य करि दंतधावन करि स्नान करि श्रीनवनीतप्रियजी के मंगला के दरसन करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कौ बिचार कियो। सो वह पंडित ब्राह्मन हू अपने संग लियो। और सब वैष्णवन कों अपने संग लेकै, श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों पधारे। सो श्रीगिरिराज जाँइ पहोंचे। सों श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग कौ समै हतो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी को राजभोग समप्र्यो। पाछें भोग सराय श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन सब वैष्णवन कों करवाए। तब वह खंडन ब्राह्मन हू दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भयो। और अपने मन में कह्यो, जो - धन्य मरो भाग्य है। जो - मोकों ऐसें दरसन भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजी की राजभोग - आर्ति करि सब सेवा तें पहोंचि कै अनोसर करवाय कै माला बीड़ा लेकै श्रीगिरिराज तें नीचे पधारे। सो अपनी बैठक में गादी तकियान के ऊपर बिराजे। तब खंडन ब्राह्मन हू दरसन करि कै नीचे आयो। सो श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् कियो ता पाछें श्रीगुसांईजी आप सब वैष्णवन कौ समाधान करि कै बिदा किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वा खंडन ब्राह्मन कों महाप्रसाद की आज्ञा करी, जो - आज महाप्रसाद यहांई लीजियो। पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन कों पधारे। सो भोजन करि कै वा खंडन ब्राह्मन कों महाप्रसाद की पातरि धरी। सो महाप्रसाद लियो। पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़े। सौ छिनक विश्राम करि कै जागे। पाछें उत्थापन कौ

समय भयो। तब स्नान करि कै श्रीगिरिराज ऊपर पधारे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों उत्थापन किये। पाछें सेन पर्यंत की सब सेवा सों पहोंचि कै अनोसर करवाय कै श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज तें नीचे पधारे। तब वह खंडन ब्राह्मन हू दरसन करि कै सोय रह्यो। सो ऐसें केतेक दिन तांई श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे। सो साथ सब वैष्णव आए। तब वह खंडन ब्राह्मन हू साथ आयो। सो श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये। और महाप्रसाद लिये। पाछें वा खंडन ब्राह्मन नें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो - महाराजाधिराज! आज्ञा होंइ तो मैं ब्रजयात्रा करि आउं। तब श्रीगुसांईजी आप खंडन ब्राह्मन सों कहे, जो ब्रजयात्रा तो अवश्य करी चाहिए। तब वह खंडन ब्राह्मन बिदा होंइ कै चल्यो। सो कितनेक दिन में सम्पूरन ब्रजयात्रा करि कै श्रीगोकुल आयो। सो श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कियो। पाछें केतेक दिन श्रीगोकुल में और रह्यो। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा होइ कै वह खंडन ब्राह्मन सिंहनंद अपने घर आयो। ता पाछें उन वैष्णवन सो मिलि भेट्यो। पाछें सब समाचार श्रीगुसांईजी के कहे। पाछें मार खायवे की बात श्रीगुसांईजी सों नाहीं कही हती सो हू बात उन वैष्णवन सों कही। तब उन वैष्णवन में एक मुखिया हतो। सो उहां पाग उतारि दोऊ हाथ जोरि कै पाछें वा खंडन ब्राह्मन के पाँवन पर्यो। और कह्यो, जो - धन्य है। साँची बात कहि दीनी। तुरत ही अपराध कौ दंड हू भयो। सो यह दैवी जीवन कौ लक्षन है। सो-

उनके निकट ही श्रीमहाप्रभुजी बिराजत है। और आसुरी जीवन कौ तो लक्षन यह है, जो - ज्यों-ज्यों अधर्म करें त्यों‌त्यों भलो होंई। सो याही तें यह तो ऐसी बात है। ता पाछें खंडन ब्राह्मन भलो वैष्णव भयो। सो सब वैष्णवन कों मिलि कै चलतो। और जो वैष्णव अपने घर आवे ताकों बोहोत ही दीनती सों अपने घर राखतो। सो सब वैष्णवन की यह खंडन ब्राह्मन बोहोत ही मर्यादा राखे। पाछें वह खंडन ब्राह्मन अपनी बुद्धि तें कीर्तन करतो। सो कीर्तन मार्ग की रीति सों श्रीभागवत के अनुसार करतो। और कोई वैष्णव बड़ाई करे तब कहें, जो - यह प्रताप तुम्हारोई है। तुम्हारी कृपा तें वह कार्य सिद्ध भयो है। और वैष्णवन कौ सब काम करतो। वैष्णवन सों दीनता राखतो।

सो वह खंडन सनोढिया ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥८९॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक कुनबी पटेल, गुजरात में एक छोटे खेरा में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सत्यव्रता' है। ये 'गुनचूडा' तें प्रगटी हैं। तातें उन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप गुजरात पधारे हते। तब वा कुनबी पटेल कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। तब वा कुनबी ने

श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो - महाराज ! मोकों सरनि लीजिए। तब आप श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो - तू स्नान करि आऊ । तब वह कुनबी पटेल स्नान करि आयो । पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो - महाराज ! मैं स्नान करि आयो हूं । तातें मो पर कृपा करि कै नाम दीजिए । तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै वाकों नाम सुनाए। दूसरे दिन उपवास करवाय कै वा कुनबी कों निवेदन करवाए। तब कुनबी वैष्णव ने यथासक्ति भेंट कीनी । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। समय भये भोग सराय आचमन मुखवस्त्र कराय आप भोजन किये। ता पाछें आचमन करि बीरा आरोगि कै गादी-तकियान के ऊपर बिराजे। और सब ब्रजवासी टहलुवान नें महाप्रसाद लियो। और वा पटेल ने हू लियो । सो महाप्रसाद लेत मात्र ही वा पटेल कों मार्ग कौ ज्ञान भयो । सो मार्ग हृदयारूढ़ भयो । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीसुबोधिनीजी की कथा कहें । सो वा कुनबी वैष्णव ने सुनी। सो ऐसें केतेक दिन तांई आप वा खेरा में बिराजे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप द्वारिका कों पधारे। सो श्रीरनछोरजी के दरसन किये । पाछें कछूक दिन उहां बिराजे । ता पाछें श्रीरनछोरजी सों बिदा होंइ कै चले। सो श्रीगोकुल आय पहोंचे। श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये।

वार्ता प्रसंग - २

और वा कुनबी पटेल के गाम के पास एक बड़ो गाम हतो। तामें वैष्णव कौ बोहोत ही समाज हतो। और वैष्णव - मंडली,

वार्ता-कीर्तन नित्य होते। सो वा गाम में एक तादृसी वैष्णव मुखिया हतो। सो वाके पास यह कुनबी जातो। सो यह कुनबी वैष्णव श्रीठाकुरजी की सेन - आर्ति कै अपने घर तें चलतो। सो रात्रि घरी छह गए पाछें उहां जाय पहोंचतो। सो सब वैष्णवन सों श्रीकृष्ण - स्मरन करि कै बैठतो। ता पाछें कथा - वार्ता सुनतो। पाछें रात्रि सवा पहर बाकी रहती तब सब वैष्णवन तें जैश्रीकृष्ण करि कै चलतो। सो अपने घर आय के श्रीठाकुरजी की सेवा करतो। सो ऐसें करत बोहोत दिन बीते। तब एक एकादसी आई। तब वह कुनबी पटेल अपने श्रीठाकुरजी की सेवा सों पोहोंची कै रात्रि कों चल्यो। सो अंधियारे में मार्ग भूल गयो। और मेह बरसत हतो। तब आगें चलि कै एक तलाव आयो। सो वा तलाव के ऊपर रूख बोहोत हे। सो एक रूख पैं तें एक प्रेत उतरि कै याके मार्ग में आड़ो आय ठाढ़ो भयो। तब या कुनबी वैष्णव ने कह्यो, जो - तू कौन है ? जो - या मार्ग में ठाढ़ो है ? तब वह बोल्यो, जो - हौं प्रेत हों। बोहोत दिनान कौ भूखो हूं। तातें मैं तोको खाऊंगो। तब वा कुनबी वैष्णव ने कही, जो - आज एकादसी के जागरन में जात हों और सवारे याही मार्ग आउंगो। तब तू मोकों सुखेन खाइयो। तब वा प्रेत ने या पटेल सों कह्यो, जो - तेरो विस्वास नाहीं। जो तू फेरि या मारग काहे कों आवेगो ? तू मेरे काल के मुख में काहे कों आवेगो ? तब वा कुनबी ने कही, जो - यह मेरो बचन है। जो - सवारे आयकै तोकों पुकारूंगो। तब तू मोकों सुखेन खाइयो। तब वा ब्रह्म राक्षस ने कह्यो, जा - भलें विस्वास है।

परि तू सवारे बेगो आईयो। तब वा प्रेत ने बचन लै के जान दीनो। तब वह पटेल वैष्णव वा गाम में वार्ता - कीर्तन - मंडली में गयो। तब सावधानी सों कथा सुनी। और मन हुलास सों कीर्तन किये। और वा पटेल कुनबी वैष्णव ने अपने मनमें बिचार कियो, जो - सवारें तो वह राक्षस खायगो। जो -मैं उहां तें निश्चय करि कै आयो हूं। सो यातें भगवद् नाम जितनो लियो जाँई सों आछौ है। तब वह कुनबी वैष्णव बोहोत आनंद पाइ कै भगवद् वार्ता करन लाग्यो। सो ऐसें करत रात्रि तो ब्यतीत भई। ता पाछें सवारे वैष्णवन सों जैश्रीकृष्ण करि कै चल्यो। सो वाही तलाव पै आयो। सो वा राक्षस के पास आयो। तब वा कुनबी पटेल ने वा प्रेत सों कह्यो, जो - अरे भाई, ब्रह्म राक्षस! तू आउ। सो वह कुनबी वैष्णव पांच बेर पुकार्‌यो। और कह्यो, जो - तू बेगि आय कै मोकों खाउ। तब वह प्रेत तो कछू बोल्यो नाहीं। और वाने अपने मनमें बिचार कियो, जो देखो! यह मरिवे कों आयो है। जो - यह मेरे काल के मुख में तें निकसि कै फेरि आयो है। परि देखो! बचन कौ सांचो है। परि ये तो आपही हरिजन है, भगवद्भक्त है। सो ये बचन सत्य करिवे कों आयो है। और इन कों मृत्यु कौ डर नाहीं। तब कह्यो, जो ऐसें भगवद्भक्त कों तो मैं नाहीं खाउंगो। सो वैष्णव कौ दरसन करि कै फिरि गयो। तब वह कुनबी वैष्णव फेरि बोल्यो, अरे प्रेत! तू बेगो आउ। जो - मोकों भगवत्सेवा कों अवेर होत है।

जो - अब तो मैं तुम कों नहीं खाउंगो। जो - तुम तो हरिजन वैष्णव हो। सो तुम्हारो बचन तो साँचो है। अपने धर्म के लिये तुम ने मृत्यु कौ भय नाहीं कियो। तातें हों तुम पास एक वस्तू मांगत हों। सो मोकों दीजिए। ऐसें कहि वह प्रेत वा कुनबी वैष्णव के पाँवन पर्‌यो।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो - जाकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दृढ़ आश्रय है, तासों काल हू डरपत हैं। तहां प्रेतादिक की कहा चले ? तातें हरिजन सदा निर्भय रहत हैं। काहेतें, जो - ये सर्व ते अधिक हैं। तीन लोक इन की वंदना करत हैं। सो सूरदासजी गाए हैं, सो पद -

राग : बिलावल

हरि के जन की अति ठकुराई।
महाराज ऋषिराज, महामुनि, देखत रहे लजाई॥
दृढ़ विश्वास कियो सिंघासन ता पर बैठे भूप।
हरि गुन बिमल छत्र सिर राजत, सोभा परम अनूप॥
निस्पृह देस कौ राज करे, ताकौ लोक परम उत्साह।
काम क्रोध मद लोभ मोह तहां, भये चोर तें साह॥
बने विवेक विचित्र पोरिया औसर कोऊ न पावे।
अर्थ काम तहां रहें दूरि दूरि मोक्ष धर्म सिर नावे॥
अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारें ठाढ़ी, कर जोरें उन लीनी।
छड़ीदार वैराग्य विनोदी, झटकी बाहर कीनी।
हरिपद पंकज प्रेम परम रुचि ताही सों रंग राते।
मंत्री ज्ञान औसर नहीं पावत करत बात सकुचाते॥
माया काल व्यापे नहीं कबहू जो या रीतै जाने।
'सूरदास' यह नर तन पायो, गुरु प्रसाद पहचाने॥
सो भगवदीय वैष्णव कौ स्वरूप या भांति कौ जाननो।

तब वा कुनबी वैष्णव ने कह्यो, जो - तू कहा मांगत है ? तब वा प्रेत ने पटेल सों कह्यो, जो - तुम आज कीर्तन किये हो ताकौ फल

मोकों दीजिये। तब मेरो उद्धार होइगो। और मैं प्रेत योनि तें छूटूंगो। तब पटेल वैष्णव ने कह्यो, जो - कीर्तन कौ फल तो मैं नाहीं देउंगो। तोकों खानो होंइ तो सुखेन खाऊ। तब वा प्रेत ने कह्यो, जो - आधौ तो फल दीजिए। तब वा पटेल ने कह्यो, जो - आधौ हू नाहीं देउंगो। तब एक घरी कौ फल मांग्यो, सो हू नाहीं कीनी। तब आधी घरी कौ फल मांग्यो तो हू नाहीं कीनी।

भावप्रकाश - यहां संदेह होंई, जो - पुष्टिमार्ग में तो सब कार्य कामनारहित व्है करिवे कौ कह्यो है। तातें फल की इच्छा तो इहां है नाहीं। तब या वैष्णव फल देन की नाहीं क्यों कियो ? तहां कहत हैं, जो - कीर्तन कौ फल तो महा अलौकिक है। ता करि साक्षात श्रीगोवर्द्धनधर की प्राप्ति होत हैं। सो लीला सहित प्रभु हृदय में आय रहत हैं। ऐसो फल या राक्षस कों कैसें दियो जाय ? काहेतें ? यह दैवी तो है नाहीं। तातें नहीं कियो।

तब वा राक्षस ने कह्यो, जो - वैष्णव ! मोकों पांच ताल कौ पून्य तो देऊ। ताही समै आकास - बानी भई, जो वैष्णव तुम तो हरिजन हो। तातें दया करि याकों पांच ताल कौ पून्य दीजिए। तातें याकी गति होंइ। याकों तुम्हारे वैष्णव के दरसन तें यह ज्ञान भयो है। तब कुनबी वैष्णव ने तलाव में तें जल ले कै वा राक्षस के हाथ में दियो। और कह्यो, जो - मैंने तोकों पांच ताल कौ पून्य दियो। सो इतनो कहत ही वा राक्षस की देह छूटी। प्रेत योनि तें मुक्त भयो। ता पाछें स्वर्ग तें विमान आयो। तब वह राक्षस सुंदर दिव्य देह धरि कै वा कुनबी वैष्णव की परिक्रमा करि पाँवन परि कै वा विमान में बैठि कै स्वर्ग कों गयो। सो भगवदीय कौ ऐसो ही प्रताप है। पाछें वह पटेल अपने घर आयो।

भावप्रकाश - सो या वार्ता में यह जतायो, जो - वह कुनबी वैष्णव सत्संग के लिये

इतनी दूरि आवतो। सो सत्संग ऐसो पदार्थ है। तातें भगवदीय वैष्णव कौ संग अवस्य करनो। जातें धर्म की हानि कबहू न होंई।

सो वह कुनबी वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥९०॥

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक साहूकार, मथुराजी में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'मनोरूपा' है। सो मनोरूपा श्रीयमुनाजी को यूथ की हैं। ये 'छबिसिंघि' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये मथुराजी में एक द्रव्यपात्र साहूकार के घर जन्म्यो। सो उह साहूकार सराफी की दुकान हू करतो। सो वाकौ बेटा बरस बारह कौ भयो। तब वाकौ ब्याह कियो। पाछें केतेक दिन में वह साहूकार मर्‍यो। तब वह दुकान पै जान लाग्यो। परि यह दैवी जीव हतो। तातें याके मन में यह चिंता रहे, जो - श्रीठाकुरजी की प्राप्ति कैसें होंई ? सो जो कोऊ वाकी दुकान पैं आवतो तासों यह पूछतो।

सो एक दिन एक मथुरिया चौबे या साहूकार की दुकान पै आयो। सो वह पंडित हुतो। तिन सों यह साहूकार पूछ्यो, जो - तुम बड़े पंडित हो। तातें हम कों श्रीठाकुरजी कौन प्रकार मिले सो उपाय कृपा करि कहिये ? हम कों श्रीठाकुरजी के मिलिवे की बोहोत उत्कंठा रहत है। तब वह मथुरिया चोबे ने कह्यो, जो - सुनि ! श्रीठाकुरजी तो घर छोरि एकांत बन में जांई भजन करे तब मिलत हैं। ता उपरांत जो - तोकों कछू पूछनो होंई तो तू श्रीगोकुल जा। तहां श्रीविट्ठलनाथजी गुसांईजी रहत हैं। तिनसों पूछि। वे बड़े पंडित हैं। बोहोत लोग उनके सेवक हैं। यह कहि मथुरिया चोबे तो अपने घर गयो। पाछें दूसरे दिन वह साहूकार श्रीगोकुल आयो। सो ता समै श्रीगुसांईजी आप ठकुरानी घाट पर संध्यावंदन करत हुते। सो तहां यह साहूकार कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो महा अलौकिक तेजपुंज ऐसें दरसन भए। सो वह एक घरी लों उहां ठाढ़ौ रह्यो। पाछें श्रीगुसांईजी या साहूकार की ओर देखे। तब वा साहूकार सों आप कृपा करि कहे, जो - तू कहा पूछिवे आयो है ? सो मोसों कहि। तब तो यह साहूकार विस्मित होंइ रह्यो। कह्यो जो - देखो ! बिनु कहे इनने मेरे हृदय की जानी। तातें निश्चय यह ईश्वर है। ऐसें अपने मन में निर्द्धार कियो। पाछें यह साहूकार दोऊ हाथ जोरि बिनती कियो, जो - महाराज ! आप ईस्वर हो, मेरे मन की जानें। तातें अब मोकों कृपा करि कै सरनि लीजिये। हों आप के सरनि आयो हूं। तब श्रीगुसांईजी कहें, जो - तू पहिले वा बात कों पूछि। पाछें तोकों सरनि लेइंगे। तब या साहूकार ने बिनती करी, जो - महाराज ! मेरे मन में बोहोत दिनन तें यह अभिलाषा ही, जो - श्रीठाकुरजी कौन भांति मिले ? सो महाराज ! मैंने बोहोत से पंडितन कों पूछी। परि मैं जिन सों पूछ्यो। वह यह कहें, जो - संसार छोरि कै विरक्त होऊ तो श्रीठाकुरजी मिले। सो महाराज ! यह कार्य तो

बोहोत कठिन है। या काल में स्त्री, द्रव्य, घर कैसें छोरे जाँई ? देह के अध्यास तो छूटे नाहीं हैं। तासों मैं आप सों पूछिवे आयो हो। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो- तू साँच कहत है। जहाँ तांई देहाध्यास न छूटे तहां तांई गृह-त्याग सर्वथा बाधक है। ता उपरांत जो कोऊ बिनु बिचारे गृह छोरे तो दुसंग करि निश्चय भ्रष्ट होंई। और ठाकुर तो काहू साधन किये तें मिलत नाहीं। वे तो अपनी कृपा ही तें जीव को मिलत हैं। तातें जीव कों भगवत्सेवा ही कर्तव्य है। जातें उनकी कृपा होंई। यह सुनि कै साहूकार बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें बिनती कियो, जो - महाराज ! अब मोकों बेगि सरनि ले भगवत्सेवा पधराय दीजिए। तो हों सेवा करों। तब श्रीगुसांईजी वाकों आज्ञा किये, जो - तू श्रीयमुनाजी में न्हाई ले, हम तोकों यहां ई सरनि लेइंगे। तब वह साहूकार श्रीयमुनाजी में स्नान करि श्रीगुसांईजी के पास आयो। तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम - निवेदन कराई सरनि लिये। पाछें वासों आज्ञा किये, जो - तू हमारे संग मंदिर में चलि। श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करि। पाछें तोकों भगवत्सेवा पधराइ देइंगे। तब वह साहूकार श्रीगुसांईजी के संग श्रीनवनीतप्रियजी वाकों अलौकिक दरसन दिये। तब वह दरसन करत ही थकित व्है गयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर करि अपनी बैठक में पधारे। तब यह साहूकार हू बैठक में आयो। पाछें श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि बैठ्यो। तब श्रीगुसांईजी वा साहूकार कों आज्ञा किये, जो - अब तेरी कहा ईच्छा है ? तब वह साहूकार बिनती कियो, जो - महाराज ! मोकों भगवत्सेवा पधराइ दीजिए। और सेवा कौ प्रकार हू कृपा करि समझाइए। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै वा साहूकार कों एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दिये। ता पाछें वा साहूकार सों श्रीगुसांईजी आप कहे, जो - तू इनकी सेवा मन लगाय कै करियो, भावप्रीतिपूर्वक। और इन कों तू साक्षात् करि कै जानियो। जैसें तू अपने सरीर कौ सीत, उष्ण, भूख, दुःख, आदि सों जतन करत हैं ताही भांति इन कौ करियो। जो - कछु खान-पान करे सो इन कों समर्पि कै करियो। और श्रीठाकुरजी आप उत्तम बस्तू के भोक्ता हैं। तातें जगत में जो कछू उत्तम पदार्थ देखे तिनकों तू श्रीठाकुरजी की सेवा में विनियोग कराइयो। ता पाछें वाकों अपने कारज में लीजियो। तातें अन्य संबंध की निवृत्ति होंइगी। तब सरन दृढ़ होइगो। सरन दृढ़ भए बिनु श्रीठाकुरजी की कृपा होत नाहीं। तातें घर में रहि कै मारग की रीति प्रमान सेवा करियो। और मथुराजी में अमूके स्त्री-पुरुष वैष्णव निष्किंचन रहत हैं ताकौ संग करियो। सो वे तोकों सेवा कौ प्रकार समझावेंगे। सो ता प्रकार तू सेवा करियो। तातें तेरे ऊपर बेगि कृपा होइगी।

ऐसें कहि श्रीगुसांईजी आप भोजन कों पधारे। तब आप या साहूकार को आज्ञा किये, जो - आज तू यहांइ महाप्रसाद लीजियो। पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन करि बीरी लै बाहिर पधारे। तब या साहूकार कों आप जूठन की पातरि धरे। सो यह साहूकार महाप्रसाद लियो। पाछें वह साहूकार श्रीगुसांईजी सों आज्ञा मांगि मथुराजी आयो। ता पाछें वाने अपनी स्त्री कों एक वैष्णव के संग श्रीगोकुल पठाई। और स्त्री सों कह्यो, जो - तू बेगि श्रीगुसांईजी की सेवक

होऊ। तब दोऊ मिलि कै सेवा करें। सो स्त्री हू श्रीगोकुल जाँई श्रीगुसांईजी की सेवकिनी होई आई। तब दोऊ मिलि कै सेवा करन लागे। पाछें वह निष्किंचन स्त्री-पुरुष कौ संग करन लाग्यो। सो याकौ भगवद्‌भाव बढ़्यो। तब यह साहूकार ऋतु अनुसार मनोरथ करन लाग्यो। ता पाछें सब वैष्णवन कों बुलाइ मंडली करे। या प्रकार प्रीतिपूर्वक सेवा करतो। सो श्रीठाकुरजी थोरेई दिन में वाकों सानुभावता जनावन लागे।

वार्ता प्रसंग -१

सो एक दिन साहूकार वैष्णव ने आम के दिनन में समस्त गाम के वैष्णवन की मंडली कीनी। सो आम के रस की मंडली करी। सो मथुराजी में श्रीगुसांईजी के सेवक निष्किंचन स्त्री पुरुष दोई वैष्णव हते। सो उन वैष्णवन के यह नेम हुतो, जो - अपने श्रीठाकुरजी आरोगे सोई लेनो। और वैष्णव - मंडली में न्योतौ आवे तब जो सामग्री मंडली में होंइ सो अपने श्रीठाकुरजी कों आरोगावते। तब मंडली में जाते।

भावप्रकाश - काहेतें, जो - यह पतिव्रता कौ धर्म है, जो - स्वामी आरोगे सोई लेनो। और समाज राखिवें कों वैष्णव - मंडली में जांइ। परि उहां जो सामग्री होंई सो अपने घर श्रीठाकुरजी कों प्रथम आरोगावे। पाछें उहां महाप्रसाद लेइ। यह मारग की रीति है। सो यह पुष्टिमार्ग में पतिव्रता धर्म मुख्य है। और श्रीगुसांईजी 'श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र' में श्रीआचार्यजी कौ नाम कहे हैं, जो -'पतिव्रता पतिः' सो पतिव्रता, जो - अनन्य भक्त, तिनके आप पति हैं। यह कहि यह जतायो, जो - पुष्टिमार्ग में पतिव्रता - धर्म की नाँई जो - कोऊ वैष्णव ठाकुर की सेवा करत है ताकों स्वामिनीवत् सौभाग्य की प्राप्ति होत है।

और ये लीला में 'रति', 'गति' दोऊ जसोदाजी की सखी हैं। सो नंदालय में श्रीठाकुरजी की सेवा में सदा तत्पर रहति हैं। नई-नई सामग्री सिद्ध करति हैं। सो श्रीजसोदाजी दोऊन कों थार कौ महाप्रसाद नित्य देति हैं, सोई लेति हैं। और कछू लेति नाहीं। ऐसी दोऊ अनन्य हैं।

सो वा दिन मंडली में रस हतो। सो सब आम तो वा सेठ के घर लै गए हते। और यह वैष्णव आंबा लैन कों बजार में गयो। सो बाजार में कहूं आंबा न मिले। तब यह वैष्णव कों अत्यंत ताप भयो। तब ताही समै एक माली बजार में आबांन कौ टोकरा लै कै आयो।

भावप्रकाश - यह कहि यह जताए, जो - ताप - भाव सों सर्व मनोरथ तत्काल सिद्ध होत हैं।

तब इन वैष्णव ने पूछी, जो - हम कों दोइ पैसा के आंबा देइगो ? तब उन माली ने कही, जो - सगरो टोकरा लेउ तो देउं ! तब इन वैष्णवने कही, जो - सबन कौ कहा लेउगे ? तब मालीने कही, जो - एक रुपैया लेउंगो। तब वैष्णवने कही, जो- रुपैया कहां तें ल्याऊं ? ऐसें कहि कै पाछें कही, जो - दोइ चारि दिना तांई मांगियो मति, पाछें देईंगे। ऐसें कहि कै वह वैष्णव श्रीयमुनाजी के किनारें आयो। तहां एक-एक आम धोय धोय कै श्रीठाकुरजी कों मानसी में भोग धरत गयो। सो श्रीठाकुरजी ने वाही ठौर सब आम आरोगे। इतने में वा सेठ के घर भोग आयो। सो सब आंबान कौ रस ही निकासे। समंगल आम कोई न हतो। तब बजार में सेठ ने मनुष्य पठाये, जो - आम ले आउ। सो वह वैष्णव बैठ्यो हतो तहां आए। तब माली तै पूछ्यो, जो - आम बेचेगो ? तब उन माली ने कही, जो - आम तो इन वैष्णव ने लिये हैं। तब इन वैष्णव ने उन मनुष्यन सों कही, जो - चहिए तो ले जाऊ। एक रुपैया में ठहराए हैं। तब उन मनुष्यन ने कही, जो - चलो रुपैया हम दिवावें। ऐसें कहि कै वे मनुष्य तो आम ले गए। और वह वैष्णव अपने घर आयो। तब सेठ के घर वे आम खासा करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग धरिवे लगें। तब श्रीठाकुरजी नें सेठ सों कही, जो - ये आम तो फलाने वैष्णव ने अपने श्रीठाकुरजी कों धराए हैं। तातें प्रसादी आम तो मैं न आरोगूंगो। तब सेठ ने उन वैष्णव

को बुलाय कै पूछी, जो - ये आमे तुमने श्रीठाकुरजी कों भोग धरे हैं ? तब उन वैष्णव ने कही, जो धरे तो खरे, कहा करें ? पास रुपैया नाहीं। तातें ऐसें किये। पाछें वैष्णव मंडली प्रसाद लेवे बैठी। तब वह एक-एक आम सबन कों धरे। पाछें सब महाप्रसाद लेवे लगे। तब वा सेठ के घर की रस-पूरी लेवे लगे। ता पाछें उह समंगल आम लिये। सो वह अत्यंत अलौकिक स्वाद लगे। काहेतें, जो वह - वैष्णव ने ताप - भाव करि कै श्रीयमुनाजी के तट पै श्रीठाकुरजी कों आम समर्पे। सो उहांई श्रीठाकुरजी ने अति प्रसन्न होंई आरोगे।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो - वैष्णव प्रीतिपूर्वक जा ठौर जैसें प्रकार सो श्रीठाकुरजी कों भोग धरत है, ता ठौर तैसें प्रकार सों श्रीठाकुरजी आँप श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी की कानि सों साक्षात् श्रीमुख में अंगीकार करत हैं। तातें वैष्णव कों उत्तम बस्तू जा भांति बनि आवे ता भांति श्रीठाकुरजी कों समर्पनी। यह सिद्धांत भयो।

सो वह सेठ और वह वैष्णव ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥९१॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक बनिया गुजरात, में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'आनंददायिनी' है। ये 'छबिसिंधि' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं। और आनंददायिनी की एक सखी है। वाकौ नाम 'सुलोचना' है। इन के नेत्र बड़े सुंदर हैं। तातें श्रीठाकुरजी इनकी ओर टकटकी लगाई कै देखत हैं। सो आनंददायिनी तो यहां बनिया भयो। और इनकी बेटी सो 'सुलोचना' कौ प्रागट्य जाननो।

सो वह बनिया गुजरात नें एक गाम में एक जैनी के जन्म्यो। सो वाकौ पिता द्रव्यपात्र हुतो। सो वह या बेटा कों बोहोत लाड़ करें। सो बेटा बरस सोरह कौ भयो। पाछें वा बनिया के बेटा कों एक वैष्णव कौ संग भयो। तब वाने वा वैष्णव कौ आचार देख्यो। तब वाकी रुचि वैष्णव धर्म पै भई। सो वाके मन में आई, जो - हों वैष्णव होऊं तो आछौ। पाछें या बनिया के बेटा ने वा वैष्णव सों कह्यो, जो - तुम मोकों वैष्णव करो तो आछौ। तुम्हारो आचार-विचार

मोकों बोहोत रुचत हैं। हमारे यहां तो कोऊ नित्य न्हात हू नाहीं। सब मलीन रहत हैं। कहत हैं, जो - जादा पानी खर्च कियो न जाँई। जीवजंतु मरे तो पाप होईगो। सो मोकों तो वह धर्म रुचत नाहीं। तातें हों तो वैष्णव होऊंगो। तातें तुम मोकों सेवक करो। तब वा वैष्णवने कही, जो - भाई! हम तो काहू कों सेवक करत नाहीं। परि तेरे वैष्णव होनो होंई तो दोइ चारि दिन में यहां श्रीगुसांईजी पधारेंगे। उन की सरनि जइयो। वे साक्षात् ईश्वर हैं। सो उनके सरनि गये तें तेरो कल्यान होइगो। तब वह बनिया के बेटा नें कह्यो, जो भलो, श्रीगुसांईजी पधारे तब तुम मोकों कहियो। हों उनकौ सेवक होऊंगो। मेरे मन में वैष्णव होइवे की बोहोत उत्कंठा है। तब वा वैष्णवने कह्यो, जो - भले, मैं तोसों कहोंगो। पाछें वह तो अपने घर गयो। परि वाके मन में बोहोत आरति रहे, जो - कब श्रीगुसांईजी यहां पधारे और हों उनकौ सेवक होउं। ऐसें करत कछूक दिन में श्रीगुसांईजी वा गाम में पधारे। तब वा वैष्णव के बेटा सों कह्यो, जो - श्रीगुसांईजी इहां पधारे हैं, तेरी ईच्छा होई तो वैष्णव होऊ। तब तो बनिया कौ बेटा प्रसन्न व्है श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। और विनती कियो, जो - महाराज! मोकों कृपा करि अपनो सेवक कीजिए। हों आप के सरनि हूं। तातें बिलंब मति कीजिए। तब श्रीगुसांईजी वाकी बोहोत आरति देखि वाकों नाम सुनाय सेवक किये। पाछें दूसरे दिन ब्रत कराए। ता पाछें निवेदन कराए। तब वा बनिया के बेटा ने कह्यो, जो - महाराज! श्रीठाकुरजी पधराय दीजिए तो हों सेवा करों। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो - अब ही नाहीं। काहेतें, जो - तेरे मा-बाप जैनी हैं। तातें तोसों अब ही सेवा न बनि आवेगी। कछूक दिनमें तेरे मा-बाप मरेंगे। तब तू अड़ेल आईयो। तहां तोकों सेवा पधराय देइंगे। अबही तू वैष्णवन कौ संग करि। पाछें श्रीगुसांईजी आप तो उहां ते द्वारिकाजी कों विजय किये। सो उहां कछुक दिन रहि पाछें अड़ेल पधारे। ता पाछें कछूक दिनमें वा बनिया कौ ब्याह भयो। पाछें केतेक दिन पाछें वा बनिया के मा-बाप मरे। तब वह स्त्री कों संग लेकै अड़ेल आयो। सो स्त्री कों श्रीगुसांईजी पास नाम-निवेदन करवायो पाछें वह श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो - महाराज! अब मेरे कोई प्रतिबंध नाहीं है। तातें कृपा करि भगवद् - सेवा पधराय दीजिए। तब श्रीगुसांईजी वाकों एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दिये। पाछें सेवा की सब रीति बताई। ता पाछें वह बनिया श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि श्रीठाकुरजी पधराय स्त्री कों संग ले अपने देस आयो। सो भाव - प्रीतिपूर्वक सेवा करन लाग्यो। नित्य वैष्णवन कौ संग करे। पाछें कछूक दिन में एक बेटी भई।

वार्ता प्रसंग -१

सो वह बनिया परम भगवदीय हतो। सो वाके एक बेटी कुंवारी हती। सो कन्या के निमित्त वह वर ढूंढन कों गयो। परंतु कोऊ वैष्णव मिल्यो नाहीं। तब एक जैन धर्मी ज्ञाति कौ मिल्यो। तब वासों अपनी बेटी कौ विवाह करि दीनो। सो वह

वैष्णव की बेटी अपने घर कों गइ। तब वह लरिकिनी वाके घर में जैन धर्म अनाचार भ्रष्ट देखि कै मन में बोहोत दुःख करन लागी। घर में तो सब भ्रष्टाचार। और खाए बिना तो रह्यो न जाँय। तातें उन लरिकिनी ने अपनी सास तें कह्यो, जो - तुम्हें मोकों परोसनो होइ सो एक बेर ही परोस देहु। मैं तो कछू फेरि मांगोंगी नाहीं। तब वाकी सास एक ही बेर वाकी पातरि में परोसे। तितनो ही वह लरिकिनी चरनामृत मिलाय कैं खाँहि। परंतू दूसरी बेर न कछू खाँय न कछू लेय। या भांति सों निर्वाह करें। सो ऐसें करत बोहोत दिन भए। सो वह लरिकिनी मन में बोहोत ही दुःख करे। और कहे, जो - या आपदा तें श्रीठाकुरजी कब छुटावेंगे। या भांति सों बोहोत ही खेद करे। सो श्रीठाकुरजी तो परम दयाल हैं, भक्तवत्सल हैं। सो वह लरिकिनी कौ दुःख देखि कै श्रीनाथजी नें श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो - वह बनिया वैष्णव की बेटी उह गाम में है। सो वाकौ दुःख मोतें सह्यो जात नाहीं। तब श्रीगुसांईजी उह लरिकिनी कौ दुःख जानि कै थोरे से दिन में वह गाम में पधारे। सो वा गाम के बाहिर तलाव हतो। सो वा तलाव के ऊपर श्रीगुसांईजी ने डेरा किये। तब ता दिना वह बनिया वैष्णव की बेटी वा तलाव पर पानी भरन कों गई हती। तब उहां वा लरिकिनी ने श्रीगुसांईजी के ब्रजबासी देखे। तब उह लरिकिनी वा ब्रजबासी के ढिंग ठाढ़ी-ठाढ़ी बिचार किये। जो - ये ब्रजबासी तो मेरे बाप के घर नित्य आवत हते। तब वह लरिकिनी वा ब्रजबासी के ढिंग आय कै पूछ्यो, जो -

तूम कौन हो ? और कहां तें आए हो ? तब उन ब्रजबासीन ने कही, जो - श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें पधारे हैं। सो हम सब ब्रजबासी उन के साथ हैं। सो श्रीगुसांईजी आज इहां उतरे हैं। सो आज तो इहां रहेंगे। और सवारे श्रीद्वारिकाजी कों पधारेंगे। तब वा लरिकिनी ने वा ब्रजबासी सों कही, जो - मैं तो फलाने वैष्णव की बेटी हों। और मेरे इहां तो मेरो पिता श्रीगुसांईजी कौ सेवक है। सो मोकों श्रीगुसांईजी के दरसन करावोगे ? मैं तो वैष्णव की बेटी हों। और इहां सुसरारि में तो जैन धर्मी हैं। तातें मोकों तो इहां परम दुःख है। सो श्रीगुसांईजी के दरसन करे तें मेरो दुःख निवृत्त होइगो। तब वह लरिकिनी ने उन ब्रजबासिन सों कहि कै वह जल कौ घड़ा तो वा तलाव पर धरि दीनो और आप वा ब्रजबासी के साथ जाँय कै श्रीगुसांईजी के दूरि तें दरसन किये। दंडवत् कीनी। तब श्रीगुसांईजी वा ब्रजबासी सों पूछे, जो - यह कौन है ? तब श्रीगुसांईजी सों वा ब्रजवासी ने बिनती कीनी, जो-महाराज ! यह तो अमुके वैष्णव की बेटी है। तब वह लरिकिनी श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै पाछें वह तलाव पर आई कै जल कौ घड़ा भरि कै घर आई। सो घर में आइ कै सोच करन लागी, जो - अब मैं कहा करों ? तब वाने अपनी सास सों कही, जो - मेरे पिता के गुरु श्रीगुसांईजी इहां पधारे हैं। सो तुम मोकों एक नारियल देऊ। तब वाकी सास ने कह्यो, जो - अरी बहू ! तू कहे तो तेरे साथ आऊं, श्रीगुसांईजी के दरसन कों। तब बहू ने कह्यो, जो- भलो, तुम हू चलो। तुम्हारी इच्छा हैं तो तुम हू चलो। सो घर तें वे दोऊ

जनीं एक-एक नारियल लै कै सास - बहू चली । सो उहां श्रीगुसांईजी के पास गई । तब ब्रजबासिन ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो महाराज ! अमूके वैष्णव की बेटी आई है । तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो - कहो भीतर आवें । तब ये दोऊ डेरा के भीतर जाँई कै श्रीगुसांईजी को दंडवत् किये । पाछें हाथ जोरि कै उहां ई ठाढ़ी होंई रही । तब बहू ने अपनी बिनती श्रीगुसांईजी सों करी, जो मोकों नाम दीजिए । मैं आपकी सरनि आउंगी । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो - नाम देईंगे । तब वाके सास-बहू के मन में नाम पाइवे कौ बड़ो उत्साह भयो । जो - ये तो साक्षात् ईश्वर हैं । मो पर कृपा करि कै नाम देइंगे । तब सास ने बहू के हाथ बिनती करवाई, जो - मोहू कों नाम दे तो भलो है । तब वा बहू ने श्रीगुसांईजी सों फेरि बिनती करी, जो - महाराज ! मेरी सास - बहू नाम पायवे की बिनती करति हैं । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो - भले । पाछें दोऊ जनीं श्रीगुसांईजी के आगें आय बैठीं । तब उन पर कृपा करि कै दोऊन कों नाम दीनो । तब वे दोऊ नाम पाइ कै वैष्णव भई । पाछें श्रीगुसांईजी कों नारियल भेंट धरि दंडवत् करि कै प्रसन्न मन सों घर कों गई । और उन के साथ वा गाम की लुगाई पांच-सात जनीं और बहू गई हती, श्रीगुसांईजी के दरसन कों । सो वेऊ सब ताही समै श्रीगुसांईजी पास नाम पायो । सो वे नाम पाइ कै अपने-अपने पति के आगें आइ कै सब समाचार कहे, जो - अब तो हम वैष्णव भई हैं । श्रीगुसांईजी पास नाम पायो है । तातें अब हमारो और तुम्हारो सब व्यवहार छूट्यो ।

पाछें वा लरिकिनी के सुसर ने अपनी स्त्री सों कह्यो, जो - श्रीगुसांईजी मोहू कों नाम देइंगे। सो तू मोकों उहां ले चलि। सो वह अपने बेटान सहित अपनी स्त्री तथा बहू कों साथ लैके श्रीगुसांईजी के पास जाँई कै नाम पाइवे की बिनती कियो। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै उन सबन कों नाम दिये। पाछें बहूने निवेदन की बिनती कीनी। तब श्रीगुसांईजी वाकों निवेदन कराए। ता पाछें और सबनने निवेदन की बिनती कीनी। तब उन कों एक व्रत कराई निवेदन कराये। तब बहूने फेर बिनती करि कै कह्यो, जो - महाराज ! अब कछु सेवा पधराइ दीजिए। तब श्रीगुसांईजी वाकों श्रीनवनीतप्रियजी के वस्त्र की सेवा पधराये। तब वह बहू सेवा पधराइ, अपने घर आई। सो बहू के पाछें सब कुटुंब ने नाम-निवेदन पायो। ता पाछें गाम के और हू लोग वैष्णव भए, या भाति। पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी कों सबन बिनती करि कै उहां राखे। सो अपने-अपने घर श्रीगुसांईजी कों पधराय कै बिनती करि कै भेट धरी। या प्रकार श्रीगुसांईजी ने वा वैष्णव की बेटी की कानि तें उन सबन कों अंगीकार कीने। तब वह लरिकानी कौ दुःख गयो। या प्रकार श्रीठाकुरजी वाकौ दुःख सहि न सके। तातें थोरेसे दिन में वाकौ दुःख दूरि कीनो। पाछें श्रीगुसांईजी दूसरे दिन द्वारिका कों पधारे। पाछें लरिकिनी ने अपनी सास सों कह्यो, जो - अब हों रसोई करूंगी। तब सासने कह्यो, जो - भलेई, तू रसोई करि। पाछें वा लरिकिनी नें घर में तें सब अपरस काढ़ि कै रसोई

पोति पात्र सब खासा करि, रसोई सिद्ध करि, पाछें श्रीठाकुरजी कों भोग धर्‌यो। पाछें समै भये भोग सरायो। और घर के जो - नाम पाए हते तिन सों कह्यो, जो -जा प्रकार मैं करत हों ताही प्रकार तुम करो। पाछें श्रीठाकुरजी कों अनोसर करि कै सबन कों महाप्रसाद लिवायो। या प्रकार आपु ही सब करि कै सबन कों आचार की बिधि सिखाई। सो वे थोरेसे दिन में परम भगवदीय भये। तब वह लरिकिनी कौ सुसर तथा और हू लोग लुगाई कहन लागे, जो - हम पर श्रीगुसांईजी और श्रीठाकुरजी की कृपा भई है सो सब या बहू के प्रताप तें भई है। याही की कृपा तें हमारो अंगीकार भयो है। ता दिन तें वह बहू को सब कोऊ भगवदीय करि कै जानन लगे। और घर में सब तें अधिक करि कै मानते।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो - ताप करि प्रभु बेगि प्रसन्न होत हैं। तातें वैष्णव कों मन में ताप राखनो।

सो वह बहू श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥९२॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक तीन तूंबा वारौ वैष्णव, ब्राह्मन, सिद्धपुर कौ तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'जयश्री' है, सो जयश्री में स्वामीनीजी कौ अलौकिक सौंदर्य है। तातें श्रीठाकुरजी इनके अधीन व्है रहत हैं। ये 'छबिसिंधी' तें प्रगटी हैं। तातें उन के भावरूप हैं।

ये सिद्धपुर में एक ब्राह्मन के प्रगटे। सो जन्मत ही भगवन्नाम कौ उच्चार किये। 'श्रीकृष्ण' ऐसें कह्यो। रुदन कियो नाहीं। तब इन के माता-पिता आश्चर्य करन लागे। ता पाछें दिन तीन तांई माता कौ दूध पियो नाहीं। तब माता कों बोहोत चिंता भई, जो - यह बालक जियेगो नाहीं।

तब माता ने गाँइ कौ दूध दियो, सो इन कछूक पियो। तब इन कों गाँइ कौ दूध देन लागे। पाछें बरस पाँच कौ यह बालक भयो। ता दिन तें यह बालक श्रीकृष्ण नाम कौ जप करन लाग्यो। काहू सों बोले नाहीं। काहू के पास बैठे नाहीं। विरक्त सो रहे। माता-पिता जाने, जो - यह कोई लौकिक बालक नाहीं। तातें कछू नाहीं। यह बालक खान-पान करे नाहीं। गाँइ कौ दूध पी कै रहे। ऐसें करत यह बरस पंद्रह कौ भयो। तब श्रीगुसांईजी सिद्धपुर पधारे। सो सरस्वती स्नान कों पधारे। तब यह बालक सरस्वती में स्नान करत हतो। सो इनकों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए। तब यह विरक्त श्रीगुसांईजी सों दोऊ हाथ जोरि बिनती कियो, जो - महाराज! मैंने आपकों पहिचाने हैं। सो अब कृपा करि मोकों सरनि लीजिये। बोहोत दिन भए बिछर्‍यो हूं। आप के दरसन आज पाए। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो- तू दैवी जीव है। तातें हम तोकों अंगीकार करिवे कों यहां आए हैं। सो तू जलही में ठाढ़ो रहे। हम तोकों जलही में नाम-निवेदन कराई सरनि लेइंगे। पाछें श्रीगुसांईजी आप सरस्वती में स्नान करि वाको जल ही में नाम कराये। सो निवेदन होत ही याकों सब लीला स्फुर्द भई। स्वरूप हृदयारूढ़ भयो। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो - तोकों निरोध सिद्ध भयो। अब तोकों माया बाधा करेगी नाहीं। तातें तू रसोइ करि भोग धरि महाप्रसाद ले। और चाहे जहां रहि। तोकों देसकाल हू बाधा करेगो नाहीं। पाछें श्रीगुसांईजी आप तो द्वारकाजी रनछोरजी के दरसन कों पधारे। और यह विरक्त दसा में बिचरन लाग्यो। चुकटी ल्याय रसोइ करि भोग धरि प्रसाद लेई। तब इन के मा-बाप कह्यो, जो - बेटा! अब तो तू अन्न खात है, तातें अपने घर में जेंयो करि। अलग रसोइ काहे कों करत है ? तब इन कह्यो, जो - हौं विरक्त हों। मेरे तुम्हारे कछू संबंध नाहीं। तातें मेरे में ममता मति करो। नाँतरु दुःख पावोगे। इतनो कही यह विरक्त तो घर तें निकसि गयो। सो अष्टाक्षर मंत्र कौ निरंतर जप करे। एक ठौर कहूँ रहे नाहीं। सदा भगवल्लीला के आवेस में छक्यो रहे। काहू सों कछू बोले नाहीं। या प्रकार रहे।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै वह विरक्त श्रीनाथजी के दरसन कों गुजरात तें आवत हतो। ताते पास तीन तूंबा, कांधे पर तो खासा कौ, पीछे कटि पर मर्यादी सेवकी कौ, आगें कटि पर बाहिर कौ, या भांति सों रहै आवें। सो जहां गाम जाँइ तहां चुकटी मांगि कै रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि पाछें महाप्रसाद ले कै मजलि चले। सो ऐसें करत एक दिन मेह बोहोत बरस्यो। सो रसोई न बनि आई। पाछें दो दिन ओर हू मेह न खुल्यो। सो

यह चल्यो। सो चल्यो न जाँई। तब यह बिचार कियो, जो - अब मैं कहा करों ? पानी तो रहत नाहीं। और ऐसें में चुकटी कैसें मांगों ? कैसें रसोई करो ? तातें आजु तो कहूँ श्रीगुसांईजी कौ सेवक मर्यादी होंइ तो ताके घर भली भांति सों महाप्रसाद लेऊ पाछें सोऊं। तब मेरो सरीर आछौ होंइ। तीन रात्रि कों भींज्यो हूं तातें नींद न आई। ऐसें कहत चल्यो।

भावप्रकाश - यहां यह संदेह होंई, जो - यह वैष्णव तो तादृसी है। तातें तादृसी वैष्णव कों भूख-प्यास देहाध्यास तो बाधा करि सकत नाहीं। देसकाल हू बाधा करत नाहीं। सो या विरक्त वैष्णव कों ऐसो कष्ट क्यों भयो ? और इनके मन में खानपानकी अपेक्षा क्यों भई ? तहां कहत हैं, जो - यह विरक्त चाहतो तो छिन एक में मेह खुलि जातो। और देहाध्यास भूख-प्यास हू बाधा न करती। परि आगें राजा की ऊपर कृपा करनी हैं। तातें प्रभुनने या भांति कौतुक कियो। तो तादृसी वैष्णव कों कछू वस्तु की अपेक्षा होंई नाहीं। और जो होई तो इन में भगवद् कृति जाननी। दूसरे की ऊपर कृपा करनार्थ। यह सिद्धांत जताए।

सो एक बड़ो गाम हतो। तहां एक राजा हो। सो राजा नें अनेक ब्याह किये। परंतु पुत्र काहू एक के न भयो। सो राजा वृद्ध होइवे में आयो। तहां एक ब्राह्मन सिव कौ उपासक आयो। ता ब्राह्मन कों सिव दरसन देते। सो वह ब्राह्मन राजा के पास आयो। कह्यो, जो - मोकों पांच हजार रुपैया देऊ तो मैं जतन करों। सो तुम्हारे अवस्य पुत्र होइगो। तब राजाने वा ब्राह्मन सों कह्यो, जो - मेरे भाग्य में पुत्र नाहीं है तातें तू काहे कों जतन करत है ? तब यह ब्राह्मन ने कह्यो, जो - मो पैं महादेव सानुभाव है। तातें मैं महादेवजी सों कहि कै तुम कों पुत्र दिवाऊंगो। तब वा राजा ने वा ब्राह्मन कों पांच हजार रुपैया दिये। सो ब्राह्मनने रुपैया ले कै वरूनी कराई। महादेव के नाम कौ जज्ञ कियो।

बोहोत जतन किये। सो रुपैया सब व्यर्थ गए। कछू भयो नाहीं। तब तो वह ब्राह्मन महादेवजी पै मरन लाग्यो। तब महादेवजी प्रगट होंई वा ब्राह्मन सों कहे, जो - तू हकनाक क्यों करत है? वाके भाग्य में पुत्र नाहीं। तब इन कह्यो, जो - एक लरिका राजा कों अवस्य दियो चाहिए। और महादेव सों कह्यो, जो - मैं तुम्हारी बोहोत दिन सों सेवा करी हैं। तातें तुम या राजा कों एक लरिका तो देहु। तो मेरो बचन सत्य होंई। नाहीं तो हों तुम्हारे ऊपर मरोंगो। तब महादेव ने वा ब्राह्मन सों कही, जो - तू बैठ्यो रहे, मैं श्रीठाकुरजी सों पूछि आउं। यह कहिकै महादेव श्रीठाकुरजी सों जाँइ बिनती करे, जो - महाराज! मैं एक ब्राह्मन कौ बर दियो है। सो वह कहत है - जो - राजा कों एक पुत्र होंई। जो - ऐसो न देउगे तो वह ब्राह्मन मेरे ऊपर मरत है। यह सुनि कै श्रीठाकुरजी हँसि कै कहे, जो - महादेवजी! वह राजा के भाग्य में पुत्र सपने हू में नाहीं। तातें मैं कहां तें देउ? तातें तुम जाँइ वा ब्राह्मन सों कहि देहु, जो - राजा के भाग्य में तो पुत्र नाहीं है। तोकों मरनो होंइ तो मरि। तब महादेवजी आइ कै वह ब्राह्मन सों कहे, जो - मैं तेरे लिये श्रीठाकुरजी पै गयो हतो सो मैं श्रीठाकुरजी सों कह्यो हतो। सो श्रीठाकुरजी ने अपने श्रीमुख ते कह्यो, जो - राजा के भाग्य में पुत्र नाहीं है। तातें तोकों मरनों होंइ तो मरि। हमारो दोष नाहीं। ऐसें कहि कै महादेव तो चले गए। तब इहां ब्राह्मन राजा पास आयो। सो राजा सों कह्यो, जो - मैं तुम्हारी बात श्रीठाकुरजी तांई पहुंचाई। परंतु

श्रीठाकुरजी अपने श्रीमुख तें कहे, जो - राजा के भाग्य में पुत्र नाहीं है। तातें मैं कहा करों ? तब राजा ने कह्यो, जो - मैं तो प्रथम ही तुम सों कह्यो हतो, जो- मेरे भाग्य में पुत्र नाहीं है। पाछें वा राजाने बीस रुपैया दे कै वा ब्राह्मन कों विदाय कियो। और कह्यो, तुम आयो - जायो करियो। कछू चिंता मति करो। मेरे भाग्य ही में नाहीं तो तुम कहा करो ? तब यह ब्राह्मन उठि के अपने घर आयो।

ताही गाम में एक और ब्राह्मन वैष्णव कौ घर हतो। सो वाकों यह नेम हुतो, जो - श्रीठाकुरजी के राजभोग सों पहुंचि के पातरि ढांकि के गाम के बाहिर एक तलाव हुतो तहां आइ के जप करतो। और देखतो, जो - कोई वैष्णव मिले ताकों लिवाय ल्यावतो। महाप्रसाद प्रथम वाकों लिवाय के पाछें आपु लेतो। जा दिन वैष्णव न मिलतो ता दिन एक पातरि ले गाँई कों धरि के महाप्रसाद आप लेतो। सो एक दिन वह तलवापर बैठ्यो जप करत हुतो। इतने वह श्रीगुसांईजी कौ सेवक विरक्त तीन दिन कौ भूख्यो सो वह तलाव परि आयो। सो यह वैष्णव कों देखि, तब तिलकमाला देखि के जान्यो, जो - यह वैष्णव है। और उन हू जान्यो, जो विरक्त है, वैष्णव है। जो - और कोई होंई तो ताकों एक तूंबा सों काम चले। और यह तो श्रीगुसांईजी कौ सेवक दीसत हैं। काहेतें ? तीन तूंबा खासा, मर्यादी, बाहिर के हैं। पाछें श्रीकृष्ण - स्मरन कियो। परस्पर मिले, बड़ो आनंद भयो। तब वह वैष्णव कह्यो, चलो ! घर महाप्रसाद लेऊ।

पाछें इन कों घर ले जाँइ कै आछे महाप्रसाद लिवाए। कछू ता दिन उत्सव हतो। सो श्रीठाकुरजी आछी-आछी सामग्री आरोगे हते। तातें महाप्रसाद भली भांति सों वा विरक्त वैष्णव ने लीनो। पाछें वा विरक्त ने वा वैष्णव सों कही, जो - मैं तीन रात्रि जाग्यो हूं। सो मोकों सोइवे कों ठौर बतावो। तब याने एकांत आछे बिछोना बिछाय दिये। ता पर वह वैष्णव विरक्त बोहोत सुख पाय के सोयो। पाछें सेन - आरति के समै वा वैष्णव कों जगायो। सो आय कै दरसन करि कै बैठ्यो। पाछें ब्यारू कराइ कै भगवद्वार्ता करि फेरि सेन कियो। पाछे प्रातःकाल उठ्यो। तब वह विरक्त कह्यो, जो - अब मैं चलोंगो। तब वह वैष्णव ने कह्यो, जो - तुम कों भूखे कैसें जान दीजिये? तातें राजभोग - आर्ति करि कै दरसन करिकै महाप्रसाद लैके पाछें जइयो। पाछें राजभोग की आर्ति भई। ता पाछें आछी भांति सों महाप्रसाद लियो। पाछें वा विरक्त ने वा वैष्णव सों कह्यो, जो - मैं तुम्हारे घर बोहोत सुख पायो। तातें अब मैं बोहोत प्रसन्न हों। तातें तुम कछू मांगो। तब इन ब्राह्मन वैष्णव कह्यो, जो - श्रीगुसांईजी की कृपा तें मेरे सब कछू है। स्त्री, पुत्र सब सेवा में सानुकुल हैं। तातें मोकों तो कछू नहीं चहिए। तब यह विरक्त कह्यो, जो - मैं तो अवस्य दे कै जाऊंगो। तातें स्त्री सों पूछो। तब वह वैष्णव ने अपनी स्त्री-पुत्र सों पूछ्यो और कह्यो, जो - अब कैसी करिये ? वैष्णव हठ पर्‌यो है। सो ये श्रीगुसांईजी कौ सेवक है। तातें ये कह्यो है और सर्वथा देहिगो। परि अपने कछू

चहिये नाहीं। और मांगनो कछू वैष्णव कौ धर्म नाहीं। तब स्त्री ने कह्यो, जा - तुम अपने लिये कछू माँगों मति। या गाम कौ राजा वृद्ध भयो है। और या राजा के कोई पुत्र नाही है। और आपुन या राजा के राज्य में सुख पायो है। तातें या राजा के मरें फिर कहा जानिये कैसो राजा बैठे। तातें या राजा के एक पुत्र मांगो। तब वह ब्राह्मन आइ कै कह्यो, जो - हम कों तो कछू नाहीं चाहिए। परंतु या गाम कै राजा के एक बेटा होंइ तो आछो है। तब वह वैष्णव प्रसन्न होंइ के कह्यो, जो - एक कहा चारि बेटा होइंगे। ऐसें कहि कै वह विरक्त वैष्णव तो बिदा होंइ कै गयो। पाछें वह ब्राह्मन महाप्रसाद लै कै राजा कों जाँई कै आसीर्वाद कियो। पाछें राजा सों कह्यो, जो - राजा! बधाई है। तिहारे चारि बेटा होइंगे। तब राजा हँस्यो। और कह्यो, जो - मैं हू कछूक दिन में मरूंगो। मेरे दांत हू टूट चूके, तू कहे के चारि बेटा होइंगे! तब याने कह्यो, जो - राजा! विस्वास राखिये। मेरे घर वैष्णव कहि गयो है। तातें तेरे सर्वथा पुत्र चारि होइंगे। तब इन कह्यो, जो - आछो। होइंगे तो हम नाहीं कब कहत हैं? तब ब्राह्मन आसीर्वाद दे कै आयो। पाछें चारि रानीन के गर्भ रह्यो। तब राजा ने कह्यो, जो वह ब्राह्मन के बचन सत्य होत दीसत है। पाछें समय भए राजा के चारि पुत्र भए। सो राजा कों बड़ो आनंद भयो। नौबतखाना बाजन लाग्यो। तब वह सिव के उपासक ब्राह्मन ने पूछ्यो, जो - आजु राजा के घर कहा है? जो - नौबत बाजत है? तब सबन कह्यो, जो - राजा के चारि पुत्र भए हैं। तातें राजा कों बड़ो आनंद भयो है।

सो नौबतखाना बाजत हैं। तब यह ब्राह्मन अपने मन में बिचारि कियो, जो - मोकों तो महादेवजी पुत्रकी नाहीं कही, जो - श्रीठाकुरजी हू पुत्र की नाहीं करी हैं। सो मोकों राजा कें झुठो करायो। तातें मैं अब महादेव के ऊपर मरोंगो। पाछें एक तरवार लेकै महादेवजी के मंदिर में गयो। सो कह्यो, जो-मैं तुम्हारे ऊपर मरोंगो। मोकों तुम राजद्वार में झूठो करायो। ऐसें कहि कै तरवार गरे में लगाय कै मरन लाग्यो। तेसेंही महादेवजी आय कै हाथ पकरि लियो। कह्यो, ब्राह्मन! अब फेरि तू क्यों मरत है? तब इन कही, जो-या राजा के भाग्य में पुत्र नाहीं है। सो अब चारि पुत्र याके कहां तें भए? तब महादेवजी सुनि कै चक्रत होंइ रहे। कहे, जो-मैं फेरि श्रीठाकुरजी पास पूछि आउं। तब महादेवजी फेरि आई कै श्रीठाकुरजी सों कहे, जो-महाराज! वह राजा कों आप कहे हते, जो-वाके भाग्य में पुत्र नाहीं है। सो अब उहां तो राजा कै चारि पुत्र भए? ताकौ कारन कहा है? तब श्रीठाकुरजी कहे, जो-वा राजा के भाग्य में तो पुत्र नाहीं। परंतु तुम पूछो, जो-कौन प्रकार पुत्र भए? कोऊ वैष्णव कौ आसीर्वाद तो नाहीं भयो? तब महादेवजी ने वा ब्राह्मन सों आइ कै कही, जो-तू राजा सों पूछि आउ, जो-चारि पुत्र एक संग ही कैसें भए? तब यह ब्राह्मन राजा सों आइ कै पूछ्यो, जो-तुम्हारे पुत्र कौन प्रकार सों भए? मोसों तो महादेव ने कह्यो हतो, जो-राजा के भाग्य में पुत्र नाहीं है। और श्रीठाकुरजी हू पुत्र की नाहीं कीनी हती। सो अब ये पुत्र तुम्हारे कैसें भए? सो कहो। तब राजा कहे, जो-हम तो जानत नाहीं। जो-फलानो वैष्णव कहि गयो हतो। ताके बचन सत्य भए। तब उन कह्यो, जो-वाकों बुलावो।

तब राजा ने वह ब्राह्मन वैष्णव कों बुलाय कै पूछ्यो, जो-वैष्णव ! तुम पुत्र कहि गए हते सो मेरे चारि पुत्र भए। सो याकौ कारन कहो ? तुम कैसें जानें ? तब वह वैष्णव ने कही, जो-राजा ! हमारे घर एक श्रीगुसांईजी कौ सेवक विरक्त हमारो गुरु-भाई हुतो। सौ तीन दिन कौ भूखो हतो। सो मैं उन की सेवा करी। तब उन प्रसन्न होंइ कै कह्यो, जो-तुम कछू मांगो ? तब मैं यह मांग्यो, जो-राजा के एक पुत्र होंई। तब वाने कह्यो, जो-एक कहा चारि होंइगे। सो श्रीगुसांईजी के सेवक झूठ बोले नाहीं। यह सुनि कै राजा चक्रित होंइ रह्यो। पाछें वह ब्राह्मन जाँइ कै महादेव सों कह्यो, जो-श्रीगुसांईजी के सेवक के आसीर्वाद तें पुत्र भए हैं। तब महादेवजी जाँई कै श्रीठाकुरजी सों कहे, जो-श्रीगुसांईजी के सेवक के आसीर्वाद तें पुत्र भए हैं। तब श्रीठाकुरजी कहे, जो-वैष्णव ने मेरे ऊपर कृपा करी है। जो-वैष्णव यह कहतो, जो-राजा के घर श्रीठाकुरजी प्रगट होंइगे तो मोकों प्रगट होनो परतो। यह तो पुत्र भए ताकौ कहा आश्चर्य है ? तब महादेवजी आइ कै वा ब्राह्मन सों कहे, जो-श्रीगुसांईजी कौ सेवक श्रीठाकुरजी कों कहतो तो श्रीठाकुरजी कों प्रगट होनो परतो। यह तो पुत्र ही भए, ताकौ आश्चर्य कहा ? तब वा ब्राह्मन ने आइ कै राजा तें कह्यो, जो उन वैष्णव की आज्ञा तें श्रीठाकुरजी कों अवतार लेनो परतो। यह तो तुम्हारे पुत्र ही भए, ताकौ आश्चर्य कहा ?

भावप्रकाश - या वार्ता में यह संदेह है, जो-महादेव हू वैष्णव हैं। तातें वे हू देते तो राजा कों पुत्र होतो। सो उन क्यों नाहीं दिये ? तहां कहत हैं, जो-महादेव मर्यादा भक्त हैं। तातें विधि अनुसार सब कार्य करत हैं। सो राजा के भाग्य में पुत्र नहीं है ऐसो उन जान्यो तब वे चुप रहे। पाछें विष्णु के पास गए। सो विष्णु हू गुनावतार हैं। सो उन हू नाहीं कीनी। और वह विरक्त तो

पुष्टिमार्गीय भक्त है। कर्तुं, अकर्तुं, अन्यथा कर्तुं, ऐसें जो श्रीपुरुषोत्तम हैं। सो या विरक्त वैष्णव के हृदय में बिराजत हैं। तातें इन में अलौकिक सामर्थ्य है, सो ये चाहे सो करि सकत हैं।

तब वा राजाने उह वैष्णव सों बुलाई कह्यो, जो-मोकों श्रीगुसांईजी कौ सेवक करावो। तब वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी कों बिनती पत्र लिख्यो। जो-राज! एक बेर यहां बेगि पधारोगे। तब श्रीगुसांईजी वा पत्र कों बांचि कै केतेक दिन में राजा के गाम पधारे। तब उह राजा, महादेव कौ उपासक ब्राह्मन आदि सब गाम श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो जो, वैष्णव के कहे कौ विस्वास राखनो। वैष्णव उपरांत और कोई पदार्थ नाहीं। वैष्णव की कृपा तें सब बात सिद्ध होत हैं।

सो यह तीन तूंबा वारौ वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए?

वार्ता ॥९३॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक परमानंद सोनी, अड़ेल में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। इन कौ अलौकिक स्वरूप चौरासी वैष्णवन की वार्तान में आगे कहि आए हैं। लीला में इन कौ नाम 'चंद्रिका' है। सो चंद्रमा की उजियारी वत् इनकी कांति है। श्रीचंद्रावलीजी अनेक चंद्रमारूप हैं, तिन की यह अंतरंगिनी सखी हैं। ये 'नागवेलिका' तें प्रगटी हैं, तातें इन कै भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै उन परमानंद सोनी ने श्रीगुसांईजी के पास नाम पायो हतो। सो वे परमानंद सोनी बड़े ही कृपापात्र भगवदीय भए। सो मार्ग के ग्रंथ श्रीसुबोधिनीजी में बोहोत ही रुचि हती। सो श्रीगुसांईजी आप नित्य कथा कहते, और पूछते तब उत्तर दे कै पूछते। और सुनते, कहते। सो सब परमानंद सोनी अपने हृदय में राखते।

और श्रीगुसांईजी के घर कौ गहनो होतो सो सब परमानंद सोनी गढ़ते। और कहते, जो-यह देव अंस है, गुरु अंस है। तातें मति कहूं अपने अंग लागे। और कहूं गिरे नाहीं। ऐसी सावधानी सों काम करते। और श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कहते, जो याकी गढ़ाई, मजूरी तुम लेऊ। काहेतें, जो-तेरे हू तो संसार लग्यो है। तब परमानंद सोनी श्रीगुसांईजी सों कहे जो-महाराजाधिराज! मोकों संसार में लेवे कों बोहोत ही ठौर है। आप की कृपा बल तें मेरे सब कछू सिद्ध है। और काहू बातकी न्यूनता नाहीं है। जो-आपकी कृपा ही बड़ो पदार्थ है। सो ऐसें कहे, कछू लै नाहीं। तब श्रीगुसांईजी ऐसी बात सुनि कै श्रीमुख तें कहे, जो-तुम्हारी इच्छा होय सो करो। तब परमानंद सोनी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज! आप की कृपा तें मेरे सब आनंद है। और मेरे कछू काहू बात कौ मनोरथ नाहीं है। जो-आपकी कृपा ही बड़ो पदारथ है। और आप देन की कहत हो तो हों यह मांगत हूं, जो-आप मेरे ऊपर सदा प्रसन्न रहो। सो परमानंद सोनी के ऊपर आप सदा प्रसन्न रहतें। और कृपा करि कै मार्ग के सिद्धांत-ग्रंथ, श्रीसुबोधिनीजी कौ गूढार्थ, सब समझाय कै कहते। सो परमानंद सोनी के ऊपर श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै इन के हृदय में भगवल्लीला स्थापे। सो परमानंद सोनी भगवद्रस में सदा मगन रहते।

और कब हू वैष्णवन कों कथा में समुझ नाहीं परे तो वे सब श्रीगुसांईजी सों पूछते। तब श्रीगुसांईजी कहते, जो-तुम कों परमानंद सोनी कहेंगे। तब परमानंद सोनी के पास वैष्णव

आय कै पूछते। सो ताही कौ परमानंद सोनी वा वैष्णव कों उत्तर देते। सो वे परमानंद सोनी श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

भावप्रकाश-या वार्ता में यह जतायो, जो-वैष्णव कों श्रीठाकुरजी के द्रव्य सों और गुरु के द्रव्य सों सदा डरपत रहनो। और गुरु कौ कार्य निष्काम व्है भक्ति भाव संयुक्त करनो, तब गुरु प्रसन्न होंई। तातें मारग कौ सिद्धांत सगरो हृदयारूढ़ होंई।

वार्ता प्रसंग-२

और एक समै कासी के और प्रयाग के पंडित श्रीगुसांईजी सों वाद करिवे कों आए। तब श्रीगुसांईजी आप तो सेवा में हते। तब परमानंद सोनी ने उन कौ समाधान करि कै बैठारे। पाछें परमानंद सोनी ने कह्यो, जो-तुम कहा पूछत हो ? तुम कों मैं उत्तर देहुँ। जो-श्रीगुसांईजी तो आप सेवा में हैं। तब उन पंडितन परमानंद सोनी सों कह्यो, जो-तुम कों तो कहिवे कौ काम नाहीं है। जो-तुम वेद सास्त्रन की बात में कहा जानोगे ? तब परमानंद सोनी ने कह्यो, जो-भले ! तुम बैठो। श्रीगुसांईजी आप सेवा सों पहोंचि कै आवेंगे तब तुम कों उत्तर देइंगे। ता पाछें उन पंडित ब्राह्मनन सों परमानंद सोनी ने एक श्लोक 'श्रीभागवत' 'रास पंचाध्याई' कौ पूछ्यो। और कह्यो, जो-याको कहा अर्थ है ? तब उन पंडित ब्राह्मन ने कछू कौ कछू उत्तर दीनो। तब परमानंद सोनी ने वाकौ अर्थ कर्‌यो। जो-ऐसे हैं। तब वे पंडित ब्राह्मन आपुस में मुख देखन लागे। उन आपुस में कह्यो, जो-भाई ! अब कछू पूछनो होई तो इन ही कों पूछि कै चलो। जिन के सेवक सूद्र ऐसें हैं उन कै गुरु की तो कहा कहनो ? जो तुम उन सों बाद करि कै जीति नाहीं सकोगे। ऐसें आपुस में बतराय कै जो-कछू पूछनो हतो सो परमानंद सोनी

सों पूछ्यो। ताकौ उत्तर वेद पुरान सास्त्र की रीति सों परमानंद सोनी दे कै उन कों निरुत्तर किये। तब वे पंडित हाथ जोरि कै कहे, जो तुम धन्य हो। जो-जाके सोनी सेवक सूद्र कों सरस्वती ऐसी स्फुर्त है तिन के गुरु की तो कहा कहनो ? तब उन पंडित ब्राह्मन अपने मन कौ समाधान करि कै उठि चले।

ता पाछें घरी चारि में श्रीगुसांईजी आप बाहिर पधारे। सो गादी-तकियान के ऊपर बिराजे। तब एक वैष्णव ने सब समाचार कहे, जो-महाराजाधिराज ! कासी-प्रयाग के पंडित वाद करन कों आए हते। सो उन को परमानंद सोनी ने निरुत्तर कीने हैं। तब वे समाधान करि कै पाछें फिरि गए। तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें वा वैष्णव सों कह्यो, जो-या परमानंद सोनी कों श्रीआचार्यजी महाप्रभुन में और श्रीगोवर्द्धननाथजी में दृढ़ विश्वास है। तातें यह बात में कहा आश्चर्य ? सो वैष्णव कों एक दृढ़ विस्वास चाहिए। और जाकों दृढ़ आश्रय होंई ताकों जो चाहे सोई होई। और जो अपने मन में बिचार करे सोई कार्य करे। जो वैष्णव कों दृढ़ आश्रय नाहीं होई ताकों पश्चात्ताप कलेस होंइ। सो ऐसें श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें वा वैष्णव सों कहे, सो याही तें वह ऐसी बात है। तातें वैष्णव कों ऐसो ही चाहिए।

सो वे परमानंद सोनी श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय है, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥९४॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक रामदास विरक्त ब्राह्मन, खंभाइच के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'कामेसुरी' है। ये 'नागवेलिका'

तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये खंभाइच में एक ब्राह्मन के उहां प्रगटे। सो बालपने सों वैराग्य दसा में रहे। सो बरस पंद्रह के भए। तब खंभाइच तें एक संग गुजरात के वैष्णवन कौ श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों चल्यो। ता संग में रामदास हू चले। सो विरक्त दसा में रहे। चुकटी मांगि निर्वाह करे। रात्रि कौं वैष्णवन की मंडली में बैठे। सो भगवद्-वार्ता सुने। ऐसें करत कछुक दिन में वा संग के साथ रामदास गोपालपुर आये। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ दरसन पाए।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार बिराजत हुते। सो रामदास श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब इन श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि बिनती कीनी, जो-महाराज ! कृपा करि कै नाम दीजिए। तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो-स्नान करि आउ। तोकों नाम सुनावेगें। तब रामदास तत्काल स्नान करि कै आये। पाछें श्रीगुसांईजी कों बिनती किये, जो-महाराज ! मैं स्नान करि आयो हूं। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि रामदास कों नाम सुनायो। पाछें श्रीगुसांईजी रामदास कों आज्ञा किये, जो-रामदास ! अब कहा मनोरथ है ? तब रामदास श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो-महाराज ! मेरे परम भागि हैं, जो-आपने मेरे ऊपर कृपा करि मोकों सरनि लियो। अब अनत कहूँ जानो नाहीं है। आप जो आज्ञा करेंगे सो करोंगो। तब श्रीगुसांईजी रामदास कों आज्ञा किये, जो-तू 'दंडवती सिला' आगें बैठि छह महिना तांई अष्टाक्षर-मंत्र कौ जप कर्‌यो करि। पाछें तोकों और बात कहेंगे। तब तो रामदास प्रसन्न व्है दंडवती सिला आगें आय बैठें। सो नित्य नेम सों अष्टाक्षर की माला फेरें। ऐसें करत छह महिना बीते। तब रामदास श्रीगुसांईजी के पास आइ बिनती किये, जो-महाराज ! आप

की आज्ञा प्रमान छह महिना लों अष्टाक्षर कौ जप कियो। अब कहा कर्तव्य है ? सो कृपा करि कै कहिए। तब श्रीगुसांईजी आप रामदास कों आज्ञा किये, जो-रामदास ! काल्हि तोकों ब्रह्मसंबंध करावेंगे, आज श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करो। पाछें श्रीगुसांईजी आप स्नान करि कै श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में पधारे। सो उत्थापन-भोग धरें। पाछें दरसन खुले। तब सब वैष्णवन श्रीनाथजी के दरसन किये। सो ता समै रामदास हू श्रीनाथजी के दरसन किये। सो महा अलौकिक दरसन भए। सो सरीर की सुधि रही नाहीं। सो दरसन के आबेस में मूर्छा खाय कै गिरि परे। तब घरी दोइ में सुधि आई, तब उठे। तब ये समाचार सब भीतरिया ने आइ कै श्रीगुसांईजी आगें कहे। तब श्रीगुसांईजी सेनभोग धरि कै बाहिर पधारे। तब रामदास सों पूछे, जो-रामदास ! कहा समाचार है ! तब रामदास श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो-महाराज ! आपकी कृपा सों श्रीगोवर्द्धननाथजी अलौकिक दरसन दिये हैं। सो तामें मन उरझि रह्यो है। तब श्रीगुसांईजी रामदास सों कहे, जो-रामदास ! तुम्हारे अहो भाग्य है, जो-श्रीनाथजी ने या प्रकार दरसन दिये। ता पाछें समय भए सेन-भोग सराय बीरी अरोगाइ, सेन आरति करि अनोसर करि श्रीगुसांईजी पर्वत तें नीचे उतरे। तब रामदास हू श्रीगुसांईजी के पाछें आये। ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में बिराजे। तब रामदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि उठि चले, सो दंडवती सिला आगें आय बैठे। सो सगरी रात्रि श्रीगोवर्द्धननाथजी के स्वरूपानंद कौ अनुभव किये। पाछें सवेरे बेगि न्हाइ कै

श्रीगुसांईजी के पास आय ठाढ़े रहे। तब रामदास श्रीगुसांईजी कों बिनती किये, जो-महाराज ! कृपा करि ब्रह्मसंबंध कराइए, तब श्रीगुसांईजी रामदास सों कहे, जो-तोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी के सन्मुख ब्रह्मसंबंध करावेंगे। सिंगार समै। तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में जाय बेठि। तब रामदास पर्वत ऊपर जाय श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में बैठे। पाछें श्रीगुसांईजी हू स्नान करि पर्वत ऊपर पधारे। सो श्रीनाथजी कों जगाय मंगल-भोग धरे। ता पाछें समै भए भोग सराय मंगला-आरति किये। पाछें सिंगार किये। ता पाछें रामदास कों बुलाय ब्रह्मसंबंध कराये। तब रामदासने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! अब कहा आज्ञा है ?

तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-रामदास ! छह महिना और हू तू दंडवती सिला आगें बैठि पंचाक्षर कौ जप करि। तब रामदास ने वाही प्रकार छह महिनालों पंचाक्षर कौ जप कियो। पाछें रामदास श्रीगुसांईजी पास आय दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-अब तेरो मन सुद्ध भयो है। तातें और ठौर भटकेगो नाहीं। तब रामदास बिनती किये, जो-महाराज ! अब कछू सेवा दीजिये। तब श्रीगुसांईजी रामदास कों सागघर की सेवा सोंपे। सो जा दिन रामदास सागघर की सेवा में न्हाए ताही दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदास के पास पधारि रामदास कों आज्ञा किये, जो-रामदास ! हम 'गुलाल कुंड' पैं पधारत हैं। सो तू सीतल भोग की सामग्री लेकै बेगि अइयो। तब रामदास बेगि-बेगि फलफूल सिद्ध किये। ता पाछें सीतल सामग्री सिद्ध किये। सो एक टोकरा में आछी भांति

धरी। पाछें गुलाल कुंड आए। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु रामदास सों कहे, जो-रामदास! सामग्री ल्यायो? तब रामदास बिनती किये, जो-महाराज! ल्यायो हूं। पाछें रामदास गांठि खोलि सब सामग्री आगें धरे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सखा-मंडली समेत आरोगे। सो दरसन रामदास कों भयो। सो रामदास अपने भाग्य कों सराहन लागे।

और इहां श्रीगुसांईजी स्नान करि पर्वत पर पधारे। सो सागघर में आए। सो रामदास कों देखे नाहीं। तब श्रीगुसांईजी आप फलफूल की सेवा किये। पाछें सागघर की सामग्री लेकै आप मंदिर में पधारे।

और रामदास के मन में बड़ो भय भयो, जो-देखो! आज ही तो सागघर की टहल मिली और आज ही मंदिर में नागा भई। सो श्रीगुसांईजी आप निश्चय खीझेंगे। पाछें रामदास बेगि-बेगि सब पात्र समेटि अपरस में न्हाइ मंदिर में आए। सो भोग के दरसन खुले हते। सो दरसन किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी संध्या-आरति करि श्रीनाथजी कौ सिंगार बड़ो करत हते। तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी सों कहें, जो-रामदास मेरे संग गुलाल कुंड आयो हतो। सो वासों तुम कछू मति कहियो। पाछें श्रीगुसांईजी सेन-भोग धरि बाहिर पधारे। तब रामदास कों बुलाय एकांत में कह्यो, जो-रामदास! तुम्हारे बड़े भाग्य हैं। जो-तुम कों आजही टहल मिली और आज ही श्रीनाथजी कृपा किये। तब रामदास बिनती किये, जो-महाराज! सब आप की कृपा तें भयो हैं। नाँतरु हों कहा लाइक हतो? तब श्रीगुसांईजी आप रामदास सों आज्ञा किये, जो-आज पाछें

तुम श्रीनाथजी की आज्ञा में रहियो। श्रीनाथजी तुम कों जहां ले जाँइ तहां जैयो। हम सागघर में दूसरो मनुष्य राखेंगे। और तुम कों अवकास मिले तब तुम सागघर की सेवा करियो। तब रामदास प्रसन्न व्हे कहे, जो-महाराज! आपकी आज्ञा में रहनो यह जीव कौ धर्म है। पाछें रामदास बोहोत प्रसन्नता सों सेवा करन लागे। ता पाछें श्रीआचार्यजी के ग्रंथन कौ एकांत में पाठ करते। अष्टाक्षर पंचाक्षर अहर्निस जपते।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-अष्टाक्षर मंत्र कौ जप किये तें हृदय सुद्ध होत है। और पंचाक्षर के जप किये तें विरह कौ दान होत हैं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपनी लीलान कौ अनुभव करावत हैं। तातें वैष्णव कों अष्टाक्षर-पंचाक्षर कौ जप अवस्य करनो।

और श्रीगुसांईजी आप रामदास कों दंडवती सिला आगें बैठि कै जप करन कों कहे, ताकौ आसय यह, जो-दंडवती सिला हरिदासवर्य के चरन हैं। तातें भक्तन के सानिध्य उन कौ आश्रय करि जप किये तें तत्काल भगवद्रस की प्राप्ति निश्चय होइ यामें संदेह नाहीं, यह भाव जतायो।

और रामदास परम प्रीति सों श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करते। और राजभोग पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी की प्रसादी रसोई में जाय महाप्रसाद लेते। और इनकों श्रीगुसांईजी कौ जूंठनि महाप्रसाद हू मिलतो। सो वह महाप्रसाद लेइ निर्वाह करते। पाछें सांझ कों सेन पाछें श्रीगुसांईजी की कथा सुनते। ता पाछें अपनी कोठरी में जाँइ भगवद्वार्ता-कीर्तन करते। सो दोइ चारि वैष्णव होते सो सुनते। पाछें सब कों महाप्रसाद देते। ता पाछें आप चना चवेना खाँइ कै सोय रहते। सो घरी चारि सवेरे उठि कै देहकृत्य करि कै दंतधावन करि स्नान करि श्रीनाथजी की सेवा में जाते। सो सेवा सों पहोंचि गोविंदस्वामी की 'कदमखंडी' में जाते। सो गोविंदस्वामी के पास बैठते। सो

गोविंदस्वामी कीर्तन करते ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी नृत्य करते। सो रामदास दरसन करते। या प्रकार श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदास पर कृपा करते।

सो केतेक दिन पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल पधारिवे की तैयारी करी। तब रामदास ने बिनती करी, जो-महाराज ! कृपा करि कै फेरि कब पधारोगे ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो हम बेगि आवेंगे। और तुम सेवा श्रीनाथजी की भली भांति सों करियो।

सो रामदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हें, तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए ? ॥ वार्ता ॥९५॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक रेंडा उदंबर ब्राह्मन, गुजरात में कपडवनज गाम है तहां रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'संगिनी' है। 'नागवेलिका' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो वह अवधूत दसा में रहतो। ब्याह जन्मही तें नाहीं कियो। सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हते तब वाकों नाम सुनायो हतो। तब रेंडा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मेरे तो कछू संग्रह है नाहीं। मैं तो अवधूत दसा में रहत हूं। सो अब मोकों कहा आज्ञा है ? सो आप कपा करि कै कहिये। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-तू अपने हाथ सों रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लीजियो। और रसोई करिवे कौ अपने मन में सुख मानियो। दुःख मति मानियो। याही तें

तेरो भलो होइगो। तब रेंडा ने बिनती करी, जो-महाराज ! भोग धरिवे कों सेवा पधराय दीजिये। तब श्रीगुसांईजी रेंडा को ब्रह्मसंबंध करवाय के पाछें एक श्रीनवनीतप्रियजी की कुलही लाल पधराय दिये। और आज्ञा किये, जो-रेंडा ! तू इन कों अपने प्रान तें प्रिय जानियो। नेम करि कै नित्य रसोई करि कै भोग धरि महाप्रसाद लीजियो। ऐसें रेंडा सों आज्ञा किये। पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे।

ता पाछें केतेक दिन पाछें रेंडा ने मन में बिचार कियो, जो-श्रीगोकुल चलूं तो कछूक दिन श्रीगुसांईजी के पास रहि कै खवासी की सेवा करों। यह बिचार करि कै रेंडा चले, सो कछूक दिन में श्रीगोकुल आए। सो श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करि कै बैठक में आइ रेंडा ने दंडवत् कियो। तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो-रेंडा ! तू बोहोत दिनान में आयो है सो कछूक दिन यहां रहेगो ? तब रेंडा ने बिनती कीनी, जो-महाराज ! कछूक दिन आप की खवासी करिवे कौ मनोरथ है। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-सुखेन रहो। खवासी करो। तब तें रेंडा सगरी श्रीगुसांईजी की टहल करे और महाप्रसाद श्रीगुसांईजी की जूंठन लेई। या प्रकार तीन दिन बीते। तब एक दिन रात्रि कों श्रीगुसांईजी पूछे, जो-रेंडा ! महाप्रसाद कहां लेत हो ? तब रेंडा ने बिनती करी, जो-महाराज ! तीन दिन तो आप की जूंठनि लीनी है। पाछें सेवक लोग मोसों कहे, जो-तुम रसोई करि महाप्रसाद लीजियो। सो मैं पूछत हों, जो-राज ! आज्ञा होंइ तो लेउं। मैं तो आप कौ आज्ञाकारी हों। तब श्रीगुसांईजी रेंडा सों

पूछे, जो-तिहारे पास कछू खरची है ? तब रेंडा ने बिनती करी, जो-महाराज ! पक्के टका मेरे पास बारह हैं। तब आप कहे, जो-रेंडा ! तू न्यारी रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग धरि कै महाप्रसाद लीजियो। तब यह सुनि कै रेंडा ने बिनती करी, जो-महाराज ! काल्हि तें मैं न्यारी रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लेउंगो। तब श्रीगुसांईजी कहे जो-तेरी ज्ञाति की एक डोकरी है, सो भली वैष्णव है। तासों मिलि कै रहो, सेवा करो।

भावप्रकाश - यह कहि यह जतायो, जो - वैष्णव के संग बिनु यह मारग फलित होंइ नाहीं। तातें रेंडा कों श्रीगुसांईजी आप वा वैष्णव डोकरी के संग मिलि कै सेवा करन की आज्ञा किये। और लीला में यह डोकरी श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंगिनी सखी हैं। 'स्यामा' इन कौ नाम है। सो 'संगिनी' कों निसदिन याकौ संग है। लीला कौ भेद ये बतावति हैं। तातें यहां हू श्रीगुसांईजी रेंडा कों इन संग मिलि कै रहिवे की आज्ञा किये। सो पूर्व संबंध दृढ़ जानि कै।

तब रेंडा दंडवत् कियो। और कह्यो, जो-महाराज ! ऐसें ही करूंगो। पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़ें। तब रेंडा हू सोय रह्यो। पाछें प्रातःकाल डोकरी पास आयो। तब डोकरी ने बोहोत समाधान कर्‌यो। कह्यो, जो-रेंडा ! तिहारो घर है, आज्ञा करो सो मैं करो। और तुम तो काहू के घर जात आवत नाहीं। और आज तिहारो आवनो कैसें भयो ? तब रेंडा ने कही, जो-मेरे पास टका बारह तो पक्के हैं। और चुकटी करि अन्न लाऊंगो। तू मेरे श्रीठाकुरजी कों एक ओर पधरावे तो मैं कछूक दिन श्रीगोकुल में रहूं। तब डोकरी ने कही, जो-तुम श्रीठाकुरजी कों सुखेन पधरावो। और तुम श्रीगुसांईजी की सेवा करो। महाप्रसाद के समै तुम कों बुलाय लेउंगी। तब रेंडा श्रीठाकुरजी पधराय पक्के बारह टका डोकरी कों दिये। या भांति कछूक दिन बीते। पाछें गाम में ते चुकटी माँगि निर्वाह करे। तब एक

दिन रात्रि कों श्रीगुसांईजी पूछे, जो-रेंडा ! अब निर्वाह कैसे होत है ? तब रेंडा ने कही, जो-राज ! श्रीठाकुरजी तो डोकरी के भेले बिराजत हैं। और हों गाम में ते चुकटी माँगि ल्यावत हूँ। तातें भली भांति निर्वाह होत है। तब श्रीगुसांईजी आप पूछे जो-चुकटी कौन-कौन के घर तें ल्यावत हो ? तब रेंडा ने कही, जो-तुम्हारी ज्ञाति के भट्ट हैं तथा सेवक लोग हैं और ब्रजबासीन के घरन तें ल्यावत हों। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो जो-आज पाछें भट्ट और सेवक तथा जहां हमारी सत्ता कौ द्रव्य होंइ तहां तें चुकटी मति लीजियो। गाम में ब्रजबासी हैं, और हैं, तहां तें लीजियो। तब यह सुनि कै रेंडा ने बिनती करी, जो-महाराज ! आज पाछें ऐसें ही करूंगो। ता पाछें रेंडा भट्ट और सेवक भीतरियान के घर तें चुकटी न लेतो। सो रेंडा के ऊपर श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न रहते।

वार्ता प्रसंग - २

बोहोरि एक दिन अर्द्ध रात्रि के समै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्नता मैं बैठे हते। सो ता समै रेंडा सों पूछ्यो, जो - तेरो मन श्रीगोकुल में लगत है ? तब रेंडा ने बिनती करी, जो-महाराज ! मेरे तो सर्वस्व धन आप हो। और नित्य लीला यहां होत है। सो आपकी कृपा तें मन बोहोत लग्यो है। परंतु कछू अनुभव नाहीं भयो। सो आप कृपा करोगे तब होइगो। तब आप आज्ञा किये, जो-काल्हि तू मंगलार्ति के दरसन करि अकेलो 'रमनरेती' जैयो। तहां कछू होइगो। तब यह सुनि कै रेंडा बोहोत प्रसन्न भयो। सो रात्रिकों ऐसी आर्ति मन में भई, जो-नींद न परी। पाछें प्रातःकाल उठि, देहकृत्य करि श्रीयमुनाजी

में स्नान करि, आइ, श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि पाछें श्रीअंग की कछू खवासी की सेवा कीनी। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-तू मंगला पाछें 'गोप कूप' में स्नान करि रमनरेती जैयो। तहां कछू होयगो। पाछें समय भयो तब श्रीनवनीतप्रियजी के मंगला के दरसन करि रमनरेती कों चल्यो। सो गोप कूप में न्हाय पंचाक्षर मंत्र कौ जप करन लाग्यो। सो पांच माला पूरन भई और मुरली कौ सब्द श्रवन में पर्‍यो। आर्ति करि व्याकुल भयो। ताही समै श्रीठाकुरजी, श्रीबलदेवजी पधारे। सो दरसन करत ही मूर्छा खाँय गिर्‍यो। सो देहानुसंधान भूल्यो। तब श्रीठाकुरजी अपने गरें तें फूल की माला याके कंठ में डारि आप तो पधारे। सो दुपहेर ढरि गयो। तब वह डोकरी अपने श्रीठाकुरजी सों पहोंचि महाप्रसाद ढांकि कै श्रीगुसांईजी पास आय के रेंडा कों सगरे ढूंढ्यो। परि कहूं पायो नाहीं। तब डोकरी ने श्रीगुसांईजी सों पूछी, जो-महाराज ! मैं आज रेंडा कों सगरे ढूंढ्यो। परि कहूं पायो नाहीं। सो अब तांई महाप्रसाद लियो नाहीं है। तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो-रेंडा तो रमनरेती में है। तहां ते लिवाय ल्याऊ। तब वह डोकरी तत्काल दंडवत् करि कै रमनरेती गई। सो जाँय कै देखें तो रेंडा कों कछू सरीर की सुधि नाहीं। और सुंदर कुंद के पुष्प की माला याके गरे में देखी। तब डोरकी ने बिचार्‍यो, जो-आज रेंडा पैं भगवद् कृपा भई है। सो यह माला श्रीठाकुरजी प्रसादी दिये हैं। तब डोकरी ने आधी यह माला तोरि कै अपने आंचर में बांधी। पाछें रेंडा कों जगायो। सो तीन घरी पाछें रेंडा जाग्यो। तब डोकरी ने कह्यो, जो-अब कहा समाचार है ? तब रेंडा ने कही, जो-अब

तोसों कहा छिपाऊं ? श्रीगुसांईजी की कृपा तें श्रीठाकुरजीने दरसन दिये। परि हों आछी भांति दरसन करि न सक्यो। तब डोकरीने कही, जो-रेंडा ! तेरो धन्य भाग्य है। जो-श्रीठाकुरजी के दरसन भए। अब चलो श्रीगुसांईजी की सेवा कौ समय भयो है। तब रेंडा और डोकरी घर में आय महाप्रसाद लिये। तब रेंडा कों सगरी सुधि आछी भांति सों भई। तब डोकरी ने कही, जो-यह माला फूल की आधी मेरे पास है सो तुम कहो तो मैं राखों। और चाहो तो लेओ। कृपा तो तुम्हारे ऊपर भई हैं। तुम्हारे पाछें मोकों मिली है। तब रेंडाने कही, जो-तुम हू राखो। पाछें उत्थापन कौ समय भयो। तब रेंडाने आय श्रीगुसांईजी को दंडवत् कर्‍यो। तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो-रेंडा कहा समाचार है ? तब रेंडाने सब प्रकार श्रीगुसांईजीके आगें कह्यो, जो मोकों दरसन होत मूर्छा आई। सो मैं गिर्‍यो। पाछें जाग्यो। तब मैं अपने गरे में फूल की माला देखी। तब श्रीगुसांईजी यह आज्ञा किये, जो-भगवद् सेवा करि कै अज हू भगवद् धर्म दृढ़ नाहीं भयो। तातें दरसन मात्र ही भयो। और यह माला अपने कंठ की दे कै पधारे हैं। तब रेंडाने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! भगवद् धर्म दृढ़ होंई सो प्रकार कृपा करि कहिए। ताही प्रकार मैं करों। तब श्रीगुसांईजी कहें, जो-कहूंगो, तू चिंता मति करे। ऐसें आज्ञा करि आप मंदिर पधारि, श्रीनवनीतप्रियजी कों उत्थापन तें सेन पर्यंत की सेवा सों पहोंचि, अनोसर करवाय पाछें बैठक में पधारि श्रीसुबोधिनीजी की कथा कहें। पाछें सब वैष्णव दंडवत् करि बिदा भए। तब रेंडा अकेलो रह्यो। तब रेंडा ने कही, जो-अब मोकों कहा आज्ञा

है ? सो मैं करों। तब श्रीगुसांईजी कहें, जो-तू अपनो ब्याह करि। तब रेंडा ने बिनती करी, जो-महाराज ! मैं बालपने तें अवधूत दसा में रहत हों और अब मैं पचास बरस कौ भयो। मोकों अपनी लरिकिनी कौन देइगो ? और अब मैं आपके चरन छोरि कै कहां जाऊँ ? तब श्रीगुसांईजी कहें, जो-मेरी आज्ञा है। तू अपने देस में जाँइ कै ब्याह करि। तोकों कछू बाधक न होइगी।

भावप्रकाश - यहां यह संदेह होई, जो-श्रीगुसांईजी आप रेंडा कों या अवस्थामें ब्याह करिवे की आज्ञा कैसें किये ? और रेंडा कों तो भगवल्लीला कौ अनुभव हैं। तातें अब इनकों संसार में रहनो उचित नाहीं। तहां कहत हैं, जो-रेंडा ने संसार कौ अनुभव कियो नाहीं है। तातें वैराग्य दृढ़ भयो नाहीं है। सो वैराग्य दृढ़ भए बिनु भगवद् रस की अवधारना होत नाहीं। सो रेंडा प्रभुनकी लीला के दरसन करि कै मूर्च्छित होइ गयो। स्वरूप की हू अवधारना कर सक्यो नाहीं। याही तें श्रीगुसांईजी रेंडा कौ ब्याह करिवे की आज्ञा किये। और दूसरो अभिप्राय यह है, जो-रेंडा की स्त्री दैवी हैं। सो इन द्वारा स्त्रीकों अंगीकार करनो है। तातें रेंडा कौ देस में जाइ के ब्याह करवेकी श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये।

और तोकों आपही तें तेरी ज्ञाति कौ ब्राह्मन कन्या देइगो। तब रेंडा ने कही, जो-आप आज्ञा देउगे ताही प्रकार मैं करूंगो। जो-प्रातःकाल कों मंगला के दरसन करि कै देस कों जाउंगो। बीरा दे कै यह आज्ञा किये, जो-जब तू अपनी स्त्री के पास जाँय तब यह बीरा खोलि कै आधो तू लीजो, आधो स्त्री कों दीजो। तब रेंडा बीरा लें दंडवत् कियो। तब नेत्रनमें पानी भरि आयो। जो-अब मोकों श्रीगोकुल कौ दरसन कब होइगो ? तब आप कहे, जो-तू चिंता मति करे। तू फेरि आवेगो। यह सुनि कै रेंडा कों कछू धीरज भयो। पाछें श्रीगुसांईजी पोढें। तब रेंडा कों मारे दुःख के रात्रि कों नींद न आई। सगरी रेनि बिचार करत बीती। जो-अब श्रीगुसांईजी की आज्ञा तें देस कों तो अवस्य चलनो।

पाछें होइगो सो सही। पाछें प्रातःकाल देहकृत्य करि न्हाय मंगला के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-राजभोग-आर्ति के दरसन करि कै जैयो। पाछें राजभोग आर्ति भई सो दरसन करे। ता पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर कराय बैठक में पधारि भोजन करि जूंठिन की पातरि रेंडा कों धरी। सो महाप्रसाद रेंडा ने लियो। पाछें श्रीगुसांईजी पास आय बिनती करी, जो-राज! ब्याह करि स्त्री कों नाम सुनायवे कों यहां ल्याऊं? तब आप कहे, जो-ब्याह करि पहिले तू ही नाम सुनाइयो। पाछें में नाम सुनाउंगो। तब रेंडा दंडवत् करि अपने घर वा डोकरी पास आय सब समाचार कहे। जो-मैं देस जात हूं। तब वह डोकरी चुप व्है रही। पाछें भगवद् इच्छा जानि रेंडा अपने श्रीठाकुरजी कों संपुट में पधराय वह माला रमनरेती तें पाई हती, तामें तें आधी डोकरी ने राखी हती, सो लैकै डोकरी सों बिदा होइ कै अपने देस कों चल्यो। सो जब कोस चारि गाम बाकी रह्यो तहां एक 'संजाइ' गाम बीचमें आयो। सो रात्रि होंइ गई। तब रेंडा ने बिचार कियो, जो-गाम के बाहिर तलाव बोहोत सुंदर है। होंइ तो रात्रि कों यहांई सोय रहों। काल्हि अपने गाम जाउंगो। सो उष्णकाल के दिन हते। सो वा तलाव पै रेंडा उतर्यो। सों रेडा की ज्ञाति कौ एक ब्राह्मन वा गाममें रहत हतो। सो वाके एक बेटी हती। सो एक दिन वा लरिकिनी कों खेलन में स्याँ ने काटी। सो वाके माता-पिता बोहोत दुःख करन लागे। गारुड़ी सों झराए। तब वा ब्राह्मन ने कही, जो-अब लरिकिनी आछी होइ तो काहू निष्कंचन गरीब ब्राह्मन कों विवाह करि देउंगो! तब वा लरिकिनी की माताने

कही, जो-मेरे हू मनमें ऐसी है। पाछें वह आछी भई। सो वह ब्राह्मन प्रातःकाल नित्य गाम तें निकरि के वा तलाव ऊपर आवे। सो जो कोई नयो मनुष्य तलाव ऊपर देखे तासों पूछे। जो तुम कौन ज्ञाति हो ? कहां रहत हो ? सो प्रातःकाल रेंडा देहकृत्य करि दंत धावन करि स्नान करत हतो। तब वा ब्राह्मन ने गाममें तें आय रेंडा सों पूछ्यो जो-तुम कौन ज्ञाति हो ? कहा तुम्हारो नाम है ? कौन गाम में रहत हो ? तब रेंडा नें कही, जो-यहां सों चारि कोस पै कपडवनज गाम है। तहां मैं रहत हूं। उदंबर ब्राह्मन फलाने कौ बेटा हूं और रेंडा मेरो नाम है। और श्रीगोकुल तें मैं आयो हूं। अब मैं अपने घर कों जात हों। तब यह सुनि कै ब्राह्मन ने प्रसन्न होंइ कै कह्यो, जो-यह तो मेरी ज्ञाति कौ ब्राह्मन है। तब वा रेंडा सों पूछ्यो, जो-तुम्हारो ब्याह कहां भयो है ? तब इन ने नाहीं कीनी। तब तो ब्राह्मन ने बोहोत बिनती कीनी और कह्यो, जो-मेरे एक लरिकिनी है, सो मैं तुम कों देत हूं। और ब्याह करि तुम हू इहां रहो। और तुम्हारो मन होइ उहां जैयो। तब रेंडा ने कह्यो, जो-आछो। श्रीगुसांईजी की आज्ञा भई ही सोई भई। तब वा ब्राह्मन ने रेंडा कों अपने घर लै जाँइ कै पूछी, जो-खानपान की कैसें है ? तब रेंडा ने कही, जो-तुम्हारे हाथ की न खाउंगो। एक घर न्यारो देउ। तब वा ब्राह्मन उपर कौ घर खौलि कै आप नीचे रह्यो। तब रेंडा वा ब्राह्मन सों सीधो ले रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लियो। रेंडा कछुक दिन ऊहां रह्यो। सो वह ब्राह्मन रेंडा कौ आचार बिचार देखि कै बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें वा ब्राह्मन ने पंडित ब्राह्मन कों बुलाय कै लग्न सोधि कै अपनी बेटी कौ रेंडा सों ब्याह करि

दियो। पाछें रेंडा उह ब्राह्मन के संग वाके घर बरस तीनि रह्यो। पाछें वा ब्राह्मन सों रेंडा ने कह्यो, जो-अब मैं घर जाऊंगो। बोहोत दिन भए हैं। तब वा ब्राह्मन ने राखिवे कों बोहोत जतन कियो। परि रेंडा ने नाहीं करी। तब ब्राह्मन ने एक सौ रुपैया और एक गाडा अन्न और कपड़ा अपनी बेटी कों और रेंडा कों देकै भली भांति सों बिदा किये। तब रेंडा उन सों बिदा होंइ गाडा ले अपने गाम में आयो। सो रेंडा के माता-पिता तो मरि गए हते। और ज्ञाति कौ ब्राह्मन रेंडा की जगह में आयो रह्यो हतो। तब रेंडा गाम में आय कै पूछ्यो, जो-मेरो घर कहां है? तब उन ब्राह्मन ने कही, जो-यह घर तुम्हारो है। तामें आय रहो। हम कहूं दूसरो घर ठीक करि कै जाय रहेंगे। तब रेंडा ने कही, सो कैसें होय? तुम हमारी ज्ञाति के ब्राह्मन। तुमकों निकासि कै हमें रहनो उचित नाहीं है। सो हम दूसरो घर बनाय लेइंगे। तुम सुखेन रहो। तब उन ब्राह्मन ने कही, जो-घर बड़ो है। हम तुम कों आधो घर खाली करि देत हैं तामें तुम रहो। हम तुम दोऊ जने मिलि कै निर्वाह करेंगे। पाछें रेंडा को उन ब्राह्मन नें आधो घर खाली करि दियो। तामें खासा करि रेंडा रह्यो। पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा हती तातें स्त्री कों नाम सुनाय कै पानी, साग-पात मंगाय लेते। पाछें आप रसोई करि भोग धरि दोइ पातरि करि थोरो सो गाँइ कों दे कै पाछें स्त्री-पुरुष दोऊ जनें महाप्रसाद लेते। स्त्री कों ब्रह्मसंबंध नाहीं हतो। तातें वाकें हाथ सो महाप्रसाद न लेते। ऐसें करत कछूक दिन बीते। तब श्रीगुसांईजी बीरा दिये हते सो रेंडा कों सुधि आई। तब रेंडा ने अपनी स्त्री सों कह्यो, जो-यह घर में वैभव है, द्रव्य है सो सब तेरे

बाप कौ दियो है। सो मैं यामें ते तोकों कहा देहूं ? परंतु एक बीरा श्रीगुसांईजी मोकों दिये हैं तामें तें आधो मैं तोकों देत हूं। या बीरा तें तेरो कल्यान होइगो। तब स्त्री ने कह्यो, जो-अब तांई तुम क्यों छिपाय राख्यो ? अब मोकों बेगि देहु। तब रेंडा वह बीरा खोले। तब वामें तें एक मोहोर निकसी। तब वाने अपनी स्त्री सों छिपाई राखी। अपने मन में बिचारियो, जो-स्त्री कों द्रव्य में बोहोत लोभ होत है। और यह मोहोर श्रीगुसांईजी की है। सो उहां पहोंचावनी है। पाछें बीरा खोलि कै स्त्रीकों आधो दियो। आधो आप लियो। ता दिन तें स्त्री कों भक्तिभाव उपज्यो। और स्त्रीकों गर्भ रह्यो। सो बेटा भयो। पाछें वह लरिका बड़ो भयो। तब रेंडाने वाकौ जनेऊ कर्‌यो।

ताके दूसरे दिन श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोकुल तें पधारे, गुजरात सो कपडवनज में पधारे। तब रेंडा ने प्रथम सों सब समाचार श्रीगोकुलनाथजी आगें कहें। तब श्रीगोकुलनाथजी रेंडा के घर पधारे। उह फूलमाला के दरसन करे। नेत्र सों लगाए। पाछें रेंडा ने श्रीगोकुलनाथजी सों बिनती करी, जो-राज ! स्त्रीकों और पुत्र कों ब्रह्मसंबंध करावो। तब श्रीगोकुलनाथजी स्त्री और पुत्र कों ब्रह्मसंबंध कराये। और वह रेंडा की ज्ञाति कौ ब्राह्मन घर में रहत हुतो। सो रेंडा के संग तें उन हू के मन में आई; जो-हम श्रीगोकुलनाथजी के सेवक होंइ। तब उन रेंडा सों कह्यो, जो-तुम हमारी ओर तें श्रीगोकुलनाथजी सों बिनती करो। जो हम हू कों अंगीकार करे। तब रेंडा ने उन ब्राह्मन सों कही, जो-तुम हमारे संग चलो। तब ब्राह्मन दस-पांच मिलि कै रेंडा के संग चले। सो रेंडा ने

श्रीगोकुलनाथजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! इन ब्राह्मनन कों कृपा करि कै नाम दीजे । तब श्रीगोकुलनाथजी उन कों न्हवाय कै नाम सुनाये । पाछें श्रीगोकुलनाथजी श्रीद्वारिका पधारे । तब रेंडा ने अपनी स्त्री सों कह्यो, जो-अब मैं श्रीगोकुल जात हों । तब रेंडा ने अपनी स्त्री सों कह्यो, जो-मैं अकेली कैसें रहूंगी ? मैं तिहारे संग चलोंगी । तब रेंडा ने स्त्री सों कह्यो, जो-तू अब मेरे पाछें मति परे । एक पुत्र है, सो तेरो वंस चल्यो जायगो । तू सेवा भली भांति सों करियो । अब मोसों सेवा नाहीं होंई आवत । तातें श्रीगुसांईजी के घर जाइ रहुंगो । तब स्त्रीने कही, जाऊ । तब रेंडा ने श्रीठाकुरजी कों अपनी स्त्री के माथे पधराय कै माला बंटी में करि कै दियो । कह्यो, जो-सेवा में राखियो । और सेवा भली भांति सों करियो। और एक पुत्र कौ वंस चल्यो जायगो । यह कहि कै रेंडा वह श्रीगुसांईजी की मोहोर लेकै तहां तें चले । सो रात्रि दिन कल न परे । ऐसी आर्ति श्रीगुसांईजी के दरसन कों भई । सो कछूक दिन में रेंडा श्रीगोकुल आय श्रीगुसांईजी के दरसन किये । सो श्रीगुसांईजी गादी-तकिया पर बिराजे हते । तब रेंडा आय कै श्रीफल आगें धरि दंडवत् किये । तब श्रीगुसांईजी रेंडा के ऊपर बोहोत प्रसन्न भए । पूछ्यो, जो-रेंडा तेरो ब्याह भयो ? तब रेंडा ने बिनती करी, जो-महाराज ! ब्याह भयो । और एक लरिका हू भयो । और यह एक मोहोर आप ने बीरा में धरि कै दीनी हती, सो राखो । पाछें कह्यो, जो-महाराज ! हम तो जीव हैं। कहूं लोभ करि कै आप की मोहोर खरच करते तो हमारो सगरो

धर्म नष्ट होंई जातो। तातें आप कों मोहोर धरनी ऊचित नाहीं हती। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-हमकों विश्वास हैं। जो-वैष्णव हमारे द्रव्य तें डरपत रहेगो। और मोहोर तो याके लिये धरि दीनी हती, जो-मोहोर के मिष सों श्रीगोकुल की सुधी बारबार आवेगी। तब आर्ति होइगी। तब आर्ति भए तें भगवद् धर्म बढेगो। तब रेंडाने बिनती कीनी, जो-महाराज ! हम तो अज्ञानी जीव हैं। आप करत हो सो भलोही करत हो। अब तो आप के सरनि आयो हूं। अब आप हम कों कहूं मति पठावो। अपने चरन के निकट राखो। तब श्रीगुसांईजी कहे, अब तोकों कहूं न पठावेंगे। अब तुम वृद्ध भये, जो-सेवा बने सो करो। प्रसादी रसोई में महाप्रसाद लेऊ ! तब रेंडा ने कही, जो-महाराज ! प्रथम न्यारी रसोई की आज्ञा करी हती। अब महाप्रसाद लेवे की आज्ञा करत हो, ताकौ कारन कहा ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-तब तिहारे सरीर में सामर्थ्य हतो। तासों न्यारी रसोई की आज्ञा दिये हते। अब महाप्रसाद की आज्ञा करत हैं।

भावप्रकाश - यह कहि श्रीगुसांईजी आप यह जताये, जो-सामर्थ्य होंई और हमारो लेइ तो बाधक है। अब तुम असक्त भए तातें अब तुम कों बाधक नाहीं। सुखेन महाप्रसाद लेऊ।

तब रेंडा श्रीगुसांईजी की आज्ञा मानि कै भंडार में बीनाचोंनी करि आवे। श्रीगुसांईजी की सेवा करे। सागघर फूलघर में घरी घरी होंई आवें। या भांति सों निर्वाह करें।

वार्ता प्रसंग - ३

और एक दिन चाचा हरिवंसजी रात्रि कों श्रीगुसांईजी सों यह पालना कौ प्रसंग पूछें -

राग : रामकली

प्रेंख पर्यंक शयनं।
चिरविरहतापहरमतिरुचिरमिक्षणं प्रगट प्रेमायनं। ध्रुव०
तनुतरद्विजपंक्तिमतिललितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायकीनाम्।
यदवधि परमेतदाशया समभवज्जीवितं तावकीनाम्॥१॥
तोकता वपुषि तव राजते दृशि तु मदमानिनीमानहरणम्
अग्निमे वयसि किमु भाविकामेऽपि निजगोपिकाभावकरणम्॥२॥
व्रजयुवतिहृद्यकनकाचलानारोढुमुत्सुकं तव चरणयुगलम्।
तत्तु मुहुरुन्नमनकाभ्यासमिव नाथ सपदि कुरुते मृदुलमृदुलम्॥३॥
अधिगोरोचनातिलककमलकोद्ग्रथितविविधमणिमुक्ताफलविरचितम्।
भूषणं राजते मुग्धतामृतभरस्यंदि वदनेंदुरसितम्॥४॥
भ्रूतटे मातृरचितांजनबिंदुरतिशयितशोभया हग्दोषमपनयन्।
स्मरधनुषि मधु पिवन्नलिराज इव राजते प्रणयिसुखमुपनयन्॥५॥
बचनरचनोदारहाससहजस्मितामृतचयैरार्तिभरमपनयन्।
पालन सदास्मानस्मदीय श्रीविट्ठले निजदास्यमुपनयन्॥६॥

यह पालने कौ भाव श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंसजी सों खोलि कै कह्यो। ता समय रेंडा और चाचा हरिवंसजी और श्रीगुसांईजी हते। और कोई नाहीं। सो यह पालने कौ भाव रेंडा सुनि कै देहदसा भूलि गए। सो तीन दिन तांई रेंडा कों मूर्छा आइ रही। पाछें श्रीगुसांईजी पधारे तब रेंडा कों चरनामृत दियो। तब रेंडाकों चैतन्यता भई। तब श्रीगुसांईजी ने रेंडा सों पूछी, जो-कहा समाचार है? तब रेंडा ने कही, जो-महाराज! अब ऐसें में देह छूटे तो भलो है। फेरि ऐसो समै नाहीं पाऊंगो। अब श्रीगुसांईजी कहे, ऐसोई होइगो। तब रेंडा ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै देह छोरि दीनी। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें सराहना करें।

सो रेंडा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥९६॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक स्त्री-पुरुष, क्षत्री, गुजराति कै साड़ी बेचि कै सामग्री ल्याये, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं। लीला में पुरुष तो 'रामबाला' है। और स्त्री कौ नाम 'स्यामबाला' है। ये दोऊ श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंग सखी हैं। 'सुभगा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये गुजरात में एक गाम हैं, तहां दोइ क्षत्रीन के घर पास हुते। तहां जन्म दोऊ लिये। सो उन क्षत्रीन आपुस में कही, जो-अपने बेटा बेटी कौ विवाह करें तो आछौ। पाछें दोऊ बरस आठ-दस के भए तब दोऊन कौ विवाह कियो। ता पाछें केतेक दिन में दोऊन के माता पितान की देह छूटी। पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे। सो मारग में ये स्त्री-पुरुष के गाम में डेरा किये। सो तलाव पर डेरा भए। तब गाम के सब वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों जाने लागे। तब इन दोऊ स्त्री-पुरुष ने वैष्णवन तें पूछ्यो; जो-आज कहा है ? जो तुम सब इकठे व्है तलाव की ओर जात हो। तब उन वैष्णवन कहे, जो आज श्री गुसांईजी पधारे हैं। सो उनको डेरा तलाव पर भए हैं। तातें हम सब उन के दरसन कों जात हैं। तुम्हारे चलनो होंइ तो चलो। ये श्रीगुसांईजी साक्षात् ईश्वर हैं। तब तो दोऊ स्त्री-पुरुष कहन लागे, जो-हम हू चलेंगे। ईश्वर के दरसन करेंगे। तातें तुम हम कों अपने संग ले चलो। पाछें दोऊ स्त्री-पुरुष उन वैष्णवन के संग श्रीगुसांईजी के दरसन को आए। सो दरसन करत ही थकित व्है रहे। सो श्रीगुसांईजी आप इन दोऊन कों अलौकिक दरसन दिये। तब तो ये दोऊ स्त्री-पुरुष बिनती किये, जो-महाराज! हम आप के सरनि आए हैं। तातें कृपा करि हम कों सरनि लीजिये। आज हमारे बड़े भाग्य हैं, जो-आपके दरसन पाए। तब श्रीगुसांईजी दोऊन कों आज्ञा किये, जो-तुम दैवी जीव हो। तातें स्नान करि हमारे पास आउ। हम तुम कों सरनि लेइंगे। तब दोऊ स्त्री-पुरुष तलाव में स्नान करि अपरस ही में आए। तब श्रीगुसांईजी दोऊन कों नाम-निवेदन करवाए। ता पाछें आप कृपा करि दोऊन कों आज्ञा किये, जो-अब तुम सेवा करो। तुम कों हम भगवत्सेवा पधराय देत हैं। तिनकी तुम भावप्रीती सहित सेवा करियो। सो श्रीगुसांईजी आप कृपा करि दोऊन कों श्रीमदनमोहनजी कौ स्वरूप स्वामिनीजी सहित पधराय दिये। पाछें आज्ञा किये, जो-इनकी नीकी भांति सों सेवा करियो और आए गए वैष्णवन की टहल प्रीति सों करियो। और उन कौ संग करियो। पाछें श्रीगुसांईजी दोऊन कों सेवा की रीति सिखाए। ता पाछें आप द्वारिकाजी पधारे।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे स्त्री-पुरुष श्रीठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करते। सो वह पुरुष हतो सो तो लकड़ी ल्याय कै नित्य बेचतो। सो वाके पैसा आवते तिनकी सामग्री ल्यावतो। और वामें तें अधेला पैसा नित्य बचाय राखतो। और वाकी स्त्री रसोई की सामग्री सिद्ध करती। और वह पुरुष न्हाय कै श्रीठाकुरजी कों सेवा-सिंगार करतो। और वह स्त्री राजभोग धरती। पाछें भोग सराय आर्ति करि अनोसर करि जो कोई वैष्णव आवतो ताकों प्रथम महाप्रसाद की पातरि धरि कै पाछें वे दोऊ स्त्री-पुरुष महाप्रसाद लेते। पाछें नित्य वह पुरुष लकड़ीन में तें अधेला पैसा बचाय राखतो। ताकौ रुपैया एक भेलो कियो। सो वा रुपैया की एक साड़ी अपनी स्त्री के पहरिवे के लिये ल्यायो हतो। तब दूसरे दिन इन के घर आठ वैष्णव जुरि कै आए। तब उन वैष्णवन कों श्रीकृष्ण-स्मरन करि बोहोत बोहोत आदर सन्मान करि बैठारे। तब अपनी स्त्री सों कह्यो, जो-अब कहा प्रकार करिये ? जो-वैष्णव आये हैं उन कों महाप्रसाद लिवाइए। और घर में तो कछू नाहीं है। जो-वैष्णवन कौ समाधान करिए। तब स्त्री ने कह्यो, जो-यह साड़ी बेचि कै सामग्री ल्याऊ। तब वह पुरुष साड़ी बेचि कै सामग्री ल्याए। तब वह स्त्री रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि कै आप कोठी में बैठी। और वा पुरुष सों कह्यो, जो-हों तो कोठी में बैठुंगी और तुम भोग सराय कै उन वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवाइयो। ता पाछें वा पुरुष नें न्हाय कै भोग सराय कै उन

वैष्णवन कों श्रीठाकुरजी के दरसन करवाए। पाछें श्रीठाकुरजी कों पोढ़ाय उन वैष्णवन सों कही, जो उठो महाप्रसाद लेउ। तब उन वैष्णवन नें कही, जो-तुम्हारी स्त्री आय कै हम कों परोसेगी तब हम महाप्रसाद लेइंगे। तब वा पुरुष ने कही, जो-स्त्रीजन संकोच करति है। तासों नाहीं आवत है। तब उन वैष्णवन ने कही जो-वैष्णव होइगी तो स्त्रीजन आय कै हम कों महाप्रसाद की पातरि धरेगी। तब हम महाप्रसाद लेइंगे। काहेतें, वैष्णव तो आपुस में बहनि-भाई हैं।

तब वह पुरुष अपनी स्त्रीके पास गयो। और कह्यो, जो-वैष्णव, तो बिना महाप्रसाद नाहीं लेत। तू आवेगी तब लेइंगे। तब स्त्रीने कही, जो-भगवान और भगवदीय तो एक ही स्वरूप हैं। इन में कछू भेद नाहीं है। जो-मैं नग्न हों। सो भगवान तो देखत है तो भगवदीयन की कहा लाज है ? मैं आऊंगी। तब वह स्त्री कोठी में सो निकसन लागी। तब इतने ही में श्रीस्वामिनीजी आप साड़ी लेकै पधारे। तब श्रीठाकुरजी आप कहे, जो-तुम कहां जाति हो ? तब श्रीस्वामिनीजी कहे, जो-अपनी सेवा करत हैं तिनकी लाज जाति है। तातें आपुन लाज न राखेंगे तो कौन राखेगो ? तब जुगल स्वरूप नें वा कोठी में ही दरसन दीनो। तब श्रीस्वामिनीजी ने तो साड़ी पहराई। और श्रीठाकुरजी नें अपनो पितांबर उढ़ायो। और वाही कोठी में जुगल स्वरूप के दरसन भए। पाछें वह स्त्री कोठी में तें आइ कै सब वैष्णवन कों श्रीकृष्ण स्मरन करि कै महाप्रसाद की पातरि परोसन लागी। ओर सबन कों बैठारे। तब उन वैष्णवन ने

महाप्रसाद लियो। पाछें रात्रि कों उहांई रहे। तब सब कार्य तें पहोंचि कै ये स्त्री-पुरुष हू तहां आय बैठे। सो सबन मिलि कै भगवद्वार्ता कीर्तन किये। पाछें सब वैष्णव जब सोये तब उन स्त्री-पुरुष मिलि कै सबन के पांव दाबन बैठे। पाछें प्रातःकाल भयो तब वैष्णव उन स्त्री-पुरुष सों बिदा होइ कै श्रीकृष्ण-स्मरन करि कै चले। सो श्रीगोकुल आये।

भावप्रकाश - यामें यह जताये, जो-वैष्णवन में अलौकिक बुद्धि राखे तो प्रभु बेगि प्रसन्न होंइ। और वैष्णव कौ धर्म ऐसो कठिन है, सो हू जनाये। जो-साड़ी बेचि कै सामग्री ल्याए। परि श्रीठाकुरजी अपने सेवकन की लाज क्यों खोवें ? तातें ताही कोठी में आप दरसन दीने। तातें वैष्णवन कों अपने प्रभुन तें साँचौ रहनो। तब श्रीप्रभुजी आप ही कृपा करें। तातें उन ने या भांति अपनो धर्म राख्यो।

सो वे स्त्री-पुरुष श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥९७॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी अजब कुंवरि बाई, मेवाड़ में सिंहाड ग़ाम है तहां रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'रूप-आधिनी' है। ये श्रीठाकुरजी के रूप में आसक्त हैं। तातें श्रीठाकुरजी कौ वियोग सहि सकति नाहीं। ये 'सुभगा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग-१

सो वह अजबकुंवरि बाई बाल विधवा हती। सो मीरांबाई के पास रहती। सो मीरांबाई अजबकुंवरि बाई के गाम सिंहाड में रहती। और मीरांबाई के दूसरी सिंहाड हुती। परि अजबकुंवरि बाई और मीरांबाई एक गाम घर में रहती।

सो एक समै श्रीगुसांईजी सिंहाड पधारे। तब बाग में उतरे।

तब मीरांबाई दरसन कों गई। तब अजबकुंवरि हू साथ गई। तब श्रीगुसांईजी कों अजबकुंवरि ने साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम देखे। तब मन में आई, जो-हों इनकी सेवकिनी होऊ तो भली है। पाछें भेंट धरि कै दरसन करि कै तुरत ही मीरांबाई तो फिरी। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-यह भेंट तो हम नाहीं राखें। हमारे काम की नाहीं। तब और वैष्णव ने मीरांबाई सों कही, जो-ये तो अपने सेवक बिना काहू की भेंट राखे नाहीं है। ता पाछें भेंट फेरि दीनी। तब अजबकुंवरि बाई ने कही, मीरांबाई सों, जो-तुम कहो तो हों इनकी सेवकिनी होंउं। तब मीरांबाई ने नाहीं करी। ता पाछें दोऊ घर कों गई। तब अजबकुंवरि बाई कों महा विरह-ताप भयो और ज्वर आयो। तब मीरांबाई ने पूछ्यो, जो-तोकों कहा भयो ? अब ही तो आछी हती। तब अजबकुंवरि बाई ने कह्यो, जो-हों तो श्रीगुसांईजी की सेवकिनी होंउंगी। मैं तो उन कों दरसन करत साक्षात् श्रीकृष्ण देखे। तातें ताप भयो। तब मीरांबाई ने कही, जो-तेरी इच्छा। पाछें अजबकुंवरि बाई सावधान होइ कै श्रीगुसांईजी सों बिनती कराई। जो-महाराजधिराज ! अजब कुंवरि बाई कहत हैं, जो-मोकों नाम दीजिए। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै अजब कुंवरि कों नाम सुनायो। पाछें श्रीगुसांईजी कों बिनती करि कै अपने घर पधराए। पाछें श्रीगुसांईजी कों भली भांति रसोई करवाई। ता पाछें श्रीठाकुरजी कों भोग धरि कै पाछें श्रीगुसांईजी ने भोजन किये। ता पाछें वैष्णव सेवक जो साथ के हते तिन कों महाप्रसाद दियो। पाछें थारि कौ महाप्रसाद अजबकुंवरि बाई कों

दीनो। सो लेत मात्र सर्व ज्ञान स्फुर्त भयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी उत्थापन के समै गादी तकियान पर बिराज कै कथा कही। ता समै आत्मनिवेदन कौ प्रसंग कह्यो। सो अजब कुंवरि बाई सुन्यो। तब अजबकुंवरि बाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों कृपा करि कै आत्मनिवेदन करवायो चाहिए। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने विधि पूर्वक आत्मनिवेदन करवायो। पाछें सर्व मार्ग की रीति सिखाई। ता पाछें श्रीगुसांईजी कों घनो आग्रह करि कै दिन चारि राखे। भली भांति सों सेवा करी। भली भांति सों सामग्री रसोई करावती। ता पाछें श्रीगुसांईजी विजय करिवे कों बिदाय भए सो चले। तब तुरत ही अजबकुंवरि बाई कों विरह उपज्यो। सो अत्यंत आर्ति भई। प्राणांत होंन लाग्यो। तब दासी ने दोरि कै श्रीगुसांईजी सों पुकारि कै बिनती कीनी, जो-महाराज ! अजबकुंवरि बाई के प्रान जात हैं। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी पाछें पांउ धारे। तब अजबकुंवरि बाई ने श्रीगुसांईजी के चरन स्पर्स करे, तब सावधान भई। तब श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! राज के दरसन बिनु मोतें रह्यो नहीं जात है। मेरे प्रान रहेंगे नाहीं। तब श्रीगुसांईजी अपनी पादुका पधराय दिये। और श्रीमुख सों कहे, जो-तोकों जब विरह-ताप होंइ तब इनकौ दरसन करियो। सो तोकों मेरे दरसन होइंगे। ता पाछें कहे, जो-तू जैसी मेरी सेवा करी याही रीति सों सदा तू इनकी सेवी कीजो। ऐसें सब बात कहि कै सिखाइ कै ता पाछें आप विजय कियो। तब अजबकुंवरि बाई ने बोहोत भेंट करी। ता पाछें

श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे। ता पाछें अजबकुंवरि बाई पादुकाजी की सेवा करन लागी। सो प्रेम संयुक्त सब काज करे। सेवा भली भांति सों मार्गकी रीति सों करे। सो श्रीपादुकाजी सब सानुभावता जनावे, बातें करें। सो जब श्रीगुसांईजी कौ दरसन न होंइ तब अजबकुंवरि बाई कों विरह-ताप होंई। तब श्रीपादुकाजी कौ टेरा खोलि कै देखे, तो श्रीगुसांईजी बैठे हैं। सो पोथी देखत हैं। सो श्रीगुसांईजी सब वार्ता करते। पाछें श्रीगुसांईजी की कृपा तें अजबकुंवरि बाई कों साक्षात् श्रीगोवर्द्धननाथजी हू दरसन देन लागे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वासों बातें करें, चोपड़ खेलें। हास्यादिक करें। सो ऐसें नित्य दरसन देहि। जा दिन दरसन न होइ ता दिन जल-पान न करे, परि रहे। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी जब पांव धारे तब दरसन करे। ता पाछें जो-कछू नौतन नौतन सामग्री सिद्ध करि कै राखती सो श्रीनाथजी कों भोग समर्पे।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो-गुरु में अलौकिक बुद्धि दृढ़ होइ तो ठाकुर कौ सानिध्य आपही तें होई। ठाकुर इनके अधीन होंइ रहे।

वार्ता प्रसंग-२

सो एक समै श्रीगोवर्द्धननाथजी काहू वैष्णव के घर अटके। सो इहां आइ न सके। सो दूसरे दिन राजभोग-आर्ति पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारे। तब देखे तो अजबकुंवरि बाई घनी व्याकुल हैं। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी हँसे, खेलें। भोग धर्‍यो सो आरोगे। ता पाछें जान लागे। तब अजबकुंवरि बाई ने कह्यो, जो-हों तो जान न देउंगी। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कह्यो, जो-अब तो गए बिनु काम चले नाहीं। जबलों

श्रीगुसांईजी बिराजे हैं। तबलों तो जानो और आवनो ही बनेगो। तदुपरांति समय पाय बोहोत वर्ष लगि तेरे ही पास हों सिंहाड में यह तेरी कोठरी में ही बेठोंगो, इहां ही रहूंगो। यह स्थल छोरि कै कहूं न जाउंगो। तब प्रसिद्ध सबन कों दरसन इहांई देउंगो। तब अजबकुंवरि बाई ने कह्यो, जो-तुम्हारो कैसो भरोंसो ? तुम्हारे भक्त अनेक हैं ? तातें तुम्हारो कछू भरोंसो परत नाहीं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहें, जो-मैं तोसों सत्य कहत हों। सो सत्य यह मेरो बचन है। यामें संदेह नाहीं। ऐसें कहि कै ता पाछें कह्यो, जो-तू अब चिंता करे मति। आज पाछें तोकों नित्य दरसन देउंगो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप पधारे। सो दोई समय इहां जब श्रीगुसांईजी अनोसर करते तब उहां पधारते।

भावप्रकाश-या वार्ता कौ अभिप्राय यह हैं, जो-ठाकुर अपने जन कौ ताप सहि सकत नाहीं। तासों जो कोऊ भक्त विरह ताप करि उन कों भजत हैं, तिन के वे आधीन व्है रहत हैं। सदा सर्वदा निकट रहत है। सो यह पुष्टिमार्ग विरह आतुरता कौ है। तातें या मार्ग में श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा सानिध्य रहत हैं। सों अजबकुंवरि कौ ताप जानि श्रीगोवर्द्धननाथजी ब्रज छोरि कै मेवाड़ पधारे। सो जबलों अजबकुंवरि बाई की (आधिदैविक प्रकार सों) स्थिति हैं। तहां तांई श्रीगोवर्द्धननाथजी मेवाड़ में बिराजेंगे।

सो वह अजबकुंवरि श्रीगुसांईजी की ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिए।

वार्ता ॥९८॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक ब्राह्मन पंडित, गुजरात कौ, जाने जनेऊ तोरि बुहारी बांधी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं, लीला में इन कौ नाम 'आतुरी' है। इन को श्रीठाकुरजी की सेवा में बोहोत आरति रहति हैं। रात्रि-दिन सेवा बिनु चेन परत नाहीं। और कछु जानत

नाहीं। ये 'सुभगा' तें प्रगटी हैं तातें इनके भावरूप हैं।

ये गुजरात में एक ग्राम में ब्राह्मन के जन्म्यो। सो बालपने में इनको एक कर्ममार्गीय पंडित कौ संग भयो। सो कर्ममार्ग के ग्रन्थ बोहोत पढ्यो। सो कर्मकांड करन लाग्यो। पाछें बरस पच्चीस कौ भयो तब इन को पिता मर्‍यो। सो घर में इकलो रहे। ब्याह भयो नाहीं। सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारत हैं। सो मार्ग में यह ब्राह्मन कौ गाम आयो। तहां डेरा किये। सो यह ब्राह्मन कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। तब यह ब्राह्मन जान्यो, जो-ये कोई पंडित हैं। तातें इन सों सास्त्र-चर्चा करिए तो आछौ। पाछें यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी पास चर्चा करन आयो। तब या ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी पास आई नमस्कार करि यह पूछ्यो, जो-महाराज! कर्ममार्ग बड़ो के ज्ञानमार्ग बड़ो ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-जाकों जो रुचे ताके भाये वह मार्ग बड़ो। जो मारग पर विश्वास आवें सोई बड़ो। परि वैसें तो बड़ो भक्तिमार्ग हैं। जामें जीव कृतारथ होंई। और ज्ञानमार्ग कर्ममार्ग तो या काल में बड़ी कठिनता सों होत हैं। तातें कष्ट साध्य हैं। तब या पंडित ब्राह्मन कह्यो, जो-महाराज ! भक्ति मार्ग में कहा कर्म नाहीं हैं ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-भक्ति मार्ग में कर्म और ज्ञान दोऊ हैं। परि वे दोऊ भगवद् संबंधी हैं। भक्ति मार्ग में जो कर्म किये जात हैं वे सब निष्काम भाव सों भक्ति संयुक्त होत हैं। सो वे भक्ति के अंग रूप हैं। प्रेमलक्षणा भक्ति कों बढावनहारे हैं। और कर्ममार्ग में स्वर्गादिक की कामना करि कर्म किये जात हैं। तातें उन में निष्काम भाव रहत नाहीं। और बड़े कष्ट सों होत हैं। सो या काल में काहू तें आछी भांति बनत नाहीं। सोऊ चित्त प्रसन्न रहत नाहीं। तातें कलेस कों देनहारे हैं। तब यह पंडित ब्राह्मन कह्यो, जो-महाराज ! भक्ति के कर्म कौन प्रकार किये जात हैं ? तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो ब्राह्मन सुनि ! भक्तिमार्ग में एक कृष्ण ही कौ सरन-आश्रय मुख्य है। सो 'गीताजी' में भगवान श्रीमुख सों सरन की महिमा कहि हैं। तातें भक्तिमार्ग में या सरनि करि जीव प्रवृत होत है। तब वह जीव देहसंबंधी लौकिक वैदिक सब कर्म-धर्म एक भगवान ही कों समर्पन करि निष्काम भाव सो उनकी सेवा करत हैं। या प्रकार निष्काम भाव सों कृष्णार्पन किये कर्म ब्रह्म रूप होंई, भक्ति कों उत्पन्न करत हैं। ताकरि जीव कृतारथ होत है। ऐसो यह भक्तिमार्ग हैं। यह सुनि कै पंडित ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! आज तांई तो हों कर्ममार्ग में पचि मर्‍यो ! परि कछु प्राप्ति भई नाहीं। तातें अब कृपा करि मोकों भक्तिमार्ग में अंगीकार कीजिए। तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मन सों कहे, जो-तू स्नान करि आऊ। हम तोकों नाम देंगे। पाछे तू काल्हि ब्रत करियो। तब तोकों निवेदन करावेंगे। सो वह ब्राह्मन स्नान करि आयो। तब श्रीगुसांईजी आप वाकों नाम सुनायो। पाछें वह ब्राह्मन अपने घर गयो। दूसरे दिन एक ब्रत कियो। ता पाछें स्नान करि अपरसही में श्रीगुसांईजी के पास आयो। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि वाकों निवेदन कराये। तब यह ब्राह्मन बिनती कियो, जो-महाराज ! अब श्रीठाकुरजी पधराई दीजिए। और सेवा कौ प्रकार कृपा करि कहिए। तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मन के माथे एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दिये। पाछें सेवा की सब रीति सिखाई। ता पाछें वह आज्ञा मांगि श्रीठाकुरजी कों पधराय अपने घर आयो। सो घर सब खासा करि सेवा करन लाग्यो।

वार्ता प्रसंग - १

सो वह ब्राह्मन चुकटी मांगि के निर्वाह करतो। पाछें स्नान करि कै रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों जगाय मंगला तें सेन पर्यंत की सेवा करतो। सो ऐसें नित्य श्रीठाकुरजी की सेवा करतो। सो एक दिन चुकटी मांगिवे कों गयो। सो अवेर भई। सो घर आय कै ताप उपज्यो। सो बेगि-बेगि न्हाय कै मंदिर में बुहारी करत हतो। सो बुहारी की जेवरी टूटि गई। सो जनेऊ तोरि कै बुहारी उतावली सों बांधी। सो जनेऊ की कछु सुधि रही नाहीं। पाछें श्रीठाकुरजी कों जगावन गयो। तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न भए। तब याने बिनती कीनी, जो-महाराज! आप प्रसन्न भए ताकौ कारन कहा ? तब श्रीठाकुरजी आपने आज्ञा करी, जो-आज तैनें जनेऊ तोरि कै बुहारी बांधी। सो ऐसी आतुरता में मोकों जगायवे कों आयो। तासों मैं प्रसन्न भयो हों। तब तें ऐसें ही नित्य श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें। जो-चाहिए सो मांगि लेते। सो यह ब्राह्मन ऐसेंई सदा सर्वदा। आतुरता पूर्वक सेवा करतो।

भावप्रकाश-या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-पुष्टिमार्ग की सेवा विरह-आतुरता की हैं। विरह-आतुरता बिना अनुभव न होंई। काहेते ? विरह आतुरता करि लोक वेद के धर्म विस्मृत होत हैं। देहानुसंधान हू छूटत हैं। तब प्रभु कौ आवेस हृदय में होत है। तातें सर्व रस कौ अनुभव होत हैं।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता॥९९॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक कुनबी पटेल, निष्किंचन, गुजरात में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन को नाम 'सत्या' है। ये पहिले द्वारिका लीला में 'तन्मध्या' की सखी ही। उन तें प्रगटी है, तातें उन के भावरूप हैं। ये जा प्रकार ब्रजलीला में अंगीकार भई सो बात ऊपर कहि आए हैं।

ये गुजरात में कुनबी पटेल के घर जन्म्यो। सो एक समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी पधारे। सो वा गाम में डेरा किये। तब ये कुनबी पटेल बीस बरस कौ हुतो। सो वैष्णवन के संग ते सरनि आयो। और यह निष्किंचन हुतो। याके माता-पिता कोऊ नाहीं। घर में इकलोई रहे। सो एक समै श्रीगुसांईजी के सात सेवक द्रव्यपात्र कौ संग वा गाम तें श्रीगोकुल कों चल्यो। श्रीगुसांईजी के दर्सनार्थ। तब या कुनबी वैष्णव के मन में आई, जो श्रीगुसांईजी के दरसन किये बोहोत दिन भए। तातें श्रीगोकुल जाई श्रीगुसांईजी के दरसन करों तो आछौ। ऐसो बिचारि कै यह कुनबी वैष्णव हू वा संग में श्रीगोकुल कों चल्यो। सो वाके पास थोरे से चोखा हते। और तो कछु हतो नाहीं। सो वह चोखा संग लिये। मन में कहें, जो-ये श्रीगुसांईजी कों भेट करोंगो।

वार्ता प्रसंग - १

सो श्रीगुसांईजी के सेवक आठ सो श्रीगोकुल आए। तामें सात वैष्णव तो द्रव्यपात्र हुते। तिन तो श्रीगुसांईजी कों भेंट धरी। और वह एक निष्किंचन वैष्णव हतो। ता पास भेंट कों थोरेसे चोखा हते। सो उन चोखान कों वह वैष्णव छिपाए राखे हते। सो श्रीगुसांईजी ने आपु वा वैष्णव तें माँगि लीने। पाछें उन चोखान में तें थोरे से श्रीनवनीतप्रियजी की रसोई में दीने। और थोरेसे चोखा श्रीगोवर्द्धननाथजी के इहां तरहटी में पठाय दिये।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो-दीनता तें लाई भेंट प्रभु मांगि कै प्रेम सों अंगीकार करत हैं।

वार्ता प्रसंग - २

और एक समै श्रीगुसांईजी पोथी खोलि कथा कहत हते और वैष्णव बैठे हते। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो-सुनिवेवारो वैष्णव आवे तो बांचों। तब सब वैष्णव आपुस

में देखें, जो-कौन रह्यो है ? तब वह वैष्णव चोखावारो आयो। तब आपु कथा कहे। तब तहां एक वैष्णव ढीट सो हतो। सो वाने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जौ-महाराज ! और तो कोऊ वैष्णव आयो नाहीं। एक यह दुर्बल मजूर सो वैष्णव आयो है। तब आप कथा कही। सो कहा कारन ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-जाके मन में अहंकार है द्रव्यादिक कौ सो हमारे हृदय कौ हार्द न समुझेगो। यह निरहंकार है तातें हमारो वैष्णव है। या प्रकार श्रीगुसांईजी कहे। तब सब वैष्णव लज्जा पाइ कै चुप होंइ रहे। या प्रकार वा वैष्णव पर श्रीगुसांईजी कृपा करते।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो-अहंकार भगवद्धर्म में बाधक है।

वार्ता प्रसंग - ३

और एक समै वेई आठ जनें श्रीनाथजीद्वार आए। तहां सात संपन्न वैष्णव सबन सों मिलाप उन कौ बोहोत हुतो। सो तो एक आछी ठौर उतरे, जाँय कै। और वह गरीब वाकों कौन पूछे ? सो वह वैष्णव भूखो प्यासो उहां घाट पै परि रह्यो। सो वेसोई तो वह दुर्बल, तैसोई सीत, सो धूजन लाग्यो। सो वाकौ ताप श्रीनाथजी सों सह्यो न गयो। सो श्रीनाथजी अर्द्धरात्रि के समय महाप्रसाद और जल और आपके ओढिवे की सुफेदी लेकै आए। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप उहां वैष्णव के पास पधारे। सो वाकों महाप्रसाद लिवाइ, जल पिवाइ वह सुफेदी वाकों उढाय कै आप तो अपने मंदिर में पधारे। सो उह वैष्णव तो कछू जाने नाहीं। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी यह सब समाचार श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-ऐसी भई है। जो-वह दुर्बल

वैष्णव, सो मेरो स्नेह वाके हृदय में बोहोत है। सो वापें आयो न गयो। सो ये सातों वैष्णव वाकों उहां घाटे ही पै अकेलो छोरि आए हैं। सो वह भूखो उहांई परि रह्यो है। सो तब रात्रि कों मैं या भांति सों वाकौ महाप्रसाद जल और ओढिवे कौ अपनी सुफेदी दे आयो हूं। सो इनकों तुम समुझाय दीजो। जो वाकों ऐसें न छोर्‌यो करें। और अब तुम वाकों बुलाय लेऊ। ऐसें सुनि कै श्रीगुसांईजी आप पधारे। सो सातों वैष्णव सों खीझन लागे। जो-साथ में रहि कै गरीब की खबरि नाहीं राखत ? तब वे सातों जने वाकों अपने साथ जाँइ के लै आए। ता दिन तें ए सातों वैष्णव ताकी खबरि राखन लागे। वाकों अकेलो न छोरे। सो वा वैष्णव के ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसी कृपा करते।

भावप्रकाश - यामें यह जताए, जो-वैष्णव कों जीव मात्र पैं दया राखनी।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसा कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें उनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां तांई कहिए ?

वार्ता ॥१००॥

अब श्रीगुसांईजी के सेवक देवाभाई कुनबी, गुजरात के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'रतिशूरी' है। ये पहिले द्वारिका लीला में 'तन्मध्या' की सखी ही। तन्मध्या तें प्रगटी हैं। सो तन्मध्या सत्यभामा की सखी हैं। तिनके ये भावरूप हैं। सो इनकी जा प्रकार ब्रजलीला में प्राप्ति भई, सो ऊपर कहि आए हैं।

ये गुजरात में एक कुनबी के जन्मे। सो इन कौ पिता खेती करतो। पाछें ये हू बरस बारह के भये। तब तें खेती करन लागे। ता पाछें इन कौ ब्याह भयो। चारि बेटा हू भए।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे। सो मारग में देवाभाई के गाम में डेरा किये। सो देवाभाई वैष्णव के संग श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। तब श्रीगुसांईजी सों बिनती

कीनी, जो-महाराज ! कृपा करि कै सरनि लीजिए । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-तुम स्नान करि आओ । तब देवाभाई और देवाभाई की स्त्री दोऊ न्हाय आये । तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वे दोऊन कों नाम-निवेदन करवायो । और देवाभाई के घर के और दस बीस हते तिन कों कृपा करि कै नाम सुनायो । तब देवाभाई ने बिनती कीनी, जो-महाराज ! कृपा करि कै श्रीठाकुरजी पधराय दीजिए । और सेवा की रीति भांति कृपा करि समझाइए । तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै सेवा पधराइ दिये । और सेवा की रीति भांति सब सिखाई । पाछें श्रीगुसांईजी ब्रह्मसंबंध कौ तात्पर्य देवाभाई कों समझाइ कहे । तब देवाभाई तैसें ही सेवा करन लागे ।

वार्ता प्रसंग-२

और उन के बेटा हते सो खेती करते । और देवाभाई तो भगवद् सेवा करते । सो देवाभाई नित्य दोइ वैष्णव कों महाप्रसाद लिवाय कै पाछें आप महाप्रसाद लेते । और जितनो द्रव्य कमावते वह सब श्रीगुसांईजी कों पधराय भेंट करि देते । और गृहस्थाई में खरच प्रमान सों करते । और सदा सुलभ स्वभाव सों ही रहते । और ब्रह्मसंबंध करें पाछें जो द्रव्य कमावते वह सब श्रीगुसांईजी कौ जानते । और ठौर बोहोत खरचते नाहीं । या द्रव्य सों बोहोत डरपते । सो ऐसें श्रीठाकुरजी की सेवा करते । सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते । ब्रजलीला कौ अनुभव करावते । सो वे देवाभाई ऊपर श्रीगुसांईजी सदैव प्रसन्न रहते ।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव निवेदन कौ सदा सर्वदा स्मरन

राखे। अपने द्रव्यादिक कौ और ठौर खर्च करे नाहीं। काहेतें ? जो-ये प्रभुन कौ द्रव्य है। तातें अन्य विनियोग होन न दे। या प्रकार अनन्य व्है सेवा करे तो ठाकुर निश्चय अनुभव जतावे।

सो वे देवाभाई श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१०१॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक वैष्णव बनिया, गुजरात में रहतो, ताकी बेटी, जाकों रामानंदी सों ब्याह भयो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये बनिया की बेटी तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'कृष्णानुचरी' है। सो ये पहिले द्वारिका लीला में 'तन्मध्या' की सखी ही। उन तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं। ये जा प्रकार ब्रज-लीला में प्राप्त भई, सो आगें कहि आए हैं।

वार्ता प्रसंग-१

एक बनिया वैष्णव हतो। सो गुजरात में रहत हतो। श्रीगुसांईजी कौ परम कृपापात्र भगवदीय हतो। सो वाके घर बेटी जन्मी। सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे हे। सो मारग में या वैष्णव के गाम में डेरा किये। तब यह वैष्णव अपनी बेटी कौ नाम सुनायवे ल्यायो। ता समै यह बेटी बरस डेढ़ की हती। सो श्रीगुसांईजी आप वाकों प्रसन्नता पूर्वक नाम सुनायो। पाछें आज्ञा कीनी, जो-या बेटी कों सर्वात्मभाव सिद्ध होइगो। पाछें यह बेटी बड़ी भई तब श्रीभागवत सुनन लागी। पाछें वा वैष्णव ने एक जाति के लरिका सों याकौ ब्याह कियो। सो वह रामानंदी हतो। सो वह श्रीरघुनाथजी के स्वरूप में आसक्त हुतो। और या बहू कौ मन श्रीकृष्ण की लीला में आसक्त भयो हुतो। रात्रि दिन श्रीकृष्ण की लीला कौ चिंतन कर्‌यो करे।

सो केतेक दिन पाछें वह रामानंदी वैष्णव अपनी बहू कों

बुलावन आयो। तब वाके माता-पिता नें अपनी बेटी बिदा करि दीनी। तब वे स्त्री पुरुष दोऊ चले। सो मञ्जिल पै जाँइ उतरे। तब वा लरिकिनी नें रात्रि कों बिचार्यो, जो - याकौ भगवद्भाव कैसो है सो मैं याकों पूछि देखों। तब वा लरिकिनी ने अपने पति सों पूछ्यो, जो-तुम्हारे श्रीरघुनाथजी कहा करत हैं ? तब वाके पुरुष ने कही, जो-हमारे श्रीरघुनाथजी तो राजधानी करत हैं। सो उनके पास श्रीजानकीजी बिराजत हैं। सो दोऊ जनें राज करत हैं, लीला करत हैं। तब पुरुष अपनी स्त्री सों पूछ्यो, जो-तुम्हारे श्रीकृष्णचंद्रजी कहा करत हैं ? तब स्त्रीने अपने पुरुष सों कही, जो-हमारे श्रीकृष्णचंद्रजी तो वेनुनाद करि कै सब ब्रजसुंदरीन कों बुलाई कै रास रमन उन सों करत हैं। उनके संग मिलि कै। सो उहां विमान पै चढ़ि चढ़ि कै सब देवता देखन कों आए हैं। सो ताकी उहां मंडप रचना भई है। और गंधर्व गान करत हैं। और ब्रजभक्तन अनेक भांति सों गान करत हैं। सो या भांति सों हमारे श्रीठाकुरजी सदैव लीला करत हैं। सो नित्य प्रति अहर्निस यही बात करत उन दोउ जनें स्त्री-पुरुष कों प्रातःकाल होइ जाँइ। तब ये बात करत करत हास्य करत में एक दिन पुरुषनें कह्यो, जो-तुम्हारे श्रीठाकुरजी तो महाव्यभिचारी हैं। सौ सदैव स्त्रीन कों साथ ले रमन करत हैं। तब स्त्रीने अपने पुरुष सों कह्यो, जो-तुम्हारे श्रीरघुनाथजी तो घर में निर्बल हैं। सो एक श्रीजानकीजी कों राखि सके नाहीं। या प्रकार दोनों झगरन लागे। सो दोऊन कों आर्ति भई। तब श्रीठाकुरजी ताही समै परम दयाल भक्त की आर्ति सहि सके

नाहीं। तातें आप मध्य में प्रगट होंई झगरो चुकायो। पाछें कही, जो-मैं प्रसन्न भयो हूं, तातें तुम कछू मांगो। तब इन दोऊ जनेंन कही, जो-महाराजाधिराज! हम तो यही मांगत हैं, जो-तुम हम ऊपर प्रसन्न भए हो तो हमारो निर्वाह सदैव याही बात करत होंई। जातें आप के दरसन नित्य होई। तब श्रीठाकुरजी तो इन कौ यह वचन सुनि कै खरेई प्रसन्न भए। तब इन दोऊ जनेंन कौ जन्म यही बात करत गयो। परि इनकों कछू संसार की स्फूर्ति न भई। संसार कों जान्यो नाहीं, जो-यह कहा है?

भावप्रकाश-या वार्ता में यह संदेह है, जो-स्त्री पुरुष दोऊ ठाकुर की निंदा किये। दोऊ स्वरूपन में भेद-बुद्धि किये। तोऊ ठाकुरजी आप प्रगट व्है दरसन दिये, ताकौ कारन कहा? तहां कहत हैं, जो-भक्तिमार्ग में कोऊ कैसे हू प्रकार सों अनन्य व्है रहत हैं तिन पर ठाकुर या भांति कृपा करत हैं। काहेतें, जो-अनन्यता करि भक्त कों तन्मयता होत हैं। सो अनन्यता ऐसो पदार्थ है। और भक्ति मार्ग में लीला-भेद सों स्वरूप-भेद हैं। तातें भक्त हैं सो जा लीला कौ अधिकारी होइ ता लीला के स्वरूप में मगन व्है, तब अनन्य होंई। तातें ज्ञानमार्ग तें भक्तिमार्ग विलक्षन हैं।

वार्ता प्रसंग-२

और उनके घर श्रीठाकुरजी कौ सिंगार जब स्त्री करे तब तो मोर मुकुट काछनी, धोती, उपरेना, वागा, पाग, फेंटा, कुलही, टिपारो, मल्लकाछ, पिछोरा या प्रकार भांति-भांति के सिंगार करे। तब तांई इनकों साक्षात् श्रीठाकुरजी श्रीकन्हैयालालजी के प्रतिबिंब के दरसन होंई। और जब उन कौ पुरुष श्रीठाकुरजी की सेवा-सिंगार करे तब इन कों श्रीरघुनाथजी कौ साक्षात् दरसन होंई। सो याही भांति सों उन दोऊ जनेंन कों सदैव अनुभव होंई। परि वे जो कार्य करे सो स्नेह संयुक्त करे। याही प्रकार उन कै जन्म संपूरन बीते। उन जान्यो

नाहीं, जो-या संसार में और कछू है। तातें उन दोऊ जनेंन कों श्रीठाकुरजी ऐसो अनुग्रह किये। तातें वे दोऊ ऐसें भगवदीय कृपापात्र हते। दोऊन कों सर्वात्म भाव सिद्ध भयो हतो।

भावप्रकाश-या वार्ता में यह संदेह है, जो-स्त्री तो पुष्टिमार्गीय हती सो उन मर्यादा स्वरूप कौं सिंगार क्यों कियो ? तहां कहत हैं, जो-स्त्री में स्नेह प्रकार करि सर्वात्मभाव सिद्ध भयो है। तातें उनके भाव तें वा स्वरूप में पुष्टि कौ आविर्भाव होत है। रसात्मक प्रकार तें ठाकुर अनुभव जनावत हैं। सो ऐसो सर्वात्म भाव सिद्ध होंइ तब पुष्टि मर्यादा बुद्धि रहत नाहीं। एक रसरूप भाव प्रगट होत है। सर्वत्र भावात्मा कौ ही अनुभव होत हैं। सो यह भक्तिमार्ग ऐसो विलक्षन हैं। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'चतुःश्लोकी' में कहत हैं। सो श्लोक-

यदि श्रीगोकुलाधीशो धृतः सर्वात्मना हृदि।
ततः किमपरं ब्रूहि लौकिकैर्वैदिकैरपि।

तातें जा ने अपने हृदय में सर्वात्म भाव करि श्रीगोकुलाधीश कों धारन किये। ताकों लौकिक वैदिक तें कहा ? सो यह भाव सर्वोत्तम जाननो।

सो वह वैष्णव की लरिकिनी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१०२॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दोऊ भाई साँचोरा ब्राह्मन, गुजरात में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश-ये सात्विक भक्त हैं। लीला में बड़े भाई कौ नाम 'वैष्णवी' है। छोटे भाई कौ नाम 'वल्लभा' है। सो दोऊ श्रीयसोदाजीकी अंतरंग सखी हैं। नंदालय की टहल में सदैव तत्पर रहत हैं। ये 'कुंजरी' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हे। तब उन दोऊ भाई साँचोरा ब्राह्मन नें नाम-निवेदन पायो हतो। सो साँचोरा ब्राह्मन परम भगवदीय भए। सो उन कों श्रीप्रभुजी सानुभाव हते। और वैष्णव में बोहोत स्नेह ममत्व हतो।

सो एक समै गुजरात के वैष्णव एकत्र होंइ कै श्रीगुसांईजी

के दरसन कों श्रीगोकुल कों चले। सो मारग में दोऊ भाई साँचोरा रहत हुते, ता गाम में आए। सो वैष्णव जानि कै रात्रि कों उहां बसे। तब उन दोऊ भाईन कौ वैष्णव पर परम स्नेह हतो, सो मिले, भेटें। श्रीकृष्ण-स्मरन किये। पाछें घर में देखे तो घर में कछू हतो नाहीं। तब अपने मन में बिचार करन लागे, जो-अब कहा प्रकार कीजिये ? और वैष्णव तो अपने घर कृपा करि कै पधारे हैं, सो तो अपनो बड़ो भाग्य है। परि अपने घर में कछू सामग्री नाहीं है। वैष्णव अपनी गांठि कौ महाप्रसाद लेइंगे तो अपनी माला कौ धर्म नाहीं है। और सगाई-संबंधता कौ कछू रहेगो नाहीं। तब बड़ो भाई अपने मन में बिचारि करि छोटे भाई सों कह्यो, जो-अपने पाछें अपने बनिया की हाट है। सो बनिया तो काहू गाम (कों) गयो है। सो जाँइ कै तारौ तोरि कै जो सामग्री चाहिए सो ले आइये। पाछें वह आवेगो तब हम दाम दे देइंगे। तब छोटे भाई ने बड़े भाई सों कह्यो, जो-भली बात है। पाछें जाँइ कै तारौ तोर्यो। सो किंवाड़ खोलि कै जितनो सीधो सामग्री चाहिए तितनो लीनो। पाछें गांठि बांधि कै छोटे भाई ने बड़ो भाई कों दीनी और कह्यो, जो-तुम चलो, हों किवाड़ मारि कै आवत हूं। तब बड़ो भाई अपने घर आयो।

भावप्रकाश-यहां यह संदेह होंई, जो-वैष्णव के समाधान के तांई ऐसौ लोक विरुद्ध कार्य क्यों किये ? तहां कहत हैं, जो भगवदीय वैष्णव कौ स्वरूप महा अलौकिक हैं। साक्षात् भगवान कौ ही स्वरूप हैं। तातें घर आए भगवदीयन कौ भूखे कैसे रहन दे ? यह वैष्णव कौ धर्म नाहीं। तातें उन दोऊनने भगवद्धर्म आगें लोक वेदकों तुच्छ करि जाने। यह भाव जाननो।

इतने में कोतवाल कौ मनुष्य आयो। तब छोटे भाई कों कोतवाल के मनुष्य ने पकर्यो। तब चोंतरा पै ले गए। तब

कोतवाल सों सब समाचार कहें। ता समै गाम कौ राजा तहां बैठ्यो हतो। तब उह ब्राह्मन कौ परोसी चोंतरा ऊपर लिखत हतो। सो वह महा कुटिल हतो। सो वाके और इन दोऊ भाईन कों परस्पर द्वेषभाव हतो। सो वानें याकों देखि कै कह्यो, जो-साहिबजू ! ये बड़े चोर हैं। जो-सब गाम में चोरी होत है सो सब येही करत हैं। जो-इन की तलास में होत हैं। और इनने मनुष्य बहोत मारे हैं। सो ऐसीऐसी बोहोत ही बातें कही। तब राजाने हुकम दियो, जो-याकों खरच करि डारो। तब मनुष्यन ने वाकों ठौर मार्‍यो। ता पाछें वाकौ सीस गाम के द्वार पैं बांध्यो। और धड़ एक वृक्ष सों बांध्यो। ऐसें छोटे भाई कौ कियो। काहेतें, जो-कोऊ आज पाछें ऐसो काम करे नाहीं। तब ये बात बड़े भाई ने जानी। परि कछू बोल्यो नाहीं। मन में कहे, जो-अपने मन में कलेस करूंगो तो वैष्णव भूखे रहि जाँइगे। और अब तो भयो सो तो भयो। 'निजेच्छा'। ऐसें मन में बिचारि कै आपतो न्यारो बैठि रहि कै पाछें स्त्रीन पास सब सामग्री सिद्ध कराय कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। पाछें भोग सराय कै सब वैष्णव को महाप्रसाद लिवायो। पाछें सब वैष्णव कीर्तन किये। और श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के सेवकन की वार्ता तथा श्रीगुसांईजी के सेवकन की वार्ता और ग्रंथन की टीका सब वैष्णव मिलि कै आपुस में चर्चा करन लागे। तब बड़े भाई सों वैष्णवन पूछ्यो, जो-तुम्हारे छोटे भाई काल्हि तो आए हे ता पाछें फेरि देखे नाहीं। सो कहां है ? तब बड़े भाई ने उन वैष्णवन सों कह्यो, जो-कछू काम गयो होइगो ? पाछें

दूसरे दिन बड़ी सवारे ही उठि कै सब वैष्णव मिलि के बिदा होंइ कै चले। तब बड़ो भाई थोरीसी दूरि कों पहोंचावन कों गयो। तब छोटे भाई कौ धड़ बंध्यो ताकी नेक दूरि तें बिदा किये। तब वह धड़ हू हाथ जोरत है, और कंठ सों लगावत है।

भावप्रकाश-यहां यह संदेह होई, जो-धड़ हाथ कैसें जोरे ? तहां कहत हैं, जो-जैसें रनमें सूरवीर लरत में मरत हैं। तब वा समै सूरवीरता कौ आवेस रहत हैं। तासों वाकौ धड़ मरे हू तीन दिन लों, सात दिन लों, लरत हैं। तैसेंई भगवद् आवेस सों या धड़ ने वैष्णवन कों श्रीकृष्ण-स्मरन कियो, ऐसें जाननो।

तब दरवाजे की ओर देखे तो सीस बंध्यो है। तब वैष्णव ने कह्यो, जो-यह सिर धड़ कौन कौ है ? पाछें उन वैष्णवन ने पहचान्यो। तब उन वैष्णवन ने बड़े भाई साँचोरा ब्राह्मन सों पूछ्यो, जो-यह कहा कारन है ? तब बड़े भाई कौ हृदय भरि आयो। और बोहोत ही रोवन लाग्यो। ता पाछें सब वैष्णवन कों दोऊ हाथ जोरि कै विधि पूर्वक सब समाचार कहे। पाछें सब वैष्णव उहां ते धड़ छोरि ल्याए। और सीस दरवाजे तें छोरि ल्याये। सो सीस धड़ के ऊपर धर्‌यो। ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु, श्रीगुसांईजी कौ स्मरन करि कै नाम लें, चरनोदक-महाप्रसाद कंठ में मेल्यो, और मुख में मेल्यो। ता पाछें महाप्रसादी उपरेना हतो सो कंठ में बांध्यौ। तब वह सीस धड़ मिलि गयो।

भावप्रकाश-यहां यह संदेह होई-ऐसें कैसें होंई ? कट्यो भयो सिर कैसें जुरे ? तहां कहत हैं, जो-भगवदीय वैष्णवन के हृदय में प्रभु आप साक्षात् बिराजत हैं। तातें उन में अलौकिक सामर्थ्य हैं। ये चाहे जो करि सकत हैं। जैसें वेद व्यासजीने महाभारत के समै मरे भए योद्धान कों जिवाए हे। सो अपनी अलौकिक सामर्थ्य सों। नाँतरु ये कैसें संभवे ? ताही प्रकार यहां हू जाननो।

पाछें वैष्णव उठि कै ठाढ़े भए। तब सब वैष्णवन के उह

पाँवन पर्‍यो। सो यह बात-समाचार सब गाम के राजा ने सुने। सो दरवान ने दोरि जाँइ कै राजा सों कह्यो। तब राजा दोरि कै देखन आयो। तब वह राजा देखे तो सब साँची बात है। सब ज्यों को त्यों सरीर सिद्ध भयो है। रंचक हू कसर नाहीं परी। ऐसो मिलि गयो हतो। तब वह राजा वैष्णवन के पांवन पर्‍यो। और वा राजा ने दोऊ हाथ जोरि कै उन वैष्णवन सों कह्यो, जो-तुम बड़े भगवदीय महापुरुष हो। तातें मेरो अपराध क्षमा करो। ऐसी बोहोत बिनती राजा ने कीनी। और कह्यो, जो-याकौ अपराध मैं भुगतूंगो। अपनो कियो पावेंगे। ता पाछें राजा वा परोसी कों मारन लाग्यो। तब वैष्णवन ने वा परोसी कों मारन न दीनो।

भावप्रकाश-सो यातें, जो-यह वैष्णव कौ धर्म नाहीं है। वैष्णव कों जीव मात्र पर दया राखनी। काहूकों बूरो होन न दे। यह जतायो।

ता पाछें वा परोसी कों गाम तें बाहिर काढ़ि दीनो, और वा परोसी कौ घर लूटि लीनो। पाछें राजा ने वैष्णवन कों राखिवे कों बोहोत ही आग्रह कीनो। परि वे रहे नाहीं। तब सब वैष्णवन कों राजा ने बिदा किये। सो वे सब श्रीगोकुल कों गए। ता पाछें उन वैष्णवन सब समाचार विस्तारपूर्वक श्रीगुसांईजी सों कहे। तब श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन के बचन सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए। सो उन दोऊ भाईन के ऊपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते।

भावप्रकाश - या वार्ता में यह जतायो, जो-घर आए वैष्णवन की सेवा प्रीति पूर्वक करनी। सब कष्टनकों सहन करनो। भगवद्धर्म आगें लौकिक वैदिक तुच्छ करि जानने।

सो वे दोऊ भाई श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥१०३॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक राजा गुजरात कौ, जो दोई भाई साँचोरा ब्राह्मन के संग तें वैष्णव भयो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश-ये राजस भक्त हैं। लीलामें इनकौ नाम 'गौरोचनी' है। सो गौरोचनी 'वल्लभा' की अंतरंग सखी हैं। ये 'कुंजरी' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे वैष्णव तो श्री गोकुल गए। पाछें वा गाम कौ राजा इन दोऊ भाई साँचोरा ब्राह्मनन के पास आयो। और बोहोत ही घिघियाइ कै बिनती कियो, जो-तुम मेरो अपराध क्षमा करो। हों बिनु जाने तुम्हारो अपराध कियो। अब तुम कृपा करि मोकों अपनो सेवक करो। जो तुम महापुरुष हो। सो मोकों सरनि लेहु। या प्रकार राजा की दीनता देखि बड़े भाईने कह्यो, जो-राजा ! हम तो काहू कों सेवक करत नाहीं। हमारे धनी श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगोकुल में बिराजत हैं। उनकी तुम सरनि जाऊ। वे तुमकों सेवक करेंगे। वे ईश्वर हैं। सर्व करन समर्थ हैं। ये जो कछू भयो है, सो सब उनकी कृपा जानियो। तातें तुम कों सेवक होनों होंई तो श्रीगोकुल जाँई उनकी सरनि होऊ। तब राजा बिनती कियो, जो-तुम दोऊ भाई साथ चलो तो हों श्रीगोकुल चलों। काहेतें ? जो श्रीगुसांईजी तो तुम्हारी कृपातें मोकों सरनि लेई तो लेई। नाँतरु मेरे जैसें दुष्ट कर्म करनहार कों श्रीगुसांईजी कहा जाने ?

या प्रकार राजा कौ सुद्ध भाव जानि दोऊ भाई राजा के साथ श्रीगोकुल कों चले। सो राजा अपनी रानी कुटुंब सहित दोऊ भाई साँचोरा ब्राह्मन कों संग लै श्रीगोकुल आयो। तहां श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब दोऊ भाई साँचोरा ब्राह्मन श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो-महाराज ! ये राजा आपकी सरनि आयवे की अभिलाषा करत हैं। तातें कृपा करि आप इनकों सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी दोऊ भाईनकी ओर प्रसन्नता पूर्वक देखि आज्ञा किये, जो-इनकों सरनि लेनो उचित तो नाहीं, काहेतें, जो-इन वैष्णव कौ अपराध कियो है। परि तुम बिनती करत हो तातें इनकों सरनि लेइंगे। पाछें श्रीगुसांईजी कृपा करि राजा कों सब कुटुंब सहित नाम दै सरनि लियो। दूसरे दिन ब्रत कराय समर्पन करायो। सो राजा श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो। तब श्रीगुसांईजी राजा कों आज्ञा किये, जो-आज पाछें वैष्णव कौ अपराध मति करियो और इन दोऊ भाई साँचोरा ब्राह्मन कों पूछि कै सब काम करियो। पाछें राजाने श्रीगुसांईजी कों बोहोत भेट कीनी। ता पाछें राजा ने श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपन के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीद्वार पधारे। तब वह राजा हू श्रीगुसांईजी के संग श्रीनाथजीद्वार श्रीनाथजी के दरसन कों गयो। तहां श्रीगुसांईजी आप स्नान करि कै श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे। तब राजाने हू पर्वत ऊपर चढ़ि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। सो वा राजा ने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों बोहोत भेट कीनी। ता पाछें कितनेक दिन

तांई वा राजाने श्रीनाथजीके तथा श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी सों आज्ञा मांगि दोऊ भाई साँचोरा ब्राह्मनन कों संग ले अपने देस कों आयो। पाछें वा राजाने दोऊ भाई साँचोरा ब्राह्मनन कों बोहोत भांति समाधान कियो। और कह्यो, जो-तुम्हारी कृपा तें हों वैष्णव भयो हूं। तातें हौं तुम्हारो रिनिया हूं। तब वा दिन तें राजा उन दोऊ भाईन की बोहोत कानि राखतो। मिलिकै चलतो। सो उन दोऊ भाईन के घर राजा एक बार दोय बार नित्य आवतो। उनही सों पूछि कै आचरन करतो। सो वे कहते तैसेंई राजा करतो। सो ऐसें करत उन दोऊ भाई वैष्णवन के संग तें राजा भलो वैष्णव भयो।

भावप्रकाश-या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-तादृसी वैष्णव की संगति करनी। सो वा राजा की बुद्धि सत्संग करि कै फिरी। तासों सत्संग ऐसो पदार्थ या संसार में हैं।

सो वह राजा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१०४॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक स्त्री-पुरुष क्षत्री, प्रयाग के, हीरान की धरती पहचानते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश-ये तामस भक्त हैं। लीला में पुरुष 'छाया' है, और स्त्री कौ नाम 'माया'। सो 'छाया'-'माया' दोऊ श्रीयसोदाजी की सखी हैं। नंदालय में श्रीठाकुरजी के संग रहति हैं। जैसें मनुष्य की छाया रहति हैं। ता भांति। ये दोऊ 'कुंजरी' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

सो ये दोऊ प्रयाग में क्षत्रीन के जन्मे। पाछें बरस आठ-दस के भए। तब माता-पिता ने दोऊन कौ ब्याह कियो। सो एक समै श्रीगुसांईजी आप प्रयाग बिराजत हुते। तब मकरसंक्रांति कौ पर्व आयो। सो चारों सम्प्रदाय के आचार्य, संत-महंत आदि त्रिवेनी स्नान कों प्रयाग आए। ता समै श्रीगुसांईजी हू त्रिवेनी न्हान कों पधारे। तब चारों सम्प्रदाय के आचार्यन ने श्रीगुसांईजी कों नमस्कार किये। ता पाछें सबन ने मिलि कै बिनती कीनी, जो-महाराज! प्रथम स्नान आप कीजिए। काहेतें? जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने कृष्णदेव राजाकी सभा में वैष्णव धर्म की रक्षा कीनी है। मायावाद कौ खंडन कियो है। नाँतरु आज वैष्णव सम्प्रदाय कोऊ जानतो नाहीं।

सो आगें हू ऐसो पर्व आयो तब श्रीआचार्यजी आप प्रथम स्नान किये हैं। सब सम्प्रदाय वारेन ने आप कौ तिलक कियो है। तातें आप प्रथम स्नान कीजिए। तब श्रीगुसांईजी आप चारों वैष्णव सम्प्रदायवारेन के आग्रह तें प्रथम स्नान किये। ता समै विष्णुस्वामि सम्प्रदाय वारेन ने श्रीगुसांईजी कों आचार्य-तिलक कियो। ता समै संख की ध्वनी चारों दिसान में होन लागी। झालर घंटा बाजन लागे। सो ऐसो उत्कर्ष देखि बोहोत से दैवी जीव सरनि आए। तिन में ये स्त्री-पुरुष हू श्रीगुसांईजी के सरनि आए तब श्रीगुसांईजी दोऊन कों आज्ञा किये, जो-तुम भगवत्सेवा करो। पाछें श्रीगुसांईजी आप इन स्त्री-पुरुष कों कृपा करि कै एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दिये। ता पाछें आज्ञा किये, जो-तुम इनकी नीकी भांति सों सेवा करियो। और श्रीआचार्यजी की सेवकिनी एक क्षत्रानी प्रयाग में रहति हैं। ताकौ संग करियो। सो वह तुमकों सेवा की सब रीति सीखावेंगे। तब पुरुषने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! हम कों तो आप के स्वरूप में आसक्ति भई है। तातें हम तो आपकी सेवा करेंगे। तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो-ये मेरो ही स्वरूप है। तातें तुम इनकी प्रीति पूर्वक सेवा करियो। और मैं तुम्हारे निकट ही हूं। सो जब तू चाहेगो तब तोकों मेरे दरसन होईंगे। या प्रकार कहि श्रीगुसांईजी तो आप अड़ेल पधारे। और वे दोऊ स्त्री-पुरुष क्षत्रानी के संग तें सेवा की रीति सब सीखें। पाछें भगवत्सेवा भाव पूर्वक करन लागे। सो इन कों श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे। और श्रीगुसांईजी हू दरसन देन लागे।

वार्ता प्रसंग-१

सो वे खेती करते। सो एक समै वर्षा थोरी भई। सो इनके खेतमें अन्न कछू नाहीं भयो। पाछें हाकिम इन सों खेत कौ पैसा माँगन लाग्यो। तब इन कह्यो, जो-तेरे खेतमें तो अन्न कछू नाहीं भयो है। हम पैसा कहां तें देइ? तब वा हाकिम ने जो घर में वस्तूभाव हती सो सब लूटि लीनी। पाछें घरमें कछू हू वस्तू नाहीं रही। सो यह स्त्री पतिब्रता हती। तब यह चरखा चलाय रुई ल्याय कै कांतें। सो सूत होंइ ताकों बैचि कै जो आवें तामें निर्वाह करें। पहिले श्रीठाकुरजी कों भोग धरि पाछें अपने पति के आगें धरि देंहि। सो पुरुष महाप्रसाद लै चुकै तब पति पातरि में जो कछू रहें सो लेई। और वह पति पूछे, जो-तैनें अपने लिये कहा राख्यो है? तब वह कहे, जो-मैं अपने

लिये महाप्रसाद राख्यो है। तुम्हारे पीछे लेउंगी। तब वह पति चुप होंइ रहे। ऐसें करत दिन दोइ बीते। सो वा स्त्री की देह कृष होइ गई। तब पति ने बिचार्‌यो, जो-यह कछू खाँत हैं नाहीं। तब तीसरे दिन वा स्त्री ने पति के आगें पातरि धरी। तब इन पूछी, जो-तेरे लिये कहा है ? तब स्त्रीने कह्यो, जो-मैं अपने लिये उहां धरि राख्यो है। तुम लेउंगे ता पाछें मैं लेउंगी। तब पुरुष ने जान्यो, जो-यह नाही खाँत हैं। तातें वा पुरुष ने आधो महाप्रसाद लियो। पाछें पुरुषने स्त्री सों कही, जो-अब मैं परदेस जाँइ कै कछू कमाय ल्याऊं। तब स्त्रीने कह्यो, जो-तुम काहेकों जाँत हो ? तुम मेरी चिंता मति करो। काम तो चल्योई जात है। तब पुरुषने कही, जो-तू धन्य है। जो-आजके समै में ऐसो धर्म राख्यो है। और तू श्रीठाकुरजी की सेवा भली भांति सों करियो। और तू आछी भांति रहियो। मैं बेगि ही कछूक दिन में आऊंगो। ऐसें कहि कै वह पुरुष चल्यो। सो जहां हीरान की खाँनि हती तहां गयो। तहां एक व्यौपारी ने कह्यो, जो तुम कहां ते आए हो ? कौन हो ? कौन काम करत हो ? तब इन कह्यो, जो-मैं हीरान की धरती जानत हूं। तब उन कह्यो, जौ-तुम बैठो। पाछें व्यौपारीने कह्यो, जो-तुम धरती जानत हो तो मैं मोल लेऊ। सो तुम कहो। (और) जो-कछू माल निकसेगो तो तुमहू कों देहिंगे। तब इन कह्यो, जो-मेरे पास तो कछू द्रव्य नाहीं है। जो-कदाचिद् हीरा न निकसे तो हाकिम कों कहा देउंगो ? तब उन व्यौपारी कह्यो, जो-माल न निकसेगो तो हाकिम कों मैं देउंगो। तब वह वैष्णव वा व्यौपारी

के साथ घर रह्यो। पाछें वा व्यौपारी ने धरती हाकिम सों लै खुदाई। तामें माल बोहोत निकस्यो। सो वैष्णव बरस दिन तांई वा व्यौपारी के घर रह्यो। सीधो सामान व्यौपारी पास तें लैके रसोई करि भोग धरि कै महाप्रसाद लेतो। पाछें वा वैष्णवने मन में बिचार्‌यो, जो-बरस दिन भयो। अब अपने घर चलिये। श्रीगुसांईजी के दरसन करिये। माल हू बोहोत निकस्यो है। तब वा वैष्णव ने व्यौपारी सों कह्यो, जो-अब हम घर जाँइगे, तातें हमारो जो-कछू होई सो देहु। तब व्यौपारी ने वैष्णव सों कह्यो, जो-यह माल तो हमारे भाग्य तें निकस्यो है। जो-तू कछू बदतो तो मैं देतो। तुमने चाकरी करी है सो हमने तुम कों सीधो पेटिया खायवे कों दीनो है। अब तुम कहा मांगत हो ? तुम्हारे मन में आवें तब चले जाऊ। मन में आवे रहो। तब यह सुनिकै वैष्णव चुप करि रह्यो। मन में कह्यो, जो-देखो ! बरस दिन चाकरी करी और मोकों कछू न दीनो। और माल बोहोत निकस्यो। परंतु भगवद् इच्छा ऐसी ही है। मैं घर तें श्रीठाकुरजी की सेवा छोरि कै आयो। तातें मोकों कछू न मिल्यो। श्रीठाकुरजी करत हैं सो आछी ही करत हैं। तासों अब घर चलनो उचित है। जो-पेट में पाइवे कों तो उहांई मिलत है। ऐसो वह वैष्णव मन में बिचार करि वा व्यौपारी सों कछू कह्यो नाहीं। पाछें दूसरे दिन सांझ भई तब सोय रह्यो। पाछें दूसरे व्यौपारी ने ये समाचार सुने। तब वह व्यौपारी दूसरे दिन वा वैष्णव के पास आयो। पाछें वा व्यौपारी ने वैष्णव सों कह्यो, जो-तुम उदास होइ क्यों जात हो ? कछूक दिन मेरे इहां रहो तो आछौ है। जो

माल निकसेगो तामें तें आधो बांटि दउंगो। तब वैष्णव ने कही, जो-एक बेर तो दगा पाइ है। अब केसें मानों ? तब व्यौपारी ने कह्यो, जो-चारि भले आदमीन सों कहवाय देउं। तब वा वैष्णव के मन में आई, जो दोइ चारि महिना और देखि लेउं। खाली हाथ कहा घर जाऊं ? तब चारि मनुष्यन तें कहि के वैष्णव वा व्यौपारी पास रह्यो। तब व्यौपारी ने धरती हाकिम पास तें मोल लीनी। सो वैष्णव ने जा ठौर बताई ता ठौर खुदवायो। सो पहिले तें अधिक माल निकस्यो। तब महिना चारि भए। तब वैष्णव ने व्यौपारी सों कह्यो, जो-अब तो हम कों घर छोरे बोहोत दिन भए हैं तातें अब तो घर जाँइगे। सो तुम आधो माल कह्यो है सो देऊ। तब व्यौपारी ने वैष्णव तें कह्यो, जो-यह माल तुम्हारे भाग्य तें निकस्यो है। जो चाहो सो सब लेऊ। परि तुम कछूक दिन मेरे पास रहो। तब वैष्णव ने कही, जो-अब तो हम घर जाँइगे। हमारे बांटे कौ द्रव्य है सौ देऊ। अधिकी हमकों नाहीं चहियत है। तब वा व्यौपारीने आधो माल बांटि दियो। और प्रसन्नता सों वैष्णव कों बिदा कियो।

और वह पहिले कौ व्यापारी हतो, तानें दगा कियो हतो। सो ताके घर में आगि लागी। सो सगरो माल घरकी वस्तू सहित सब भस्म होइ गई। तब वा व्यौपारी ने जान्यो, जो-मैंने वा वैष्णव कों कछू न दियो तासों मेरे घर में आगि लागी। सगरो माल गयो। तब मन में बिचारी, जो-वैष्णव फिरि कै आवे तो बिनती करि आउं। और इहां वैष्णव ने बिचारि कै कछूक माल बेचि कै चारि मनुष्य मार्ग में साथ के लिये चाकर राखे। सो अपने घर

चलिवे की तैयारी करी। ताही समै वह पहिलो व्यौपारी वा वैष्णव के पास आय पाँवन पर्‌यो। और कह्यो, जो-वैष्णव ! मैं तुम सों दगा कर्‌यो। तो मेरो सगरो माल योंही गयो। और पहिले घर में बस्तू हती सोऊ आगितें जरि गई। अब मेरे पास खाँयवे कों कछू न रह्यो। मोकों दसबीस रुपैया बजार के देने हैं। सो अब तुम कछूक दिन मेरे पास रहो तो धरती लेउं। पाछें माल निकसेगो तामें तें कछु तुमकों देऊंगो। ऐसें करो तो तुम मोंको जिवाय लेऊ। तब वैष्णव व्यौपारी सों कह्यो, जो-हम कों तो घर छोरे बोहोत दिन भए हैं। तातें हम कों जरूर घर जानो है। और रुपैया १००) सौ तुम ले जाऊं। यामें तें जाकों देनो होइ ताकों दीजियो। और तुम कछूक दिन खईयो। तब वह व्यौपारी वा वैष्णव के पास तें रुपैया सौ लैके अपने घर आयो।

भावप्रकाश-सो वैष्णव कौ ऐसो धर्म है, जो-कोऊ बुरो करें ताहू कौ भलो करनो।

पाछें वह वैष्णव चारि मनुष्य लैकै अपने घर कों चल्यो। सो मारग में ग्यारह ठग मिले। सो संग चले। तब वैष्णव ने उन सों कह्यो, जो-तुम कौन हो ? तब उन ठगन कह्यो, जो-हम या गाम में राजा के चाकर हते। सो हमारी चाकरी छूटि गई हैं। सो अब हम कों दूसरे गाम में जहां चाकरी मिलेगी तहां करेंगे। तब वैष्णव ने कहीं, जो-रूपैया दोइ दोइ कौ महिना ग्यारहहू कों देइंगे। और एक महिना संग राखेंगे। आगें हमारे समवाई है नाहीं। तुम्हारी ईच्छा होइ तो हमारे संग चलो। तब ठगनने कही, जो-हम थोरे से दिन लों तुम्हारे संग चलेंगे। आछी जगह हमारी चाकरी लगेगी तहां रहेंगे। तब वैष्णव ने

कही, जो-जहां तांई तुम्हारी इच्छा होई तहां तांई चलो। तब वे ग्यारह ठग साथ चले। सो ठगन कौ दाँव कछू न लगे।

सो एक दिन गाम सों कोस एक परे तलाव हतो सो वा तलाव पर आए। तब तलाव बोहोत सुंदर देखि कै उन ठगन कही, जो-रसोई की ठौर बोहोत सुंदर है। यहां रसोई करि कै पाछें गाम में जाँई रहेंगे। तब वैष्णव ने चार्‌यो मनुष्यन सों कही, जो-सीधो सामान लकड़ी, बासन ले आओ तो रसोई करें। तब उन मनुष्यन कही, जो-दोऊ जनें तुम्हारे पास हू चहिए। दोइ जनें सब सामग्री ले आवेंगे। तब वैष्णव ने कही, जो-हमारे संग तो ग्यारह मनुष्य हैं। तुम सब जनें आछी भांति सों सीधो सामग्री लै आओ। तब वे चार्‌यो जनें तो सीधो सामग्री लेन गए। तब वे ठग आपुस में बातें करन लागे। जो-आज दाव पर्‌यो है। अब तो चूको मति। तब यह बात वैष्णव ने सुनी। तब पूछी, जो-तुम कहा कहत हो ? तब उन कह्यो, जो-हम ठग हैं। तुमकों मारेंगे। बोहोत दिन तें तुम्हारे पाछें लगे हैं। तब वैष्णव ने कही, जो-मैं न्हाय लेउ तब तुम मोकों मारियो। तब वैष्णव कपड़ा उतारि कै जल में ठाढ़ो भयो। तब तहां महा दुःख करि कै श्रीगुसांईजी कौ स्मरन करि कै बोहोत आर्ति सों बिनती करी, जो-महाराज ! मेरो कौन अपराध है सो घर न पहोंचन पायो। श्रीठाकुरजी के चरनपरस हू न करन पायो। और आप के हू दरसन न भए। द्रव्य मिले तें प्रान जात है। द्रव्य भगवद् विनियोग हू न भयो। और ठगन हाथ मृत्यु होत है। यह मेरो अपराध कहा है ? या प्रकार बोहोत आरति करि कै बिनती

करी। तब श्रीगुसांईजी आप तो परम दयाल हैं। सो तहांई प्रगट होंइ कै दरसन दिये। और आज्ञा किये, जो-वैष्णव! तू दुःख मति पावे। पहिले जन्म में तैनें इन ग्यारह जन कों मार्‍यो है। सो ये न्यारे न्यारे दाव लेते तो तोकों ग्यारह जन्म लेने परते। सो अब ये तोकों इकठोरे व्है कै मारत है। सो एक ही जन्म में तू इन सों छूटेगो। तातें तू डरपे मति। तब यह सुनि कै वैष्णव तलाव में तें निकसि उन ठगन के पास आयो। तब उन वैष्णव नें कही, जो-अब तुम बेगि आओ, मोकों मारो। नाँतरु वे चारों मनुष्य आइ जाँइगे। तब वे ग्यारह ठग मन में डरपे। जो-यह जल में काहू सों बात कियो। श्रीगुसांईजी के दरसन तो उन ठगन कों भए नाहीं। परंतु बचन सुने। तब ठगन कही, जो-तू साँच कहि। जल में किन सों बात कियो? तब वैष्णवने कही, जो-तुम कों कहा प्रयोजन है? तुम बेगि मारि कै यह माल की गांठि है सो लेऊ। जो-कोई आइ जाइगो तो तुम कों माल न मिलेगो। तातें तुम ढील मति करो। तब ठगननें कही, जो-अब हम तुम कों नाहीं मारेंगे। तुम साँच कहो। जल में किन सों बात कियो। या प्रकार वे ठग बोहोत हठ परे। तब वैष्णव ने कहीं, जो-हमारे गुरु श्रीविट्ठलनाथजी हैं। तिन सों हमने बिनती करी, जो-ये ठग मोकों मारत हैं! तब गुरु मो पैं कृपा करि आज्ञा दिये, जो-ये अपनो बैर इकठोरे व्है कै लेत है। सो अब ये न मारेंगे तो तोकों ग्यारह जन्म लेने परेंगे। तब यह सुनिकै उन ठगन कही, जो-अब हम तुमकों सर्वथा नाहीं मारेंगे। और तुम्हारे संग चलेंगे। तुम्हारे गुरु की सरनि

जाइंगे। तब वैष्णव जान्यो, जो-अब ये हमकों न मारेंगे। तब वैष्णव ने फेरि तलाव में जाँइ कै बिनती करी, जो-महाराज! अब तो ये मोकों मारत नाहीं। अब मैं कहा करों ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-तू ठगन सों प्रसन्नतासों कहवाय लीजो, जो-अपनो बैर तुम भरि पाए। तब वे कहे, जो-हम भरि पाए। तब यह कहाय कै तू सुखेन अपने घर जा। तब वा वैष्णव ने तलाव के बाहिर आय उन ठगन सों कही, जो-तुम नाहीं मारत तो प्रसन्न होइ कै कहो, जो-हम अगिले जन्म कौ बैर भरि पाए। तब वे ग्यारह हू मिलिकै कहें, जो-हम अगिले जन्म कौ बैर भरि पाए। तब वह वैष्णव उनके पास आयो। इतने में चारि मनुष्य सीधो सामान लै आए। तब वैष्णव ने न्हाय कै रसोई करी। पाछें श्रीठाकुरजी सों भोग धर्‍यो। पाछें समय भए भोग सरायो। अनोसर कियो। पाछें उन ठगन सों कही, जो-तुम महाप्रसाद लेऊ। तब ठगनने कही, जो-हम गाम में जाँई रसोई करि महाप्रसाद लेइंगे। तब वैष्णव ने कही, जो-महाप्रसाद बोहोत है। कछू अनसखड़ी काल्हि की धरी है। सोऊ धरि लेईंगे। तब सबन कों पातरि धरि वैष्णवनें महाप्रसाद लियो। पाछें सांझ कों गाम में जाँइ कै एक आछौ ठौर देखि कै सोय रहे। ये ठगन के समाचार वैष्णव ने उन मनुष्यन सों नाहीं कहे। तब वे ठग आपुस में कहे, जो-यह वैष्णव कोई महापुरूष हैं। जो-हमने इतनो कष्ट दियो परि इनने अपने मनुष्य सों नाहीं कह्यो।

पाछें जब वैष्णव कौ गाम कोस दोइ रह्यो तब उन ठगन नें

कही, जो-हम तुम्हारी सरनि आए हैं। तुम हम कों श्रीगुसांईजी की सरनि लै जाँई वैष्णव करावो। हम बोहोत दिन तांई दुष्ट कर्म किये हैं। अब हमारो उद्धार होइ सोई करो। तब वैष्णव चुप होइ रह्यो। पाछें वैष्णव अपने घर आयो। तब वाकी स्त्री बोहोत प्रसन्न भई। पाछें वैष्णवनें फल फलारी मेवा सामग्री सिद्ध करि न्याय कै श्रीठाकुरजी के उत्थापन कराए। पाछें बाजार तें सीधो सामान आयो। तब स्त्रीने रसोई कीनी। पाछें सेनभोग आयो। समै भए भोग सराय अनोसर कियो। पाछें वे ग्यारह ठग और चारि मनुष्य संग ल्याये हते तिन सबन कों महाप्रसाद लिवायो। ता पाछें उन वैष्णव ने महाप्रसाद लियो। पाछें वा वैष्णव ने उन मनुष्य और ठगन कों न्यारो घर बताय दियो। पाछें प्रातःकाल उन मनुष्य चार्‍योन कों बुलाय कै चाकरी चुकाय दीनी। कछू और हू दे उन कों प्रसन्न करि अपने घर कों बिदा किये। पाछें ठगन सों कह्यो, जो-कछू खरची ले जाओ तो आछौ है। तब ठगनने कही, हमने तो तुम्हारी सरनि लीनी है। हम कों कछू नाहीं चहिए। श्रीगुसांईजी के सेवक कराय देऊ। तब या वैष्णवने कही, जो-महिना एक में श्रीगोकुल चलूंगो। तब तांई तुम यहां न्यारे घर में रहो। खरची चहिए सो लीजियो। तब उन ठगन ने कही, जो-खरची तो हमारी पास हैं। जब तुम श्रीगोकुल चलोगे तब हम हू श्रीगोकुल चलेंगे। तब वैष्णव ने कही, जो-भलो। तब वैष्णव ने एक हार हीरा कौ सुनहरी साज कौ नयो बनवायो। सो हार सिद्ध भयो। तब स्त्री सहित श्रीठाकुरजी पधराय कै बीस मनुष्य मारग के लिये संग

ल्याए। और इन ग्यारह जनेंन कों संग ले श्रीगोकुल चले। तब वैष्णव ने श्रीगुसांईजी के दरसन किये। भेट धरी। और श्रीगुसांईजी सों सब समाचार कहे। जो-महाराज! ग्यारह ठग आपु की सरनि आए हैं। तब ठगन ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि बिनती करी। जो-महाराज! हमने जनम तें दुष्ट कर्म बोहोत किये हैं। अब या वैष्णव के संग तें तुम्हारे चरनकमल कौ दरसन भयो है। अब आपु कृपा करि कै नाम सुनावो। तब उन ठगन सों श्रीगुसांईजी कही, -जो-तुमकों दया नाहीं है। मनुष्य मारत हो। माल लूटि लेत हो। तातें तुम कों नाम कैसें सुनावें ? तब उन ठगन ने बिनती करी, जो-महाराज! अब तो हमने दुष्ट कर्म छोर्‌यो। अब न करेंगे। जो-कोई की चाकरी न मिलेगी तो खेती करि कै निर्वाह करेंगे। परि हम काहू कों अब दुःख न देईंगे। तब श्रीगुसांईजी ने उनकों नाम सुनायो। पाछें वे सब उहां तें उठि गए। तब वैष्णव ने श्रीगुसांईजी कों हीरा कौ हार पहराए। तब श्रीगुसांईजी वैष्णव सों कहे, जो-यह हार तो श्रीनाथजी लायक है। तब वैष्णव ने कही, जो-हमारे तो सर्वस्व धनी आपु हो। सो यह सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। जो-वैष्णव कों ऐसोई चाहिए। पाछें महिना एक लों वैष्णव श्रीगोकुल में रह्यो। सो सब बालक बहू-बेटी सबन कों वस्त्र आभरन पहराए। पाछें श्रीगुसांईजी सों घर जाइवे की बिनती करी। तब श्रीगुसांईजी अपनो प्रसादी उपरेना उढ़ायो। बोहोत प्रीति सों बिदा किये। तब उह स्त्री सहित श्रीठाकुरजी कों पधराय श्रीगोकुल तें चल्यो। सो कछूक

दिन में उह वैष्णव अपने घर आयो। पाछें श्रीठाकुरजी की सेवा स्त्री-पुरुष भली भांति सों करते। पाछें वैष्णव ने उह ठगन सों कह्यो, जो-अब तुम अपने घर जाऊ। तब ठगनने कही, जो-अबही हम घर न जाँइगे। पाछें घर में जाँइ कै उनकी संगति करि हमारी बुद्धि भ्रष्ट होंई जायगी। तातें याही गाममें कछूक दिन जीविका कौ जतन करि कै रहेंगे। तुम्हारे संग तें हमारो उद्धार होइगो। पाछें वे ठग वा गाम में एक सेठ के घर चाकर रहे। सो वा वैष्णव के संग तें वे ठग भले वैष्णव भए।

सो वे स्त्री-पुरुष श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१०५॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक ब्रजबासी, सनाढ्य ब्राह्मन, आन्योर में रहतो, जाकों श्रीगुसांईजी ने परे कह्यो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'रेली' है। सो रेली गोप श्रीठाकुरजी कौ अतरंग सखा है। ये 'सुसीला' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरूप हैं।

ये आन्यौर में एक सनाढ्य ब्राह्मन के जन्म्यो। सो वाकौ पिता श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाँइन कौ ग्वाल हतो। वह श्रीगुसांईजी कौ सेवक हुतो। सो वाने अपने बेटा कों हू श्रीगुसांईजी कौ सेवक कियो। सो यह लरिका निपट मुग्ध हतो। सो श्रीगुसांईजी इनकों मुग्ध जानि अपने खेल में राखे। सो श्रीगुसांईजी सों या लरिका सों बोहोत एकताचारी भई। ऐसें करत ये बरस बीस कौ भयो। तब याकै माता-पिता मरे। ता पाछें यह लरिका श्रीगुसांईजी के पास रहन लाग्यो। याकौ ब्याह तो भयो नाहीं। घर में कोऊ हतो नाहीं। सो श्रीगुसांईजी वाकों गरीब जानि एक पेटिया करि दीये। सो वह नित्य एक पेटिया लेतो। तामें अपनो निर्वाह करतो।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक दिन एक वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। सो वाने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-राज ! कृपा करि

श्रीठाकुरजी पधराय दीजिए तो हों सेवा करों। तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव कों कृपा करि श्रीमदनमोहनजी कौ स्वरूप पधराय दिये। सो वह वैष्णव श्रीठाकुरजी कों ले अपने डेरा पै आयो। तब वा वैष्णव के मन में यह आई, जो-श्रीगुसांईजी मोकों श्रीठाकुरजी कों तो पधराय दिये। परि इन कौ नाम तो कछू कह्यो नाहीं। तातें नाम बिना हों श्रीठाकुरजी कों कैसें जानोंगो सो वह फेरि श्रीगुसांईजी के पास आइ बिनती कियो, जो-महाराज! मेरे ठाकुर कौ नाम कहा है? तब श्रीगुसांईजी हास्य-विनोद पूर्वक कहें, जो-श्रीमदनमोहनजी। सो ता समै यह ब्रजबासी हू उहां ठाढ़ौ हुतो। सो याने इह बात सुनी। तब यह जान्यो, जो-श्रीगुसांईजी सबन के ठाकुर के नाम कहत हैं। सो हों हू अपने ठाकुर कौ नाम पूछों। पाछें उनकी सेवा करों। तब ब्रजबासी बिनती कियो, जो-महाराज! मेरे ठाकुर कौ नाम कहा है? सो ता समै श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों बातें कर रहे हते, सो सुन्यो नाहीं। तब वह ब्रजबासी गादी पै चढन लाग्यो।

सो श्रीगुसांईजी ने वाकौ हाथ पकरि कै कह्यो, जो-परे। तब ब्रजबासी ने मन में बिचार्‌यो, जो-सब वैष्णवन कों सेवा पधराय देत हैं। सो तैसें ही मोकों परे ठाकुर दियो। सो उहां तें ब्रजबासी भंडारी पास आयो। सो भंडारी सों कह्यो, जो-आज मोकों दोय पेटिया दीजियो। तब भंडारी ने कह्यो, जो-आज दोय पेटियान कौ कहा करेगो? तब ब्रजबासी ने भंडारी सों कह्यो, जो-आज मोकों श्रीगुसांईजी ने परे दियो है। सो एक पेटिया तो मेरो और एक पेटिया उनकौ। तब भंडारी ने मन में

बिचारी, जो-श्रीगुसांईजी इनके उपर प्रसन्न रहत हैं तासों दिवायो होयगो। सो याने दोइ पेटिया दीने। पाछें वह ब्रजबासी सीधा दोई लैके 'बिलछू कुंड' पर गयो। तहां वाने रसोई करी। पाछें दोई पातरि बराबरि की करि धरी। पाछें पुकारन लाग्यो, जो-परे भैया ! परे हो ! बेगि आऊ। सो ऐसें कहि कहि कै कितनीक बैर पुकार्‌यो। ता पाछें फेरि पुकार्‌यो। जो-अरे भैया ! तू आवे तो आऊ। नाहीं तो ये दोऊ पातरि तलाव में डारत हों। सो ऐसें कहि कै पातरि उठाई। सो तलाव में डारन लाग्यो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी मन में बिचारे, जो-ये तो भोरो है। जो-श्रीगुसांईजी कौ वाक्य तो समझ्यो नाहीं। सो अब यह भूखन मरेगो। तो श्रीगुसांईजी कों खेलत में चैन न होंइगो। तब यह चित्त में बिचारि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी बेगि ही पधारे। सो तब वा ब्रजबासी सों कह्यो, जो-अरे भैया ! मैं आयो। तब वह ब्रजबासी बोल्यो, जो-अरे भैया ! तू तो अवेर बोहोत लगावत है। जो दारि-रोटी सीरी होइ गइ है। जो-ऐसो करेगो तो और दिन मैं तेरो सीधो न लाउंगो। जो-तू और काहू सों कराय लीजियो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कह्यो, जो-अरे भैया ! आज तो पहिलो दिन है। सो तासों अवेर लागी है। जो-काल्हि सों मैं बेगि ही आउंगो। ऐसें कहि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी और वह ब्रजबासी अपनी अपनी पातरि पै बैठें। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने वा ब्रजबासी सों कह्यो, जो-अरे भैया ! थोरी सी दारि मोकों और दे। तब वा ब्रजबासी ने कही, जो-अरे भैया ! जितनी तेरे आगे हैं ऊतनी मेरे आगे हैं। जो-मैंने

कछू अधिक तो लीनी नाहीं। तेरो मन चाहे वा पातरि पै बैठि। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहें, जो-तू थोरीसी लीटी मेरी पातरि में सों ले। तब ब्रजबासी ने कही, मैं तो कछू लेहू न देहू। ऐसें बचन सुनि श्रीगोवर्द्धननाथजी हँसत हँसत वा पातरि की सामग्री अंगीकार कीनी।

भावप्रकाश-या वार्ता में यह संदेह होई, जो-या ब्रजबासी कों श्रीगुसांईजी ने ठाकुर तो पधराये नाहीं। परे कह्यो। सो तो दूरि जाइवे कों कह्यो। तोऊ श्रीनाथजी आप, परे कहे तें कैसें पधारें ? तहां कहत हैं, जो-श्रीगुसांईजी की बानी स्वरूपात्मक हैं। सो जो-कोऊ जा भाव सों वाकों अनुसरत है, ताकों तेसें फलित होत है। सो या ब्रजबासी ने वा बानी कों भगवत्स्वरूप करि कै जानी। और वा पै दृढ़ विश्वास हू कियो। तातें श्रीनाथजी कों वा नाम तें आमनो पर्‍यो। तातें विश्वास ऐसो पदार्थ है।

ऐसें करत केतेक दिन बीते। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी वा ब्रजबासी के साथ बिलछू पै खेलत रहे। सो श्रीगुसांईजी की पास तो जायवो बने नाहीं। तब एक दिन अधिकारी ने मन में बिचार्‍यो, जो-यह ब्रजबासी सीधा दोइ ले जात है। परि ये कछू काम तो करत नाहीं। तातें अब याकौ पेटिया बंध करो। तब फेरि मन में बिचारी, जो-श्रीगुसांईजी सुनेंगे तो खीझेंगे। तातें कछू मिष करि कै याकौ पेटिया बंध करोंगो। तब अधिकारी ने भंडारी सों कह्यो, जो-अमुकौ ब्रजबासी सीधौ लेन आवें तब मो पास पठाईयो। फेरि ब्रजबासी सीधा लेन कों आयो। तब भंडारीने अधिकारी पास पठायो। तब वाने जाँइ कै अधिकारी सों कह्यो, जो-क्यों रे भैया अधिकारी ! तू कहा कहत है ? तब अधिकारी ने कह्यो, जो-क्यों रे भैया ! तू नित्य सीधा खाँत है, सो अब तोकों श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी है, जो-तू सूरत जाँइ कै भेट

वैष्णवन सों ले आउ। तब वा ब्रजबासी ने कही, जो-मैं तो तेरी सूरत देखी नाहीं। जो-तेरी सूरत कहां है ? और भेटी भेटा तू कहा कहत है ? जौ-मैं तो कछू समझत नाहीं। सो ता समै तहां कोइ एक और हू ब्रजबासी ठाढ़ो हतो। सो वाने कह्यो, जो-अरे भैया ! सूरत तो सहर है। सो नाम है। और दोइ महिना की गेल है। सो तहां तू वैष्णवन सों जाँइ कै मिलेगो तब वैष्णव तोकों भेंट उघाय देंइगे। तब तू ले आइयो। तब वह ब्रजबासी मन में डरप्यो। जो-इतने दिना तें सीधा लेत हों और आज मैं इन कौ कह्यो न करूंगो तो आज पाछें सीधा देइगो नाहीं। तब मैं कहा खाउंगो। पाछें वह ब्रजबासी भंडारी पास सीधा लेन गयो। सो सीधा लेकै बिलछू तलाव पर रसोई करन गयो। तब इतने में श्रीगोवर्द्धननाथजी तहां पधारे। तब वा ब्रजबासी सों श्रीगोवर्द्धननाथजी बोले। बोहोत हांसी करी। परि वह ब्रजबासी कछू बोल्यो नाहीं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-अरे भैया ! आज तू बोलत क्यों नाहीं। तब वह ब्रजबासी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो-भैया ! तेरो अधिकारी कहत है, जो-सूरत की भेट लै आउ। सो मैं तो जानत हू नाहीं। जो सूरत कित में है ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कही, जो-अरे भैया ! तू या बात की चिंता मति करे। जो हों तोकों सूरत दिखाउंगो। जो-मैं हूं तेरे साथ चलूंगो। तब वह ब्रजबासी बोल्यो, जो-अरे भैया ! मैं तोकों नाहीं ले जाउंगो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-तू मोकों क्यों नाहीं ले जायगो ? तब वा ब्रजबासी ने कही, जो-अरे भैया ! तेरे पांव छोटेसे हैं। सो गेल में तू हारि जाइगो। फेरि तू कहेगो, जो-मोकों उठाय

ले। तब मैं ताकों कैसे उठाउंगो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा किये, जो-भैया ! में तोकों उठायवे की नाहीं कहूंगो। जो-हो तो अपने पांवन सों चल्यो चलूंगो। तब वा ब्रजबासी ने कह्यो, जो-आछौ। पाछें जब वह रसोई सों पहोंचि चुक्यो तब याकों श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा किये, जो-अरे भैया ! तू अधिकारी के पास जा। सो पत्र और महाप्रसाद की थेली ले आईयो। जो-आज आपुन सूरत कों चलेंगे। तब वह ब्रजबासी अधिकारी के पास गयो। तहां जाँय कै कह्यो, जो-लारे भैया ! पत्र लिख देऊ। तब अधिकारी ने पत्र और महाप्रसाद की थेली वा ब्रजबासी कों दीनी। सो लेकै ब्रजबासी बिलछू पै आयो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो-भैया ! मैं पत्र ले आयो हूं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वा ब्रजबासी कों संग लेकै पधारे। सो गेल में आय कै श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाढ़े रहे। पाछें कह्यो, जो-हों तो हारि गयो हूं। तब वा ब्रजबासी ने कह्यो, जो-मैं तो तोसों पहिले ही कह्यो हतो, जो-तू चले मति। हारि जायगो। अब तू कहत है जो-हों हार्यो हूं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-अरे भैया ! हों तो योंही कहत हों। तू चलि। यों कहि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी उठि चले। सो पूंछरी की ओर 'अपछरा कुंड' है तहां पधारे। तब तहां दिन मूंद्यो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कह्यो, जो-भैया ! आज तो यहांइ दिन मूंद्यों। सो यहांई रात्रि परि गई है। सो इहांई सोवेंगे। सो काल्हि सूरत पहोंचेगे। तब वा ब्रजबासीने कह्यो, जो-भलो। तब वह ब्रजबासी उहांई सोय रह्यो। और श्रीनाथजी तो आप मंदिर में पधारे। पाछें जब सवारो भयो, तब श्रीनाथजी ने जाँय कै वा ब्रजबासी कों

जगायो। जो-अरे भैया उठि ! तब वह ब्रजबासी जाग्यो। सो अपनी कमरि बंधि कै तैयार भयो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-चलो। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कही, जो-सूरत तो आई। तब वा ब्रजबासी ने श्रीनाथजी सों कह्यो, जो-भैया ! मैं तो सुन्यो है, जो-सूरत द्वै महिना कौ पैंडो है। सो आज तो आपुन एकही दिन में आय पहोंचे हैं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने वा ब्रजबासी सों कह्यो, जो-भैया ! आपुन तो सगरी राति चले हैं। मेरे पाँव हारि गए हैं। सो तोकों खबरी नाहीं है। तब वा ब्रजबासी ने कह्यो, जो-भैया ! मेरे हू पांव तो हारि गए हैं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी हँसि कै कह्यो, जो-अरे भैया ! तू गाम में जा। सो गाम में अधिकारी टहलुवा हैं। सो तिनकों पत्र तथा महाप्रसाद की थेली दीजियो। और विन सों यों कहियो, जो-हम तो यहां रहेंगे नाहीं। जो-आज की आज हमकों भेट देऊ। तब वे तोसों कहेंगे, जो-तुम यहांई सोय रहो। महाप्रसाद लेऊ। परंतु तू काहू कौ कह्यो मानियो मति। सीधो मेरो तथा तेरो लेकै यहां मेरे पास आईयो। सो आपुन दोऊ जने यहां जेमेंगे। तब यह ब्रजबासी श्रीगोवर्द्धननाथजी के बचन सुनि कै गाम में आय कै अधिकारी टहलुवान सों मिल्यो। सो उन कों पत्र तथा महाप्रसाद दिये। और कह्यो, जो-भैया ! मेरी भेट ल्याऊ। तब वैष्णवन टहलुवान कह्यो, जो-अरे भैया ! यहां तो भेटिया आवत हैं सो महिना दोइ चारि रहत हैं। सो तुमको डेरा देई। तुम हू रहो। और महाप्रसाद नित्य लियो करो। तब वह ब्रजबासी बोल्यो, जो-भैया ! मैं तो तिहारे प्रसाद में समुझत नाहीं हों। जो-मोकों तो सीधा ल्याऊ। सो अपने हाथ सो

रसोई करोंगो। और सीधा न देऊ तो भेट ल्याऊ। जो-हम तो आज रसोई न करेंगे। काल्हि भंडारी सों सीधा लेकै उहांई जाँय कै रसोई करेंगे। तब उन वैष्णवन कह्यो, जो-भंडार सों लेउगे, सो कहा एक दिन कौ पैंडो है ? तब वह ब्रजबासी ने कह्यो, जो-काल्हि हम उहां रसोई करी हती। सो आज तो यहां रसोई करेंगे। सो सुनि कै सब वैष्णव चुप करि रहे। और मन में बिचार कियो, जो-यह ब्रजबासी तो भोरो है। जो-प्रभुन की लीला कछू जानी न परे। पाछें पत्र खोलि कै देख्यो, जो पत्र में काल्हि की मिती है। फेर कह्यो, पत्र लिखवे में भूल गए होइंगे। तब महाप्रसाद खोलि कै देखे तो वामें ताजा श्रीनाथजी कौ बीड़ा हतो। सो खोलि कै देखे तो पान ताजा है। तब वा ब्रजबासी के कहे कौ विस्वास आयो। तब वासों पूछ्यो, जो-भैया ! तू कहे तो तोकों सीधा देई। तू कहे तो प्रसाद देई। तब वा ब्रजबासी ने कह्यो, जो-हमकों तो सीधा देऊ। और जहां ताँई हम रसोई करे तहां तांई तुम भेट और पत्र तैयार करि राखियो। जो-हम रात्रि कों यहां न रहेंगे। पाछें उन कों वैष्णव सीधो देन लागे। तब उन कह्यो, जो-हम कों सीधा द्वै देऊ। तब उन वैष्णवन कह्यो, जो-तुम तो एक हो दूसरो सीधा कौन कौ लेउगे ? तब ब्रजबासी ने कह्यो, जो-मेरे साथ श्रीगुसांईजी ने एक परे दियो है। तब वैष्णवन ने दो सीधा दिये। तामें घृत और खांड बोहोत दीनी। तब ब्रजबासी सीधा लैकै जहां श्रीनाथजी बिराजत हते तहां आयो। और श्रीनाथजी सों कह्यो, जो-अरे भैया ! सीधा ले आयो हूं। तब श्रीनाथजी वासों कहे, जो-अरे भैया ! मेरो सीधा ले आयो है ? तब वाने कह्यो, जो-हां हां ले आयो हूं।

वैष्णवन ने घृत और खांड बोहोत दीनो है। सो आपुन याकौ कहा करेंगे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आप आज्ञा किये, जो-अरे भैया ! लडुवा करि डारो। तब वा ब्रजबासी ने लडुवा कीने। तब श्रीनाथजी आप आरोगे। पाछें वा ब्रजबासी सों कह्यो, जो-तू गाम में जाँइ कै पत्र ले आउ। तो आपुन श्रीगुसांईजी के पास चले। तब वह ब्रजबासी गाम में आय कै टहलुवान सों कह्यो, जो-पत्र ल्याउ। तब वा टहलुवान नें गाम के वैष्णव हते तिन सबन कों बुलाये। सो सब जनें आए। तिन कों महाप्रसाद दियो। और पत्र पहुंचाए। और उन सों कह्यो, जो-भैया हो ! जो-भेटिया की तो मुग्ध दसा दीसत है। और देखो महाप्रसाद और बीड़ा के पान ताजे हैं। और पत्र में हू काल्हि की मिती है। और ब्रजबासी हू कहत है, जो-मैं उहां सो काल्हि कौ चल्यो हूं। तातें प्रभुन की लीला तो जानी नाहीं जाय। जो-कहा है ? तातें आज याकों बेगि बिदा करो तो यह जाँय। तब सब वैष्णवन मिलि कै आपुस में भेट की हुंडी करि कै हाथ में दीनी। और रुपैया १०/-सेवकी के देन लागे। तब वाने कह्यो, जो-मैं इन कों कहा करुंगो ? तब उन वैष्णवन ने कह्यो, जो यह तेरी सेवकी है। सो तेरे गेल के खरच के काम आवेगी। तब वा ब्रजबासी ने कह्यो, जो-मेरे गेल में खरच कौ कहा काम है ? काल्हि तो मैं जाँय कै भंडारी सों सीधा लेउंगो। तब वैष्णवन ने रुपैया १०/- सेवकी कै दिये हते सो तिनकी हुंडी करि कै भेट की हुंडी में बीडि दिये। और श्रीगुसांईजी सों बिनती पत्र लिख्यो, तामें सब समाचार लिखे। जो-ब्रजबासी कों सेवकी के रुपैया दस देत हते, सो यह तो भोरो है। सो याने लीने

नाहीं। सो पत्र में हुंडी करि दीनी, सो बीडि है। सो आप अपनी इच्छा में आवे तैसें करोगे। तब वा ब्रजबासी पत्र तथा हुंडी लैके श्रीनाथजी के पास आयो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने वा ब्रजबासी सों कह्यो, जो-अरे भैया! आज आपुन बोहोत जेंएँ हैं तातें चल्यो न जायगो। तातें अब यहांई सोय रहो। सवारे श्रीगुसांईजी के पास चलेंगे। तब ब्रजबासी उहांई सोय रह्यो। और श्रीनाथजी तो आप मंदिर में पधारे। सो जब सवारो भयो तब श्रीनाथजी 'अप्सरा कुंड' पर पधारे। और वा ब्रजबासी कों जगायो। तब वह ब्रजबासी जाग्यो। तब श्रीनाथजी ने कह्यो, जो-अरे भैया! तू बेगि अधिकारी कों पत्र दे कै भंडारी पैं तें सीधा लेकै बेगही बिलछू पै रसोई करि। तब वह ब्रजबासी मंदिर में गयो। तब कोऊ मनुष्य ने जाय कै अधिकारी सों कह्यो, जो-अमूको ब्रजबासी सूरत गयो नाहीं है। तब अधिकारी ने वा ब्रजबासी कों बुलाय कै कह्यो, जो-अरे! सूरत गयो नाहीं? तब वह ब्रजबासी सूरत सों पत्र ल्यायो हतो सो वाके हाथ में दीनो। तब अधिकारी पत्र कों देखि कै चक्रत व्है रह्यो। तब मन में बिचार्‌यो, जो-यह एक दिन में सूरत कैसें गयो होयगो? मति कहूं झूठो कागद लिखि ल्यायो होइ। यह जानि कै पत्र खोलि कै देखे तो हुंडी हू भीतर है। तब अधिकारी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! अमूको ब्रजबासी। सूरत पठायो हतो, सो पत्र तथा हुंडी तीसरे दिन ले आयो है। तब श्रीगुसांईजी पत्र वांचि कै देखे तो तामें वैष्णवन ने समाचार लिखे हते सो सब जाने। तब वा ब्रजबासी कों श्रीगुसांईजी ने बुलाई कै सब बात पूछी। तब वा ब्रजबासी ने कही, जो-अरे

भैया विट्ठलनाथ ! तू मेरो कह्यो न मानेगो। तुम्हारे परे सों पूछो। वह मेरे साथ गयो हतो। तब श्रीगुसांईजी वा ब्रजबासी सों पूछे, जो-अरे भैया ! परे कौन है ? तब वा ब्रजबासी ने कह्यो, जो-ता दिन तुम्हारे संग खेलत हँसत हतो। ता दिन तुम मेरे साथ परे कों दियो है। सो वे परे सदा बिलछू पै मेरे साथ खेलत है और मेरे हाथ की सदा रोटी खात हैं। तब श्रीगुसांईजी मंदिर में पधारे। सो श्रीनाथजी के कपोलन पर अपनो श्रीहस्त फेरि के कह्यो, जो-बाबा ! अमूके ब्रजबासी के साथ आप सूरत गए हते ? तब श्रीनाथजी ने कह्यो जो-मैं कहा करों ? वाकों तो तुम्हारो वचन पर विश्वास आय गयो है। ता दिन सों मैं वाके पास रहत हूं। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीनाथजी सों बिनती कीनी, जो-आज्ञा होइ तो वा ब्रजबासी कों पातरि करि देई। तब श्रीनाथजी ने कह्यो, जो-उनसों पूछो। जैसें उनकी प्रसन्नता होई तैसें करो। तब श्रीगुसांईजी ने वा ब्रजबासी सों पूछी, जो-अरे भैया ! तोकों पातरि करि देइ ? तब वा ब्रजबासी ने कह्यो, जो-मैं तो तुम्हारी पातरि-बातरि समझत नाहीं हों। जो-मोकों तो तुम सीधा दोइ देउगे तो तुम्हारे परे सों रसोई करि देउंगो। और एक सीधा देउगे तो मैं मेरीं रसोई करूंगो। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीनाथजी के खासा भंडारी सों बुलाय के आज्ञा करी, जो-इनकों सीधा दोइ खासा में ते दियो करो। सो ता दिन तें वह सीधा खासा भंडार में तें ले जातो। और बिलछू पैं जाँय के रसोई करतो। सो तहां श्रीनाथजी आरोगिवे कों पधारते। सो श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी वा पैं ऐसी कृपा नित्य करते। हांसी खेल करते प्रसन्न रहते।

सो वह ब्रजबासी श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता॥१०६॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक जन-भगवानदास दोऊ भाई, गौरवा क्षत्री, ब्रजबासी हते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश-ये राजस भक्त हैं। लीला में 'जलतरंगिनी' 'एकतारी' इन के नाम हैं। ये दोऊ श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंग सखी हैं। 'सुशीला' तें प्रगटी हैं तातें उनके भावरूप हैं। सो 'जन तो जलतरंगिनी कौ प्रागट्य है और एकतारी कौ प्रागट्य 'भगवानदास' भए।

वार्ता प्रसंग १

सो वे जन और भगवानदास वे दोऊ भाई ब्रजबासी गौरवा के जन्मे। सो ये गोकुल में रहते। सो बालपन में श्रीगुसांईजी की सरनि आए हैं। सो बड़े भाई तो जन और छोटेभाई भगवानदास। सो बड़े कृपापात्र भगवदीय हते। सो वे दोई भाई गृहस्थ हते। सो उन दोऊ भाईन कौ विवाह उनके माता पिता ने कर्‌यो हतो। सो उन दोऊन के स्त्री हती। परि वे अपने मनमें संसार-व्यवहार में उदासीन रहते। और अपने मनमें वैराग्य राखते। संसार के विषय कों तुच्छ पदार्थ जानते। सो उन दोऊ भाईन कौ मन एक ही हतो। और परस्पर बोहोत ही स्नेह हतो। सो श्रीगुसांईजी के पास श्रीसुबोधिनी की कथा नित्य सुनते। ता पाछें घर आये कै दोऊ भाई अहर्निस बिचार करते। और अपनी अपनी छाप कीर्तन करते। श्रीनाथजी के पास हू बैठि कीर्तन करते, सुनते। सो ऐसें उन दोऊ भाईन के सदैव चली जाँय। परि लौकिक में काहू सों संभाषन हू नाहीं करते। और काहू सों बोलते नाहीं। उदर अर्थ भिक्षा मांगते। आसपास के

गामन में तें। सो कोऊ जानतो नाहीं। जा गाममें भिक्षा कर आज जाँय ता गाममें फेरि कै नाहीं जाँय। ऐसें निर्वाह करते सो घर कों आवे। सो घर में स्त्री-जन खरच कों दुःख पा । गाम के पटेल-चोधरी सबन मिलिकै इन कों खेत बोवाय दि । सो धान आयो। वा धान कों गाम के लोग इन के घर ठलाय गए। तब व स्त्रीजन तो बाहिर गई हती। तब इनने वह सब अन्न गायन कों खवाय दियो। कछू मंगतान कों बाँट दियो। घर में कछू नाहीं राख्यो ता पाछें पटेल-चोधरी सबन मिलि कै इन सों कह्यो, जो-तुम्हारे और खेत बोयो है, आछो पक्यो है, परि तुम रखवारी करो। तब वे दोऊ भाई खेत पै गए। सो पक्षी-खग आवे तिन कों बरजे नाहीं। तोहू ऐसें करत खेत में सों अन्न बोहोत आयो। सो वे दोऊ भाई तो खेत पै बैठे भगवद्वार्ता करते। सो लोग सब कहे, जो-अब तुम्हारे खेत कों तुम क्यों नाहीं काटत हो ? अन्न-खरिहान में तुम डारत क्यों नाहीं ? परि वे कछू सुने नाहीं। और कछू उत्तर नाहीं देय। पाछें और लोगन सों कहि कै स्त्रीन नें अन्न सिद्ध करवाई लीनों। परि इननें घर में राख्यो नाहीं। तब लोग सब कहते, जो-और लोग तो अपनी स्त्रीन सों खीझत हैं। परि ये तो कछू बोलत नाहीं। और ये दोऊ भाई तो काहू की कोड़ी राखत नाहीं। जो सबहीन तें उदास रहत हैं।

वार्ता प्रसंग-२

और एक समै ये दोऊ भाई श्रीगुसांईजी के दरसन करिवे कों प्रातःकाल के समय आए। ता समै सब सेवक जन श्रीगुसांईजी के द्वार दरसन कों ठाढ़े हे। तब इन दोऊ भाईन ने

यह पद गायो। सो पद-

राग : बिभास

प्रात समय श्रीमुख देखन कों सेवक जन सब ठाढ़े द्वार।
जै जै जै श्रीवल्लभनंदन दरसन दीजे परम उदार॥
सुंदर स्याम सुभगता सींवा मेघ गंभीर गिरा मृदुधार।
नैनन निरखे होत परम सुख श्रवन सुनाए बचन सुढार॥
श्रवण मंगल जग भवन मंगल रस पुरुषोत्तम लीला अवतार।
'जन-भगवान' जाय बलिहारी अगनित गुन महिमा नहीं पार॥

यह पद जन-भगवानदास ने गायो। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी स्नान करि कै श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे। तब जन-भगवानदास दोऊ भाई साथ आए। सो मंगला के दरसन किये। ताही समै जन-भगवानदासने यह पद गायो। सो पद-

राग : बिभास

मंगल आरति कीजे भोर।
मंगल जनम करम गुन मंगल-मंगल जसोदा माखन चोर॥
मंगल मुकुट बेनु बनमाला मंगल रूप बरन वन-मोर।
'जन-भगवान' जगतमय मंगल मंगल राधा जुगल किसोर॥

यह पद जन-भगवानदास ने गायो। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। तब श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी की आरति करि कै श्रीनाथजीद्वार पधारे। तब जन भगवानदास दोऊ भाई साथ गए। सो श्रीगुसांईजी 'रूद्र कुंड' में स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर पधारे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों राजभोग समर्प्यो। पाछें भोग सरायो।

ताही समै जन-भगवानदास ने यह पद गायो। सो पद-

राग : सारंग

आगे आउरी छकिहारी।
जब तू बोली तब हों टेर्‌यो सुनी न टेर हमारी ॥
मैया छाक सवारी पठई तू कित रही अवारी।
अहो गुपाल गेल हों भूली मधुरे बोलन पर वारी ॥
श्रीगोवर्द्धन धरन धीर सों प्रोत बढी अति भापी।
'जन-भगवान' जाय बलिहारी तनकी दसा बिसारी ॥

यह पद जन-भगवानदास ने गायो। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्रीनाथजी की राजभोग आर्ति करि कै श्रीगुसांईजी नीचे पधारे। सो अपनी बैठक में गादी-तकियान के उपर बिराजे।

सो जन-भगवानदास श्रीगुसांईजी के दरसन करि बोहोत आनंद पाए। जो-श्रीठाकुरजी ब्रज में प्रगटे कहे हैं। सो यही हैं, जो धन्य हमारो भाग्य है। जो-हम कों ऐसें दरसन भए सो आपुस में दोऊ भाई बातें करते। सो भगवद्रस में छके रहते। काहू बात की स्मृति राखते नाहीं। श्रीगोवर्द्धननाथजी इन के पद सुनते। सो बोहोत ही प्रसन्न रहते।

ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन कों पधारे। सो भोजन करि आचमन करि बीरा आरोगि कै ता पाछें जन-भगवानदास कों महाप्रसाद की पातरि धरे। और श्रीमुख तें कहे, जो-तुम श्रीनाथजी कौ महाप्रसाद यहां लेऊ। तब जन-भगवानदास दोऊ भाईन नें महाप्रसाद लियो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप छिनक विश्राम करि कै जागे। सो स्नान करि कै श्रीगिरिराज

पर्वत के ऊपर पधारे। सो उत्थापन तें सेन पर्यंत सब सेवा तें पहोंचि कै श्रीनाथजी के मंदिर तें नीचे पधारे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप कथा कहन लागे। सो इन दोऊ भाईन ने श्रीमुख तें कथा सुनी। सो ऐसें कितेक दिन तांई श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप गोकुल पधारे। तब जन-भगवानदास दोऊ भाई साथ आए। सो श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपन के दरसन किये। तब ऐसें करत जन्माष्टमी कौ उत्सव आयो। ताही समै जन-भगवानदास ने यह पद गायो। सो पद-

राग : सारंग

ग्वाल बधाई मांगन आए।
गोपी-ग्वाल गोरस सकल लिये सबहिन के सिर नाएँ॥
अब ये गर्व गिनत न काहू करि पाए मन भाए।
जहां नंद बैठे नंदी-मुख तहां गहन कों धाए॥
बरन-बरन पट पाए उछाह सों आनंद मंगल गाए।
'जन-भगवान' जसोदा नंदन बलि बलि मंगल गाए।

सो यह बधाई जन-भगवानदास ने गाई। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी कौ जन्मदिन आयो। तब ताही समै एक बधाई गई। सो पद-

राग : धनाश्री

श्रीवल्लभ गृह होत बधाई अनुदिन मंगल चार।
घर-घर आनंद महा महोच्छव होत वेद झंकार॥
देत आसीस सकल पुरबासी बरखत कुसुम अपार॥

मागध सूत बंदित बंदीजन जै जै सब्द उच्चार ॥
देति असीस सकल ब्रज सुंदरि गावत गीत उच्चार ।
श्रीविट्ठल तुम चिरजियो भक्तन प्रान आधार ॥
नृत्यत आवत हरिजस गावत पुलकित प्रेम आधार ।
'जन-भगवान' जाय बलिहारी जै जै दीन दयाल ॥

यह बधाई कौ पद जन-भगवानदास ने गायो। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें संध्या समै एक पद और गायो। सो पद-

राग : कान्हरो

जय श्रीवल्लभजू के नंदन श्रीवल्लभचरन रज पावन।
जुग पद कमल बिराजमान अति महिमा
सदा बोहोत सुख पाइन।
सेवा करों उभै कर दोऊ त्रिविध ताप नसावन।
'जन-भगवान' जाय बलिहारी कृपा सबै जन पावन।

यह पद जन-भगवानदास ने गायो। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। और श्रीमुख तें कहे, जो-इन दोऊ भाईन कौ कैसो सरल स्वभाव है ? सो काहू सो अन्यतर भाव नाहीं।

सो वे जन-भगवानदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१०७॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवन कल्यान भट, खंभालिया के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश-ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'मधुरिमा' है। ये 'सुसीला' ते प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं। और 'सुसीला' की एक सखी है। वाकौ नाम 'देवका' हैं। सो यहां बेटी भई।

ये खंभालिया में एक गिरिनारा ब्राह्मन के प्रगटे। सो पढ़े बोहोत। पाछें इन कौ ब्याह भयो। सो एक बेटी भई। वाकौ नाम देवका राख्यो।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे हते। सो श्रीरनछोरजी के दरसन किये। सो तहां बोहोत दिन लों रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें बिदाई होंइ कै चले। सो खंभालिया कों पधारे। सो तहां डेरा किये। पाछें श्रीगुसांईजी आप गादी तकियान के ऊपर बिराजे। तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। तिनके संग कल्यानभट हू तहां आए। तब उन हाथ जोरि कै बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज! मोकों नाम सुनाइये। तब श्रीगुसांईजी आप कल्यानभट सों श्रीमुख सों आज्ञा किये, जो-तुम स्नान करि आऊ। हम तुम कों नाम-निवेदन दोऊ संग करवावेंगे। तब वे स्नान करि आए। पाछें हाथ जोरि कै श्रीगुसांईजी के आगे ठाढ़े होंइ रहे। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै कल्यान भट कों नाम सुनायो। ता पाछें निवेदन करवाए। तब कल्यान भट ने यथासक्ति भेट करी। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। समयानुसार भोग सराय कै श्रीगुसांईजी आप भोजन किये। तब सब सेवक टहलुवा रसोई करन लागे। सो रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। ता

पाछें सबन ने महाप्रसाद लियो। और श्रीगुसांईजी आप भोजन करि मुख सुद्धार्थ आचमन करि पाछें कल्यान भट कों महाप्रसाद की पातरि धरवाई। सो उननें महाप्रसाद लियो। पाछें श्रीगुसांईजी आप गादी तकियान के ऊपर बिराजे। तब कल्यान भट हू तहां आए। सो साष्टांग दंडवत् करि बैठे। तब श्रीगुसांईजी कल्यान भट सों पूछे, जो-तुम कहा पढ़े हो ? तब कल्यान भट ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज! कछू व्याकरण देख्यो है। तब श्रीगुसांईजी आपने कह्यो, जो-बोहोत ही आछौ है। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप कल्यान भट कों मारग के ग्रंथ पढ़ाए। सो सब ग्रंथ पढ़े। तब उन कल्यान भट कों बोहोत ही विद्या स्फूर्त भई। सो सब बात कौ ज्ञान भयो। पाछें कल्यान भट श्रीगुसांईजी सों जो गोप्य वार्ता होंइ सो पूछते। तब श्रीगुसांईजी आप कल्यान भट सों कृपा करि सब समझाय कै कहते। और अनेक भांति सों कथा भगवद् वार्ता सुनावते। सो श्रीगुसांईजी आप उहां बोहोत दिनलों बिराजे। सो कल्यानभट ने अपने घरकेन कों नाम-निवेदन करवाये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किये। सो श्रीगोकुल कों पधारे। तब कल्यान भट हू श्रीगुसांईजी के साथ चले। सो अपनो सब कुटुंब लैकै श्रीगोकुलमें आय रहे। सो श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपन के दरसन किये। सो कल्यानभट कछूक दिन श्रीगोकुल में रहे। पाछें श्रीगोपालपुर आये। तहां श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। ता पाछें आन्योरमें रहे। सो वे कल्यान भट श्रीगुसांईजी के

ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग-२

और एक समै श्रीगोवर्द्धननाथजी आप के नेग में कसेंडी दोइ दूध ओछो हतो। तब दूधघरीया ने अपुने मन में बिचार कियो, जो-आज तो दूध थोरो है। तो काल्हि कसेंडी दोइ दूध अधिक करूंगो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप ता रात्रि कों सुवर्ण कौ कटोरा लैके बरस दस के लरिका कौ रूप धारन करि आन्योर में आए। सो कल्यान भट के घर आय कै कल्यान भट की बेटी देवका सों श्रीगोवर्द्धननाथजी आप पूछे, जो-देवका! तेरे यहां दूध है? तब देवका नें वा लरिका सों कह्यो, जो-हां हां, बोहोत दूध है। जितनो चहिए तितनो है। तब वा लरिका नें देवका सों कह्यो, जो-तू दूध कौ मोल कहे। तो मैं लेऊं। तब देवका ने तो मोल की नाहीं करी। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपने साढ़े तीन पैसा सेर दूध मांग्यो। तब देवका ने तो नाहीं करी। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आपने चारि पैसा कौ सेर दूध मांग्यो। सो ऐसें करत साढ़े चार पैसा सेर ठहरायो। फिरि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी आपने कटोरा गहने धर्‌यो। तब देवका ने कटोरा में दूध राख्यो। ता पाछें अंतःकरन मांही खेद उपज्यो। तब देवका ने अपने घर में तें मिठाई ल्याय कै कटोरा में दूध धरि कै दियो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आप सब दूध आरोगे। कटोरा उहांई धरि आए। और श्रीगोवर्द्धननाथजी आप श्रीमुख सों देवका सों कहे, जो-प्रातःकाल पैसा दै कै कटोरा ले जाउंगो। ता पाछें वा बाई

देवका ने वा कटोरा कों धोय कै गवाखे में धरि दियो। ता पाछें दूसरे दिन सवारे प्रातःकाल श्रीगुसांईजी स्नान करि कै श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ सेवा सिंगार किये। ता पाछें भोग धरि कै कटोरा श्रीगुसांईजी देखे तो मंदिर में नाहीं है। तब श्रीगुसांईजी आप भीतरीयान सों पूछन लागे, जो-कटोरा कहां गयो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-दूध के नेग में काल्हि कसेंडी दोइ दूध ओछो हतो। सो ताही तें आन्योर में देवका के घर दूध पी कै कटोरा धरि आयो हूं। तब श्रीगुसांईजी कल्यान भट सों जो वार्ता भई हती सो सब कही। जो-देवका के घर श्रीगोवर्द्धननाथजी आप कटोरा धरि आए हैं। सो तहां तें तुम ले आउ। तब कल्यान भट श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि कै घर आय कै देवका सों पूछे, जो-देवका ! कोई कछू गहने धरि गयो है ? तब देवका नें कल्यान भट सों कही, जो-धरि तो गयो है। तब कल्यान भट नें कही, जो-वे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप हते। सो कटोरा गहने धरि गए हैं। ता पाछें देवका ने कल्यान भट सों कह्यो, जो-तुम कटोरा दे आऊ। तब कल्यान भट देवका तें कटोरा लै कै आए। सो श्रीगुसांईजी आप के आगें राख्यो। तब श्रीगुसांईजी आपने कल्यानभट सों कही, जो-वाके भाग्य की कही कहिये ? जो-जाकौ ऐसो सरल भाव। सो ताके घर श्रीठाकुरजी दूध के लिये कटोरा धरि आए। पाछें राजभोग आर्ति करि अनोसर करि श्रीगुसांईजी आप नीचे पधारे। सो अपनी बैठक में गादी तकियान के ऊपर

बिराजे। तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। सो दरसन करि कै अपने अपने घर कों गए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप दूधघरिया कों बुलाय कै वासों बोहोत खीझे। जो-ऐसो काम कबहू नाहीं करिये। जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आप के नेग में सो घटाइये नाहीं। तब दूधघरीया ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! आप की आज्ञा होइगी सोई हम करेंगे। सो ऐसी कृपा देवका के ऊपर आप करते। सो वे कल्यान भट श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग-३

और एक समै कल्यान भट ने श्रीगुसांईजी आप सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजी आपके निकटवर्ती जे वैष्णव रहत हैं, सो एक डबुवा जल कौ भरि कै समर्पत हैं, और एक डबुवा जल कौ ल्याय कै जो आप कों स्नान करावते हैं। और कोई वैष्णव आप कों जल बीड़ा ल्याय के अरोगावृत हैं। और एक सोंधो लगावत हैं। और एक वैष्णव पंखा करत है। और एक तेल लगावत है। सो आप के सेवक अनेक प्रकार सों श्रीठाकुरजी (और) आपकी सेवा करत हैं। सो वैष्णव मोकों कहत हैं, जो-यह घर हमारो। अब हमारो अंगीकार करेंगे। ता पाछें उन सों मैनें कह्यो, जो-अब तांई तुम्हारो कछू करनो बाकी रह्यो है। तो-साक्षात् ईश्वर कों तेल लगावत हो। और आरोगावत हो। और कहा बाकी रह्यो है ? जो-यथासक्ति सामग्री करि कै श्रीठाकुरजी आप कों समर्पत

हो सो अंगीकार करत हैं। तातें महाराजाधिराज ! मैं उन वैष्णवन सों ऐसें कह्यो। तब श्रीगुसांईजी आप कल्यान भट सों कहे, जो-अब तो इतनो बाकी रह्यो है, जो-तुम जानत नाहीं हो। तब कल्यान भट ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! आप कृपा करि जनावोगे तब मैं जानोंगो। ऐसें बचन कल्यान भट के सुनि कै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए।

सो वे कल्यान भट श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग-४

और एक समै श्रीगुसांईजी जलघरा में स्नान करत हते। इतने में राघौदासने माला मांगी। तब श्रीगुसांईजी आय कै हांडी धरि कै पाछें अपने कंठ सो माला उतारिवे लागे। तैसें माला परस्पर उरझि गई। तब कल्यान भट ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! माला बिनती करत है जो-आप मोकों श्रीकंठ तें काहे कों उतारत हो ? तब श्रीगुसांईजी आप बोहोत ही मुसिकाए।

वार्ता प्रसंग-५

और एक समै कल्यान भट ने श्रीगुसांईजी आप सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! श्रीप्रभुजी के उत्तम भगवदीय कृपापात्र होंइ सों तिन के लक्षन कैसे हैं ? आप कृपा करि कहिये। तब श्रीगुसांईजी आप कल्यान भट सों कहे, जो-उत्तम भगवदीय वैष्णव के लक्षन तो यह हैं, जो-सदा सब के ऊपर कृपा राखे। कोई भगवदीय वैष्णव के उपर क्रोध नाहीं

करे। जो-भगवदीय वैष्णव के ऊपर द्रोह नाहीं करनो। जो-कदाचित कोई भगवदीय वैष्णव कौ अपराध पर्‌यो होइ तिन सों क्रोध नाहीं करे। और तिन कौ अपराध सहनो। भगवदीय वैष्णव जो क्रोध में दुर्वचन बोले तो अपनो अपराध माने। परंतु तिन के बचन सुनि कै मन में बिगारे नाहीं। जो-करे सो क्षमा ही करे। तिन कों दोऊ हाथ जोरि कै मधुरे बचन सों बोले, क्षमा राखे। जो-भगवदीय वैष्णव सों सांचो बोले। और श्रीप्रभुजी सों चित विषे निर्मल बुद्धि राखे। और सदा सर्वदा उपकार ही करे। और श्रीप्रभुजी के ऊपर तें तथा भगवदीय वैष्णव के ऊपर तें मन डिगावे नाहीं। जो-इंद्रियजीत रहे। और अपने मन कौ मतो श्रीप्रभुजी के अर्थ नाहीं आवे। और आप महाप्रसाद मात्र कों अंगीकार करे। और अपने अर्थ उद्यम नाहीं करनो। और महाप्रसाद कों न्यून ले। और बोहोत महाप्रसाद लेइ तो निंद्रा आवे, तो भगवद भजन न होंई आवें। तातें उनमान कौ महाप्रसाद लेनो। और रोगादिक होंइ तब श्रीठाकुरजी आपकी सेवा में अंतराय होंई। तातें अपने मन को जीति कै रहे। मन बस होंई तब श्रीप्रभुजी के भजन मन स्थिर होंइ रहे। मन बस होंइ तो सदा सर्वदा कार्य में रहे। सब इंद्रिय कों जीते। विषय में लगावे नाहीं। और कहे, जो-हमतो श्रीप्रभुजी आपके दास हैं। सरन हैं। सो ऐसें मन कों समुझावतो रहे। और जहां बहिर्मुख लोग चर्चा करें तहां मौन होइ कै रहे। और श्रीप्रभुजी की सेवा में सदा सावधान रहे। और असावधान नाहीं होनो। और प्रभुजी की, भगवदीय वैष्णव कों रहस्य-वार्ता प्रगट नाहीं करनी।

और धीरज कब हू नाहीं छोरे। भूख तें प्यास तें निंद्रा तें सीत तें उष्ण तें क्रोध लोभ तें। इतने दोष रूप हैं। सो इनके बस नाहीं होइ। तिन कों जीति कै रहनो। और अभिमान नाहीं करे। सो सब भगवदीय वैष्णवन कौ आदर करत रहे। जो-श्रीप्रभुजी के स्वरूप पर और श्रीप्रभुजी की लीला है ता रूप में अनेक भगवदीय वैष्णव कौ आदर करत रहे। भगवदीय वैष्णव कौ धर्म, अपने स्वरूप कौ, ऐसें बिचार करत रहे। सो ऐसें लक्षन होइ तिनकों उत्तम भगवदीय जाननो। तब यह श्रीगुसांईजी के श्रीमुख के बचन सुनि कै कल्यान भट बोहोत प्रसन्न भए। तब कहे, जो-वैष्णव कौ स्वरूप तो ऐसो ही है।

सो वे कल्यान भट श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१०८॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दोई भाई पटेल, राजनगर में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये दोऊ सात्विक भक्त हैं। लीला में इनके नाम 'कांची' 'कामना' हैं। ये दोऊ श्रीचंद्रावलीजी की सखी मैना हैं, उन तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं। सो बडो भाई कांची कौ प्रागट्य और छोटो भाई कामना कौ प्रागट्य जाननो।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे हे। सो भाईला कोठारी के घर बिराजत हते। सो राजनगर में दोई भाई पटेल गृहस्थ हते। दोऊन की स्त्री का बेटा-बेटी हू हते। सो उन कुनबीन तें भाईला कोठारी कौ मिलाप हतो। सो भाईला कोठारी के घर वे नित्य आवते। सो इन दोऊ भाईन कों श्रीगुसांईजी के

दरसन भए। सो महा अलौकिक दरसन भए। तब उननें भाईला कोठारी सों बिनती करी, जो-हम कों तुम श्रीगुसांईजी के पास नाम दिवावो। तब भाईला कोठारी श्रीगुसांईजी तें बिनती किये, जो-महाराज ! ये दोऊ भाई नाम पायवे की बिनती करत हैं। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै उन दोऊ भाईन कों नाम सुनाये। पाछें वे दोऊ भाई भाईला कोठारी के घर नित्य भगवदवार्ता सुनिवे कों आवते। सो वे दोऊ भाई जो सुनते सो सब कंठाग्र करि लेते। ऐसें करत केतेक दिन भए।

वार्ता प्रसंग-२

पाछें एक दिना उन दोऊ भाई पटेलन ने भाईला कोठारी तें कही, जो-नाम तो तिहारे सत्संग तें पायो, परि अब तो ब्रह्मसंबंध होंइ तों आछो। तब भाईला कोठारी ने कही, जो-तुम श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी के पास जाँइ कै ब्रह्मसंबंध करि आवो। पाछें इन दोऊ भाईन कों ब्रह्मसंबंध की बड़ी आतुरता भई। पाछें अपने बेटान कों घर कौ कामकाज सोंपि कै वे दोऊ भाई पटेल ब्रज में आए। सो ता समै श्रीगुसांईजी श्रीठकुरानी घाट पैं संध्यावंदन करत हते। ता समै वे दोऊ भाई आरति के भरे श्रीगुसांईजी कों जाँइ कै दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो-इन वैष्णवन कों तो राजनगर में देखे हते। तब दोऊ पटेलने हाथ जोरि कै बिनती कीनी, जो-राज ! आपने कृपा करि भाईला कोठारी के घर दरसन दिये और नाम सुनाए। अब तो कृपा करि कै ब्रह्मसंबंध करवाइये। तब ताही समै श्रीगुसांईजी कृपा करि श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो-न्हाउ। तब दोऊ भाई न्हाय कै कोरे वस्त्र पहरि कै हाथ जोरि कै ठाढ़े भए।

तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै समर्पन करवाए। पाछें आप मंदिर में पधारे। सो राजभोग सराय कै दरसन करवाए। पाछें राजभोग-आर्ति किये। सो ये दोऊ भाई दरसन करि कै परम आनंद पाए। श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन अति आनंद सों किये। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर करवाय कै आप अपनी बैठक में पधारे। तब ये दोऊ भाई पटेल दंडवत् करि कै श्रीगुसांईजी कों भेंट धरी। तब आप आज्ञा करी, जो-दोऊ जनें महाप्रसाद यहांई लीजो। पाछें आप भोजन कों पधारे। सो भोजन करि महाप्रसाद की पातरी दोऊ भाईन कों धरी। आप बैठक में बिराजे। पाछें वे दोऊ भाई महाप्रसाद ले कै श्रीगोकुल में कोटरी ले कै रहे। सो नित्य भगवद्वार्ता मंडली में जाते।

पाछें एक दिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे। तब वे दोऊ भाई पटेल श्रीगुसांईजी के संग गए। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै मनोरथ किये। पाछें दोऊ भाई बिचार किये, जो-ब्रजयात्रा करिए तो आछो। ता पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा ले वे दोऊ भाई ब्रजयात्रा कों गए। सो ब्रजयात्रा करि कै पाछें श्रीगोकुल आइ कै श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-ब्रजयात्रा करि आए ? तब इन कही, जो-राज की कृपा तें करि आए। पाछें सातों स्वरूपन कौ तथा श्रीगुसांईजी कौ मनोरथ कियो। पाछें केतेक दिन श्रीगोकुल में रहे। तब एक दिन श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-अब तुम्हारो कहा मनोरथ है ? तब उन दोऊ पटेलन ने हाथ जोरि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-राजकी आज्ञा होंय तो तरहटी में रहे। और श्रीगोवर्द्धननाथजी की जो बने सो

सेवा करें। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइ कै आज्ञा दिये, जो-आछौ है। पाछें वे दोऊ भाई तरहटी में आय रहे। सो नित्यप्रति उठि स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में जाते। सो राजभोग तांई जो सेवा होंई सो करते। राजभोग के दरसन करि कै पाछें अपनी कोटरी में आइ कै रसोई करते। पाछें ध्वजा सन्मुख भोग धरि कै महाप्रसाद लेते। पाछें घरी दोई सोय रहते। ता पाछें संध्या सेन के दरसन करि कै पाछें अपने घर आय किवाड़ लगाई कै वे दोऊ जनें भगवदवार्ता करते। सो सगरी रात्रि भगवद् वार्ता करते। सोवते नाहीं। दुपहरि कों प्रसाद ले कै सोय रहते। रात्रि कों न सोवते ऐसें नित्य करते। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी इनकी वार्ता सुनिवे कों पधारते।

भावप्रकाश-काहेतें, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी तों जहां दोई वैष्णव भगवद् वार्ता करत होंई, तहां पधारत हैं। सो बात चाचा हरिवंसजी और कृष्ण भट के प्रसंग में आगें कहि आए हैं। तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवद् वार्ता के बिसनी हैं। सो जहां कहूं एकांत में वैष्णव भगवद् वार्ता करे तहां अवस्य श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारत हैं।

सो एक दिन ये दोऊ भाई पटेल अपनी कोटरी में भगवद् वार्ता करत रसावेस भए। ताही समै श्रीगोवर्द्धननाथजी दोऊन के बीच में प्रगट होंई कै दरसन दिये। ता दिन तें सदैव दरसन देते। पाछें इन वैष्णवन के बेटा बुलावन आए। परि ये दोऊ गये नाहीं। सदैव श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा, ब्रजबास, भगवद् वार्ता करते।

भावप्रकाश-या वार्ता में यह जतायो, जो-वैष्णव कों भगद्वार्ता किये बिनु सर्वथा न रहनो। काहेतें ? जो-भगवद्वार्ता किये तें श्रीठाकुरजी आप सुखी होत हैं। सो भगवद् वार्ता ऐसो पदारथ है।

सो ये दोऊ भाई पटेल वैष्णव श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई

कहिए। वार्ता ॥१०९॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक ब्राह्मनी, उपरावारी, अड़ेल में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश-ये तामस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'अनन्या' है। ये 'मैना' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये अड़ेल में एक ब्राह्मन के प्रगटी। सो बरस पांच की भई तब याकौ विवाह जाति के लरिका सों भयो। पाछें केतेक दिन में सीतला कौ उपद्रव भयो। तामें वाकौ धनी मर्‍यो। तब यह ब्राह्मनी बरस पचीस की ही। सो पिता के घर आइ रही। ता पाछें केतेक दिन में वाके माता पिता हू मरे। तब वह घर में अकेली रहे। सो वाकौं दिन कटे नाहीं। तब परोसिनी ने कह्यो, जो-तू वैष्णवन की मंडली में जायो करि। तहां भगवद्वार्ता बोहोत आछी होत है। तब यह वैष्णवन की मंडली में जान लागी पाछें वैष्णवन की संग तें वह श्रीगुसांईजी की सेवकिनी भई।

वार्ता प्रसंग-१

सो वा ब्राह्मनी कों श्रीगुसांईजी ने अड़ेल में नाम सुनायो। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने वा ब्राह्मनी कों कृपा करि कै ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछें ब्राह्मनीने बिनती कीनी, जो-महाराज! घर में मेरे दिन कटत नाहीं। तातें कृपा करि कै कछू टहल दीजिये। तब श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करि कै श्रीनवनीतप्रियजी की रसोई में परचारगी करन की कहे। तब वह ब्राह्मनी श्रीनवनीतप्रियजी के खासा बासन मांजती। रसोई में परचारगी करती। सो एक दिन दारि के वासन में भीतर कारो दाग रहि गयो। सो खबरि न परी। तब दूसरे दिन रसोई भई। सो श्रीगुसांईजी, राजभोग धरन लागे। तब श्रीनवनीतप्रियजी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-काल्हि दारि के बासन में दाग रहि गयो हतो। तातें रसोई सब छूइ गई। परचारगनी बासन आछे मांजे नाहीं है। तब श्रीगुसांईजी ने

सगरी सामग्री लेकै गाँइन कों डारि दीनी। पाछें तत्काल और सामग्री सिद्ध करि के मंगला तें राजभोग तांई पहोंचे। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर कराय के अपनी बैठक में पधारे। तब परचारगनी कों बुलाय के ब्रजबासी कों आज्ञा किये, जो-या ब्राह्मनी कों पार उतारि आवो। तब वा ब्राह्मनीने कही, जो-राज ! मेरो अपराध कहा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-काल्हि दारि के बासन में कारो दाग रहि गयो हतो। सो बासन आछी भांति क्यों नाहीं मांजे ? तब उन कह्यो, जो-अनजाने कारो दाग रहि गयो होइगो। ता बात कों मैं कहा करों ? तब ऐसें बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी वा परचारगनी के ऊपर बोहोत रिस कीनी। तब वा ब्रजबासी कों आज्ञा किये, जो-या ब्राह्मनी कों अड़ेल के घाट पर अब ही नाव में बैठारि कै पार उतारि आवो।

भावप्रकाश-यामें यह जताए, जो-वैष्णवन कों गुरुन के सन्मुख दीनता सों बोलनो, अपराध भय मानि कै।

तब वह ब्रजबासी वा ब्राह्मनी कों अड़ेल के घाट पर नाव में बैठारि कै पार उतारि आयो। तऊ वा ब्राह्मनी कों श्रीगुसांईजी की ऊपर नेक हू दोष बुद्धि न आई। मन में कह्यो, जो-प्रभु हैं, फेरि कृपा करि कै बुलावेंगे।

भावप्रकाश-काहेतें, जो-प्रभु अपने जीव कों सर्वथा छोरत नाहीं।

फेरि मन में बिचारी, जो-अब मैं निर्वाह कैसें करों ? तब वा ब्राह्मनी ने घाट के ऊपर एक छानि छवाय लीनी। और घाट ऊपर बेल गाँइ आवें सो गोबर बोहोत होई। ताके ऊपरा थापें। और घाटे पै आए गए काहू भले मनुष्य सों चून मांगि लेई।

तामें निर्वाह करे। और वा झोंपरी में परी रहे। अहर्निस श्रीगुसांईजी के चरन कमल कौ स्मरन करे। सो कछूक दिन में ऊपरान कौ बड़ो ढेर भयो।

सो एक दिन एक ब्रजबासी सों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-ऊपरा नाहीं है। सो नाव ले जाँइ कै प्रयाग जाँइ कै ऊपरा ले आउ जो-दाम लगे सो दे आवो। तब ब्रजबासी एक बड़ी नाव ले जाँइ कै पार गयो। तब वा ब्रजबासी कों देखि कै वा ब्राह्मनी ने जान्यो, जो-यह श्रीगुसांईजी कौ सेवक है। तब वा ब्रजबासी सों श्रीकृष्ण-स्मरन कर्यो। तब पूछ्यो, जो-नाव लिवाय कै कहां जात हो ? तब या ब्रजबासीने कह्यो, ऊपरा चहियत हैं, सो श्रीगुसांईजी ने मोकों प्रयाग पठायो है। सो प्रयाग जाँइ कै ऊपरा लाउंगो। तब वा ब्राह्मनीने कही, जो-मैं ऊपरा थापे हैं सो सब श्रीगुसांईजी के हैं। सो तुम ले जाऊ। मैं श्रीगुसांईजी की सेवकनी हूं। तब यह सुनि कै वह ब्रजबासी बोहोत प्रसन्न भयो। तब वह ब्राह्मनी और वह ब्रजबासी दोऊ मिलि कै नाव ऊपरान सों भरे। सो नाव ऊपरान सों भरि गई। और ऊपरा बोहोत बचे। तब वा ब्राह्मनीने वा ब्रजबासी सों कह्यो, जो-नाव पार ले जाऊ ? ऊपरा धराय कै फेरि एक बेर ल्यावो। तब सगरे ऊपरा जाँइगे। तब वा ब्रजबासी ने कही, जो भली बात है। पाछें वह नाव पार ले जाँइ पांच सात मनुष्य संग लगाय के वह ब्रजबासी ऊपरा ढोवन लाग्यो। तब वा ब्रजबासी सों श्रीगुसांईजी आप पूछे, जो-अबकी बेर ऊपरा बोहोत आछे हैं। और तू बोहोत बेगि नाव ल्यायो। सो ऊपरा

कहां मिले ? तब ब्रजबासी ने वा ब्राह्मनी की दंडवत् करी। और कह्यो, जो-महाराज ! वह परचारगनी आप पार उतारी ही। सो वह पार झोंपरी छाय के बैठी है। घाट ऊपर बोहोत मनुष्य आवत जात हैं तिन सों चून मांगि निर्वाह करत हैं। और घाट पै गाय भैंसि बेल बोहोत आवत हैं। सो गोबर बोहोत होत है। ताके उपरा थापत हैं। सो मोसों कह्यो, जो-ये ऊपरा सब श्रीगुसांईजी के हैं। मैं श्रीगुसांईजी की दासी हूँ। सो ले जाउ। सो नाव भरि के ऊपरा ल्यायो हूं। और एक नाव भरि के ऊपरा और होंइगे। सो वा ब्राह्मनीने कह्यो, जो-यह नाव ले जावो दूसरी नाव और ल्याइओ। तब यह सुनि कै श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मनी के ऊपर बोहोत प्रसन्न भए।

भावप्रकाश-काहेतें, जो-याकों दोष बुद्धि नाहीं है। एकरस भाव है। तातें प्रसन्न भए।

तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मनी कों बुलाइवे कौ बिचार कियो। तब वा ब्रजबासी सों कहे, जो-अब फेरि नाव ले जाँइ कै नाव में ऊपरा भरि कै वा ब्राह्मनी कों नाव में बैठारि कै यहां लिवाइ ल्याइयो। पाछें वह ब्रजबासी घर में ऊपरा धरि कै पाछें नाव ले के पार आयो। तब वा ब्रजबासी ने वा ब्राह्मनी सों कह्यो-जो-श्रीगुसांईजी तेरे ऊपर प्रसन्न होंइ कै तोकों बुलाई है। तब यह सुनि कै वह ब्राह्मनी बोहोत प्रसन्न भई। पाछें सगरे ऊपरा नाव में भरि कै पाछें वह ब्राह्मनी अपने श्रीठाकुरजी कों नाव में चढाय कै पाछें बैठी। सो वह नाव पार आई। सो उत्थापन के समै श्रीगुसांईजी न्हायवे कों पधारे हते। ता समै वह ब्राह्मनी अत्यंत आतुर होंइ कै जलघरा में आइ दंडवत् करी। नेत्रन में तें आंसू जात हैं। मुख तें कछू बोलत आवत नाहीं। तब ऐसी दसा

देखि कै श्रीगुसांईजी कों वाकी बोहोत दया आई। ता पाछें श्रीगुसांईजी अपने श्रीहस्त कमल सों वा ब्राह्मनी कौ हाथ पकरि कै ठाढ़ी किये। और कह्यो, जो-तेरो अपराध तो थोरो हतो और दंड तोकों बोहोत भयो। परि तू धन्य है। सो तेनें ऐसो धीरज धर्‌यो। तब वा ब्राह्मनीने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज! मोसों अपराध तो बोहोत ही पर्‌यो हतो, जो-सगरी सामग्री छूई गई। प्रभुन कों ढील भई। या अपराध तें मोकों तीन्यो लोक में कहूं ठौर न हती। सो आप तो परम दयाल हो तो थोरे ही में मेरो अपराध निवृत्त कियो। तब ये बचन वा ब्राह्मनी के सुनि कै आप बोहोत प्रसन्न भए।

भावप्रकाश-या वार्ता में यह जताए, जो-जीव कों अपने रंचक दोष कों हू बोहोत बड़ो करि जाननो। तो दीनता होंई। और शिक्षा कौ अनुग्रह करि जाननो। यहू कहे।

पाछें श्रीगुसांईजी अपनो चरनामृत दियो। तब वा ब्राह्मनी कों आज्ञा करी, जो-बेगि न्हाय अपनी सेवा में जाय लगो। सेवा सावधानी सों दोऊ बार करनो। यह श्रीमुख के बचन सुनि कै वह ब्राह्मनी बोहोत ही प्रसन्न भई। ता दिन तें वह ब्राह्मनी भय संयुक्त अत्यंत प्रीति सों सेवा करती। सो कछूक दिन में श्रीनवनीतप्रियजी सानुभावता जतावन लागे।

सो एक दिन सेनभोग के दूध में बूरा थोरो पर्‌यो हतो। तब वा ब्राह्मनी सों श्रीनवनीतप्रियजी कहें, जो-आज सेन भोग के दूध में बूरा थोरो हतो। सो यह आज्ञा श्रीनवनीतप्रियजी की सुनि कै ताही समै अर्द्धरात्रि कों श्रीगुसांईजी के पास जाँइ कै बिनती करी, जो-महाराज! आज सेन-भोग के दूध में बूरा थोरो हतो। श्रीनवनीतप्रियजी की आज्ञा भई है। सो भंडारी कौ

दोष है। तब श्रीगुसांईजी ताही समै भंडारी कों आज्ञा करी, जो-आज सेनभोग के दूध में बूरा थोरो क्यों कर्यो? तब भंडारी ने बिनती करी, जो-महाराज! ऊजरो बूरा थोरो ही रह्यो। सो पैसा चारि भरि घटती हतो। सो अब प्रातःकाल मँगाय लेउंगो। तब श्रीगुसांईजी भंडारी सों खीझि के कहे, जो-आज पाछें पैसा भरि हू घटती मति करियो। तब भंडारी ने बिनती करि कै कह्यो जो-महाराज! आज पाछें नेग में घटती कब हू न करूंगो। सो या प्रकार वा ब्राह्मनी के ऊपर श्रीनवनीतप्रियजी बोहोत प्रसन्न रहते।

भावप्रकाश-या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-सेवा भय-प्रीति संयुक्त करनी। और गुरुन पै दोष बुद्धि सर्वथा न करनी।

सो वह ब्राह्मनी श्रीगुसांईजी की ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय ही। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥११०॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक माँ-बेटा, ब्राह्मन, गुजरात के, जिनने श्रीगुसांईजी की सेवा करी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश-ये राजस भक्त हैं। लीला में इन के नाम 'प्यारी' और 'दुलारी' हैं। सो प्यारी तो इहां मा भई और दुलारी बेटा भयो। ये दोऊ मैना ते प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

सो ये दोऊ माँ-बेटा ब्राह्मन हे। सो गुजरात में एक गाम में रहत हुते। सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारत हुते। सो मारग में इन माँ-बेटा के गाममें डेरा किये। तब गाम के वैष्णव सब दरसन कों आये। उनमें ये माँ-बेटा हू श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। सो दरसन करि थकित व्है रहे। साक्षात् कोटि कंदर्प लावन्य पुरुषोत्तम के दरसन भए। तब इन श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! कृपा करि हम कों सरनि लीजिये। तब श्रीगुसांईजी आप दोऊन कों नाम सुनाये। पाछें वैष्णवन कही, जो-तुम निवेदन की बिनती और हू करो। तब दोऊन श्रीगुसांईजी सों निवेदन की बिनती किये। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-अब ही नाहीं। श्रीगोकुल अइयो, तहां तुम कों निवेदन करावेंगे।

वार्ता प्रसंग-१

सो वे दोऊ माँ-बेटा द्रव्यपात्र हते। सो वे दोऊ माँ-बेटा बिचारि करि कै ब्रज कों चले। सो श्रीगोकुल आए। सो श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग के दरसन किये। पाछें बैठक में आय कै श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी कों भेट करी। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-तुम कब आए ? तब इन वैष्णवन ने कही, जो-राजकी कृपा तें श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग के दरसन आय किये। तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, जो-महाप्रसाद इहांई लीजो। पाछें इन वैष्णव कों आप श्रीहस्त सों जूंठिनि धरी। पाछें आप बैठक में बिराजे, बीरा आरोगे। पाछें वे वैष्णव महाप्रसाद ले आए। तब श्रीगुसांईजी आप प्रसादी बीरा उन कों दे कै आप पोढ़े। पाछें वे वैष्णव तो अपने डेरा आये। पाछें सेन समै दरसन कों आए। सो दरसन किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में कथा कहन लागे। तब इन वैष्णवन ने हू सुनी। पाछें जब कथा कहि चुके तब उन ब्राह्मन वैष्णव बिनती करि, जो-राज ! कृपा करि कै ब्रह्मसंबंध कराइये। तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, जो-काल्हि ब्रत करियो। परसों तुम कों ब्रह्मसंबंध करावेंगे। तब उन ब्राह्मन (माँ-बेटा) वैष्णवन ब्रत कियो। ता पाछें दूसरे दिन सवेरे श्रीयमुनाजी में स्नान करि कै अपरस में श्रीगुसांईजी के आगें हाथ जोरि कै ठाढ़े भए। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान उन दोऊन माँ-बेटान कों ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछें थोरेसे दिन रहि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! आज्ञा होंइ तो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै ब्रजयात्रा

करि आवें। तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा दीनी, जो-आछो, करि आऊ ! तब वे माँ-बेटा दोऊ श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि के चले। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। पाछें संपूरन ब्रजयात्रा करि कै श्रीगोकुल आए। श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-ब्रजयात्रा करि आए ? तब उन बिनती करी, जो-राज की कृपा तें श्रीमुख निरखि कै ब्रजयात्रा करि आए। पाछें उन ब्राह्मन वैष्णवन ने और हू बिनती करी, जो-कृपानाथ ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-श्रीठाकुरजी की सेवा करो। तब इन ब्राह्मन वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सो बिनती करी, जो कृपानाथ ! हमारो ऐसो मनोरथ है, जो आप की सेवा करें। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-हमारी सेवा कौन भांति करोगे ? तब इन ब्राह्मन वैष्णव ने कही, जो-राज ! जा भांति श्रीठाकुरजी की सेवा करे ता भांति हम करेंगे। सिंघासन, खंडपाट सब श्रीठाकुरजी के से राखेंगे। और पट्टा बिछाय कै झारी भरि धरें, भोग समर्पे, आप आरोगो। हम तो बाहिर बैठेंगे। समय होय तब भोग सराय आचमन मुखवस्त्र कराऊं। या भांति कृपा करो। तो हम सेवा करें। तब श्रीगुसांईजी आप तो परम दयाल है। सो आप कौ नाम 'भक्तेच्छा पूरकाय नमः' है। सो आपने कही, जो-काहू के आगें यह (सेवा-प्रकार) प्रगट न होंय तो हम तेरे घर पधारेंगे। प्रगट होंइ कै आरोगेंगे। और जो-कहूँ कोई जानेगो तो हम एक छिन हू न बिराजेंगे।

भावप्रकाश-काहे तें, जो-यह एकांतिक सेवा कौ प्रकार है। सो केवल भावरूप हैं। तातें प्रगट कियो नाहीं जाँई।

तब उन वैष्णवन कही, जो-आज्ञा। पाछें सेवा तो कछू

पधराई नाहीं। श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप हृदय में राखे।

ता पाछें वे दोऊ माँ-बेटा श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ कै अपने घर राजनगर आए। तब माँ ने बेटा सों पूछ्यो, जो-तेरी सगाई ब्याह करे। बहू आवे तो तोकों सेवा में सहायक होइगी। तब बेटा कौ मन तो सेवा में हतो। सो बेटा ने कही, जो-द्रव्य अलौकिक सेवा में लगे तो आछो। जो-मेरे तो विवाह करनो नाहीं। पाछें वा डोकरी नें अनेक भांति सों बेटा कौ मन देख्यो। परंतु बेटा कौ मन तो सेवा में है। तातें ब्याह कियो नाहीं। पाछें इन वैष्णवन नें दूसरो नयो घर करवायो। ताके भीतर एकांत में मंदिर करवायो। सो सब ब्योंत निज मंदिर, तिवारी, सिज्या मंदिर, भोजन घर, चोक, डोल-तिवारी जलघरा, खासा, सेवकी, सब ब्योंत ज्यों कौ त्यों करवायो। और अपने रहिवे कौ न्यारो करवायो। ऐसो करवायो जो-कोऊ न जानें, जो-मंदिर है। पाछें सिंघान चंदौवा पिछवाई सिज्या सब साज बड़ो करवायो। और भीतर कुआँ। सब ब्योंत भीतर। बाहिर प्रगट लेस नहीं।

और मंदिर कौ जल तथा पोतना सब सेवा अपरस में करते। पाछें सब सामग्री सिद्ध करि कै भोजन घर में पट्टा बिछाय कै भोग सब विधि पूर्वक साजि कै झारी भरि कै हाथ जोरि कै जैसें दरसन किये हते तैसे स्वरूप कौ ध्यान करि बिनती करी, जो-कृपानाथ ! श्रीठाकुरजी तो श्रीमहाप्रभुजी की कानि तें आरोगत हैं और आप श्रीमहाप्रभुजी की कानि तें तथा आपकी कानि आप राखि कै आरोगोगे। ता पाछें भोग समर्पि कै बाहिर आए। कीर्तन करन लागे। सो श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै

आरोगिवे कों पधारे। सो भली भांति सों आरोगे। पाछें समय भयो भोग सरायो। आचमन मुखबस्त्र बीड़ा सब बिधिपूर्वक किये। आर्ति, घंटा, झालर, कछू नाहीं। पाछें अनोसर करि कै वह महाप्रसाद और पात्रन में ठलाय कै पात्र मांजि कै ठिकाने धरि कै मंदिर की सब सेवा पहोंचि कै गाँइ की पातरि दीनी। पाछें महाप्रसाद लेवे बैठे। सो महाप्रसाद अत्यंत अलौकिक स्वाद भयो। जो साक्षात् श्रीगुसांईजी आरोगे, सो क्यों न होंई? सो या भांति नित्य सेवा करें। और समय पर कोई अचानक वैष्णव आवे तो उन कों महाप्रसाद लिवाय कै बिदा करि देते। कोइ कों रहिवे न देई। या भांति करते। ऐसें करत द्रव्य तो थोरो सो रह्यो। तब बेटा ने अपनी मा तें कह्यो, जो-द्रव्य तो थोरो सो रह्यो। द्रव्य बिना सेवा न बने। तातें तुम कहो तो एक बरस दिना परदेस करि कै द्रव्य ले आउं। तब माँ ने कही, जो-सेवा छूटि जाइगी। तब बेटा ने कही, जो-तुम सेवा जैसें होत हैं तैसें नित्य करियो। एक बरस में चाहे तैसें करि कै आइ जाउंगो। तब माँ ने कही, जो-आछो। पाछें बेटा तो परदेस गयो। और माँ वैसें ही सेवा करें। सो एक दिना साग सम्हारत मन में ऐसी आई, जो-बेटा आवें तो सेवा में सहायक होंई। पाछें सामग्री सिद्ध करि कै भोग समर्पे। तब श्रीगुसांईजी ने साग कौ कटोरा सरकाय दीनो। सो वा बाई ने कीर्तन करि, समय भयो तब भोग सरायो। तब वाने देख्यो तो साग कौ कटोरा दूरि धर्‍यो है। तब वा बाई ने आचमन मुख वस्त्र करावत बिनती करी, जो-राज! साग क्यों नाहीं

आरोगे ? तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-साग सम्हारत में तेरो चित्त कहां हतो ? तब इन कही, जो-बेटा में हतो। तब आपने कही, जो-लौकिक में मन क्यों चलायो ? तातें साग नहीं आरोगे। ऐसें बानी होंई। जैसें आकास-बानी। ऐसें ऐसें कोई दस बेर जताए।

और सामग्री में कछू चूक परे, खारो खाटो होंइ, तब दूसरे दिन बिनती करती। तब आप आज्ञा करते, जो-तुमने महाप्रसाद लीनो के नाहीं लीनो ? तब वह कहती, जो-राज ! लीनो। तब आप आज्ञा करते, जो-खबरि न परी। ऐसें साक्षात् बानी होई। पाछें केतेक दिन में बेटा आयो। सो द्रव्य ले आयो। पाछें वे या प्रकार मिलि कै सेवा भलीभांति सों दोऊ माँ-बेटा ब्राह्मन वैष्णव सेवा करन लागे। श्रीगुसांईजी आप सानुभावता जनावन लागे।

भावप्रकाश-यह कहि यह जताये, जो-सेवा 'यथा देहे तथा देवे' या प्रकार मन लगाय कै सावधानी सों करनी।

तातें वे दोऊ माँ-बेटा श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय है। जिनने श्रीगुसांईजी की बानी कों स्वरूपात्मक करि जानी। और भावात्मक सेवा कीनी। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता॥१११॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक चोर, दिल्ली में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश-ये तामस भक्त हैं। लीला में इनको नाम 'तुरंगा' गोप है। सो 'मनसुखा' तें प्रगट्यो हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग-१

सो श्रीगुसांईजी एक समै श्रीगोकुलजी तें दिल्ही पधारे।

तहां वैष्णवन की भेट बोहोत आई। और एक वैष्णव अपनी बहू के गहना वस्त्र ल्याय कै श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराजाधिराज ! मैं आप के संग श्रीगोकुलजी चलि कै तहां वास करूंगो। आप यह गांठि धरो और लिवाय ले चलो। तब श्रीगुसांईजी यह वैष्णव सों कहे, जो-धरि जाउ। तब वह वैष्णव धरि गयो। पाछें रात्रि कों एक चोर आयो। सो सगरी भेंट कौ द्रव्य, कपरा, बासन, सब बांधि दूसरे के हाथ पठायो। ता पाछें धरोहर की गांठि उठाई। तब वह गांठि कों पकरि कै श्रीगुसांईजी कहे, जो-यह पराई धरोहर है। तातें वह धरोहर वारो हम पर दोष बुद्धि करेगो। तातें हमारे गहना यह न्यारे धरे हैं सो ले जा। तब वह चोर छोरि कै गयो। पाछें दूसरे दिन वह सगरी वस्तु ले गयो सो सब वह चोर अपने घर तें ले और कछू अपनी ओर तें भेंट ले आय कै श्रीगुसांईजी पास बिनती करि कह्यो, जो-यह सब आप कौ माल है सो आप रखवाइए।

पाछें बिनती कीनी, जो-महाराज ! मैं चोर हूं। आप की सरनि आयो हूं। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-चोर कों तो हम सेवक न करेंगे। तब चोर ने बिनती कीनी, जो-महाराज ! आप जैसें आज्ञा करो तैसेंई करूंगो। परि मोकों कृपा करि कै सरनि लीजिए। आप तो ईश्वर हो। आप की दयालता कौ पार नाहीं है। तब श्रीगुसांईजी ने वासों आज्ञा करी, जो-तू चोरी तो छोरि सकत नाहीं। परि तू दया राखियो, और साँच बोलियो। तो तेरो कारज होइगो। तब चोर ने कही, जो-महाराज ! आप सांची कही। जो-मेरो सुभाव चोरी करन कौ है। तातें चोरी किये बिनु रह्यो जात नाहीं। परि आज पाछें बड़ी ठौर चोरी

करूंगो। काहू गरीब कों न सताऊंगो। और साँच बोलुंगो। तब श्रीगुसांईजी आप वा चोर कों कृपा करि कै दूसरे दिन नाम दे सेवक कियो। पाछें वह चोर श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै गयो। तब एक सहर में गयो। सो जब और ठिकाने चोरी करन कों गयो तब दया आई। सो पाछो आयो। फेरि एक राजा के यहां अर्द्ध रात्रि के समै गयो। तब जामा, मोती के कड़ा पहरि कै ड्योढ़ी पै गयो। तब ड्योढीवान ने पूछ्यो, जो-तुम कौन हो ? कहां जाऊगे ? तब वाने कह्यो, जो-मैं चोर हूं कहा तोकों सूझत नाहीं ? राजा के पास जाय रह्यो हूं। सो ड्योढीवान ने अपने मन में जाने, जो-ये चोर नाहीं। यह कोई खुसमसकरा है। काहेतें, जो-चोर ऐसें कहे नाहीं जो-हम चोर हैं। तातें इनकों रोको मति। याही भांति वह सात ड्योढी लांघि कै वह चोर जहां राजा रानी सोए हते तहां गयो। सो भीतर जाँइ जवाहरखाने के घर कौ ताला तोरि कै वहां तें रानी कौ बंटा, गहना कों लै कै ड्योढी पै आयो। तब ड्योढीवानने टोके, जो-तुम कैसें गए ? और कैसें आए ? कौन हो ? तब वाने कही, जो-मैं चोर हूं। राजा के पास गयो हतो। सो चोरी करि कै ले चल्यो। तोकों सूझत नाहीं ? सो ड्योढीवान ने जान्यो, जो-ये हमारी हाँसी करत है। कहूँ चोर ऐसें कहत होंगे ? या प्रकार सब ड्योढीवान कों उननें ऐसें कह्यो। सो सबन नें जान्यो, जो-कछू राजा के काम कों आयो होयगो। सो सबन ने जान दियो। पाछें वह चोर अपने ठिकाने जाँइ कै बंटा धरि कै सोयो। पाछें सबेरो भयो तब राजा के यहां चोरी को हल्ला भयो। सो चोर कों ढूंढन कों

मनुष्य गए। सो दीवान हू साथ गयो। पाछें दिन घरी चारि चढ्यो तब उठि कै वह चोर दांतिन करत हतो। तब उहां ही दीवान चोर की तलास करत हतो। सो वाही कों देख्यो। तब पूछी, जो-तु या समै दांतिन क्यों करत है ? तब वाने कह्यो, जो-मैं राजा के घर चोरी करिवे गयो हतो। सो बंटा ल्यायो। सो घर में धरि कै सोयो। सो अब उठ्यो हूं। तब दीवान ने जाँय कै राजा सों कही, जो-एक चोर तलास भयो है। तब राजाने कही जो-मेरे पास ल्याओ। तब दीवान वा चोर कों राजा के पास ल्याए। तब राजाने पूछी, जो-तुमने चोरी कैसें करी ? तब वा चोर ने कह्यो, जो-मैं ड्योढी पैं पूछत पूछत तुम्हारे पास आयो। सो गहना, बंटा कों लै कै ड्योढ़ी पै कहत कहत मेरे ठिकाने गयो। तब राजाने कही, जो-गहना कौ बंटा ल्याऊ। तब बंटा ल्याइ कै राजा कों दिखायो। तब राजा न कही, जो-ऐसो आदमी साँचो बोले सो कहां मिले ? पाछें दीवान सों कही, जो-यह कुलकुलां दीवान है। याके पास काम कर्ता हू है। तब सों वह चोर दीवानगीरी करन लाग्यो। पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी उहां पधारे। सो यह दीवान सन्मुख गयो। तब मनुष्य ने कही, जो-कोई राजा आवत है। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-दीवान आवत है। पाछें वाने जाय कै श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करी और कही, जो-मैं आपकौ चोर हूं। और यह दीवानगीरी आप की दई भई है। पाछें श्रीगुसांईजी उहां तें द्वारिका पधारे।

भावप्रकाश - या वार्ता में यह जतायो, जो-जीव कैसो हू दोष सों भर्यो क्यों न होंई, परि जो-सरनि आवत है ताकों प्रभु आप निश्चय अंगीकार करत हैं। तातें पुष्टिमार्ग में सरनि मुख्य है।

सो वह चोर वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भयो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥११२॥

✹ ✹ ✹ ✹

अब श्रीगुसांईजी के सेवक तानसेन ब्राह्मन, पात्साह के गवैया, ग्वालियर के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश-ये राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'दीपा' है। सो 'दीपा' श्रीठाकुरजी कौ अंतरंग सखा है। ये 'मनसुखा' गोप तें प्रगट्यो है, तातें उन के भावरूप हैं।

ये तानसेन ग्वालियर में एक ब्राह्मन के जन्मे। सो बरस पांच के भए। तब इन कों एक म्लेच्छ कौ संग भयो। सो म्लेच्छ संगीत-कला में बोहोत निपुन हतो। सो वाने तानसेन कों संगीत सिखायो। सो तानसेन बोहोत सुंदर गावन लागे। ता पाछें तानसेन सरस्वती की आराधना किये। तब सरस्वती वाकों दरसन दे कह्यो, जो-कछू मांगि। तब तानसेन ने कह्यो, जो-मोकों राग सिद्ध होंई। तब सरस्वती कहे, जो 'तथास्तु'। या प्रकार सरस्वती तानसेन कों वर दे अंतर्धान भई। पाछें तानसेन गावें तब हिरन उनके निकट दोरि आवे। ऐसो सुंदर गावन लागे। सो एक समय ये दिल्ली गए। सो पात्साह के पास गए। सो पात्साह कों गानो सुनाए। सो पात्साह उन कौ गानो सुनि बोहोत प्रसन्न भयो। सो बोहोत द्रव्य दियो। पाछें पात्साह तानसेन कों कहे, जो-तू हमारे पास रहे। पाछें इन कौ महिना करि दियो। सो ता दिन तें तानसेन पृथ्वीपति के पास रहे। सो दरबार में जान लागे। पात्साह कों गानो सुनावे। या भांति रहे।

पाछें जो-कोऊ गायवे में समुझे ताके पास तानसेन जातें। सो राजा-महाराजा, संत-महंत सब कोऊ इन कौ आदर करते। पात्साह कौ गवैया जानि बोहोत द्रव्य देते। ऐसें करत तानसेन जगत में प्रसिद्ध भए।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै उष्णकाल के दिन हते। सो श्रीगुसांईजी गोविंदघाट पै बिराजे हते। तब गोविंदस्वामी आदि और हू भगवदीय पास बैठे हते। ता समै तानसेन श्रीगुसांईजी पास गायवे कों आए। तब तानसेन कों देखि कै श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-तानसेन! कछू कीर्तन गाउ। तब तानसेन ने एक पद गायो सो पद-

राग : लाछसाख

तेरे मन में किलो एक गुनरे जो तो पैं आवे तो प्रकास कररे।

सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना जोइ सुर आवे तोपे सोइ सुर भररे।

हिरन बुलाये, पगन पराये, मेहा बरसाये तोकों सरस्वती बररे।

कहे मियां 'तानसेन' सुनेरे गुनीजन, सब गुनियन के पांयन पररे।

सो यह पद सुनि कै श्रीगुसांईजी तानसेन कों पात्साह कौ गवैया जानि रुपैया ५००/- पांचसौ दिये। ता पर एक कोड़ी और दिये। तब तानसेन पूछ्यो, जो-महाराज ! यह कोड़ी काहेकों दीनी ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-तानसेनजी ! तुम पात्साह के गवैया हो। तातें तुम कों रुपैया पांच सौ हम दिये हैं। और यह कोड़ी तो तुम्हारी बानी सुनि कै दीनी है। तब तानसेन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! हम कों आप कछू अधकी सुनाइए तब हम जाने, जो-आपने हमारी कीमत करी सो उचित है। नाँतरु हम कैसें जाने ? तब श्रीगुसांईजी आप मुसिक्याइ कै गोविंदस्वामी की ओर देखें। पाछें गोविंदस्वामी सों आज्ञा कीनी, जो-गोविंददास ! कछू कीर्तन गाउ। तब गोविंदस्वामी ने 'सारंग' राग में एक गायो। सो पद-

राग : सारंग

श्रीवल्लभनंदन रूप अनूप स्वरूप कह्यो नहीं जाई।

प्रगट परमानंद गोकुल बसत हैं सब जगत के सुखदाई।
भक्ति मुक्ति देत सबन कों निज जन पै
कृपा प्रेम बरखत अधिकाई॥
सुखमय सुखरूप सुखद एक रसना कहांलों बरनौं
'गोविंद' बलि बलि जाई।
ता पाछें दूसरो गायो -

राग : सारंग

सुनिरी सखी दुपहरी की बिरियां बैठि झरोखन पोवति हार।
ओंचका आय गये नंदनंदन मोतन कांकरी चितये डार।
हों सकुच मुख मोरि ठाढ़ी भई गुरुजन लाज बिचार।
'गोविंद' प्रभु पिय रसिक सिरोमनि सेन बताई भुजा पसार।

सो ये पद सुनत ही तानसेन चकित होंइ रहे। पाछें दोऊ हाथ जोरि श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो-महाराज ! इनके आगें मेरो गानो ऐसो है, जैसे मखमल के आगें टाट होत हैं।

ता पाछें तानसेन गोविंदस्वामी के निकट जाँइ बिनती किये, जो-तुम मोकों कृपा करि कछू गान सिखाओ। तब गोविंदस्वामी कह्यो, जो-हम श्रीगुसांईजी के सेवक बिना काहू सों संभाषन हू करत नाहीं। तब तानसेन श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो-महाराज ! कृपा करि मोकों सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी तानसेन कों नाम सुनाए। पाछें तानसेन ने श्रीगुसांईजी कों एक सहस्र मुद्रा भेंट करी। और बिनती कीनी, जो-महाराज ! आप गोविंदस्वामी सों आज्ञा करें, जो-मोकों ये गान विद्या सिखावे। तब श्रीगुसांईजी गोविंदस्वामी सों आज्ञा किये, जो-गोविंददास ! इनों को कीर्तन सिखइयो। तब तानसेन कछूक

दिन गोविंदस्वामी के पास रहे। मार्ग की प्रणाली अनुसार कीर्तन सीखे। ता पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा पाइ श्रीनाथजी के सन्मुख कीर्तन करन लागे।

वार्ता प्रसंग-२

सो तानसेन श्रीनाथजी के सन्निधान कीर्तन करते। सो श्रीनाथजी तानसेन के कीर्तन सुनि बोहोत प्रसन्न होते। सो तानसेन अमल-पानी करत हुते। सो उनके मुख में सों दुर्गंध आवती। सो एक समै तानसेन श्रीनाथजी के सन्निधान कीर्तन करत हते। तब एक वैष्णव ने उनकों टोके। और कह्यो, जो-तुम अमल-पानी मति करो। तुम्हारे मुख सों दुर्गंध आवत हैं। सो श्रीनाथजी कों कैसें सुहात होइगो ? तब तानसेन ने दूसरे दिन अमल-पानी छोरि दियो। पाछें तानसेन राजभोग समै कीर्तन करन लागें। तब कीर्तन आछें होंइ नाहीं। तब श्रीगुसांईजी तहां श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दर्पन दिखावत हते। तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी सों आज्ञा किये, जो-आज कीर्तन फीके लगत हैं। सो तानसेन आछी भांति गावत नाहीं है। तातें उन सों कहो, जो-आछी भांति कीर्तन गावे। तब श्रीगुसांईजी तानसेन कों कहे, जो-आज ऐसें फीके क्यों गावत हो ? तब तानसेन ने कही, जो-महाराज ! अमल-पानी कियो नाहीं। एक वैष्णव मोसों कहे, जो-श्रीनाथजी कों दुर्गंध आवत है, तातें तुम अमल-पानी मति करो। तातें महाराज ऐसें होत है। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-तुम पहिले जैसें करत हुते तैसें करो। तामें श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न हैं। तब तें फेरि

तानसेन अमल-पानी लेन लागे। तब सुंदर गावन लागे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी मुसकाये । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के मुसकान के दरसन तानसेन कों भए।

भावप्रकाश-सो या वार्ता में वह जताए, जो-पुष्टिमार्ग में जा भांति श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न रहे सोई कर्तव्य है। पुष्टिमार्गीय कौ सोई धर्म है।

सो तानसेन श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥११३॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक दलाल बनिया, राजनगर कौ, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश-ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'स्नेहलता' है। ये मनसुखा गोप की भतीजी है। तातें उनके भावरूप हैं।

सो यह राजनगर में एक द्रव्यपात्र बनिया के जन्म्यो। सो वह बनिया दलाली करत हतो। पाछें यह लरिका बरस बीस कौ भयो तब याकौ ब्याह भयो। फेर केतेक दिन पाछें याके माता-पिता मरे। तब यह दलाली करन लाग्यो। सो याके गांठि में निन्यानवे हजार रुपैया हते। परि यह बनिया लोभी हतो। सो कहतो, जो-लाख रुपैया होंइ तो आछो। तातें द्रव्य कौ संग्रह करे। खानपान में हू संकोच करे। सो बारह आना नित्य कमावे। सो आठ आना सो जमा करे। और बाकी चार आना में निर्वाह करे। ऐसें करत केतेक दिन पाछें श्रीगुसांईजी राजनगर असारुवा में भाईला कोठारी के इहां पधारे। सो ता समै यह बनिया भाईला कोठारी के पास कछू काम कों आयो हतो। सो इन श्रीगुसांईजी कौ दरसन पायो। तब भाईला कोठारी कों बनियाने पूछ्यो, जो-यह कौन है ? कहां रहत है ? और इन कौ नाम कहा है ? तब भाईला कोठारीने कह्यो, जो-ये श्रीगुसांईजी साक्षात् ईश्वर हैं। श्रीगोकुलाधिपति हैं। इनको नाम श्रीविट्ठलनाथजी है। और हम सब इनके सेवक हैं। तब यह बनिया कह्यो, जो-हम हू कों इनके सेवक करावो तो आछौ। हम हू इनके सेवक होंइगे। तब भाईला कोठारी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! यह बनिया सेवक होन की कहत हैं। तब श्रीगुसांईजी आप या बनिया की ओर मुसिक्याइ कै देखे। तब या बनियाने बिनती कीनी, जो-महाराज! कृपा करि अपनो सेवक कीजिए तो आछौ। तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम सुनाए। पाछें वह बनिया अपने घर गयो। सो दूसरे दिन अपनी स्त्री कों ल्याय नाम दिवायो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी कों पधारे।

वार्ता प्रसंग-१

सो बोहोरि एक समै श्रीगुसांईजी आप गुजरात द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दर्सनार्थ पधारे। सो मारग में राजनगर असारुवा में भाईला कोठारी के यहां डेरा किये। सो मारग जात या बनिया कों दरसन भए। सो श्रीगुसांईजी के संग ही यह बनिया भाईला कोठारी के घर आयो। तब दुपहर तांई तो श्रीगुसांईजी की टहल में रह्यो। इतने में प्यास लगी। सो घर आयो। फेरि बिचार भयो, जो-मैं खाली हाथन दंडवत् कैसें करूं ? तब स्त्रीने कही, जो-आज तो कछू कमाए हो नाहीं। कछू ल्याए नाहीं। तब कहीं, जो-कछू दे। तब इत में उत में देखे तो एक खोटो नारियल पर्‌यो है। तब कही, जो-यह लै जाऊ। तब वह खोटो नारियल लै कै चल्यो ! सो जाँय के श्रीगुसांईजी के आगें भेंट धरि दंडवत करी। तब सब वैष्णवने कही, जो-महाराज ! हमकों तो ठगे है। परि आप सों हू ठगविद्या लगाई है। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-वैष्णव ! ये कहा कहत है ? तब वा दलाल ने कही, जो-वे साँच कहत हैं। जो-राज ! मेरी गांठि में निन्यानवे हजार रुपैया हैं। सो लाख होंइ तो मैं लखेश्वरी होऊं। सो चारि आना में तो निर्वाह करत हूं और आठ आना जमा करुं हूं। तब श्रीगुसांईजी आप वा पर प्रसन्न भए। वासों कहे, जो-यह साँच बोल्यो। अपनो भाव प्रकट कहि दियो। पाछें आप आज्ञा किये, अब तू श्रीठाकुरजी पधराय कै सेवा करि तो तेरो कारज सिद्ध होइगो। तेरो कल्यान होइगो। तब वाने कही, जो-राज ! यामें तें कोडी खरच होंइ नाहीं। ऐसी

सेवा कृपा करि बताईए। तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो-तू मानसी सेवा करि। तामें तेरो कछू खरच न होयगो। तब वाने श्रीगुसांईजी सों कही, जो-राज! मोकों मानसी सेवा कौ प्रकार समझाइए। ता भांति हों सेवा करों। तब श्रीगुसांईजी वाकों नित्य की तथा उत्सव की रीति सब बताय दीनी। सो ताही रीति सों वह सेवा करन लाग्यो। सो एकाग्र चित्त सों श्रीठाकुरजी कों हृदय में पधराय के भक्तिभाव सों सेवा करे। सो ऐसें करत कोई उत्सव आयो। सो वह खीरि करन लाग्यो। तब खीरि सिद्ध भई। तब वामें बूरा पधराये। सो बूरा बोहोत पर्‍यो। सो पाछें काढ़िवे लग्यो। तब ताही समै श्रीठाकुरजी ने आय के हाथ पकरि कै कह्यो, जो-यामें तेरी गांठि कौ कहा खरच होत है? जो-तू पाछो काढ़त है। तब तो यह दलाल मन में बिचार्‍यो, जो-अब तो यह सब द्रव्य श्रीठाकुरजी के विनियोग में लगावनो। पाछें वाने जाय कै श्रीगुसांईजी सो बिनती करि कै श्रीठाकुरजी पधराये। तब वह सब द्रव्य श्रीठाकुरजी के विनियोग में आयो।

भावप्रकाश-यामें यह सिद्धांत जतायो, जो-पुष्टिमार्ग में ठाकुर जीव कौ जैसो स्वभाव होत हैं ता भांति वाकों अंगीकार करत हैं। सो ऐसें प्रभु कारुनिक भक्तवत्सल हैं। तातें जा प्रकार बनि आवें ता प्रकार वैष्णव कों भगवद्सेवा करनी। सेवा तें विमुख रहनो नाहीं।

सो वह दलाल श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता॥११४॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक बेनीदास, दामोदरदास, दोऊ भाई बनिया, सूरत में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश-ये सात्विक भक्त हैं। लीलामें 'वीरा' 'धीरा' इन के नाम हैं। सो वीरा-

धीरा, विसाखाजी की सखी सोरसेनी हैं तिनकी दोऊ सखी हैं। उन तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं। सो बेनीदास 'वीरा' कौ प्रागट्य और 'धीरा' दामोदरदास भए।

ये दोऊ सूरत में एक द्रव्यपात्र बनिया के जन्मे। सो वह बनिया कपड़ा की दुकान करतो। सो ये दोऊ भाई बरस दस-बारह के भए तब माता-पिताने दोऊन कौ ब्याह कियो। ता पाछें केतेक दिन में इनके माता-पिता मरे। तब दोऊ दुकान करन लागे।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर में भाईला कोठारी के घर बिराजत हते। और बेनीदास दामोदरदास दोऊ भाई सूरत में बजाज की दुकान करते। सो कपड़ा खरीदन कों राजनगर आए। सो भाईला कोठारी सों इन कौ ब्यौहार हतो। सो ये भाईला कोठारी कों मिलिवे कों असारुवा आए। तब दोऊ भाइन कों श्रीगुसांईजी के दरसन भये। सो महा अलौकिक दरसन भए। तब दोई भाई भाईला कोठारी सों कहे, जो-तुम हम कों इनके सेवक करावो तो आछौ। तब भाईला कोठारी प्रसन्न व्है श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो-राज! कृपा करि कै इनकों सरनि लीजिए। ये सेवक होंन की बिनती करत हैं। तब श्रीगुसांईजी ने उन दोऊ भाईन कों नाम सुनायो। ता पाछें दोऊ जनें केतेक दिन राजनगर में रहि कै पाछें सूरत गए। सो नित्य रात्रि कों भगवद् वार्ता मंडली में जाते।

वार्ता प्रसंग-२

सो एक दिना उन दोऊ भाईनने हाट पै बिचार कियो, जो-ब्रज में जाँई कै श्रीगुसांईजी के दरसन करे तो आछौ। ता पाछें घर आए। सो उन दोऊन के स्त्री हती। और बेनीदास बड़े हते। सो उनके दोई पुत्र हते। और दामोदरदास के एक पुत्र हतो। और तीन्यों बेटान के बहू घर में हती। सो इन दोऊ भाईनने

दुकान तथा घर बेटान के सोंपि दीनो। और कही, जो-हम तो ब्रजयात्रा कों जात हैं। सो प्रभुनकी ईच्छा तें पांच सात बरस में आवेंगे। तुम हमारी बाट मति देखियो। तुम अपने घर सावधान रहियो। सो ऐसें सब निवृत्त होइ कै वे दोऊ बाई ब्रज कों चले। सो सूधे श्रीगोकुल आए। सो उत्थापन के पहिलें प्रभु पोढि कै उठे हते। ता समै आए। सो श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-बेनीदास, दामोदरदास ! तुम कब आए? तब इन बिनती करी, जो-राज ! अब ही आए। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-बेनीदास ! महाप्रसाद तो नहीं लिये होंईगे। तब बेनीदास ने कही, जो-राज के दरसन किये बिना कैसें लेई ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-रात्रि कों महाप्रसाद यहांई लीजियो। पाछें बेनीदास, दामोदरदास एक घर लिये। तामें चीज बस्तु सब धरि कै उत्थापन के दरसन किये। पाछें सातों मंदिरन में दरसन किये।

ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के सेन के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। तब आज्ञा किये, जो-बेनीदास ! तुम दोऊ महाप्रसाद लेऊ। तब इन बिनती कीनी, जो-राज ! प्रथम तो आप आरोगो। पाछें हम लेइंगे। तब श्रीगुसांईजी आप आरोगे। पाछें इन दोऊ भाईन कों जूंठनि की पातरि धरी। सो बेनीदास दामोदरदास ने महाप्रसाद लीनो।

भावप्रकाश-या वार्ता में यह जतायो, जो-गुरुन के आरोगे पहिले सेवक कों महाप्रसाद लेनो सर्वथा उचित नाहीं।

ता पाछें श्रीगुसांईजी आप कथा कहन लागे। तब इन दोऊ भाईन ने आप के श्रीमुख तें कथा सुनी। पाछें बेनीदास

दामोदरदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-राज ! अब तो कृपा करि कै ब्रह्मसंबंध करावो तो भलो है। तब श्रीगुसांईजी ने एक ब्रत कराय कै दोऊन कों श्रीनवनीतप्रियजी के सन्मुख ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग की आरति किये। पाछें अनोसर करि श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में आइ बिराजे। तब इन भेंट करी। पाछें दोऊन बिनती किये, जो-राज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-श्रीठाकुरजी की सेवा करो। तब इन दोऊन भाईन बिनती करी, जो-महाराज ! एक बार श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै ब्रजयात्रा करिए, ऐसो मनोरथ है। पाछें राज जो-आज्ञा करें सो करें। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-आछौ है। ब्रजयात्रा करि आऊ। पाछें सेवा करियो। तब दोऊ भाई तीनि दिना श्रीगोकुल में रहि कै पाछें श्रीनाथजीद्वार गए। सो दोइ चारि दिना श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै पाछें ब्रजयात्रा किये। सो संपूरन ब्रजयात्रा करि कै श्रीगोकुल आए। तब श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-ब्रजयात्रा करि आए ? तब इन बिनती करी, जो-राज की कृपा तें करि आए। पाछें श्रीगुसांईजी ने कही, जो-अब सेवा करो। तब बेनीदास ने बिनती करी, जो-महाराज ! सेवा तो तब करें जब श्रीठाकुरजी बोलें। मांगि मांगि कै लेईं तो सेवा करें। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-भाव सौ सेवा करो। श्रीठाकुरजी तुम्हारो सब मनोरथ पूरन करेंगे। पाछें श्रीगुसांईजी ने सेवा पधराय दीनी। ता पाछें वैष्णवन सों मिलि कै सेवा

पधराय कै सेवा की रीति भांति सब सीखे। पाछें एक भाई सामग्री करे, एक भाई सिंगार करे। सो नित्य मंगला के सातों स्वरूपन के दरसन करे। तब दोई वैष्णवन कों न्योतो दे आवते। ता पाछें दोऊ सेवा में न्हाते। सो राजभोग धरि कै समय होंइ तब भोग सराय महाप्रसाद वैष्णवन कों लिवावते। ता पाछें आप लेते। या प्रकार नित्य नेम तें भाव सहित सेवा करे। सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे।

वार्ता प्रसंग-३

सो एक दिना श्रीठाकुरजी ने कही, जो-मैं तुम पै प्रसन्न भयो हूं। सो कछू मांगो। तब इन कही, जो-श्रीगुसांईजी की कृपा तें और तो सब है। परंतु एक, श्रीगुसांईजी की सेवा करिवे कौ मनोरथ है।

भावप्रकाश - यामें ठाकुरतें गुरुकी सेवा दुर्लभ दिखाए।

तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-करो। पाछें एक दिना श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-कहो बेनीदास! श्रीठाकुरजी कछू सानुभावता जनावत हैं? तब इन कही, जो-राज की कृपा तें बोलत हैं। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-कछू कही है? तब इन कही, जो-श्रीठाकुरजी ने कही, जो-कछू मांगो। तब मैंने कही, जो-श्रीगुसांईजी की सेवा करें। तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-करो। पाछें श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-तुम फूलघर, पानघर भंडार की सेवा करो। तब इन कही, जो-महाराज! सेवा तो आपकी करें और फूलघर, पानघर, भंडार की सेवा तो न करेंगे। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-हमारी खवासी करो। तब ये

दोऊ भाई प्रसन्न होंइ कै एक तो घर सोवते और एक यहां मंदिर में सोवें। सवेरे बेगि उठि कै वे हू आवते।

भावप्रकाश-यामें यह जताए, जो-रात्रि कों घर में श्रीठाकुरजी कों अकेले न छोरने काहेतें ? बालक हैं, तातें डरपे।

सो दोऊ मिलि कै कीर्तन करते। जब श्रीगुसांईजी जागें तब एक जनो तो श्रीगुसांईजी कों दंतधावन करावें। और एक सैया उठावें। बुहारी करें। पाछें दोऊ जनें श्रीगुसांईजी कों तेल लगाय न्हवावते। पाछें श्रीगुसांईजी आप तिलक मुद्रा करि कै मंदिर में पधारते। ता पाछें दोऊ भाइ जाँइ कै अपने घर न्हातें। सो एक सामग्री करे, एक सिंगार करे। पाछें राजभोग धरि कै भोग सराय कै एक तो उहां रहे। सो वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवावे। एक श्रीगुसांईजी के पास आवते। सो श्रीगुसांईजी भोजन करि कै पोढते। तब घर आय कै महाप्रसाद लेते। या प्रकार श्रीठाकुरजी कों सब सामग्री नित्य करते। जो-महाप्रसाद लेवे जानो होंइ तो हू सामग्री तो उतनी ही समर्पते नित्य घटती न करते। या प्रकार भाव सों भगवद् सेवा, गुरुसेवा, करते। रात्रि कों श्रीमुख तें कथा सुनते। वैष्णव मंडली में वार्ता सुनते।

सो एक दिन श्रीगुसांईजी इनकी सेवा देखि कै प्रसन्न भए। तब आपने कही, जो-तुम्हारे कहा मनोरथ है ? तुम कछू मांगो तब इन श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-कृपानाथ ! हमारो तो अब वैष्णवन की सेवा करिवे कौ मनोरथ है ?

भावप्रकाश - याकौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णवन की सेवा अत्यंत दुर्लभ है। ठाकुर कौ, गुरु कौ दास होंई सेवा करे। परन्तु वैष्णवन कौ दास वैष्णवन की सेवा होनी बोहोत कठिन है। सो तो जब प्रभुनकी, गुरुन की कृपा होई तबही सिद्ध होई। तातें इन दोऊ भाई श्रीगुसांईजी पास यह माँगे।

तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-सुखेन करो। पाछें श्रीठाकुरजी की सेवा करते, और नित्य दोइ वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवावते। सो अब पांच वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायवे लगे। सो नित्य एक नयो वैष्णव न्योते। और नित्य नौतन सामग्री करते। सो थोरी थोरी रितु अनुसार सामग्री करते। अब या प्रकार श्रीठाकुरजी की सेवा, गुरु की सेवा, वैष्णवन की सेवा करते। सो बरस चारि पांच करी। तब वैष्णवन प्रसन्न भए। सो कहन लागे, जो-भाई! इन दोऊ भाईन कों धन्य है। सो तीन्यो सेवा नित्य नेम पूर्वक करत हैं। तब ये दोऊ भाई बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें एक दिना श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-राज की आज्ञा होइ तो सब कुटुंब कों यहां बुलाय लें। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-भले। तब बेनीदास दामोदरदास ने अपनो सब कुटुंब सूरत तें बुलाय लियो। सबन श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै सबन कों ब्रत करवायो। पाछें ब्रह्मसंबंध करवायो। ता पछें श्रीगुसांईजी सों आज्ञा माँगि कै श्रीठाकुरजी पधराय कै सबन मिलि कै ब्रजयात्रा करी। श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। मनोरथ किये। पाछें श्रीगोकुल में आय कै सातों स्वरूपन के सातों बालकन के श्रीगुसांईजी के मनोरथ किये। पाछें थोरे से दिन रहि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-राज आज्ञा होंइ तो सूरत जाँय। तब श्रीगुसांईजी ने प्रसन्नता पूर्वक इनकों बिदा किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ कै वे अपने घर सूरत कों

गए। पाछें भलि भांति सों सेवा करन लागे। दोऊ भाई सिंगार करते। दोऊन की स्त्री सामग्री करती। दोऊन के बेटान की बहू उपर की परचारगी करती। तीन्यो बेटा व्यौहार-सेवा करते। सो राजभोग पर्यंत की सेवा करि कै वैष्णव चारि पांचन कों महाप्रसाद लिवावते। पाछें भगवद्वार्ता मंडली में जाते। या प्रकार भली भांति सों सेवा करते। और सुंदर वस्त्र और भेंट श्रीगुसांईजी कों प्रतिवर्ष पठावते। सो या प्रकार सदा भगवद् सेवा, गुरु सेवा, वैष्णव सेवा करते। श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते।

भावप्रकाश-या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-सेवा समान और कोई फल नाहीं। तातें वैष्णव कों सेवा ही में मन लगावनों। और सेवा भय प्रीति पूर्वक करनी। तो प्रभु तत्काल प्रसन्न होंई।

सो वे बेनीदास दामोदरदास श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये ? वार्ता ॥११५॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक जनार्दनदास क्षत्री, आगरे के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश-ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'चपला' है। ये बिसाखाजी की सखी सौरसेनी हैं, उन तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

सो जनार्दनदास आगरे में एक चोपड़ा क्षत्री के जन्मे। सो वह क्षत्री बोहोत भलो मनुष्य हुतो। वाके पास द्रव्य हू बोहोत हुतो। सो वा क्षत्री के घर के पास वैष्णव के घर हते। सो जनार्दनदास बरस पांच के भए तब तें वैष्णवन के घर जाइवे लगे। सो वैष्णव उन कों दैवी जीव जानि महाप्रसाद देतें। कहतें, जो-तू दैवी जीव है। तेरे पर बेगि कृपा होइगी। ऐसें करत जनार्दनदास बरस अठारह के भए। तब इन कौ विवाह भयो। सो स्त्री दैवी आई। ता पाछें केतेक दिन कों जनार्दनदास के माता-पिता मरे। तब जनार्दनदास वैष्णवन की मंडली में जाइवे लगे। भगवद् वार्ता-चर्चा सुनते।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै चार-पांच वैष्णव आगरे तें श्रीगोकुल कों श्रीगुसांईजी के दरसन कों चले। सो उन के संग जनार्दनदास चोपड़ा क्षत्री आगरे तें श्रीगोकुल कों श्रीगुसांईजी आपु के दरसन कों आए। तब जनार्दनदास कों श्रीगुसांईजी आप के दरसन भए। सो साक्षात् कोटि कंदर्पलावन्य श्रीपूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए। तब जनार्दनदास ने श्रीगुसांईजी आप सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! मोकों सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किये, हां हां तोकों नाम सुनाइ सरनि लेइंगे। जाऊ, श्रीयमुनाजी में स्नान करि आऊ। तब जनार्दनदास ने साष्टांग दंडवत् किये। ता पाछें श्रीयमुनाजी स्नान करिवे को गए। पाछें स्नान करि कै श्रीगुसांईजी पास आइ आपु सों बिनती किये, जो-महाराजाधिराज ! मोकों नाम सुनाइए। तब श्रीगुसांईजी आपु जनार्दनदास कों नाम सुनाए। और श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करवाये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर करि कै अपनी बैठक में पधारे। गादी तकियान के ऊपर बिराजें। तब सब वैष्णवन के संग जनार्दनदासने साष्टांग दंडवत् किये। और कहे, जो-मोकों तो श्रीमहाराज की चरनारविंद की सेवा में रखिये। तब श्रीगुसांईजी आपु अपनी खवासी में राखे। सो जनार्दनदास श्रीगुसांईजी की सेवा करि कै बोहोत प्रसन्न भए। तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कहते, जो-जनार्दनदासने चोपड़ा बड़े कृपापात्र भगवदीय हैं। पाछें जनार्दनदासने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज मोकों सेवा

पधराइए। तब श्रीगुसांईजी आपु जनार्दनदास के ऊपर दया करि कै प्रसन्न होंइ कै तिनके माथें पर श्रीबालमुकुंदजी की सेवा पधराई। आपु पंचामृत सों स्नान करवाए। और सब प्रनालिका सिखाए। पाछें वह आगरे आइ कै अपने घर में जनार्दनदास सेवा करन लागे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आगरे पधारे तब स्त्री कों नाम-निवेदन करवाए। सो अहर्निस चित्त सेवा के विषे रहे। उत्तम तें उत्तम सामग्री होंइ सोई आरोगावें। भांति भांति के वस्त्र आभूषन श्रीठाकुरजी आपु कों अंगीकार करावते। ऐसें करत बोहोत दिन भए। तब श्रीठाकुरजी आपु वा जनार्दनदास बिनु एक क्षन रहते नाहीं। जो चहिए सोई मांगि लेते। बातें करते। सो जनार्दनदास चोपडा कछू कामकाज कों कहूं जाते तब श्रीबालमुकुंदजी कहते, जो-मैं तेरे संग आऊंगो। तू कहां जात है ? तब जनार्दनदास श्रीबालमुकुंदजी सों कहते, जो-महाराजाधिराज ! मैं अब ही आवत हों। परि श्रीठाकुरजी आप मानते नाहीं। सो जनार्दनदास बिना बालमुकुंदजी सों रह्यो जाँइ नाहीं। और कहते, जो-जनार्दनदास ! मैं तेरे संग आऊंगो। ऐसो श्रीबालमुकुंदजी आप सों स्नेह हतो। सो जनार्दनदास श्रीबालमुकुंदजी आप सों कहते, जो-महाराजाधिराज ! मैं अबही बड़ी बेगि आवत हों। ता पाछें जनार्दनदास चोपड़ा कोई कामकाज होंइ सो करि आवते तब श्रीबालमुकुंदजी आपु कहते, जो-जनार्दनदास ! आयो ? जो-ऐसें श्रीबालमुकुंदजी आपु जनार्दनदास की देह चली तहां पर्यंत ऐसे ही किये। सो ऐसें करत बोहोत दिन भए। ता पाछें जनार्दनदास की स्त्री मूई। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप के घर

आय कै रहे।

वार्ता प्रसंग-२

और जनार्दनदास के और माधवदास कपूर सों मित्राई हती। सो माधवदास ने जनार्दनदास सों कह्यो, जो-जनार्दनदास! तुम कों श्रीगुसांईजी की आज्ञा है, सो जनार्दनदास! तुम और विवाह करो। तब जनार्दनदास ने यह कही, जो-माधवदास! सुनि भाई। तू भी सेवक और मैं भी सेवक श्रीगुसांईजी आप के हैं। सो श्रीगुसांईजी तोकों हू जानत हैं। और हम कों हू जानत हैं। सो जो तोकों आज्ञा दिए हैं तो मोकों हू आज्ञा श्रीगुसांईजी आपु क्यों नाहीं दीनी। तातें मैं कैसे विवाह करों? जो-उन की इच्छा नाहीं है। और उन की इच्छा होंइ तो तोकों कह्यो तो मोकों ही कहते। कहते कहा बेर लागत हैं? यह बात सुनि कै माधवदास चुप करि रहे। सो ऐसें ही रहे, परि विवाह नाहीं कियो। पाछें जहां पर्यंत जनार्दनदास की देह चली तहां पर्यंत सेवा करी।

सो वह जनार्दनदास श्रीगुसांईजी आप के ऐसें टेक के कृपापात्र भगवदीय हते। जो-जिन के ऊपर श्रीगुसांईजी आप सदा प्रसन्न रहते। वे जनार्दनदास आपु की सदा आज्ञा में रहे।

भावप्रकाश-या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव कों लौकिक में आसक्ति सर्वथा न राखनी। एक प्रभुन में स्नेह राखनो। उनकी सेवा करनी।

सो वे जनार्दन श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता॥११६॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक ताराचंदभाई, गुजरात में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश-ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'बचन-चातुरी' है। सो इन के

बचन में चतुराई बोहोत हैं। ये 'सोरसेनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये गुजरात में एक बनिया के जनमे। सो ता समै गाम में महामारी आई। सो यह लरिका दिन दस कौ भयो तब इन के माता-पिता दोऊ मरे। ता पाछें इन के एक काका हतो। सो वाने या लरिका कों अपनी पास राख्यो। पाल्यो पोष्यो बड़ो कियो। सो वह काका वैष्णव हतो। वाके घर में नित्य भगवद् मंडली होंई। तामें यह लरिका नित्य भगवद् वार्ता सुने। तब याके मन में आई, जो-मैं हू श्रीगोकुल जाँई श्रीगुसांईजी कौ सेवक होंउ तो आछौ। सो ऐसें करत कछूक दिन में गाम में ते एक संग वैष्णव कौ श्रीगोकुल कों चल्यो। सो वा संग में ताराचंद हू चले।

वार्ता प्रसंग-१

सो ताराचंद भाई श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आए। सो श्रीगुसांईजी आप के दरसन करि कै बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! मोकों नाम दीजिए। तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो-जाऊ, श्रीयमुनाजी में स्नान करि कै आऊ। तब ताराचंद भाई श्रीयमुनाजी में स्नान करिवे कों गए। सो स्नान करि के आए। तब श्रीगुसांईजी आप सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! मोकों अब सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी आपु वा ताराचंद भाई कों नाम सुनाए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कौ राजभोग कौ समय हतो। सो श्रीनवनीतप्रियजी कौ राजभोग सरायो। पाछें श्रीगुसांईजी आप कृपा करि ताराचंद भाई कों श्रीनवनीतप्रियजी के सन्मुख ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछें राजभोग के दरसन के किवाड़ खुले। सो ताराचंद भाई श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करि कै बोहोत ही प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग आर्ति करि अनोसर कराय आपु अपनी बैठक मैं पधारे। तब सब वैष्णव मिलि कै आए। सो श्रीगुसांईजी आप सों दंडवत् करि कै बैठे। पाछें श्रीगुसांईजी

आप सब वैष्णवन कौ समाधान कियो। ता पाछें ताराचंद भाई हू आए। सो श्रीगुसांईजी आप कों साष्टांग दंडवत् करि कै बैठें। तब श्रीगुसांईजी आप सब वैष्णवन कों बिदा करि कै आप भीतर भोजन करिवे कों पधारे। सो भोजन करि कै बीरा आरोगि कै अपनी बैठक में गादी तकियान पर बिराजे। तब श्रीगुसांईजी ताराचंद भाई कों आज्ञा किये, जो उठो! महाप्रसाद लेहू। तब ताराचंद भाईने महाप्रसाद लियो। पाछे ताराचंद भाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज! कछूक दिन राज की टहल करिवे कौ मनोरथ है। तब श्रीगुसांईजी ताराचंद भाई कों अपनी खवासी में राखे।

वार्ता प्रसंग - २

सो एक दिन ताराचंद भाई कौ मन कछूक बात पैं चल्यो। तब ताराचंद भाई कों श्रीगुसांईजी आप ने सिक्षा कीनी, जो-या बात में मन चलाइए नाहीं। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु सों ताराचंद भाईने बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज! कौन ने राज के आगें आय कै मिथ्या कह्यौ है! सो हम सों कहो। जो-मैं सुनों। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप ने कह्यो, जो-कहा रे! कहा में जानत नाहीं? जो-मैं काहू कौ कह्यो सुनों? मैं तिहारी रक्षा के लिए कहत हों। तब ताराचंद भाई श्रीगुसांईजी आपके श्रीमुख के बचन सुनि कै सिक्षा हू मानत भए। पाछें ताराचंद भाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! मेरो मन स्थिर होंई सो उपाय कृपा करि आप जनाइए। तब श्रीगुसांईजी ताराचंद भाई सों आज्ञा किये, जो-तुम "सर्वोत्तम स्तोत्र" कौ

पाठ नित्य करियो। तातें तुम्हारो सब कार्य सिद्ध होइगो। सो यह सुनि कै ताराचंद भाई बोहोत प्रसन्न भए। पाछें वा दिन तें नित्य 'सर्वोत्तम स्तोत्र' कौ पाठ करन लागे। तातें वैष्णव कों बड़ेन को बचन मान्यो चाहिए।

भावप्रकाश-या वार्ता में यह जतायो, जो-वैष्णव कों गुरुन के आगें झूठ बोलनो नाहीं। काहू बात कौ दुराव करनो नाहीं। नाँतरु अपराध होंई। बड़ेन की सिक्षा कों गुन करि कै माननो। और सर्वोत्तम स्तोत्र कौ स्वरूप जताए, जो-मन कैसो हू चंचल होंई परि श्रद्धापूर्वक सुद्ध बुद्धि सों सर्वोत्तम स्तोत्र को पाठ करें तो वाकौ मन स्थिर होंई। और उत्तम फल की प्राप्ति होंई।

सो वह ताराचंद भाई श्रीगुसांईजी आप के सेवक ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। जिन के ऊपर श्रीगुसांईजी आपु सदा ही प्रसन्न रहते। तातें उनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥११७॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी को सेवक एक मलेच्छ हतो, महावन में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'गोहनी' है। ये श्रीठाकुरजी के पाछें पाछें फिरति हैं। ऐसी स्वरूपासक्त हैं। ये भामा की सखी माधुरी हैं, उन तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

सो एक दिन 'गोहनी' ठाकुर के पाछें पाछें बन में गई, तहां ठाकुर ने इन देखी। सो ठाकुर गोहनी सों कहे, जो-गोहनी! तू श्रीदामा कों बेगि बुलाय ल्याउ। तब गोहनी ने श्रीठाकुरजी सों कह्यो, जो-महाराज ! मोतें आप कौ वियोग सह्यो जात नाहीं। तातें आप और काहू कों पठावो ता आछौ। हों तो टेंटी बिनन के मिष सास-ननद तें दुराय कै आप के दरसन कों बन में आवति हों। तातें या भेद कों कोऊ जानें तो मेरो बन में आवनो बंद होंई। तो आप के दरसन बिना मेरे प्रान रहे नाहीं। तातें महाराज मैं पराधीन हों। तब श्रीठाकुरजी ने सुबल सखा कों बुलाई कै कह्यो, जो-तू 'श्रीदामा' कों बेगि बुलाय ल्याऊ। आज एक नयो खेल खेलेंगे। सो सुबल सखाने जांइ के श्रीदामा सो कह्यो, जो-तू बेगि चलि। आज एक नयों खेल होइगो। सो श्रीदामा बेगि बेगि आय श्रीठाकुरजी कों दंडवत् कियो। पाछें खेल भयो। सो ठाकुर तो श्रमित भए। तब गोहनी बन में ते मधुर फल ल्याई सिद्ध किये। पाछें पतौवान के दोना करि तामें ले

आई। और कह्यो, जो-महाराज ! आरोगिए। सो बिनती करत मुख तें छींटा उड्यो। सो सामग्री में पर्‍यो। सो वा बात कों गोहनीनें जानी नाहीं। सों छींटा उरत श्रीदामाने देख्यो।तब श्रीदामाने गोहनी तें कह्यो, जो-दारी ! तु अपनो झूठो ठाकुर कों अरोगावति हैं ? जा म्लेच्छ योनि कों प्राप्त होऊ। तब गोहनी डरपि कै ठाकुरकों बिनती करन लागी, जो-महाराज ! हों तो जानी नाहीं। सो मेरो अपराध क्षमा करो। तब ठाकुरने कह्यो, जो-अनजान तें अपराध भयो। परि ये श्रीदामा की बानी मिथ्या कैसें होंई ? तातें म्लेच्छ योनि तो प्राप्त होइगी। पाछें तेरो उद्धार होइगो।

सो वह महावन तें उरे कोस बीस पर एक गाम है, तहां एक म्लेच्छ के जन्म्यो। सो ये बरस अठारह कौ भयो तब याके माता-पिता मरे। ता पाछें वह म्लेच्छ के एक काका हतो। सो महावन में रहतो। सो ताके घर आइ रह्यो।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप 'रमनरेती' पधारे हे। तहां आप एक वैष्णव के लरिका कों अष्टाक्षर सुनावत हते। सो नाम सुनाइ सेवक किये। तहां यह म्लेच्छ सूकी लकरी तोरन कों आयो हतो। सो वाकों श्रीगुसांईजी कौ दरसन भयो। सो महा अलौकिक दरसन भयो। तब वह म्लेच्छ अपने मन में बिचारियो, जो-मैं हूँ इनकौ सेवक होउं तो आछौ। सो वह म्लेच्छ नित्य सांझ कों श्रीगोकुल आवतो। सो श्रीगुसांईजी के दरसन करतो। पाछें रात्रि कों श्रीठकुरानी घाट ऊपर नित्य कारो कम्मर लेकै सोवतो। सो एक दिन श्रीगुसांईजी कौ जलघरा छुवाइ गयो हतो। तब श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजी न्हान कों अंधेरे में पधारे हते।

भावप्रकाश-काहेतें, जो-सास्त्र में सीतल जल सों घर में न्हानो दोष कह्यो हैं।

सो श्रीगुसांईजी न्हाइवे तों पधारे। तब अंधेरे में वा म्लेच्छ के माथे में श्रीगुसांईजी कौ चरन लाग्यो। तब श्रीगुसांईजी तीन बेर अष्टाक्षर मंत्र कहे। पाछें श्रीगुसांईजी आप न्हाय

श्रीयमुनाजी में, ता पाछें घर पधारे। पाछें वह म्लेच्छ वैष्णवन पास आइ बैठे, और वैष्णव सों कहे, जो-मैं हू सेवक हों। पाछें सब वैष्णव यह बात श्रीगुसांईजी सों पूछें। तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवन सों प्रसन्न होंइ कै सब बात कहे। पाछें कह्यो, जो-नेक दूरि बैठन दीजो। सो वह म्लेच्छ नित्य द्वार पर आंइ कै दरसन करि जाँइ। और श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार तथा परदेस जहां पधारे तहां वह म्लेच्छ हू श्रीगुसांईजी के संगही जाँइ। परंतु श्रीगुसांईजी के दरसन किये बिना वह म्लेच्छ जलपान न करे। ऐसी कृपा वा ऊपर भई। पाछें श्रीगुसांईजी आप अंतर्धान लीला दिखाए। तब वह म्लेच्छ हू श्रीगुसांईजी कौ विरह करि कै आप हू देह छोरि दियो।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-प्रभुन के (श्रीगुसांईजी के) बचन पर दृढ़ विश्वास राखें ताकौ कार्य तत्काल सिद्ध होंई।

सो वह म्लेच्छ श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए वार्ता ॥११८॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक क्षत्रानी हती, सो आगरे में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में ये 'व्रजांगना' हैं। सो राति दिन गृह के कार्य में आसक्त रहति है। सो जब प्रभु बन तें ब्रज कों आवत हैं। तब इन कों प्रभुन के दरसन होत हैं। तब यह विह्वल व्है जाति हैं। ता पाछें फेरि गृह-कारज में आसक्त रहति हैं। ये 'माधुरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये आगरे में एक क्षत्री के घर जन्मी। सो ये बरस आठ की भई। तब याकौ ब्याह भयो। सो धनी रोगी मिल्यो। सो जनम सगरो इन की सेवा करिवे में बीत्यो। पाछें ये बरस पैंतीस की भई तब याकौ धनी मर्यो। तब सब जाति के लोग लुगाई भेलें भए। तब यह क्षत्रानी बोहोत रूदन करन लागी सो जाति के सब वैष्णव हते। तिन कही, जो-बाई ! जो-कछू होनहार हतो सो भयो। अब रोइवे तें कहा होइगो ? तातें तू वैष्णव होंई भगवद् सेवा करि। तो तोकों क्लेस

न होंईगो। तब यह क्षत्रानी कहे, जो-वैष्णव कैसें होऊं ? सो तुम मोकों बतावो। तब उन कह्यो, जो-यहां कछूक दिन में श्रीगुसांईजी पधारेंगे। तब हम तोसों कहेंगे। तब तू उन के सरनि जैयो। और सेवक व्है स्वरूप सेवा पधराइयो। तब वाने कही, जो-तुम मोकों श्रीगुसांईजी पधारे तब कहियो, मैं उन की सेवक होउंगी। ता पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार तें आगरा पधारे। तब जाति की लुगाइन कह्यो, जो-बाई ! श्रीगुसांईजी पधारे हैं। तातें तेरी इच्छा होंई तो उनकी सरनि होऊ। तब वह क्षत्रानी श्रीगुसांईजी के पास आइ बिनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों सेवक करिए। तब श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करि नाम सुनाए। पाछें दूसरे दिन समर्पन कराए।

वार्ता प्रसंग-१

सो वा क्षत्रीने श्रीगुसांईजी पास नाम-समर्पन करि कै बिनती श्रीगुसांईजी सों करी, जो-महाराज ! मेरो सेवा कौ मनोरथ है। सो स्वरूप-सेवा कृपा करि कै आप मोकों पधराइ दीजे। तब श्रीगुसांईजी वा क्षत्रानी के माथे एक श्रीलालजी कौ स्वरूप पधराय सब सेवा कौ प्रकार नित्य कौ तथा उत्सव कौ बताइ दिये। सो वह क्षत्रानी श्रीलालजी की सेवा करती। परंतु वह क्षत्रानी कौ मन लौकिक में बोहोत ही रहतो। सबेरो होंइ तब कहे, जो-चारि पोंनी कांति लेऊ। फलानी तें मिलि आऊं। ऐसें नित्य वह क्षत्रानी श्रीलालजी की सेवाकों अवेर करे।

सो बहोरि श्रीगुसांईजी आगरे पधारे। तब श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-यह क्षत्रानी कौ मन लौकिक में बोहोत है। पाछें वह क्षत्रानी रात्रि कों श्रीठाकुरजी कों पोंढ़ाय कै श्रीगुसांईजी के दरसन कों आई। तब श्रीगुसांईजी वह क्षत्रानी सों कहे, जो-तोसों श्रीठाकुरजी सेवा न बनि आवत होंइ तो हमकों श्रीठाकुरजी पधराइ दे। तू अवेर बोहोत काहे कों करत है, लौकिक कार्यमें ? तब वह क्षत्रानी श्रीगुसांईजी

सों बिनती करि कै कही, जो-महाराजाधिराज ! अब तें मैं बेगि ही कियो करोंगी। पाछें फेरि वह क्षत्रानी अवेर करन लागी। तब श्रीगुसांईजी ने आगरे के वैष्णवन सों कही, जो-फलानी बाई के घर श्रीठाकुरजी हैं। सो तिनकी तुम सेवा करियो . तब उन वैष्णवन श्रीगुसांईजी सों कही, जो-महाराज ! वह बाई हम कों अपने श्रीठाकुरजी की सेवा कैसें करन देइगी ? तब उन सब वैष्णवन सों श्रीगुसांईजी कहे, जो-प्रभु कछू दिन मैं वह बाई पास सेवा न करावेंगे। उद्वेग तें प्रतिबंध होइगो।

भावप्रकाश - याकौ अभिप्राय यह है, जो-सेवा में तीन बस्तू बाधक है। उद्वेग, प्रतिबंध अरू भोग। सो उद्वेग तें प्रतिबंध होत हैं। और प्रतिबंध तें लौकिक भोग प्राप्त होत हैं। तातें दैवी जीवन कों यह तीनों बुद्धिपूर्वक त्याग करने सो बात श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप 'सेवाफल' के 'विवरण' में विस्तार सों कहे हैं।

ता पाछें कछूक दिन बीते। पाछें एक दिन सवेरो भयो। घरी दोइ दिन चढ्यो। तब वह क्षत्रानी चरखा कांतत हुती। सो ऊपर तें वाके ऊपर भीति गिरी। तासों दोऊ हाथ वाके टूटि गए। यह सुनिकै वा क्षत्रानी के घर वैष्णव आए। तब वा क्षत्रानी ने वैष्णव सों कही, जो-तुम श्रीठाकुरजी कों पधराइ ले जाउ। तब वे वैष्णव श्रीठाकुरजी कों वा क्षत्रानी के घर तें अपने घर पधराइ ले गए।

भावप्रकाश - याकौ अभिप्राय यह है, जो-जदपि या क्षत्रानी कौ जीव दैवी हतो, परि वाकी देह आसुरी हुती। और मन हु आसुरी हुतो। तातें प्रभु इन पास सेवा नाहीं कराए।

सो वैष्णव श्रीगुसांईजी के बचन स्मरन करि कै प्रीति सों श्रीठाकुरजी की सेवा करते। पाछें वह क्षत्रानी बोहोत खेद करन

लागी। सो वह क्षत्रानी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र हती। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥११९॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक भील दोइ, द्वारिकाजी के मारग में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं, लीला में ये 'पुलिदिनी' के यूथ के हैं। 'माधुरी' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें द्वारिकाजी श्रीरनछोर के दरसन कों पधारे। तहां ये भील दोइ आछे कपरा पहरि मुसाफिर बनि मारग में श्रीगुसांईजी के डेरान के पास उतरे। सो भील चोरी करन के लिये उतरे। पाछें सब कोऊ अधिकारी भंडारी सेवक टहलुवान में बरजे। तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो-रहन देहु। पाछें रात्रि कों उन भीलन कों श्रीगुसांईजी जूंठनि दीनी। तब जूंठनि लेत ही उन दोऊ भीलन की बुद्धि फिरी। सो सगरी रात्रि श्रीगुसांईजी के डेरान की चौकी दिये। पाछें भोर ही उन भीलन नें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! अब आप हम ऊपर कृपा करि कै हम कों अपने सेवक करो। तब श्रीगुसांईजी के सन्मुख ठाढ़े भए। तब श्रीगुसांईजी आप उन ऊपर कृपा करि कै उन दोऊ भीलन कों नाम सुनाय सेवक किये। पाछें श्रीगुसांईजी कहे, जो-तुम स्नान करि आवो तो तुम कों सेवक करें। तब दोऊ भील जाँइ स्नान करि आइ, हाथ जोरि, श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी होंई श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै श्रीगोकुल पधारे। तब वे दोऊ भील श्रीगुसांईजी के साथ

चौकी पहरा देत आए। तहां श्रीगोकुल में वे दोऊ भील सातों स्वरूपन के और श्रीवल्लभकुल के दरसन करि श्रीयमुनाजी स्नान करि कै अत्यंत प्रसन्न भए। पाछें वे कछूक दिन श्रीगोकुल में रहि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो-महाराजाधिराज ! हमारे मन में ब्रजयात्रा और श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन की ईच्छा है। सो आप आज्ञा देहु तो हम जांई। तब श्रीगुसांईजी आप उन सों दोऊ भीलन सों यह आज्ञा किये, जो-बोहोत आछो, करि आवो। पाछें वे दोऊ भील श्रीगुसांईजी की आज्ञा पाय कै चले। सो बनयात्रा परिक्रमा करत वे दोऊ भील श्रीगिरिराज आए। तहां परवत ऊपर जांई श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। तब तो वे दोऊ अपने मनमें अत्यंत प्रसन्न होंइ कै कहे, जो-धन्य हमारे भाग्य हैं, जो-श्रीगुसांईजी आप की कृपा तें हमकों ऐसें सुख के दरसन भए। नाहीं तो हम तो महादुष्ट दुर्बुद्धि हते। हम कों या सुख कौ दरसन कहां हुतो ? पाछें वे दोऊ भील बनयात्रा करि श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि श्रीगोकुल आय श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि बिनती किये, जो-महाराजाधिराज ! आज्ञा होंइ तो अब हम अपने देस घर कों जांइ। तब श्रीगुसांईजी उन सों यह आज्ञा किये, जो-कछू दिन श्रीगोकुल कौ सुख और हू लेहू। तब वे और हू कछू दिन श्रीगोकुल में रहे। सो सातों स्वरूपन की झांकी और श्रीवल्लभकुल की झांकी करे। श्रीगुसांईजी के श्रीमुखकी कथा श्रवन करे। पाछें एक कहे, जो-महाराज ! आपकी कृपा

तें बड़े ही सुख देखे। बोहोत ही सुख की प्राप्ति भई। नाहीं तो हम सारिखे महापतित दुष्टन कों यह सुख की प्रारब्ध कहां हुती ? सो अब आप आज्ञा देहु तो हम अपने देस कों जांइ। तब श्रीगुसांईजी उन भीलन सो कहे, जो-बोहोत आछो। पाछें वे दोऊ भील श्रीगुसांईजी कों बोहोत भेंट किये। तब श्रीगुसांईजी आप उनकों प्रसाद दे उपरेना दोइ प्रसादी उढ़ाय कै बिदा किये। उन ऊपर श्रीगुसांईजी बड़ी ही कृपा किये। सो वे दोऊ भील श्रीगोकुल तें श्रीगुसांईजी पास तें बिदा होंइ कै अपने देस घर कों चले।

सो मारग में एक ब्राह्मन वैष्णव के घर उत्सव हतो। तहां ये दोऊ भील तलाव पर उतरे हते। सो वह ब्राह्मन वैष्णव इन के तिलक कंठी देखि दोऊन कों तलाव पर तें महाप्रसाद लेन कों बुलावन आयो। तब इन दोऊन वा ब्राह्मन वैष्णव सों कह्यो, जो - हम को काहू के हाथ कौ लेत नाहीं। तब वा ब्राह्मन वैष्णव ने इन की जाति पूछी। सो इननें वा ब्राह्मन वैष्णव कों अपनी जाति बताई। तब वह ब्राह्मन वैष्णव पिछोरी फेरि कै नाच्यो। तब रसोई छोरि कै सब वैष्णव ब्राह्मन आय उन दोऊ भीलन कों ले गए। पाछें उन भीलन कों कह्यो सबननें, जो - हम हू श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। तब वे दोऊ भील महाप्रसाद वा ब्राह्मन वैष्णव के घर लिये। ता पाछें अपने देस घर कों गए। पाछें वे भील सगरे घर के मनुष्यन कों श्रीगुसांईजी के सेवक कराए। सो भील बड़े भगवदीय भए। अष्टप्रहर भगवन्नाम लेते। अपनो दुष्ट कर्म सब छोरि दिये। पाछें खेती करि निर्वाह करन लागे।

सो वे भील श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय भए। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥१२०॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक ब्रजबासी कौ छोहरा, सो बरस द्वादस कौ हुतो, वह सकरवा में रहतो, ताकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'मनोरूपा' है। ये नंदरायजी के घर की रखवाली करत हैं। ये 'नागरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये सकरवा में एक गुजर के जन्म्यो। सो बरस बारह कौ भयो तब तें ये खेत पैं जान लाग्यो। सो खेत बोवे, हल जोते। या प्रकार सब काम करे। सो एक विरक्त वैष्णव वाके घर चुकटी लेन आयो। सो याने वा विरक्त वैष्णव कों दो धोबा नाज दियो। सो वा विरक्त नें वामे तें एक धोबा नाज, एक महात्मा कों दियो। सो वह देख्यो। तब या लरिकाने वा विरक्त वैष्णव सों पूछ्यो - जो तुमने अपनो नाज दूसरे कों क्यों दियो ? वाकों हम और देते। तब वा विरक्त वैष्णव ने कह्यो, जो - खेत में नाज होत हैं तामें जीव - हत्या हू बोहोत हैं। तातें वा नाज में तें दूसरे कों देनो चाहिए। यातें वह दोष निवृत्त होंई। तब या लरिका ने बिचार कर्‌यो, जो - आज पाछें जीव- हत्या होंई ऐसो कार्य नहीं करनो। पाछें वह लरिका ने वा विरक्त वैष्णव सों पूछ्यो, जो- हमारो उद्धार होंई ऐसा मारग बतावो। हम तो आज तें जीव - हत्या होंई सो कार्य कब हू न करेंगे। तब वा विरक्त वैष्णवने कह्यो, जो - तू गोपालपुर जांइ श्रीगुसांईजी कौ सेवक होऊ। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी की टहल करि। तब तेरो उद्धार होइगो। तब वह छोहरा सकरवा तें गोपालपुर आयो। पाछें श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो, नाम पायो।

वार्ता प्रसंग - १

सो श्रीगुसांईजी कौ सेवक होंई कै वा छोहरा ने कह्यो, जो- महाराज ! अब कछू टहल मोकों बतावो। तब श्रीगुसांईजी वाकों श्रीनाथजी कौ चना कौ खेत रखावारी कों बताए। और अधिकारी भंडारी कों बुलाय के कह्यो, जो - याकों खेत पर श्रीनाथजी कौ महाप्रसाद पठायो करो। सो फागुन में खेत पक्यो। तब एक संग वैष्णवन कौ आयो। तामें अधिकारी भंडारी तो वा वैष्णवन के संग के समाधान में लागे। सो वा छोहरा कों पातरि पठवाइयो भूलि गए। सो वह छोहरा कों बोहोत भूख

लागी। तब वह खेत पर बैठ्यो गारि देई। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी बरस दस के लरिका होइ वा ब्रजबासी के छोहरा पास जाँइ कै कहें, जो- तू चना क्यों नाहीं खांइ ? भूखो है तो। गारी काहे कों देत है? तब वा ब्रजबासी के लरिका ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो - हों चना कैसे खाऊं ? ये चना तो देवदमन के हैं। पाछें प्रहर एक रात्रि गए फेरि श्रीगोवर्द्धननाथजी तरून रूप व्है ब्रजबासी के छोहरा पास चना के खेत पर आइ कै वासों कहे, जो- तू चना मोकों दे खाऊं। तब वह ब्रजबासी कौ छोहरा इन कों गारी दे कै कह्यो, जो-चना तू छुयो तो तू जानें। मैं तोकों मारूंगो। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा सेन-आर्ति पोंढायवे तांई की पहोंचि, पर्वत तें नीचे उतरि, अपनी बैठक में पधारि, गादी तकिया उपर बिराजि, वार्ता-चर्चा करत करावत अर्द्धरात्रि कों आप पोढ़े। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजी पास पधारि कै श्रीगुसांईजी सों कहे, जो - आजु वह ब्रजबासी कौ छोहरा भूखो चना के खेत पैं बैठ्यो गारी देत है। तब श्रीगुसांईजी वाही समै भंडारी रसोइया कों बुलाय उन सों खीजे। और वाही समै महाप्रसाद वाकों खेत पै पठायो। ता पाछें नित्य आपु वा ब्रजबासी के छोहरा की खबर राखते। श्रीगिरिधरजी आदि बालकन सों कहते, जो-उह ब्रजबासी के छोहरा की भूख की ठीक राखियो। और श्रीगुसांईजी आपु वाकों पातरि पठवाय कै पाछें आप भोजन करते। ऐसी कृपा वा दिन पाछें श्रीगुसांईजी वा ब्रजबासी के छोहरा ऊपर करते।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-कोऊ साँचे भाव सो प्रभुनकी सेवा करत हैं, तिनके खाइवे पीवे की चिंता प्रभु आप करत हैं। तातें वैष्णव कों साँचो व्है भाव सों

प्रभुन की सेवा करनी।

सो वह ब्रजबासी के छोहरा ऊपर श्रीगुसांईजी की तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी की ऐसी कृपा हती। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१२१॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक सन्यासी, कासी कौ बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'महामाया' है। ये 'नागरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप 'मनिकर्निका' घाट पधारि स्नान करि कै संध्यावंदन करत हुते। सो आप के साथ मनुष्य, वैभव बोहोत हुतो। डेरा, कनात, पालकी, घोरा, आदि। सो तहां एक सन्यासी आइ कै कह्यो, जो-यह ठौर तो मेरे बैठिवे की है। ये कौन है, जो-इहां बैठि संध्यावंदन करत हैं ? तब मनुष्य कह्यो, जो-यह श्रीगुसांईजी हैं। तब वा सन्यासी ने कह्यो, जो-ये कैसें गुसांई हैं ? इन के तो संग्रह बोहोत है। सब दान करि देऊ। सो यह बात श्रीगुसांईजी आप सुने। तब श्रीगुसांईजी वा सन्यासी के देखत ही जो कछू हतो वैभव सो सब ब्राह्मन कों बुलाई कै दे दियो। कछू गंगाजी में डार दियो। पाछें वा सन्यासी सों श्रीगुसांईजी आप कहे, जो-तू सन्यासी है, तातें ये कोपीन तूंबा अपने दे घालि। तब वह सन्यासी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-मैं अपने फस्त्र तूंबा दे घालूं तो मोकों फेरि कहां तें मिलें ? तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो-

हमने तो इतनो सामान ब्राह्मनन कों दान कियो और तू सन्यासी होंई कोपिन हू नाहीं दे सकत ? सो कोपिन में इतनी ममता है ! तोकों ईश्वर कौ भरोंसा हू नाहीं ? तातें तू सन्यासी कैसो ? तब वह सन्यासी लज्जत व्है रह्यो । इतने ही गोड़ देस तें नारायनदास कौ पठायो सगरो वैभव पालकी, घोरा, डेरा आदि ले कै मनुष्य सब मनिकर्निका घाट पर आए। तब उन मनुष्यन नारायनदास की ओर तें बिनती कीनी, जो - महाराज ! बेगि गौड़ देस पधारिए । तब श्रीगुसांईजी कौ वैभव फेरि पहिले जेसो व्है रह्यो । सो देखि कै वह सन्यासी श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराज ! तुम ईश्वर हो ! तुम्हारे चरनन सों लछिमी लागी है। पाछें श्रीगुसांईजी सों वह सन्यासी बोहोत ही बिनती करि कै कह्यो, जो - महाराज ! तुम साँचे गुसांईजी हो । तातें अब आप मो ऊपर कृपा करि कै मोकों अपनो सेवक करि कै कृतार्थ करो। तब श्रीगुसांईजी वह सन्यासी ऊपर परम अनुग्रह करि कै आज्ञा किये, जो - तुम स्नान करो, जटान कों मुडांय कै आओ। तब हम तुम कों सेवक करें। तब वह सन्यासी जटा मुंडाइ, स्नान करि कै श्रीगुसांईजी पास आइ हाथ जोरि कै ठाढ़ो भयो। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाकों नाम सुनाइ कै वैष्णव करि वा सन्यासी कों कृतार्थ किये। तब वह सन्यासी नाम पाय बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन किये। तब वह सन्यासी वैष्णव भयो हुतो ताकों बुलवाइ कै श्रीगुसांईजी अपने श्रीहस्त सों वाकों महाप्रसाद की पातरि

कृपा करि कै धरी। सो महाप्रसाद वह लेन लाग्यो। पाछें श्रीगुसांईजी बीरी आरोगि कै विश्राम किये। पाछें विश्राम करि उठि कै वा सन्यासी वैष्णव सों कहे, जो - अब तुम ब्रजयात्रा जाय कै करो। सो वह वैष्णव कासी तें श्रीब्रजयात्रा कों चल्यो। सो कछूक दिन में श्रीमथुराजी आय पहोंच्यो। पाछें वह वैष्णव बनयात्रा परिक्रमा कों विश्राम घाट स्नान करि कै निकर्‍यो। सो ब्रज की सोभा देखि अपने मन में बोहोत ही प्रसन्न भयो। पाछें परिक्रमा-यात्रा करत श्रीगिरिराज में आय परवत ऊपर श्री गोवर्द्धननाथजी के राजभोग की आरति के दरसन करि वह वैष्णव अत्यंत प्रसन्न भयो। पाछें श्रीगिरिराज तें परिक्रमा यात्रा करत श्रीगोकुल आय श्रीगोकुल की सोभा देखि दरसन करि कै बोहोत ही प्रसन्न अपने मन में भयो। ता पाछें वह वैष्णव श्रीगोकुलतें फेरि कासी कों चल्यो। सो कछूक दिन में कासी में आइ कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कियो। तब श्रीगुसांईजी ने वा वैष्णव सों पूछ्यो, जो - वैष्णव ! तुम ब्रज होंइ आए ? तब इन श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि बिनती करी, जो - महाराज ! आपके प्रताप सों मैं ब्रज होंइ आयो हों। सो ब्रज की बात कहां कहूं ? महा अलौकिक ही है। श्रीठाकुरजी कौ निजधाम है। पाछें वह वैष्णव ब्रजकी मानसी करतो। सो श्रीठाकुरजी वाकों अनुभव जतावन लागे।

भावप्रकाश-या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो - वैष्णव कों प्रभुन पर विश्वास राखनो। काहू वस्तू पर ममता राखनी नाहीं। सब वस्तू - पदार्थ प्रभुन की ईच्छा सों आय मिलत हैं। तातें प्रभुन पर भरोंसो राखनो।

सो वह श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१२२॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक आसकरन, नरार (गढ) के राजा, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'बिकला' है। सो बिकला श्रीदामा सखा की संगिनी हैं। ये 'नागरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - 9

सो आसकरन कों प्रथम राग पर बोहोत आसक्ति हुती। सो देस देस के कलामत गवैया आसकरन के पास आवते। सो आसकरन सब कौ समाधान करते। जहां लों रहते तहां तांई सीधो सामान पहोंचावते। पाछें जब चलते तब बिदा हू आछी करते। सो दोइसैं - चारसैं गवैया सदा आसकरन के पास गाइवे कों रहते।

सो एक दिन तानसेन ने आसकरन की बड़ाई सुनी। सो मन में बिचार्यो, जो-एकबार आसकरन के पास जांइ देखों, आसकरन कछू समुझते हैं? यह बिचार कै तानसेन आसकरन के उहां गए। सो मध्याह्न समय राजा अपनी कचहरी में बैठो है। दसबीस भले भले गवैया गावत हैं, सारंग के पद। ज्येष्ठ के दिन हैं। सो आसकरन तानसेन कों देखि कै बोहोत प्रसन्न भयो। अपने निकट बैठायो। कह्यो, तानसेन! तुम भले समय आये। कछु सारंग के पद गावो। तब तानसेन ने गोविंदस्वामी कौ पद गायौ -

राग : सारंग

कुंवर बैठे प्यारी के संग अंग - अंग भरे रंग-
बलि बलि बलि बलि त्रिभंगी जुवतिन - सुखदाई।
ललित गति बिलास हास दंपति मन अति हुलास -
बिगलित कच सुमन बास स्फुटित कुसुम निकर तेसीये सरदरेनि जुन्हाई ॥
नव-निकुंज मधुप गुंज कोकिल - कल कूजत पुंज -
सीतल सुगंध मंद पवन अति सुहाई।
'गोविंद' प्रभु सरस जोरी नव किसोर नव किसोरी निरखि मदन-फौज मौरी
छेल छबीले नवल कुंवर ब्रजकुल मनिराई।

यह पद सुनत ही आसकरन कों मूर्छा आई। सो चार घरी पाछें चैतन्यता भई। तब आसकरन ने तानसेन सों कही, जो - आज तांई मैंने ऐसो पद नाहीं सुन्यो। हजार-हजार कलामत सर्वदा मेरे पास रहे, परन्तु ऐसो विष्णुपद नाहीं गायो। पाछें आसकरन ने तानसेन सों कही, जो-यह विष्णुपद सुनि के त्रयलोक कौ राज मोकों तुच्छ दीसत है। मैं अपने राज की कहा कहूं ? तातें तानसेन तुम्हारो मन होंइ तो यह मेरो राज, भूमि, रानी, द्रव्य सब लेहु। तुम्हारो मनोरथ होंइ सो लेहु। यह सुनि के तानसेन ने कही, मैं कछू तुम्हारो राजभूमि नाहीं चाहत। मैं तुम कों देखन आयो हो। जो-राजा कछू गाइवे में समुझत है के नाहीं। बड़ाई बोहोत सुनी। सो तुम्हारी बड़ाई साँची। अब मोकों कछू चहिए नाहीं। अब मैं जात हों। यह सुनि के आसकरन ने तानसेन कों बिनती करि के बैठाये। कहे, जो-यह पद तुम अपनो करि कै गाए के कोई और कौ है ? तब तानसेन ने आसकरन सों कही, हे राजा ! ऐसो पद मोसों कोटि जन्म में हू न आवे। यह तो श्रीगोकुल में श्रीविट्ठलनाथ गुसांईजी हैं, सो साक्षात् श्रीकृष्ण

प्रगट भए हैं। तिन के अंतरंग सेवक गोविंदस्वामी हैं, उनने गायो है। मैं उन सों सिखे हों। उनसों साक्षात् कृष्ण वार्ता करत हैं, संग खेलत हैं। वे बड़े भगवदीय हैं। उनकी कृपा तें मोकों इतनो आयो है। यह सुनि के आसकरन ने कही, जो - ऐसो कछू उपाय बतावो, जो-मैं गोविंदस्वामी के दरसन करों। तब तानसेन ने कही, जो-वे गोविंदस्वामी श्रीगुसांईजी के सेवक भए बिना अपने पास काहू कों बैठन नाहीं देत। मैं हू जब श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो, श्रीगुसांईजी आज्ञा दिये, तब मोकों बताए हैं। तब आसकरन ने कही, मैं श्रीगुसांईजी कौ सेवक निश्चै होउंगो। तब तानसेन ने कही, आछौ। तब आसकरन ने कही, तुम मेरे संग चलो। श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै मोकों सेवक करावो। तब तानसेन आसकरन पास रहे। पाछें आसकरन ने सगरे गवैयान कों बिदा किये। कह्यो, अब तुम्हारे पदन सों मोकों काम नाहीं है। सो सगरे उठि गए। पाछें वृंदावनी महंत हते, तिनहू कों बिदा किये। जाउ तुम्हारे हू पद सों मेरो काम न होंइ। सो सगरे उठि गए। पाछें आसकरन राजा ने श्रीगोकुल आइवे की तैयारी करी। सो 'नरवर' सों कूच कियो। तब अपनो मनुष्य दोरायो, जो-खबरि ल्याउ। श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल होंइ तो श्रीगोकुल चलों। श्रीगोवर्द्धन होंइ तो श्रीगोवर्द्धन चलों। सो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल हते। सो मनुष्यने आसकरन कों खबरि करी, जो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल में बिराजत हैं। तब आसकरन तानसेन कों लेकै श्रीगोकुल आए। सो राजभोग- आरति श्रीनवनीत-प्रियजी की श्रीगुसांईजी ने करी। सो आसकरन दरसन करि कै मन में बोहोत प्रसन्न भए। सो वा समय गोविंदस्वामी यह

पद गावत हते।

राग : सारंग

श्रीवल्लभनंदन रूप अनूप स्वरूप कह्यो नहीं जाई।

यह कीर्तन सुनि कै आसकरन बोहोत प्रसन्न भए। तब तानसेन ने कान में कह्यो, जो-गोविंदस्वामी येही हैं। परंतु अब ही बोलियो मति। पाछें अनोसर भयो। तब आसकरन और तानसेन श्रीगुसांईजी की बैठक में आय बैठे। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर कराय कै पाछें बैठक में पधारे। गादी तकिया पर बिराजे तब आसकरन और तानसेन ने दंडवत् करी। पाछें तानसेन ने बिनती श्रीगुसांईजी सों करी, जो - महाराजाधिराज ! आसकरन आये हैं। नाम पाइवे की बिनती करत हैं। पाछें आसकरन ने साष्टांग दंडवत् करि कै बिनती करी, जो - महाराज ! जब तें जन्म्यो हूं तब तें सदा पापाचरन किये हों। कबहू भूलो करम नाहीं कियो। राज पाछें नर्क सास्त्र में कहे हैं। सो सुनि कै बोहोत भय पाय आप की सरन आए हों। मोकों दीन जानि कै अपनी सरनि राखो। मैं राजमद में कबहू कछू साधन नाहीं किये हैं। सो अब मेरी रक्षा करो। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी कों करूना आई। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों आज्ञा किये, जो-आसकरन ! कछू चिंता मति करो। प्रभु बड़े हैं सब आछी करेंगे। धीरज राखि। जाँई कै श्रीयमुनाजी में न्हाय आवो। तब आसकरन प्रसन्न होंइ कै श्रीयमुनाजी में न्हाइवे गए। न्हाय कै अपरस में आए। तब श्रीगुसांईजी नें नाम सुनायो। तब आसकरन की निर्मल बुद्धि होंइ गई। तब

आसकरन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! ब्रह्मसंबंध कराइए। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-तुम आजु ब्रत करो। राजकाज बोहोत किये हो। सो काल्हि तुम कों ब्रह्मसंबंध करावेंगे। तब आसकरन दंडवत् करि कै ब्रत कियो। पाछें दूसरे दिन राजभोग सरे पाछें श्रीगुसांईजी आसकरन कों श्रीनवनीतप्रियजी के आगें समर्पन कराये। तुलसी श्रीनवनीतप्रियजी के चरनारविंद पर समर्पी। ता समय आसकरन कों लीला सहित दरसन भए। सो आसकरन ने यह पद राग सारंग में गायो -

राग सारंग

जै श्रीविठ्ठलनाथ कृपाल।
कलिके महापतित अघरासी अपने करि कै किये निहाल ॥
पुरुषोत्तम निज कर ले दीने ऐसें दानी महा दयाल।
'आसकरन' कों अपनो करि कै पुष्टि प्रमेय बचन प्रतिपाल ॥

यह कीर्तन सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें राजभोग-आर्ति श्रीनवनीतप्रियजी की श्रीगुसांईजी करि कै पाछें अनोसर कराय कै श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। तब तानसेन ने श्रीगुसांईजी सों बिनति करी, जो-महाराजाधिराज ! आसकरन गोविंदस्वामी के कीर्तन सुनि कै एक कीर्तन के प्रभाव तें सरन आए हैं। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-गोविंद-स्वामी ऐसें ही भगवदीय हैं। इन के कीर्तन एक हू जो-कोई धारन करे ताकौ निश्चय कल्यान होइ। यह सुनि कै आसकरन ने बिनती करी, महाराज ! गोविंदस्वामी मोकों राजा

जानि कै मोसों बोलत नाहीं। सो आपु कृपा करि कै इन कों आज्ञा देऊ तो कछू गावनों मैं हू सीखुं। तब श्रीगुसांईजी गोविंदस्वामी कों बुलाई कहे, जो-गोविंददास ! आसकरन कों हू कछु सिखाओ। याकों राजमद नाहीं। आसकरन वैष्णव हैं। और तुम्हारे कीर्तन के प्रभाव सों सरनि आए हैं। और तुम्हारे कीर्तन में रुचि बोहोत है। तातें तुम इन कों जो-ये पूछे सो बताईयो। तब गोविंदस्वामी ने कही, जो-महाराजाधिराज ! आप जब जीव कों सरनि लियो चाहत हो तब अनेक उपाय करि लेत हो। सो मेरो नाम क्यों लेत हो ?

भावप्रकाश - यह कहि जतायो, जो-मैं तो आप कौ दास हूं। तातें यह प्रभाव सब आपही कौ है।

और मेरे कीर्तन में यह आसकरन कहा समुझेगो ? परि भली, अब आप आज्ञा किये हो सो कछुक बताउंगो। तब श्रीगुसांईजी कहे, तुम्हारे कछुक हू बताईवे में याकौ काम होंइ जाइगो। पाछें आसकरन और गोविंदस्वामी और तानसेन ये तीनों जनें 'रमनरेती' जाते। तहां गोविंदस्वामी ने आसकरन कों लीला कौ क्रम और प्रातःकाल तें सेन पर्यंत, और बरस दिन के उत्सव कौ प्रकार बतायो। सो एक महिना लों गोविंदस्वामी ने बतायो। पाछें गोविंदस्वामी ने आसकरन सों कह्यो, जो-अब तुम भगवद् सेवा करो। तब आसकरन ने गोविंदस्वामी कों नमस्कार करि कहे, जो-यह सब जो-कछु मोकों प्राप्त भयो सो तुम्हारी कृपा तें। तातें अब तुम जो कछू आज्ञा करो सो मोकों कर्तव्य है। ऐसें बोहोत प्रसंसा करि आसकरन और तानसेन श्रीगुसांईजी के पास चले। तब

तानसेन ने आसकरन सों कही, जो-गोविंदस्वामी ने सगरे कीर्तन कौ प्रकार बताए सो मोकों खबरि न परी। तब आसकरन ने कही, जो-गोविंदस्वामी बड़े भगवदीय हैं। सो ये जाकों बिचारि कै जितनो दान करें तिन कों तितनो होंइ। यामें हमारी तुम्हारी चले नाहीं। पाछें आसकरन और तानसेन श्रीगुसांईजी की बैठक में आय दंडवत् श्रीगुसांईजी को किये। तब आसकरन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! गोविंदस्वामी ने भगवद् सेवा करन की आज्ञा करी हैं। सो अब आप आज्ञा करो सो मैं करों। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-गोविंदस्वामी ने कही सोई तुम कों कर्तव्य है। अब तुम घर जाँई कै भगवद् सेवा करो। तब आसकरन ने बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! आप स्वरूप पधराय देऊ तो मैं सेवा करों। तब श्रीगुसांईजी एक ठाढ़ो स्वरूप हतो सो खेल के ठाकुरन में बिराजतो सो श्रीगुसांईजी ने आसकरन के माथे पधराए। और 'श्रीमोहनजी' नाम श्रीगुसांईजी धरि दिए। तब आसकरन ने बिनती करी, जो-महाराज ! दोइ भीतरीया जो-सेवा में आछी रीति भांति जानत होई सो मेरे संग करि देहु। तो मैं अपने देस में जाँइ घर में सेवा करों। तब श्रीगुसांईजी दोइ भीतरिया संग आसकरन के करि दिये। तब आसकरन श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै बिनती कीनी। जो-महाराजाधिराज ! मैं कछु जानत नाहीं। मो पर कृपा सदा राखोगे। यह दीन बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी कौ हृदय भरि आयो। तब श्रीगुसांईजी आसकरन सों कहे, तुम सुखेन घर

जाँइ कै सेवा करो। तुम कों राजकाज लौकिक बाधा न होइगी। तब आसकरन दंडवत् करि कै अत्यंत भाव-प्रीति सहित बिदा होंई तानसेन कों संग ले कै अपने घर आए। तब आसकरन ने तानसेन की बोहोत बड़ाई करी। जो-तुम्हारी कृपा तें मैं पुरुषोत्तम पाए। अब तुम आज्ञा करो सोई मैं करों। गाम धरती लेहु, मेरे पास रहो। तब तानसेन ने कही, जो-तुम्हारे ऊपर कृपा भई। और मेरे ऊपर इतनी नाहीं भई। सो मेरो अधिकार नाहीं, मेरो भाग्य नाहीं। तो मैं कहा करो ? अब तो मैं घर जाउंगो। तब आसकरन ने एक आछौ घोड़ा सुनहरी साज कौ अपने चढ़िवे कौ और हजार दोइ रुपैया तानसेन कों बोहोत बिनती करि कै दिये। सो तानसेन ले कै अपने घर आए। पाछें आसकरन आछो सुंदर मंदिर सिद्ध कराय, राज-सेवा परम प्रीति सों करन लागे। सो तनुजा वित्तजा दोऊ प्रकार सों भलि भांति सों सेवा करन लागे। राजकाज दीवान के हवाले करि दियो। सो वे आसकरन ऐसें भगवदीय भए।

वार्ता प्रसंग -२

सो आसकरन भगवद् सेवा बोहोत प्रीति सों करते। सो श्रीठाकुरजी कछू दिन में सानुभावता जनावन लागे। तब आसकरन सेवा समय तो स्वरूपानंद कौ अनुभव करते। तब आनंद पावते। पाछें अनोसर में विप्रयोग क्लेस कौ अनुभव करते। और मानसी सेवा ही नित्य करते। ऐसें करत करत कछू दिन बीते। तब दक्षिन कौ राजा आसकरन के ऊपर चढ़ि आयो, राज के लिये। सो आसकरन ने सुनी तब कही, भली भई, मैं आपुही तें राज छोरत हतो। सो यह राजा आयो है

ताकों राज दे के मैं श्रीगोकुल जाय बैठोंगो। यह मन में बिचारि के दीवान सों आसकरन ने कही, जो-तुम कछू लरिवे की तैयारी मति करियो। या राजा कों राज देनो। अपने भाज चलेंगे। तब दीवान ने कही, यह बात आछी नाहीं है। पाछें तुम बड़े हो, राजा हो, कहोगे सो करूंगो। पाछें रात्रि कों आसकरन की नींद आई। तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-आसकरन! तू भाजिवे की बिचारी है सो मोकों आछी नाहीं लागी। मैं कैसें भाजूंगो? तातें तू लरिवे जा।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो-भक्त की लाज जांई सो मोकों सुहाय नाहीं। तातें सूरदासजी गाए हैं -

'भक्तन के जीते हों जीतों भक्तन हारे हारों।'

तब आसकरन ने कही, जो-महाराज! तुम्हारी सेवा बिना कैसें रहूंगो? यह सुनि कै श्रीठाकुरजीनें कही, जो-तू मानसी सेवा करेगो सो मैं मानि लेहोंगो। और भीतरिया मेरी सेवा करेंगे। तू लरिवे कों जइयो। यह सुनि कै आसकरन उठे। सो अर्द्धरात्रि समय दीवान कों बुलाय कै कह्यो, जो-लरिवे की तैयारी करो। काल्हि दुपहर पाछें मैं हूं चलूंगो। यह सुनि कै दीवान बोहोत प्रसन्न भयो। सो सगरी फौज की तैयारी प्रातःकाल करी। पाछें प्रातःकाल उठि कै देहकृत्य करि न्हाय कै सेवा करन कों गए। सो राजभोग आरति तांई सगरी सेवा करि पाछें आसकरन बिदा होंइ श्रीठाकुरजी सों, भीतरिया दोऊन कों समुझाय कह्यो, जो-सेवा में सावधान रहियो। मोकों लरिवे जानो है। सो यह प्रतिबंध मोकों सेवा में आयो है। सो मेरे अभाग्य हैं। परंतु गए बिना न चले। तातें हम जात हैं। तुम्हारे

परम भाग्य हैं, जो-प्रभुन की सेवा में रहोगे। तब भीतरियान ने कही, जो-तुम जाऊ, हम सों जितनी बनेगी तितनी सेवा मन लगाय कै करेंगे। तुम काहू बात की चिंता मति करियो। तब आसकरन मंदिर कों दंडवत् करि बाहिर अपनी कचहरी में आए। तब दीवान ने बिनती करी, जो-सगरी फौज तैयार है। तुम्हारी ढील है। और दक्षिन के राजा की फौज अपने अमल में आय चुकी है। यह सुनि कै आसकरन ने अपने घोड़ पै असवार होंइ कै उह राजा के संन्मुख चले। सो कोस दोइ कौ बीच रह्यो। तब उह राजा ने कही, काल्हि लराई लेऊंगो। सो आसकरन ने हू डेरा उहां किये। पाछें रात्रि रहे। ता पाछें प्रातःकाल आसकरन ने दीवान सों कही, जो-मैं दुपहर पाछें लरूंगो, जो-बीच में उह राजा लरे तो तुम लरियो। तब दीवान ने कही, जो-आछो। पाछें राजा तो न्हाय कै मानसी सेवा करन बैठ्यो। ताही समै में उह राजा की फौज चढ़ी। सो लराइ होंन लागी। तब दीवान ने आसकरन सों कह्यो, जो - अब लराइ होत हैं। तुम्हारे चढ़े बिना सगरी तुम्हारी फौज भाजेगी। पाछें दुपहर के तुम चढ़ि कै कहा करोगे ? यह सुनि कै आसकरन उठि कै वागो पहिर्यो। पाग बांधी, पाछें घोड़ा पर चढ्यो। परंतु मन मानसी सेवा में लाग्यो है। मंगला तें ले सगरो सिंगार, ग्वाल तांई भावना करि राजभोग धरन लागे। सो सगरो राजभोग धरि चुके। पाछें कढ़ी को डबरा हाथ में ले धरन लागे। ताही समय एक खाड में घोड़ा कूद गयो। सो आसकरन के हाथ सों कढी को डबरा छूट्यो। सो सगरो वागा, घोड़ा ऊपर कढ़ी कढ़ी होइ गई। तब

दीवान ने कही, यह कहा? तब आसकरन ने कही, कछू नाहीं। मेरे पास कढ़ी हती। घर तें ल्यायो हतो, सो गिरी।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो भगवद्धर्म गोप्य राखनो। काहू के आगें प्रगट न करनो।

पाछें संभार कै मन कों, फेर आसकरन ने दूसरो डबरा सिद्ध करि राजभोग धर्‍यो। समय भये भोग सराय आरति करि अनोसर करि पाछें नेत्र खोलि कै दीवान की ओर देखि कै सगरी फोज लै कै उह राजा के ऊपर चढ्यो। सो उह राजा कों महाकाल स्वरूप सेना आसकरन की दीसी। सो डरप्यो। कह्यो यहां मैं न जीतोंगो। पाछें बादर होइ आये। सो उह दक्षिन के राजा की फौज में बड़े बड़े पत्थर की सिला जैसें ओरें बरसे। और आसकरन की फौज में नेन्ही बुंद आई। सो उह राजा की फौज कछू मारी गई, कछू ओरान तें मरी। सो उह राजा भाजि कै अपने देस कों गयो। अपने मन में कह्यो, जो-आसकरन के ऊपर आज पाछें कबहू उह गाम पर न जानो। पाछें आसकरन रात्रि कों घर आए। सो एक दिन श्रीठाकुरजी की सेवा अपनी देह सों आसकरन ने नाहीं करी। ताकौ महादुःख भयो। पाछें फेरि सेवा भली भांति सों करन लागे।

वार्ता प्रसंग -३

और एक दिन आसकरन के घर में चोर पेंठे। सो चोरन ने बिचारी, जो-आसकरन के ठाकुर है तहां सोने रूपे के बासन आभूषन बोहोत हैं तहां पेंठिये। सो एक दिन एक चोर दरसन में आयो। सो रसोइ घर में पेंठि रह्यो। सो सीतकाल कौ दिन हतो। सो राजा घरी चारि रात्रि पाछिली रही तब न्हाई कै

मंदिर में गए। सो उहां जाय कै मंगला करी। तब चोर ने बिचारी, जो-इह राजा कों मारिए तो गहनो वासन हाथ आवे। तब चोर ने तीर मारी। सो आसकरन की पीठ में लगि के पेट की राह पार निकरि गई। परंतु आसकरन कों कछू देह की सुधि नाहीं। ऐसो मन सेवा में तत्पर भयो। सो व्यसन अवस्था सिद्ध भई। तातें देह-धर्म बाधा नाहीं किये। देहानुसंधान छूट्यो। ताही समय दोऊ भीतरिया आए। सो चोर ने बिचारी, जो-राजा कों तीर लागी। परंतु गिर्‌यो नाहीं। और अब मैं पकरौं जाउंगो, तो मेरे प्रान जायंगे। सो रात्रि के निकरि गयो। पाछें भीतरिया ने आसकरन के पीठ में और पेट में लोहू देख्यो। तब राजा सों तीन बेर पूछी। परंतु राजा सेवा के आवेस में कछू सुन्यो नाहीं। तब भीतरिया ने दोऊ ओर राखि भरि कै बड़े कपड़ा सों फेंट कसि दीनी। और जहां जहां लोहू के टपका परे हते तहां खुरच कै खासा किये। पाछें राजभोग आर्ति राजा करि अनोसर कराय कै बाहिर आयो। तब राजा कों देह की सुधि आई। तब राजा ने भीतरिया सों कही, जो-यह मेरो फेंट क्यों बांधे ? तब भीतरिया ने कही, तुम खोलि कै देखो। तुम कों चोट लागी है। सो तीर कौ सो घाव भयो है। सो जानी नाहीं जाय। तब राजा पटुका उतार कै देखें तो तीर कौ घाव जान्यो। तब राजाने कही, यह चोर कोई आयो तिन ने मार्‌यो। सो अब यह गाम छोरि कै श्रीगोकुल जाँइ तो आछो। परंतु श्रीठाकुरजी की आज्ञा होंई तो जायो जाँय। तो श्रीगोकुल जाँय सगरे द्रव्य कौ त्याग करि एक झांपी में प्रभु कों पधराय कै

विरक्त होइ कै रहूं। मानसी सेवा करूं। जामें कोई चोर न आवे, काहू सों बोलनो न परें। यह राजकाज में बोहोत प्रतिबंध है। यह बिचारि करि कै रात्रि कों राजा सोयो। तब श्रीठाकुरजी रात्रि कों जताए, जो - राजा! अब तू मोकों पधराय कै श्रीगोकुल ले चलि। अब तेरी तनुजा वित्तजा सेवा सब होइ चुकी है। व्यसन पर्यंत सिद्ध भयो है। सो अब तू एकांत में रहि कै मानसी सेवा करियो। यह सुनि कै आसकरन बोहोत प्रसन्न होइ कै प्रभु कों दंडवत् करी। पाछें प्रातःकाल उठि कै भगवद्सेवा करी। राजभोग आर्ति करी। पाछें संपुट में श्रीठाकुरजी कों पधराय गुंजा चंद्रिका कौ सिंगार वेनु-वेत्र, झारी, इतनो लिये, और सब दीवान सों कहे, जो-सगरो द्रव्य है मंदिर कौ सो श्रीगुसांईजी के इहां पठाईयो। पाछें दोऊ भीतरियान कों बुलाय कै आसकरन ने कही, अब तुम श्रीगोकुल जाऊ, तुमने बोहोत सेवा करी। पाछें एक एक हजार रूपैया दोऊ जनेन कों आसकरन ने दे कै बिदा किये। पाछें आसकरन के एक भतीजा बरस बीस कौ हतो ताकों आसकरन ने राज दीनो। दीवान भलो मनुष्य हतो। सो दीवान कों राज कौ कामकाज सोंपि कै अकेले आसकरन एक तुंबा, एक ठाकुरजी की झांपी, धोवती-उपरेना एक, पहरि कै घर तें निकरे। पाछें मनमें आसकरन ने बिचार कियो, जो-श्रीगुसांईजी या भांति देखि कै कहूं मेरे उपर खीझे तो मैं कहा करूंगो? यह सोच मन में भयो। तब श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजी सों कहें, जो-आसकरन सगरो त्याग करि कै श्रीगोकुल आवत हैं। ताके ऊपर कछू खीझियो मति। तब

श्रीगुसांईजी कहे, जो-तुम्हारी आज्ञा है सोई हम कों कर्तव्य है। पाछें दिन दोई चारि में आसकरन आय के दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी देखि कै आसकरन सों कहे, आसकरन भली कीनी। मेरे मन में यही हुती, जो - आसकरन आवे तो आछौ है। सो अब तुम ऐसी भांति आए, जो - अब देस में जानो नहीं परेगो। और श्रीठाकुरजी कों पधरावो। तब आसकरन मन में प्रसन्न होंइ कै कह्यो, जैसी आपकी आज्ञा होइ। ता प्रकार हमें करनो। पाछें खेल के ठाकुर हते तहां आसकरन के ठाकुर कों श्रीगुसांईजी ने पधराए। पाछें आसकरन के ठाकुर के मंदिर कौ द्रव्य हतो। सो दीवान ने हुंडी करि कै लाख रुपैया की हुंडी, तामें पचास हजार मंदिर कौ, पचास हजार राजा के खजाना कौ हतो सो पठायो। तब श्रीगुसांईजी मंदिर कौ द्रव्य हतो सो तो पचास हजार श्रीनाथजी के इहां सोने के थार, कटोरा, डबरा करि पठाए।

भावप्रकाश - यामें यह जताए, जो-प्रभुन कौ द्रव्य अपने कार्य में नहीं लावनो। लावें तो बहिर्मुखता प्राप्त होंई।

और पचास हजार आसकरन की सत्ता कौ हतो, सो आपु अंगीकार किये। पाछें आसकरन एक दरसन श्रीनवनीतप्रियजी कौ और अपने ठाकुर कौ करि जाते। पाछें रमनरेती के पास टीला पर रात्रि-दिन बैठि रहते। विप्रयोग कौ अनुभव करते। मानसी सेवा करते। सो आसकरन ऐसें भगवदीय हे। सो जो कोई कीर्तन गावते तामें अपने प्रभु की छाप धरते। 'आसकरन प्रभु मोहन नागर'। मोहनजी घर के सेव्य हैं। या प्रकार आसकरन श्रीगोकुल में रहते। 'जसोदा घाट' एक बार नित्य न्हाय जाते।

वार्ता प्रसंग - ४

और एक बार होरी के दिन हते। सो आसकरन 'गोपकुआँ' तें 'जसोदा घाट' न्हाइवे कों आवत हते। इतने में रमनरेती में मुरली श्रीठाकुरजी ने बजाई। सो मुरली कौ सब्द आसकरन ने सुन्यो। सो सुनतही न्हाइवोतो भूलि गये। पाछें फेरि 'रमनरेती' गए। तहां जाँय कै देखे तो अलौकिक गोकुल नंदालय की लीला कौ दरसन भयो। सो ब्रजभक्त श्रीठाकुरजी के संग होरी खेलन कों आई हैं। सो बलदेवजी सखा गोप सहित एक ओर हैं। और एक ओर ब्रजभक्त मिलि कै होरी खेलन लागे। तहां तें एक गेल 'रावल' की श्रीस्वामिनीजी के घर की है। ता दिसा श्रीस्वामिनीजी ठाढ़ी हैं। एक गेल बलदेवजी की है। सो अपने संग के सस्त्रधारी बड़े गोप लिये ठाढ़े हैं। एक गेल महावन की है। ता दिसा नंदरायजी जसोदाजी ठाढ़े हैं। एक गेल घोख जहां गांई कौ खरिक है तहां की है। ता दिसा श्रीठाकुरजी अपनी बराबर के सखा लिये ठाढ़े हैं। परस्पर होरी खेलत हैं। सो या प्रकार आसकरन कों लीला सहित दरसन भयो। सो आसकरन कों ऐसो आनंद भयो, जो-देहदसा रही नाहीं। उन्मत्त भए दरसन करन लागे। सो हृदय सों आनंद उमग्यो। तब यह धमारआसकरन ने गाई-

राग : धनाश्री

या गोकुल के चौहटे रंगराची ग्वालि।
मोहन खेलें फाग, नैन सलोनरी रंगराची ग्वालि० ॥
नरनारीन आनंद भयो। रंग०। सांवल के अनुराग ॥ नैन० ॥१॥
दुंदुभी बाजे गहगहे। रंग०। नगर कोलाहल होंई। नैन०

उमड़्यो मानस घोखकौ । रंग० । भवन रह्यो नहीं कोई ॥ नैन० ॥२॥
डफ बांसुरी सुहावनी । रंग० । ताल मृदंग उपंग । नैन०
झांझ झालरी किन्नरी । रंग० । आवज कर मुख चंग ॥ नैन० ॥३॥
उतहि समाज गोपाल कौ । रंग० । बलजुत नंदकुमार । नैन०
रत गोपी नवजोबना । रंग० । अंबुज लोचन चारु ॥ नैन० ॥४॥
गारी देति सुहावनी । रंग० । प्रमुदित गोप कदंब । नैन०
जुवती जूथ एकत्र भए । रंग० । गावति मदन विडंब ॥ नैन० ॥५॥
रतन खचित पिचकाईयां । रंग० । कर लिये गोकुलनाथ । नैन०
तकि छिरके ता वृंद कों । रंग० । जे राधा के साथ ॥ नैन० ॥६॥
केसु कुसुम निचोय कै । रंग० । भरत परस्पर आनि । नैन०
मृगमद चोव कुमकुमा । रंग० । चारु चतुर सम सानि ॥ नैन० ॥७॥
सुरंग गुलाल उडावही । रंग० । बूका बंदन धूरि । नैन०
चढि विमान सुर देखही । रंग० । देहदसा गई भूलि ॥ नैन० ॥८॥
खेल मच्यो अति गहगह्यो । रंग० । चितवत ब्रजबधू धाय । नैन०
राधा रसिक सिरोमनि । रंग० । 'आसकरन' बलि जाय ॥ नैन० ॥९॥

या प्रकार आसकरन ने गाई । पाछें खेल होइ चुक्यो । श्रीठाकुरजी ब्रजभक्तन सहित श्रीनंदरायजी के घर पधारे । तब आसकरन उहां देखे तो रमनरेती है । और कछू नाहीं । तब आसकरन ब्याकुल होई कै महावन दोरे गए । जो - मैं फेरि लीला देखूं । सो उहां गाम के लोग सब आ मिले । तब सब लौकिक रीति देखि कै बिचार्‌यो, जो - यह लीला मेरे मनोरथ सों कैसें देखोंगो ? जब प्रभु अनुग्रह करेंगे तब दरसन होइगो । पाछें आसकरन 'जसोदा घाट' तीसरे प्रहर न्हायवे कों आए । न्हाय कै श्रीगुसांईजी के दरसन करिवे कों आसकरन आए । सो उत्थापन कौ समय भयो हतो । श्रीगुसांईजी गादी तकिया पै बिराजे हते । न्हाइवे की तैयारी हती । ताही समय आसकरन आय कै दंडवत् किये । तब श्रीगुसांईजी आसकरन कों देखि

कै पूछे, जो-आसकरन ! आज तुम प्रातःकाल दरसन कों नाहीं आये, सो या समय आये, सो क्यों ? तब आसकरन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! मैं प्रातःकाल गोपकुआँ की ओर गयो हतो। पाछें तहां तें जसोदा घाट न्हाइवे कों चल्यो। सो मारग में श्रीठाकुरजी की मुरली कौ सब्द सुन्यो। सो मैं रमन रेती में गयो, तहां अलौकिक लीला देखी। आप की कृपा तें होरी के खेल कौ मैं दर्सन पायो। तहां यह धमार गायो। सो जब खेल होइ चुक्यो तब मैं कछु देख्यो नाहीं। पाछें महावन गयो। सगरे ढूंढ्यो। सो फेरि दरसन न भये। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी कहे, जो-प्रभु तुम्हारे ऊपर प्रसन्न होइ कृपा करि कै दरसन दिए हैं। सो इहां नित्य विहार करत हैं। अपने चाहे तें मिले नाहीं। जब आप के मन में होइ तबही दरसन देहि। सो तुम कों फेरि हू दरसन होइंगे। तुम्हारो हृदय सुद्ध है। यह सुनि कै आसकरन ने दंडवत् करि बिनती करी, जो-महाराज ! यह सब आप के चरनकमल कौ प्रताप है।

वार्ता प्रसंग - ५

और एक समय आसकरन श्रीगुसांईजी के दरसन करन संध्या - आर्ति समै आए। सो ता दिन श्रीगुसांईजी आसकरन कों आज्ञा कीनी, जो - आसकरन ! सेन समै पोढायवे के कीर्तन तुम करियो। चले मति जैयो। सो संध्यार्ति कौ दरसन आसकरन करि कै जगमोहन में बैठे रहे। सो पाछें सेनभोग आयो। तब आसकरन कों ब्रजभक्तन की सहचरिन कौ दरसन भयो। सो सहचरी सब श्रीठाकुरजी सों प्रार्थना करति हैं, जो-हमारी स्वामिनी सगरी सामग्री सिद्ध निकुंज में करि राखे हैं,

सो तुम पधारि कै मनोरथ पूरन करो। यह सगरो अनुभव आसकरन कों भयो। तब सेन समय केदार राग में आसकरन ने यह कीर्तन गायो -

राग : केदारो

तुम पौढो हों सेज बनाऊं।
चाँपों चरन रहों पाटीतर मधुरे सुर केदारो गाऊं।
सहचरी चतुर सबे जुरि आई दंपति सुख नैनन दरसाऊं।
'आसकरन' प्रभु मोहन नागर यह सुख स्याम सदा हों पाऊं।

यह कीर्तन आसकरन ने गायो। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों पौढ़ाय अनोसर कराय कै अपनी बैठक में पधारे। तब आसकरन ने दंडवत् कीनी। तब श्रीगुसांईजी आसकरन तें कह्यो, जो-भलो कीर्तन गायो। तब आसकरन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! आपु कृपा करि कै मोकों सेन समय कौ अनुभव करायो। तब मैं कीर्तन गायो। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों आज्ञा किये, जो-पौढिवे के समय दोय कीर्तन तुम नित्य करियो। ता दिन तें आसकरन सेन समय के कीर्तन करते। एक मान कौ, एक पौढिवे कौ। सो या भांति आसकरन के ऊपर श्रीगुसांईजी अनुग्रह करते। श्रीठाकुरजी अनुभव करावते।

वार्ता प्रसंग - ६

और एक समय आसकरन श्रीगुसांईजी के संग श्रीजीद्वार गए। तहां चतुर्भुजदास मान कौ कीर्तन भोग समय गावत हते।

राग : नट

राधे तू मान मदनगढ कियो।
वाकौ कोट ओट घूंघट कौ नाहिंन जात लियो।
पठई बसीठ इते इतनी तें कोऊ न उत्तर दियो।
'चतुर्भुजदास' लाल गिरिधर कौ अधर-सुधारस पियो।

यह सुनत ही आसकरन कों मूर्छा आई। सो चारि घरि पाछें चैतन्यता भई। पाछें सेन आर्ति समय आसकरन की मूर्छा बीती। सो सेन आर्ति के दरसन आसकरन ने श्रीनाथजी के किये। मन में बोहोत ही आनंद पायो। पाछें अनोसर कराय के श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। तब सगरे भगवदीय बैठकमें आए। आसकरन हू तहां बैठे। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीसुबोधिनीजी कहे। सो कथा सुनि कै सगरै वैष्णव, आसकरन बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें आसकरन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! चतुर्भुजदास भोग के समय मान कौ कीर्तन गावत हते। सो इनकों उह लीला कौ अनुभव होत है ? तब यह सुनि कै श्रीगुसांईजी कहे, आसकरन ! तुम जानत नाहीं। चतुर्भुजदास कों तो कुंभनदासजी सारिखे भगवदीय श्रीआचार्यजी के अंतरंग सेवक, तिनके संग तें चतुर्भुजदास कों रहस्य लीला कौ अनुभव होंइ सो उचित ही है। यह सुनि कै आसकरन ने कही, जो-कुंभनदास सों मिलनो। पाछें दूसरे दिन प्रातःकाल कुंभनदास मंगला के दरसन कों आए। तब आसकरन ने जैश्रीकृष्ण किये। सो श्रीकृष्ण-स्मरन सुनत ही कुंभनदास के

रोम रोम में आनंद भयो। नेत्रन तें अश्रुन की धारा चली। सो आसकरन देखि कै चकित होइ रहे। कहे, भगवन्नाम सुनत जिन कों इतनो प्रेम प्रगट भयो। तिन कों अनुभव में कहा कहनो ? पाछें आसकरन चतुर्भुजदास मिलि कै कुंभनदास कौ संग दिन पांच करे। सो कुंभनदास के संग तें आसकरन कौ भगवद्भाव बोहोत बढ्यो। सो आसकरन हू बोहोत पद रहस्य लीला के किये। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल में पधारे तब आसकरन श्रीगोकुल आए।

सो आसकरन श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिए। वार्ता ॥१२३॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक मोची द्वारिका के मारग में एक गाम में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त है। लीला में इनको नाम 'ब्रह्मानंदिनी' है। ये 'शशीकला' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीरनछोरजी के दरसन कों श्रीद्वारिकाजी पधारे। तब मारग में यह मोची रहत हतो। ता गाम के बाहिर श्रीगुसांईजी आप के डेरा भए हते। सो श्रीगुसांईजी रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि समयानुसार भोग सराइ आप भोजन करि आचमन करि बीरी आरोगि कै गादी तकिया ऊपर बिराजे हते। सब सेवक टहलुवा महाप्रसाद ले चुके हते। ता समै यह मोची उहां आए निकस्यो। तहां याकों श्रीगुसांईजी कौ दरसन भयो। सो साक्षात् पूरन

पुरुषोत्तम कौ दरसन भयो। तब यह अति आनंद पाइ श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि दो ऊ हाथ जोरि बिनती करि के कह्यो, जो-महाराज! आपु कृपा करि कै मोकों अपनो सेवक करिये। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि वा मोची कों नाम सुनाइ कै सेवक किये। श्रीगुसांईजी वा मोची कों आज्ञा किये, जो-तू कहूं तें भगवत्स्वरूप ले आऊ। ताकी तू सेवा करि! तब वह मोची श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराज! मेरे एक श्रीसालिग्रामजी कौ स्वरूप है। तब वह सालिग्रामजी के स्वरूप कों मँगाय, ताकों श्रीगुसांईजी पंचामृत सों स्नान कराइ, पाट बैठारि कै उनकी सेवा करिवे की आज्ञा किये। पाछें आप श्रीरनछोरजी के दरसन कों श्रीद्वारिकाजी पधारे। सो वा मोची की आसक्ति तों श्रीगुसांईजी में भई है। सो वह मोची सालीग्रामजी में श्रीगुसांईजी की भावना करि भगवत्सेवा करिवे लग्यो। सो तिलक छापा करे। सुंदर उज्वल वस्त्र पहिरे, धोती उपरेना। और कछू पहिरे नाहीं। ब्राह्मन की नांई रहन लाग्यो। तब वाकों गाम के ब्राह्मन सब मिलि कै दुःख देन लागे। कहे, जो-तू सूद्र होंई कै ब्राह्मन की चालि क्यों चलत है? तब यानें कह्यो, जो-मैं हूं ब्राह्मन हौं। तब ब्राह्मनन कही, जो-कछूं छाछ कौ दूध होत है य तब यानें कही, जो-प्रभुन की कृपा होंई तो छाछ कौ हू दूध होंई। प्रभु सर्व करन समर्थ हैं। तब ब्राह्मनन कही, जो-हम देखें तो माने। तब वाने छाछ मँगाई। पाछें प्रभुन सों बिनती कीनी, जो-महाराज! श्रीगुसांईजी के संबंध करि, जो-हों ब्राह्मन भयो हों तो या छाछ कौ दूध करि दीजो। ता

पाछें घरी एक पाछें देखें तो छाछ कौ दूध भयो है। तब तो सब ब्राह्मन आश्चर्य करन लागे। पाछें वा दूध की खीरि करि सब ब्राह्मन कों खवाय बिदा किये। तब सब वा मोची कों दंडवत् करि अपने अपने घर गए। ता दिन पाछें वा मोची कों कोऊ दुःख न देतो। सब कोऊ उन कौ बोहोत आदर करते।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव कौ स्वरूप महा अलौकिक है। काहे तें, जो-वैष्णवन के हृदय में परब्रह्म श्रीकृष्ण साक्षात् सदासर्वदा बिराजत हैं। तातें उन में अलौकिक ब्राह्मनत्व सिद्ध है।

सो यह मोची श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें उन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१२४॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक सेठ, आगरे में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'उल्लासिनी' है। ये 'शशीकला' ते प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये आगरे में एक द्रव्यपात्र बनिया के जन्मे। सो वा बनिया कौ व्योहार में रूपचंदनंदा सों बोहोत मिलाप रहतो। सो रूपचंदनंदा की आचार क्रिया देखि वह बनिया रूपचंदनंदा सों बार-बार कहे, जो-मोकों तुम्हारो मार्ग आछौ लागत है। तातें मोकों वैष्णव करो। परि रूपचंदनंदा या बात कौ कछू उत्तर दे नाहीं। काहेतें, जो-रूपचंदनंदा जाने, जो दैवी होइगो तो आपु ही तें सरनि होइगो। पाछें कछूक दिन में श्रीगुसांईजी रूपचंदनंदा के घर पधारे। तब वह बनिया श्रीगुसांईजी के दरसन पायो। तब वा बनिया ने रूपचंदनंदा सों कह्यो, जो-अब मोकों श्रीगुसांईजी कौ सेवक कराइए। तब रूपचंदनंदा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! यह बनिया सेवक होन की कहत है। तब श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करि नाम निवेदन कराए। पाछें वह बनिया घर आइ अपनी स्त्री-बेटा दोऊन कों रूपचंदनंदा के घर ल्यायो। पाछें उन कों श्रीगुसांईजी के सेवक कराए। नाम-निवेदन करावाए। तब वे दोऊ वैष्णव भए। पाछें ये तीनों रूपचंदनंदा के घर नित्य जाँइ भगवद्वार्ता सुने। ता पाछें कछूक दिन में वह बनिया और वाकी स्त्री दोऊ मरे। तब वाकौ बेटा घर में अकेलो रह्यो। सो वाकौ ब्याह तो भयो नाहीं हतो। सो वानें अपने मन में बिचार कियो, जो-अब संसार में परनो उचित नाहीं। प्रभुन ये सुंदर देह दीनी है। सो तो उन की सेवा के तांई दीनी है। तातें भगवत्सेवा करनी। सो बहोरि श्रीगुसांईजी आगरा पधारे तब या सेठ ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! कृपा करिं मोकों

भगवत्सेवा पधराई दीजिए। तो हों सेवा करों। मेरो यह मनोरथ है।

वार्ता प्रसंग - १

सो उह सेठ के माथें श्रीमदनमोहनजी की सेवा श्रीगुसांईजी ने पधराई। सो उह सेठ के द्रव्य बोहोत हुतो। सो उह सेठ राजसेवा करतो। सो उह सेठ कौ चाकर हतो। सो साग फलफलाहरी आछी नाहीं ल्यावतो। सो सस्ती लेतो। जामें पैसा थोरे लगें, बस्तु बोहोत आवे। सो उह सामग्री आछी नाहीं आवती। सो उह सेठ नित्य अपने मनुष्य सों कहतो, जो-तू आछी सामग्री उत्तम तें उत्तम क्यों नाहीं ल्यावे ? पैसा अधिकी लागे तो मेरे लगेंगे। तू उत्तम तें उत्तम ल्याइओ। या प्रकार सेठ नित्य कहे। परंतु उह मनुष्य के मन में आवे नहीं। सो सेठ ने मन में बिचारी, जो-या मनुष्य कौ सेवा में काम नाहीं। सेवा में कोई वैष्णव होई तो सामग्री उत्तम आवे। सो उह गाम में एक वैष्णव चुकटी मांगतो। सो मध्यान्ह के समै सेठ के घर चुकटी लेन आयो। तब सेठ ने वैष्णव सों बिनती करी, जो-वैष्णव एक दुःख मेरे है। सो मैं तुम सों कहत हों। तुम्हारो मन प्रसन्न होइ तो मानियो। तब उह वैष्णव ने कही-तुम कहो। मोसों बनेगो सो मैं करूंगो। तब सेठ ने कही, मेरो चाकर है, सो सागफल मेवा आछौ बाजार तें नाहीं ल्यावत। मैं बोहोत कहि पचिहार्‍यो। सो तुम अपने श्रीठाकुरजी कों मेरे श्रीठाकुरजी के पास पधरावो। और तुम सागघर की सेवा करो। तो आछो है। तब उह वैष्णव ने कही, आछौ। तुम प्रसन्न होउगे तो ऐसो करूंगो। पाछें उह विरक्त ने अपने

श्रीठाकुरजी कों सेठ के घर पधराए। पाछें सागघर की सेवा करन लागे। सो आगरे में आछें तें आछौ साग फलादि मेवा जो आवतो सो महेंगे तें महेंगो ले आवतो। सो सेठ बोहोत उह विरक्त के उपर प्रसन्न रहतो। पाछें सेठ ने अपनो द्रव्य कौ कोठा उह विरक्त कों सोंपि दियो। और कह्यो, जो-सामग्री ल्याऊ सो दाम तुम ही दीजो। दुपहर पाछें हम कों लिखाय दीजो। सो उह विरक्त अपने मन-मानतो साग (और) आछी आछी सामग्री मेवा, फल ल्याई दाम आपु चुकाय देतो। पाछें राजभोग-आर्ति पाछें, महाप्रसाद लिये पाछें, सब सेठ कों लिखाय देतो। सो सेठ प्रसन्न होइ कै लिख लेतो। ऐसें ही करत बोहोत दिन बीते। पाछें एक दिन कार्तिक कौ महिना हतो। ता दिन एक खरबूजा बोहोत सुंदर एक मेवाफरोस ल्यायो। सो उह वैष्णव देखि कै बोहोत प्रसन्न भयो। कह्यो, आजु काल्हि की रितु में खरबूजा कहां मिले ? सो यह फल प्रभु अंगीकार करें तो आछौ है। पाछें उह विरक्त ने उह खरबूजा कौ मौल पूछ्यो। सो उह मेवा-फरोस ने एक रुपैया कह्यो। तब वैष्णव ने कही आछौ, एक रुपैया देऊंगो। यह फल मोकों दें। ता ठौर एक मुगल ठाढ़ो हतो। सो उन कह्यो, मैं दोइ रुपैया देऊंगो। खरबूजा मैं लेऊंगो। तब वैष्णव ने कही मैं पांच रुपैया देऊंगो। तब मुगल ने दस रुपैया कहे। तब वैष्णव ने एक सौ रुपैया कहे। तब मुगल पांच-सौ रुपैया तांई आयो। तब वैष्णव ने रिस करि कै हजार रुपैया कही। तब मुगल हारि कै चल्यो गयो। तब वैष्णव उह मेवा-फरोस कों सेठ के घर ल्याय कै

हजार रुपैया की थेली मेवा-फरोस कों निकरि दियो। सो मेवा-फरोस रुपैया लै चल्यो गयो। पाछें उह वैष्णव खरबूजा लै कै सागघर में धर्‍यो। और हू सगरो साग फलादि मेवा धर्‍यो। पाछें राजभोग आर्ति कौ समै भयो। सो दोऊ जनें सेवा सों पहोंचि श्रीठाकुरजी कों अनोसर कराए। पाछें सेठ और विरक्त महाप्रसाद लेइ बैठे। तब विरक्त ने कही, साग-फलादि लिखि लेऊ। तब सेठ कह्यो, भले। पाछें उह विरक्त लिखान लाग्यो। सो सेठ लिखन लागे। सो सगरे साग लिखाय कै मेवा लिखायो। मेवा लिखाय कै पाछें फलादि लिखायो। तामें हजार रुपैया कौ खरबूजा एक विरक्तने लिखायो। सो जैसें सगरी सामग्री सेठ ने लिखी ताही भांति उह हजार रुपैया कौ खरबूजा हू सेठ ने लिख लीनो। यह नाहीं पूछ्यो, जो-हजार रुपैया एक खरबूजा कौ कौन भांति दीनो। सेठ के मन में यह निश्चय विश्वास है, जो वैष्णव करें सो सांची करेंगे। आछी करेंगे। ऐसो सरल सुभाव सेठ कौ हतो। पाछें सगरे साग लिख चूके तब दोऊ जनें एक घरी सोए। सो सिज्या मंदिर तें श्रीठाकुरजी उठि कै सागघर में पधारे। सो उह खरबूजा हतो ताकों ले कै अपने निजमंदिर में पधारे। खरबूजा सों खेलन लागे। पाछें उत्थापन सों दोइ घरी पहिले कोऊ जनें भगवद्वार्ता करि कै उठे। यह नेम दोऊ जन कौ हतो। सेवा के समय सेवा करे। पाछें महाप्रसाद ले कै दुपहर के दोइ घरी एक घरी सोवें। पाछें उठि कै भगवद्वार्ता, श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के ग्रंथ देखे।

सो जब उत्थापन में दोइ घरी की ढील रही तब दोऊ जनें उठि कै न्हाये। सो सेठ तो न्हाय कै मंदिर में आयो। और उह विरक्त न्हाय कै उत्थापन की सामग्री सिद्ध करन के लिये सागघर में आयो। सो सागघर में खरबूजा कों नाहीं देख्यो। तब उह विरक्त के मन में महा दुःख भयो। मन में कह्यो, जो-देखो ! मैं सैठ कों हजार रुपैया कौ खरबूजा लिखायो। सो सेठ ने कछू पूछ्यो नाहीं। सो उह खरबूजा सेठ जब न देखेगो तब यह जानेगो, जो-खरबूजा कौ नाम लै कै विरक्त ने हजार रुपैया लियो। और देखो, मैं हजार रुपैया खरच के खरबूजा ल्यायो। सो प्रभु अंगीकार न कियो। तातें यह मैं जानत हों, जो-मैं महादुष्ट हों। दोष तें भर्‌यो हों। सो मेरी ल्याई बस्तू प्रभुन कौन प्रकार अंगीकार करत होइंगे ? ऐसी भांति उह विरक्त मन में बोहोत खेद पायो। पाछें और मेवा फलादिक नित्य करत हते सो ताही भांति सँवारि कै उह विरक्त आयो, मंदिर में। पाछें सेठ ने उत्थापन समै किवाड़ मंदिर के खोले। तो श्रीठाकुरजी सिंघासन ऊपर हाथ में खरबूजा लिये बिराजे हैं। सो देखि कै सेठ बोहोत ही मन में प्रसन्न भयो। तब सेठ ने वैष्णव सों कह्यो, जो-वैष्णवजी ! तुम आजु खरबूजा ऐसें स्नेह सों ल्याये, जो-श्रीठाकुरजी अपने श्रीहस्त कमल में लिए बिराजे हैं। तुम दरसन करो। सो उह विरक्त दरसन करि कै मन में बोहोत प्रसन्न भयो। सगरो दुःख हृदय में भयो हतो सो गयो। आनंद पायो। तब श्रीठाकुरजी उह सेठ सों कहे, जो-तू धन्य है। जो-वैष्णव सों पूछे नाहीं, जो-हजार रुपैया कौ एक खरबूजा कौन

प्रकार ल्यायो ? सो तेरे मन में ऐसा वैष्णव पर विश्वास है। सो मैं दोऊन के ऊपर प्रसन्न हों। तुम चाहो सो मांगि लेहु। तब सेठने कही, जो हम कों तो यही चाहिए, जो-वैष्णव पर सदा याहू तें अधिक भाव रहे। कबहू वैष्णव पर अभाव न होई। यह सुनि कै श्रीठाकुरजी सेठ के ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। पाछें उह विरक्त सों श्रीठाकुरजी ने कही, जो-मैं तिहारे ऊपर हू बोहोत प्रसन्न हूं। जो-तू मेरे लिये हजार रुपैया एक खरबूजा कौ दिये,। सो मांगि। तब उह वैष्णव ने कही, महाराज ! मैं यह मांगत हों, जो-इह सेठ कौ संग मोकों न छूटे। यह वैष्णव के संग तें मेरी बुद्धि निर्मल भई है। सो सदाई हम इन याही प्रकार सों निर्वाह होंई। यह सुनि कै श्रीठाकुरजी कहे, ऐसें ही होइगो। पाछें सेठ ने श्रीठाकुरजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! खरबूजा देहु तो सँवारि ल्याऊं। तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-यह खरबूजा मोकों बोहोत प्यारो है। तातें आज मेरे पास रहन देहु। मैं वासो खेलत हों। काल्हि उत्थापन समै सँवारियो। यह सुनि कै सेठ ने श्रीठाकुरजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! काल्हि तांई खरबूजा बिगरि जायगो। यह सुनि कै श्रीठाकुरजी ने कही, जो-अब मेरो श्रीहस्त लाग्यो। अब यह नाहीं बिगरेगो। तू चिंता मति करे। तब सेठ ने दंडवत् करि पाछें हाथ धोइ उह नित्य की सामग्री उत्थापन की हती सो भोग धरे। पाछें नित्य की नांई सेन पर्यंत पहूँचे। पाछें श्रीठाकुरजी कों सेन कराय अनोसर करि पाछें सेठ बाहिर आयो। तब सेठ ने वा वैष्णव सों कही, जो-तुम्हारो धन्यभाग्य है। सो

तुम्हारी ल्याई वस्तू ने श्रीठाकुरजी या प्रकार अंगीकार करत हैं। तब वा विरक्त वैष्णव ने सेठ सों कही, जो-तुम धन्य हो। सो वैष्णव के ऊपर ऐसो दृढ़ विस्वास राखत हो। तब सेठ ने कही, जो-मेरो कहा है ? यह सब द्रव्य तुम्हारो ही है। पाछें दोऊ वैष्णव महाप्रसाद ले भगवद् वार्ता करन बैठे। सो अर्द्धरात्रि गई ता पाछें सोए। सो घरी दोइ रात्रि पाछिली रही, तब दोऊ जनें उठि कै देह कृत्य करि न्हाय कै सगरी सेवा राजभोग लों पहोंचे। पाछें उत्थापन के समै सेठ और उह विरक्त न्हाये। सो सेठ मँदिर में न्हाय कै गये। विरक्त ने नित्य के उत्थापन की तैयारी करी। सो वह खरबूजा समारि कै श्रीठाकुरजी कों भोग धर्‌यो। सो ताही समय सेठ ने भोग समय बड़ो उत्सव कियो। श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी की भेंट काढ़ी। सो श्रीगोकुल कों पठाई। और श्रीठाकुरजी कों बोहोत सामग्री आरोगाई। पाछें सब गाम के वैष्णव बुलाय कै महाप्रसाद लिवायो। तब रंच रंच खरबूजामें तें सब कों धर्‌यो। सो बोहोत अद्‌भुत स्वाद आयो। परम आनंद भयो।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव पर विश्वास राखनो। वैष्णव कौ संग करनो। तातें प्रभु तत्काल प्रसन्न व्है।

सो उह सेठ तथा विरक्त वैष्णव दोऊ श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। सो इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१२५॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वैष्णव हुतो, सो गुजरात में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'दोहिनी' है। ये 'शशिकला' तें

प्रगटी हैं। तातें इनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात कों पधारे हुते। तब याकों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए। तब वाने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मोसों नाम सुनाइये। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-तुम स्नान करि कै आवो। तब वह स्नान करि कै आयो। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै नाम सुनायो। ता पाछें निवेदन करायो। तब वा वैष्णव ने बिनती कीनी, जो-महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-हम तोकों भगवत्सेवा पधराय देत हैं। ताकी तू सेवा करियो। और प्रभुन पर भरोसा राखियो। प्रभु सर्व करन समर्थ हैं। तातें उनकी कृति में अविश्वास सर्वथा मति करियो। तब वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सो बिनती कीनी, जो-महाराज ! मेरे मन में एक संदेह है। सो आप सों निवृत्त होइगो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-पूछि, कहा संदेह है ? तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो-महाराज ! प्रभु अपने निकट रहिवे वारे की तो सुधि लेत हैं। परि ये जो दूर दूर देसांतर में रहत हैं तिनकी सुधि कौन लेत होइगो ?

तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों कहे, जो-सुनि ! श्रीठाकुरजी कौ नाम ईश्वर है। विस्वंभर है। जो मनकी बात नाहिं जानि तो ईश्वर नाम काहे कों कहनो परे ? तातें श्रीठाकुरजी बड़े दयाल हैं सब की रक्षा करत हैं। ये बचन श्रीगुसांईजी के सुनि कै वह बोहोत प्रसन्न भयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने वा वैष्णव कों एक

लालजी कौ स्वरूप सेवा करिवें कों पधराय दियो। पाछें सेवा की सब रीति भांति समुझाइ कह्यो, जो-इन की सेवा तू नीकी भांति करियो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप तो श्रीगोकुल पधारे। और वह वैष्णव तो श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान श्रीठाकुरजी की सेवा करन लाग्यो। सो तन्मय होइ कै श्रीठाकुरजी की सेवा करतो। ऐसें करत बोहोत दिन भए तब श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे। जो-चहिए सो मांगि लेते।

भावप्रकाश - या वार्ता में यह जतायो, जो-वैष्णव कों प्रभुन पर दृढ़ भरोंसो राखनो। प्रभु सर्व करन समर्थ है। तातें लौकिक वैदिक की चिंता सर्वथा न करनी। और भगवत्सेवा तन्मय होंई के करनी।

सो यह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१२६॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक दामोदर झा वडनगरा ब्राह्मन, बडनगर में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'इंदप्रभा' है। ये 'नीला' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

सो ये गुजरात में बडनगर गाम है, तहां एक नागर ब्राह्मन के प्रगटे। सो वह ब्राह्मन सैवी हतो। सो दामोदरदास झा बरस आठ के भए। तब तें ये विद्या पढन लागे। सो विद्या बोहोत पढे। बड़े पंडित भए। पाछें बरस बाइस के भए तब इनके माता-पिता मरे। सो वह अकेले ही रहे। सो वा गाममें सैवी बोहोत हुते। और वैष्णव थोरे हुते।

वार्ता प्रसंग - 9

सो दामोदर झा वैष्णवन कों टीलूआ कहतो। और कहतो, जो-यह मार्ग वेदमूलक नाहीं है। सो जब बडनगर के वैष्णव श्रीगोकुल आए, श्रीगुसांईजी के दरसन कों तब सब वैष्णवन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज !

बडनगर में एक दामोदर झा नागर बडनगरा है। सो आपकों बड़ो पंडित माने हैं। सो वैष्णवन कों टीलूआ कहत हैं। और यह कहत हैं जो-यह मार्ग वेदमूलक नाहीं है । तातें महाराजाधिराज! याकों कछू कह्यो चाहिए। ता पाछें वैष्णव तो श्रीगुसांईजी आपके दरसन करि कै बडनगर अपने घर कों आए। ता पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी कों पधारे, श्रीरनछोरराइजी के दरसन कों। सो रनछोरराइजी के दरसन करि कै जब श्रीद्वारिकाजी तें पाछें फिरे तब श्रीगुसांईजी आप बडनगर पधारे। सो बडनगर में एक वैष्णव के घर उतरे। सो श्रीगुसांईजी आप भोजन करि कै गादी तकियान पर बिराजे तब वैष्णव सब श्रीगुसांईजी आगें बैठे हते। तब श्रीगुसांईजी आप ने कह्यो, जो-इहां कौन कहत हैं, जो-ये मार्ग वेद मूलक नाहीं हैं ? जो-यह मार्ग श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने प्रगट कियो है, सो सर्वोपरि है।

भावप्रकाश - याकौ अभिप्राय यह, जो-और मार्ग में तो तीन प्रमान कहे हैं। वेद, गीता ब्रह्मसूत्र। परि या मार्ग में तो श्रीआचार्यजी ने चारि प्रमान माने हैं। वेद, गीता, ब्रह्मसूत्र, श्रीभागवत। तातें यह मार्ग सर्वोपरि है।

जो जाकों कछू संदेह होंइ सो आओ, मोकों पूछो। तब दामोदर झा आदि दे कै सब पंडित आए। सो चर्चा भई। सो वाद-विवाद में सब पंडित निरुत्तर भए। तब सब पंडित श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै अपने घर गए। पाछें दामोदर झा तो दूसरे दिन आइ कै श्रीगुसांईजी आप सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज! मेरो अंगीकार करिये। तब श्रीगुसांईजी

आप तो परम दयाल कृपा करि कै दामोदर झा कों नाम सुनाय। तब और सब हुते सो कहन लागे, जो-तुम यह कहा कियो ? जो-हम सबन कों तो तुम्हारो भरोंसो हतो। सो तुमने तो नाम पायो ! तब दामोदर झा ने उनसों कह्यो, जो-"भाई ! आटला दहाडा तो कोई जाण्यूं नहीं, जो-केवल छिलका कूट्या। जे कंइ छे ते आज मारग छे।" यह सुनि कै और पंडित तो गए। पाछें दामोदर झा श्रीगुसांईजी आपके पास ही रहते। जो-बड़े ही पंडित हते।

सो वे श्रीगुसांईजी आप की कृपा तें बड़ेई कृपापात्र भगवदीय भए। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता॥१२७॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक मधुसूदनदास, क्षत्री हुते, सो पश्चिम में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'बीरबाला' है। ये 'नीला' तें प्रगटी हैं। तातें इनके भावरूप है।

ये पश्चिम में एक क्षत्री के जन्मे। सो वह क्षत्री राज में चाकर हतो। सो घोड़ा खरीदवे कौ काम करे। सो जब मधुसूदनदास बरस तेंईस के भये। तब तें वह क्षत्री इन को अपने संग राखे। सो घोड़ा की पहचानि करावें। सो कछूक दिन में ये घोड़ा कों पहचानिवे लागे। पाछें वह क्षत्री मर्‍यो। तब मधुसूदनदास राज में चाकर रहे। एक समै यह घोड़ा खरीदवे कों आगरा में आए। ता समै श्रीगुसांईजी आगरा में बिराजत हुते। सो इन श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। तब श्रीगुसांईजी आप पूछे, जो-तुम कौन हो ? कहा करत हो ? तब मधुसूदनदास कहे, जो-महाराज ! मैं क्षत्री हूं। अमूके राज में चाकर हों। घोड़ा की पहचानि करत हूं। राज के लिये आछें आछें घोड़ा खरीदत हों। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-एक सुंदर घोड़ा हम कों चाहिए है, सो तुम हम कों खरीद देऊ। तब मधुसूदनदास कहे, जो-महाराज ! आप के लायक एक सुंदर घोडा राज में है। सो आप उहां पधारो। और वह घोड़ा पसंद करो तो वह घोड़ा हों आप कों भेंट करों। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-अब ही तो हमारो उहां आवनो बने नाहीं। तब मधुसूदनदासने बिनती कीनी, जो-महाराज ! आप आज्ञा करो तो घोड़ा मैं यहां लाउं। आप कों भेट करो। और महाराज ! मोकों अपनो सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी

आज्ञा किये, जो-अबही तो समय नाहीं। पाछें काहू समै फेरि उहां पधारेंगे तब तुम कों सेवक करेंगे। तब घोड़ा हू देखेंगे। तब मधुसूदनदास कहे, जो-महाराज! आप कदाचित न पधारे तो मैं कहा करों? मेरो जन्म व्यर्थ जाँई। तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो-हमारे बचन है। हम तोकों निश्चै सरनि लेंगे। पाछें मधुसूदनदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि घोड़ा खरीदिवे कों गए।

वार्ता प्रसंग -१

पाछें एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें लाहोर पधारवे कौ बिचार किये। तब एक वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! एक बेर तो पश्चिम देस कों पधारिये। तब श्रीगुसांईजी ने वा वैष्णव सों कह्यो, जो-हमारी तो पश्चिम देस की इच्छा नहीं है। परि एक बार पश्चिम देस में पधारेंगे ऐसो जान परे हैं। तो-मधूसूदनदास के अंगीकारार्थ पधारनो परेगो तो सही। तब वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी कों बिनती कीनी, जो-महाराज! मधुसूदनदास ने तो घोड़ा बोहोत सुंदर सिद्ध करि कै राख्यो है। तब वा वैष्णव सों श्रीगुसांईजी ने कही, जो-तातें अवस्य पधारनो परेगो।

ता पाछें श्रीगुसांईजी पश्चिम देस में पधारे। तब मधुसूदनदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! मोकों नाम सुनाइए। मेरो अंगीकार करिए। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीमुख तें आज्ञा दीनी, जो तुम स्नान करि कै आवो। तब मधुसूदनदास स्नान करि कै आए। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै नाम सुनायो। ता पाछें निवेदन करायो। तब मधुसूदनदास ने एक सुंदर घोड़ा भेंट कियो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप गादी तकियान के ऊपर बिराजे। तब मधुसूदनदास पंखा करन लागे। ता समै मधुसूदनदास ने

श्रीगुसांईजी सो बिनती कीनी, जो-महाराज ! अब हम कों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि के मधुसूदनदास के माथें सेवा पधराई। और सेवा की रीति सिखाई। ता पाछें श्रीगुसांईजी कितनेक दिन लों उहां बिराजे । सो वा मधुसूदनदास कों सिंगार सिखाये। और रात्रि कों नित्य प्रसंग-भगवद्वार्ता सुनावते । सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवा कौ माहात्म्य कह्यो। जो-जीव कैसेउ अघ की खान होंई परि श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सरन आवे तो तत्काल सब दोष दूरि होंई जाई। और श्रीआचार्यजी, पुष्टिमार्गकौ फल है ताकौ दान करे। ऐसें श्रीआचार्यजी महाप्रभु परम दयाल हैं । तातें उन के चरनकमल कौ विस्वास राखनो । तातें पुष्टिमार्ग के फल की प्राप्ति होंई । सो श्रीगुसांईजी ने मधुसूदनदास कों कह्यो। सो सुनि कै मधुसूदनदास बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने उहां सो विजय कियो। सों श्रीगोकुल पधारे। तब मधुसूदनदास श्रीगुसांईजी के साथ आए। सो श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये । ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग-आरति करि कै ता पाछें अनोसर करि कै अपनी बैठक में पधारे । तब श्रीगुसांईजी ने मधुसूदनदास सों पूछी, जो-मधुसूदनदास ! दरसन किये ? तब मधुसूदनदास ने आय के श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! आप की कृपा तें दरसन किये। ता पाछें दंडवत् करि के बैठे। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन कों पधारे। सो भोजन करि कै फेरि अपनी बैठक में पधारे। तब श्रीगुसांईजी आप भीतरिया कों श्रीमुख तें आज्ञा दीनी, जो-

मधुसूदनदास कों महाप्रसाद की पातरि पठवाइयो । तब भीतरिया ने मधुसूदनदास कों पातरि पठाई। सो मधुसूदनदास ने महाप्रसाद लियो । ता पाछें श्रीगुसांईजी विश्राम करि कै जागे। इतने में उत्थापन कौ समय भयो। सो स्नान करि कै श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे। सो संखनाद करवाये। पाछें नवनीतप्रियजी के दरसन सब वैष्णव कों कराए। ता पाछें श्रीगुसांईजी सेन पर्यंत सेवा सों पोहोंचि कै अनोसर करि कै अपनी बैठक में पधारे। सो श्रीसुबोधिनीजी की कथा कहे। सो मधुसूदनदास सुने। सो बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़वे कों पधारे। ता पाछें प्रातःकाल श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करिवे कों पधारे। सो मधुसूदनदास हू साथ हुतो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ राजभोग कौ समै हुतौ। तब श्रीगुसांईजी तत्काल स्नान करि कै मंदिर में पधारे। सों राजभोग समर्प्यो। ता पाछें राजभोग आरति करी। तब मधुसूदनदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। सो साक्षात् कोटि कंदर्प लावन्य के दरसन भए। पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे तब मधुसूदनदास हू श्रीगुसांईजी पास आए। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-मधुसूदनदास ! तुमने दरसन किये। तब मधुसूदनदास ने कह्यो, जो-महाराज ! आपकी कृपा तें। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ महाप्रसाद पठावत हूं सो तुम लीजियो। पाछें श्रीगुसांईजी ने भोजन करि कै मधुसूदनदास कों जूंठनि की पातरि पठाई। तब मधुसूदनदास ने महाप्रसाद

लियो। ता पाछें श्रीगुसांईजी पोढे। तब मधुसूदनदास पंखा करन लागे। ऐसें करत बोहोत दिन भए। तब मधुसूदनदास ने बिनती कीनी, जो-महाराज! आप की आज्ञा होंई तो हम आपुने देस जांई। तब श्रीगुसांईजी ने मधुसूदनदास कों बिदा किये। सो केतेक दिन में अपने घर आए। सो श्रीठाकुरजी की सेवा प्रीतिपूर्वक करन लागे। तब थोरेसे दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे।

सो वह मदुसूदनदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१२८॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक राजा, पूरव कौ, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'मनमोदिनी' है। ये 'नीला' तें प्रगटि हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

ये पूरव में एक राजा के जन्म्यो। पाछें बरस अठारह कौ भयो तब याकौ पिता मर्‌यो। तब ये राजा भयो। पाछें एक समै वह जगन्नाथराइजी की यात्रा कों चल्यो। सो ता समैं श्रीगुसांईजी आप जगन्नाथपुरी में बिराजत हुते। तहां पंडितन सो सास्त्रार्थ करत हते। सो गाम कौ राजा तथा और हू लोग या सभा में आए हुते। सो वह राजा हू वा समै वहां आयो। ताही समै श्रीगुसांईजी आप मायावादीन कों निरुत्तर किये। तब यह राजा श्रीगुसांईजी कौ तेज प्रताप दखि आप की सरनि आयो। तब श्रीगुसांईजी आप वा राजा कों नाम सुनाए। पाछें निवेदन कराए। तब राजा ने बिनती कीनी, जो-महाराज! मोकों यह मारग स्फुरे ऐसी कृपा करिये। तब श्रीगुसांईजी आप चाचाजी कों बुलाई आज्ञा किये, जो-चाचाजी! तुम कछूक दिन या राजा के पास रहि इनकों मारग कौ ज्ञान कराउ। पाछें श्रीगुसांईजी तो आप अड़ेल पधारे। और चाचाजी वा राजा के संग वाके गाम में गए। सो चाचाजी दिना पांच उहां रहे। सो राजा कों चाचाजी श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप समझाये। तब राजा कों सगरो मारग स्फुरयो। पाछें भगवल्लीला की मानसी कौ प्रकार बताए। सो राजा श्रीगुसांईजी के स्वरूप में भगवल्लीला के भाव में छक्यो रहतो। पाछें चाचाजी अड़ेल आई श्रीगुसांईजी सों सब समाचार कहे। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए।

वार्ता प्रसंग-१

सो वह राजा कों श्रीगुसांईजी विषे बोहोत आसक्ति हुती दृढ़ता बोहोत ही हुती। अन्य कर्म, अन्य मार्ग, अन्य संबधिन सों स्नेह कछू नाहीं। अन्य सों संभाषन हू कछू नाहीं। काहू सों बोले नाहीं। द्रव्य तथा देह अन्य-विनियोग करें नाहीं। सो कोऊ भाट तथा चारन भिक्षुक आवे। सो राजा के पिता माता कौ जसु बोले, ओर राजाकौ जसु बोले। परि ताकों कछू देवे नाहीं। और कछू रीझेहू नाहीं। याके सन्मुख देखे हु नाहीं। तब भाट चारन फिरि फिरि कै दिक दोंई जाई। परि वह राजा के इहां सो उत्तर पावे नाहीं। तब वह राजा के खवास प्रधान लोग सों पूछे, जो-तुम्हारे राजा कौन भांति सों कैसें करि कै रीझत हैं? तब वह प्रधान खवास उन चारन भाट कों बतावे, जो-तुम कों श्रीआचार्यजी कौ तथा श्रीगुसांईजी कौ कछू जस कीर्तन आवत होंय सो कहो। तो तुम ऊपर राजा प्रसन्न होंई। नांतरु हम बतावे तैसें कहो। ता पाछें वह खवास प्रधान बतावे, सीखावें, ता प्रमान वह भाट-चारन श्रीआचार्यजी कौ तथा श्रीगुसांईजी कौ तथा उनके सेवकन कौ जस बोले। तब राजा उन चारन भाट पर रीझे। उनकों द्रव्य देई। समाधान बोहोत ही करे। जो कछू मांगे सोई देहि। तब राजा उन सों कहे, जो-तुम श्रीआचार्यजी कों तथा श्रीगुसांईजी कों आसीवार्द देहु। हों तो उनकी ओर तें चाकर हों, दास हों। उन ने मोकों राज बैठार्यो है, सो उनकी ओर तें राज करत हों। तातें तुम उन कौ जस बोलो। ऐसें उन सों राजा कहे।

और कदाचित कोऊ हरिजन तादृसी वैष्णव आवे तो उन सों बैठि बात करे, भगवद्चर्चा वार्ता करे श्रीगुसांईजी की। तब उन वैष्णवन कौ मन घनो प्रसन्न रहे। और कदाचित कोऊ वैष्णव नाहीं होइ तो इकलो ई बैठ्यो एकांत स्थल में पोथी देखे। भगवल्लीला में छक्यो रहे। परि अन्य सों संभाषन न करे। वैष्णव विषे ममत्व घनो राखे। वैष्णव के कहे कौ विस्वास राखे और वैष्णव की सेवा अपने हाथ सों करे। परम स्नेह सों करे। तातें वा राजा ऊपर श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न रहते।

भावप्रकाश - या वार्ता में यह जतायो, जो-वैष्णव कों स्वमार्गीय बिना अन्य काहू सों संभाषन करनो नाहीं। काहेतें, जो-बानी द्वारा मिलाप होत है। तातें अन्य सों वार्तालाप करे तो अन्य संबंध होंई। यह भाव जाननो।

सो वह राजा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो टेक कौ कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें उनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥१२९॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक मुरारी आचार्य, खंभाइच के तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश - सो मुरारिदास सात्विक भक्त हैं। लीला में श्रीयमुनाजी की सखी है। 'हंसिनी' इन कौ नाम है। सो 'चंद्रकला' के दूती कार्य में परम सहायक हैं। सो 'चंद्रकला' की इन पर प्रीति है। ये 'नंदा' ते प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

सो ये खंभाइच में एक शैव के जन्मे। सो पढे बोहोत। और सास्त्र हू के बड़े ज्ञाता हे। सो बालपन तें कर्मकांड में इन की रुचि अधिक रहे। ये कर्मकांड में बड़े प्रवीन हते। पाछें इन कों ब्याह भयो। सो स्त्री सुपात्र मिलि, पतिव्रता। इन के दो बेटा भये।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हते। तब चाचा हरिवंसजी प्रभुन के साथ हते। सो श्रीगुसांईजी कों पधरावन कों खंभाइच के वैष्णव राजनगर साम्हे आए। तब वैष्णवन

कौ बोहोत हठ आग्रह जानि कै श्रीगुसांईजी खंभाइच पधारे। तहां श्रीगुसांईजी सहजपाल दोसी के घर उतरे। सो वा ठौर ब्राह्मन मुरारी आचार्य छहों सास्त्र कौ ज्ञानी-वक्ता हतो। वाकी कर्ममार्ग विषे नेष्टा बोहोत हती। सो वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी के दरसन कों तहां सहजपाल दोसी के घर आयो। पाछें वह ब्राह्मन कछू सास्त्र की वार्ता श्रीगुसांईजी सों करि उठि गयो। तब चाचाजी ने श्रीगुसांईजी सों कही जो-ऐसो ब्राह्मन होय तो भलो। यह बात चाचाजी ने प्रभुन के आगें तीन बार कही। परि श्रीगुसांईजी या बात कौ प्रतिउत्तर न दिये।

भावप्रकाश-सो यातें, जो-वह दैवी है। सो आपही तैं सरन आवेगो।

ता पाछें श्रीगुसांईजी श्री द्वारिकाजी होंइ कै श्रीमथुराजी में पधारे। तहां तें अड़ेल आए। पाछें केतेक दिन कों वह ब्राह्मन खंभाइच तें कासी जाइवे कों भयो। सो मथुरा व्है अड़ेल आयो, संग में। सो वाकों चाचाजी ने देख्यो। सो उत्थापन समय श्रीगुसांईजी गादी तकिया पर बिराजत हते। इतने ही गुजरात खंभाइच कौ साथ अड़ेल श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। तब चाचाजी ने बिनती करी, जो-महाराज! खंभाइच कौ ब्राह्मन आयो है। सो चाचाजी के बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी चुप करि रहे। पाछें श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै ब्राह्मन तो डेरा में बैठ्यो। इतने फेरि चाचाजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-राज! मोकों आप या बात कौ प्रतिउत्तर दियो नाहीं, सो कहा? तब हू श्रीगुसांईजी चाचाजी के बचन सुनि कै चुप करि

रहे।

पाछें श्रीगुसांईजी एक श्लोक करि, पत्र लिखि कै एक ब्रजबासी हाथ वा ब्राह्मन पास पठायो। सो ब्रजबासी वा संग में जाइ कै मुरारी आचार्य कों वह पत्र दियो। ता पत्र कों बांचि कै वा ब्राह्मन कों श्रीगुसांईजी के स्वरूप कौ ज्ञान भयो। तब वह मुरारी आचार्य अपनी स्त्री सों कह्यो, जो-गाड़ी में तें उतरो। और एक बड़ो बेटा साथ हतो, ताकों संग ले कै मुरारी आचार्य फेरि वा ब्रजबासी के साथ वाही समय श्रीगुसांईजी के दरसन कों कागद माथें बांधि कै आयो। सो मुरारी आचार्य आवत ही श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करी। पाछें वह पत्र श्रीगुसांईजी के श्रीहस्त में दै कै मुरारी आचार्य ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-राज ! अब मोकों आप सेवक करो। अब विलंब मति करो। तब श्रीगुसांईजी मुरारी आचार्य सों कहे, जो-बिधि तौ ऐसी है, जो-प्रथम उपवास करि कै ताके दूसरे दिन समर्पन करिए। तब मुरारी आचार्य ने श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै यह बिनती करी, जो-राज ! प्रथम नाम तो सुनाओ। तब श्रीगुसांईजी वाकी आर्ति आतुरता देखि कै तीनों जनेंन को नाम सुनाए। पाछें फेरि मुरारी आचार्य ने बिनती करी, जो-राज देह कौ तौ न्यामक है काल। परि काल कौ तो न्यामक नाहीं। तातें या देह कौ कहा भरोंसो है। तासों आप विलंब न करिए। तब श्रीगुसांईजी उन मुरारी आचार्य की बोहोत ही आर्ति जानि कै आपु कृपा करि कै उन

तीनोंन कों नाम निवेदन करवायो। पाछें उन कौ नाम श्रीगुसांईजी ने मुरारीदास धर्‍यो। और सेवा के तांई श्रीनवनीतप्रियजी के प्रसादी वस्त्र पधराय दिये। पाछें घर आइ मुरारी आचार्य संग के मुखिया सों कहे, जो-हम तो श्रीवल्लभी सम्प्रदाय सिर धरि आए।

पाछें संग के मुखिया कौ मुख यह मुरारीदास की बात सुनि कै स्याम होंइ गयो। और वाने अपने परिकर सों कह्यो, जो-अब वह मेरे पास न आवन पावे। पाछें वाके परिकर के एक मनुष्य ने मुरारीदास कों कही, जो-तुमने यह आछी बात न करी। जो इनकों अप्रसन्न करे। और अब इन कही है, जो-मुरारीदास अब मेरे पास तिलक-मुद्रा माला छोरि कै आवे तो आवन पावे। नांतरु यह मेरे पास न आवन पावे। यह इन सों कहि कै वह मनुष्य तो चल्यो गयो। पाछें मुरारीदास वा दिन प्रसाद ले बोहोत मुद्रा धरि कै वा मनुष्य के पास गए। जिन कों वा मुखिया ने बरजे हुते, जो-मुरारीदास मेरे पास न आवन पावे तिन पास गए। सो सगरे मुरारीदास कौ तेज देखि कै विस्मित होंइ गए। तातें वे मुरारीदास कों कछू बरजि न सके। सो ये जाँइ कै वा मुखिया सों आपुस में दोऊ संभाषन कर्‍यो। जो-अब मुरारीदास सों न जीतेंगे। पाछें मुखिया के मन में आई, जो-यह मार्ग तो उत्तम है तासों इन कौ सेवक हूजिये। सो बहुरि श्रीयमुनाजी में स्नान करि वह श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो। ता पाछें मुरारीदास और वह मिलि श्रीनवनीतप्रियजी के और सब

बालकन के दरसन करि अति प्रसन्न भए। पाछें कछूक दिन मुरारीदास और वह मुखिया श्रीगुसांईजी पास रहि कै 'नवरत्न' आदि सब ग्रंथ पढ़े। तब वाकी बुद्धि अति उज्ज्वल भई। तब वाने एक दिन श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-राज! आपकी कृपा सों अलौकिक बस्तू तो सर्व प्राप्त भई। अब हमारे तीर्थयात्रा सों कहा काम है ? आपके चरनारविंद विषे सब तीर्थ होय चुकें। तब श्रीगुसांईजी उनसों कहे, जो-तुम तीर्थ-पर्यटन करिवे जाहू। नांतरु सगरे लोग निंदा करंगे। तातें सर्वथा जायो चाहिए। तीर्थ-पर्यटन के आग्रह पूर्वक तो जानो नाहीं। परि लोक रीति राखिवे कों एकवार सर्वथा जानो।

भावप्रकाश - सो यातें, जो-श्रीआचार्यजी 'पुष्टिप्रवाह मर्यादा' ग्रन्थ में लिखे हैं। सो श्लोक-

'लौकिकत्वं वैदिकत्वं कापद्यात्तेषु नान्यथा।
वैष्णवत्वं हि सहजं ततोऽन्यत्र विपर्ययः ॥

यासों पुष्टि जीव कों लोक वेद रीति राखिवे कों तीर्थादि सब करने। परि उन के फल की इच्छा राखनी नाहीं।

पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा तें वे तीर्थयात्रा होंइ आए। पाछें फेरि श्रीगुसांईजी पास मथुरा आइ प्रभुन के दरसन करि कछूक दिन प्रभुन पास रहि कै श्रीभागवत, श्रीसुबोधिनीजी और सर्व ग्रंथ सुनि सर्व मार्ग कौ रहस्य प्रणालिका पूछि कै प्रभुन सों बिदा होइ कै खंभाइच आए। उन पर श्रीगुसांईजी ने ऐसी कृपा करी। जो उन पूछ्यो सो सर्व उन कों समझायो।

वार्ता प्रसंग-२

सो खंभाइच में और एक सैव ब्राह्मन की दीनी ब्रह्मपुरी

हती। सो तामें एक घर उनहू कौ हतो, सो तहां जांइ रहे। तहां एक लाड़ बनिया हतो। सो एक और मुखिया कौ चाकर हतो। सो वह बनिया नित्य मुरारीदास के घर आवतो। ताके साथ वह मुखिया कहवाय पठावतो। जो एक बार मुरारीदास माला उतारि मेरे पास आवे तो मुरारीदास कहे सो मैं करूं। यह वा मुखिया के समाचार वा बनिया ने आइ कै मुरारीदास सों कहे। तब मुरारीदास एक दिन सुनि कै श्रीठाकुरजी सों पहोंचि कै अपने मार्ग कौ सर्व चिन्ह प्रकासि कै वाके घर गए। सो मुरारीदास कों देखि कै वह जरि गयो। परि वह कर्मिष्ठ हतो। तासों पूजा कौ साज मंगायो। सो वह पूजा करिवे कों तत्पर भयो। तब मुरारीदास कों तामस चढ्यो। सो मुरारीदास कों मुखिया छूवे लग्यो तब मुरारीदास ने वासों कही, जो-तू मेरे सरीर कों हाथ लगावेगो तो मोकों सचैल स्नान करनो पडेगो। तब वा ब्राह्मन अति क्रोधवंत भयो। सो श्राप देवे लग्यो। सो वानें कह्यो, जो-मुरारीदास ! तेरे जल कौ देवेवारो मति रहियो। तेरो सत्यानास जैयो। और ये तेरो घर ही उजार हूजो। तब मुरारीदास कह्यो, जो-श्रीगुसांईजी साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं, और मेरो धर्म सांचो है, तो तेरो श्राप मोकों कहा करेगो ? और यह तेरो डेरा है। सो दूजो कोई घर के द्वार ठाड़ो होइगो ताही कों घर जात ही देउंगो। और मैं तेरी ब्रह्मपुरी छोरि जाउंगो। यह कहि कै मुरारीदास अपने घर आए। सो घर आय द्वारे ही ठाढ़े रहि अपनी स्त्री कों बुलाइ कै मुरारीदास कहे, जो-तू श्रीठाकुरजी कों संपुट में पधराय कै संपुट लै कै सगरे कुटुंब

सहित घर में तें बाहिर निकसि आउ। सो घर में तें सगरे निकसे। तब मुरारीदास ने घर भरयो जैसो को तैसो द्वारें एक शुक्ल ठाढ़ो हतो ताकों दियो। पाछें स्त्री लरिका साथ लै के मुरारीदास गाम तें निकसन लागे। सो एक वैष्णव वा गाम में रहत हतो। तिन अपनो घर मुरारीदास कों भेट कियो। सो वे मुरारीदास ऐसे टेक के कृपापात्र भगवदीय हते। सो सर्व वस्तू कौ त्याग करत मन में मोह न आयो। पाछें यह बात श्रीगुसांईजी ने सुनी। तब मुरारीदास उपर बोहोत प्रसन्न होइ के आपु कहे जो-वैष्णव कों योंही चाहिये।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो-वैष्णव कों टेक ही बड़ो पदार्थ है। तातें भगवद्धर्म दृढ़ होंई।

वार्ता प्रसंग-३

और एक समय मुरारीदास ने श्रीगुसांईजी कों बिनती पत्र लिख पठायो। जो-महाराज! कोइ एक ग्रंथ आपु कृपा करि कै ऐसो लिख पठाओ, जासों वादीन कौ मुख भंजन करिए। सो पत्र मुरारीदास कौ श्रीगुसांईजी पास आयो। तब श्रीगुसांईजी मुरारीदास पास के पत्र उत्तर के साथ 'भक्तिहंस' ग्रंथ लिखि पठायो।

तब मुरारीदास ने माथे चढाई पत्र-ग्रंथ कों बांच्यो। पाछें फेरि मुरारीदास ने श्रीगुसांईजी कों बिनती लिखी, जो - महाराज! यह ग्रंथ बोहोत ही उत्तम है, सुंदर है। परि अगम है। सो पत्र कौ उत्तर मुरारीदास कौ श्रीगुसांईजी पास आयो। तब प्रभुन बांचि के वाकौ प्रतिउत्तर "भक्ति हेतु निर्णय" ग्रंथ लिखि पठायो। सो पत्र मुरारीदास पास आयो। तब माथें चढाई के

मुरारीदास ने वा पत्र के साथ वा ग्रंथ कों बांच्यो। सो मुरारीदास अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भये। तब प्रसन्न होइ कै पत्र एक और मुरारीदास ने श्रीगुसांईजी कों लिखि पठायो। जो-महाराज! सास्त्र के बचन अति दुर्घट है। याकौ पार नाहीं। तब श्रीगुसांईजी के पास मुरारीदास कौ पत्र आय पहोंच्यो। सो आपु बांच्यो। तब प्रभुन अपने मन में जान्यो, जो-याकों यह विद्या स्फूर्त तो भई।

वार्ता प्रसंग-४

बहोरि मुरारीदास कौ बड़ो बेटा हो। सो अपने पिता पास विद्या पढ़ि कै 'बिझापुर' गयो। तहां जाय कै यह सर्व मायावादीन कों जीत्यो। भक्तिमार्ग दृढ कर्‌यो। तब दक्षिन के ब्राह्मन आपुस में कह्यो, जो-हमारे आगें यह गुजराती जीत्यो ! यह बड़ो आश्चर्य लागत है। पाछें उन ब्राह्मनन मुरारीदास के बेटा सों पूछ्‌यो, जो-तुम्हारो कौन संप्रदाय है ? तब मुरारीदास के बेटा ने उन ब्राह्मनन सों कही, जो-हमारो वल्लभी संप्रदाय है। हम श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। तब वा महाराष्ट्रे ने कही, जो-यह सांची बात है। श्रीगुसांईजी ने प्रथम हू मायावाद कौ खंडन कियो है। पाछें वह मुरारीदास कौ बेटा कछूक दिन बिझापुर में रहि कैं अपने देस आयो। अपनी माता सों मिल्यो। तब मुरारीदास कहीं गाम गए हुते। सो जब मुरारीदास गाम सों आए तब मुरारीदास कौ बेटा मुरारीदास सों मिलि कै दक्षिन के ये सर्व समाचार कह्यो। तब बेटा के बचन सुनि कै मुरारीदास बोहोत प्रसन्न भये।

सो ये मुरारीदास और इन कौ बेटा, ये दोऊ श्रीगुसांईजी की कृपा तें ऐसें पंडित भए। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१३०॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक बनिया वैष्णव, राजनगर कौ, जाने भोग में चेली धरी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'अनसूया' है। 'ये नंदा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये राजनगर में एक द्रव्यपात्र बनिया के जन्म्यो। सो उह बनिया श्रीगुसांईजी कौ सेवक हुतो। सो वाने अपने बेटा कों श्रीगुसांईजी कौ सेवक करायो। सो यह बरस बीस कौ भयो तब याकौ पिता मर्‌यो। पाछें यह भाईला कोठारी के उहां नित्य भगवद्वार्ता सुनिवे जाँई। तब याके मन में आई, जो-हों श्रीठाकुरजी पधराई सेवा करों तो आछौ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै गुजरात कौ संग ब्रज में आयो। सो श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै कछू दिन रहि कै श्रीनाथजीद्वार गयो। सो वा संग में वह वैष्णव हू आयो। सो वह नित्य श्रीनाथजी के मंदिर में सेवा करिवे कों जातो। सो सब सेवा नजरि में राखे। सो एक दिना राजभोग आयवे कौ समय हतो। ता समै मुखिया भीतरिया ने जलघरियान तें कही, जो-चेली खासा करि कै लावो। तब जलघरियान ने चेलीन कौ दोना भर्‌यो हतो सो भीतरियान कों दीनो। सो इन वैष्णव देख्यो। सो अपने मन में बिचारी, जो-यहू श्रीठाकुरजी के राजभोग में आवत हैं। सो कितने दिन पाछें वह संग श्रीगुसांईजी सों श्रीनाथजी सों बिदा होंइ कै गुजरात चलन लाग्यो तब वह वैष्णव श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो-महाराज ! मोकों सेवा पधराइ दीजिए। तब श्रीगुसांईजी वाकों एक लालजी कौ

स्वरूप पधराइ दिए। सो वह वैष्णव अपने ठाकुर कों ले वा संग में चल्यो। सो कछूक दिन में अपने घर आयो। तब वैष्णव ने चेली गढ़वाई। सो श्रीठाकुरजी कों राजभोग धरे तामें एक दोना भरि कै चेली धरे। सो एक वैष्णव ने देखी। सो वाहू ने अपने इहां राजभोग में दोइ दोना भरि कै धरी। सो तीसरे ने देखी। सो वाने तीनि दोना भरि कै धरे।

सो एक दिना एक भगवदीय ने देखी। सो उन तें पूछी। तब उनने कही, जो-फलानो वैष्णव ब्रज तें आयो है ताके घर देखि कै मैं तो धरी। तब वह भगवदीय ने जाँइ कै उन वैष्णव तें पूछी, जो-तुमने ये चेली धरी, सो क्यों ? तब उन वैष्णव ने कही, जो-मैं तो श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में सेवा करिवे कों जातो। सो एक दिना राजभोग के समै रामदास भीतरिया ने जलघरिया पास मंगाई। सो जानी, जो-ये भोग में आवत होइगी। तातें मैं तो धरी हैं। तब उन भगवदीय नें कही, जो-बावरे ! उहां तो बड़े घर हैं। तातें भोग आवें तब चौकी उंची नीची होंइ तातें सरखो राखिवे कों करावे हैं। सो तुम्हारे ऐसें बिना पूछे, सेवा संबंधी कार्य सर्वथा न करनो।

भावप्रकाश - या वार्ता में यह जतायो, जो-वैष्णव कों सेवा, भगवदीय कौ सत्संग करि कै, उन तें पूछि कै, करनी।

पाछें वह वैष्णवन कौ संग करन लाग्यो। सो कछूक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे।

वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें उन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१३१॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक क्षत्रीय, पूरब कौ, जाकौ द्रव्य श्रीयमुनाजी में पधरायो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'गायत्री' है। ये 'नंदा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये पूरब में एक क्षत्री के जन्म्यो। सो बरस तीस कौ भयो। तब इनके माता-पिता मरे। पाछें ये द्रव्य कमाइवे कों दक्षिन गयो। सो वा गाम में श्रीगुसांईजी आप पधारे हुते। सो वाकों श्रीगुसांईजी के दरसन साक्षात् कोटि कंदर्प लावन्य पुरुषोत्तम के भए। तब वा क्षत्री ने बिचार्यो, जो-इनके सेवक हूजिए तो आछो है। पाछें वा क्षत्री ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! कृपा करि कै सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करि नाम दिए। पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किये। सो श्रीनाथजीद्वार पधारे। ता पाछें थोरे दिन में वह क्षत्री हू बोहोत द्रव्य कमाय अपने देस कों चल्यो। सो वाने बिचार कियो, जो-यह द्रव्य श्रीगुसांईजी कों भेट करूंगो। ता पाछें वह क्षत्री श्रीनाथजीद्वार आयो।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक दिन श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ सिंगार करत हते। सो ता समै वह क्षत्री वैष्णव परदेस तें बोहोत ही द्रव्य सामग्री कमाय कै ल्यायो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आयो। सो ता समै एक सेवक ने श्रीगुसांईजी आप कों पुकार कै कह्यो, जो-महाराजाधिराज ! आप कौ सेवक क्षत्री वैष्णव आयो है। सो द्रव्य-सामग्री भेंट बोहोत ही ल्यायो है। सो श्रीगुसांईजी कों सेवा-सिंगार करत में सुनायो। तब श्रीगुसांईजी आप राजभोग पाछें नीचे उतरे। तब वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् कियो। और बोहोत द्रव्य-सामग्री भेंट कियो। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-यह द्रव्य सामग्री है सो श्रीयमुनाजी में डारि देहु। तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो-महाराजाधिराज ! ऐसो काहेतें ? तब श्रीगुसांईजी आप कह्यो, जो-जाकौ नाम सुनत ही सेवा में दुचिताई भई।

ताके भंडार में आए तें कहा न होईगो ? सो यह द्रव्य आसुरी है। तातें द्रव्य-सामग्री सब श्रीयमुनाजी में पधराय देऊ। सो वा वैष्णव ने वामें की सामग्री-द्रव्य सब श्रीमथुराजी जाँई श्रीयमुनाजी में पधराय दीनो। सो वामें की कछू श्रीठाकुरजी के काम आई नाहीं।

सो वह क्षत्री कों श्रीगुसांईजी के बचन कौ ऐसो दृढ़ विश्वास हतो।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो-आसुरी द्रव्य लिये तें भगवत्सेवा में प्रतिबंध होंई। बहिर्मुखता प्राप्त होंई। तातें आसुरी द्रव्य सर्वथा ग्रहन करनो नाहीं। और यहू जताए, जो-गुरु के बचन मैं वैष्णव कों सर्वथा विश्वास करनो।

सो वह क्षत्री श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१३२॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दोई भाई पटेल, गुजरात में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इन के नाम 'भक्तिनि' और 'आवेसिनी' हैं। ये 'ब्रजमंगला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं। सो बड़ो भाई भक्तिनि कौ प्रागट्य है, और छोटो भाई आवेसिनी कौ प्रागट्य जाननो।

ये दोऊ गुजरात में एक गाम में एक पटेल कुनबी के जन्मे। सो बरस तीस-पैतींस के भए तब इन के मा-बाप मरे। पाछें ये तीरथ कों चले। सो द्वारिकाजी आए। सो ता समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी बिराजत हते। सो तहां श्रीगुसांईजी नित्य श्रीसुबोधिनीजी की कथा कहते। सो इन दोऊ भाई सुने, जो-अमूक ठौर कथा होत है। सो दोऊ कथा सुनिवे को आए। सो कथा सुनत ही इन दोऊन के मन में यह आई, जो-इन के सेवक हूजिए। पाछें इन दोऊ श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! हम को सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी दोऊन की आरति देखि दोऊन कों नाम-निवेदन कराय सेवक किये। पाछें दोऊन ने बिनती कीनी, जो-महाराज! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी दोऊन सों कहे, जो-तुम भगवत्सेवा करो। और वैष्णवन कौ संग करो। तब दोऊ भाई कहे, जो-महाराज ! कृपा करि भगवत्सेवा पधराइ दीजिए। तब श्रीगुसांईजी दोऊन कों एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दिये। पाछें सेवा की सब रीति बताए।

तब दोऊ भाई आज्ञा मांगि श्रीठाकुरजी कों पधराय अपने घर आये। तहां गाम के वैष्णवन की मंडली होई। तामें ये नित्य भगवद्वार्ता सुनिवे कों जाते।

वार्ता प्रसंग-१

सो दोई भाई खेती करते। तहां वह गाम के राजा ने एक बड़ो तलाव खुदायो। ताके भीतर तें एक देवी कौ स्वरूप निकस्यो। सो एक सिला हाथ चारि की तामें देवी कौ स्वरूप। सो वह देवी नें राजा कों स्वप्न में कह्यो, जो-एक बड़ो देवालय करि कै और मेरी पूजा चलावो। तब राजा ने कही, आछो। पाछें प्रातःकाल उठि के राजा ने बिचार कियो, जो-यह देवालय बनायवे कौ काम है। सो यामें द्रव्य बोहोत लगेगो। सो कछू गाम सों लीजिए। कछू मैं लगाय कै मंदिर सँवराऊं। तब राजा ने कामदार कों बुलाय कै कह्यो, जो-गाम सों कछू द्रव्य लेहु। सो देवी कौ मंदिर बनावेंगे। तब कामदार ने सगरे गाम में यथासक्ति दंड कियो सब सों। सो कोई पै एक रुपैया कोई पर अरध रुपैया बड़े बड़े सेठ पर पचास पचास रुपैया। जैसी आसामी तैसो दंड कियो। सो देवी कें मंदिर कौ नाम सुनि कै बोहोत प्रसन्न होइ कै दियो। सो दोई भाई पटेल श्रीगुसांईजी के सेवक हे। उन पर दोई रुपैया दंड कियो। सो राजा के मनुष्य रुपैया मांगन आये, जो-देवी कौ मंदिर बनेगो। तातें दोइ रुपैया तुम देऊ। सबन ने दिये हैं। यह सुनि कै दोऊ भाई आपुस में बतराए। तब एक भाई ने कह्यो, जो-राजा के बसिये हैं तातें राजा कहे सो करनो। दोई रुपैया देऊ। तब दूसरे भाई ने कह्यो, जो-अपने घर में सगरो द्रव्य श्रीगुसांईजी कौ है। सो

कैसें दियो जाँय ? देवी कै मंदिर के लिये ?

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो वैष्णव कों अपनो द्रव्य अन्य कार्य में सर्वथा खरचनो नाहीं। काहे तें, जो-वह द्रव्य तो प्रभु कौ है। तातें प्रभुन के उपयोग में ही ल्यावनो।

तब दोऊ भाई पटेल ने राजा के मनुष्य सों कह्यो, जो-कािल्ह तुम दोइ रुपैया ले जैयो। आज हमारे पास नाहीं है। तब राजा के मनुष्य ने कही, जो-काल्हि मैं नाहीं फिरोंगो। आज मैं जात हों। तुम जरूर रुपैया दोई करि राखियो। ऐसें कहि कै राजा कौ मनुष्य गयो। पाछें दोऊ भाई पटेल ने कह्यो, अब कहा करिये ? दोई रूपैया श्रीठाकुरजी के वृथा जात हैं। तब छोटे भाई ने बड़े भाई सों कह्यो, एक उपाय है। एक अंधियारौ कूप है। तामें कीच बोहोत हैं। ता कुआँ पै आपुन दोऊ चलि कै वह तलाव पर देवी है ताकों अर्द्धरात्रि में उठाय कै वा कुआँ में धरि आओ। तब राजा दंड काहे कौ लेइगो ? तब बड़े भाई ने सुनि कै कह्यो, जो-यह तू भलो बिचार कियो। पाछें जब अर्धरात्रि भई तब दोऊ भाई पटेल उह तलाव पैं जाय कै अंध्यारे कुआँ में देवी कों धरि आए। तब देवी वाही समै बिकराल रूप धरि कै वा गाम के राजा पास वाही समै रात्रि कों गई। सो जाँइ कै राजा कों जगायो। राजा-रानी दोऊ बिकराल स्वरूप देखि कै डरपे। मन में कहें, जो-अब हम न बचेंगे। यह हमारो प्रान लेइगी। तब राजा मन में धीरज धरि कै कह्यो, जो-तुम कौन हो ? और कहां निमित्त इहां आए हो ? तब देवी कह्यो, तू-मोकों बोहोत दुःख दियो है। तातें मैं अब तोकों खाउंगी। तब राजा ने जानी, जो-यह देवी है। तब राजा ने

कह्यो, जो माता ! मैं तुम कों कहा दुःख दियो है ? सो तुम कहो। तुमने तलाव पै मंदिर बनवाइवे की कही है सो गाम में तें कछू द्रव्य आयो है और कछू आवेगो। और कछू मैं अपने घर तें लगाउंगो। तुम्हारो मंदिर सिद्ध कराय कै पूजा तुम्हारी चलाउंगो। और तुम कों कहा दुःख है ? तब देवी ने राजा सों कही, मंदिर तो जब बनावेगो तब दीसेगी। परि मैं तो अंधियारे कूप में परी हों। यह सुनि कै राजा मन में बड़ो आश्चर्य भयो। तब राजाने पूछी, जो-ऐसो जगत में कौन है, जो-तुम्हारो अपराध करि सके। सो तुम अंधियारे कुआँ में कैसे गिरी हो ? सो बात तो कहो। कोई मेरे गाममें अपराध कियो होय तो ताकों मैं दंड करों। तब देवी राजा सों कहे, जो-तेरे गाम के दोई भाई पटेल हैं सो तैनें उनके ऊपर दंड क्यों कियो ? वे तो वैष्णव है। श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। सो उनके ऊपर दंड तू कियो तातें उन पटेलन ने हम कों कुआँ में डारी है। सो यह तेरो दोष भयो। तातैं मैं तोकों खाउंगी। तब राजा ने कही, जो-मैंने तो बिना जाने उन ऊपर दंड कर्‌यो है। मैं उनकौ स्वरूप जान्यो नाहीं। अब मैं काल्हि उनके ऊपर कौ दंड माफ करूंगो। तुम मोकों काहे कों खात हो ? यह अपराध तो मोसों बिना जाने कौ पर्‌यो है। सो छिमा करो। तब वह देवी ने कही, जो काल्हि उह पटेल के ऊपर कौ दंड माफ करियो। और उन दोऊ भाई पटेल सों डरपत रहयो। उन कों कछू दुःख देइगो तो तेरो भलो न होइगो। या प्रकार राजा कों सिक्षा करि कै देवी गई। तब राजाने वाही समै अपने कामदार कों बुलाय कै पूछ्यो, जो-

फलाने पटेल दोऊ भाई हैं तिनके ऊपर कितनो दंड पर्‌यो है ? तब कामदार ने कही, जो-दोइ रुपैयान कौ दंड उनके ऊपर पर्‌यो है। सो अब ही तो उन दिये नाहीं। प्रातःकाल मनुष्य पठाय कै मंगाय लेंगे। तब राजा ने कामदार सों कह्यो, जो-उन पटेलन के ऊपर कौ दंड माफ करो। अब मनुष्य उनके मति पठाईयो। तब कामदार कही, अब उनके घर ऊपर कौ दंड छोरे। अब मनुष्य न पठावेंगे। पाछें राजा सों कामदार बिदा मांगि कै अपने घर गयो। पाछें प्रातःकाल राजा उठि कै उह अंधियारे कूप के पास गयो। तहां उन मनुष्य कों लगाय कै देवी कों उह कूप में तें काढ़ि कै आपने घर लै गयो। एक ब्राह्मन सों पूजा करावन लाग्यो। और राजा आप चलि कै उन पटेल के घर आय कै पटेल सो कह्यो, जो-देवी कौ उठाय के कुआँ में डारि आये सो देवी मोकों मारन आई। तासों आज तें अब तुम्हारे ऊपर दंड कबहू न करेंगे। और तुम कबहू देवी कों दुःख मति दीजो। तब पटेल ने कह्यो, जो-राजा ! देवी सों हम सों कछू बैर तो नाहीं है। हम तो काहू कों दुःख नाहीं देत है। यह तो हम इतनो याके लिये कियो है, जो-हमारे कछू द्रव्य नाहीं हतो। तब राजाने रुपैया ४००/- उन पटेलन के आगें धर्‌यो। कह्यो, जो-यह तुम लेऊ। तुम बड़े वैष्णव हो। तुम कों देवी दंड नाहीं दे सकत तो मैं कैसें दंड देहुंगो। यह दंड अनजाने भयो तातें मेरो अपराध क्षमा करो। तब पटेल ने कह्यो, जो-हम काहू कौ द्रव्य लेत नाहीं। खेती करत हैं। तामें आछी भांति घर कौ खर्च चलत है। सो तुम यह द्रव्य ले कै काहू ब्राह्मन कों पून्य करि दीजो। देवी के मंदिर में लगाइयो। तब राजा पटेल की

बोहोत बड़ाई करि कै अपने घर आयो। पाछें राजानें तलाव पै देवी मंदिर समरायो। तहां देवी कों बैठारी। सो सगरो गाम उह देवी कों मानें। और पटेल वे दोऊ भाई कबहू उह देवी के मंदिर में न गए। कबहू दरसन न किये। ता पाछें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे। सो सगरे समाचार एक वैष्णव ने श्रीगुसांईजी के आगें कहे। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी उन पटेलन ऊपर बोहोत प्रसन्न भए।

भावप्रकाश - या वार्ता में वैष्णव को स्वरूप जताए, जो-वैष्णव सर्वोपरि है। देवी देवता सब उन सों डरपत हैं। उन की आज्ञा में रहत हैं। तातें वैष्णव कों अन्याश्रय सर्वथा न करनो। और अपने द्रव्य कों भगवद् अतिरिक्त काम में न लगावनो। काहेतें, जो-उह प्रभुन कौ द्रव्य है। सो प्रभुन ते कार्य में खर्च होंई। अन्य दैवी-देवतान के अर्थ खर्च करे तो बहिर्मुख होंई।

ऐसें दोऊ भाई पटेल अनन्य टेक के भगवदीय हते। जिन की बड़ाई श्रीमुख तें श्रीगुसांईजी करते। तासों उन की वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥१२३॥

✸ ✸ ✸ ✸

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक, एक विरक्त, सो श्रीगोकुल में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनको नाम 'विरहात्मिका' है। ये 'ब्रजमंगला' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग-१

सो विरक्त श्रीगुसांईजी कौ सेवक हतो। सो चुकटी मांगि कै निर्वाह करतो। सो मानसी सेवा बोहोत स्नेह सों करतो। श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के ग्रन्थ बोहोत पाठ करत हतो। पुष्टिमार्ग में रूचि आछी हती।

और श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक क्षत्रानी हती। ताके

नाम द्रव्य बोहोत हुतो। तासों उह विरक्त कौ स्नेह हतो। सो वह क्षत्रानी सों मिलि कै भगवद्वार्ता भगवदस्मरन करे। ता पाछें महाप्रसाद लेहि। और वह विरक्त और ठौर चुकटी मांगे, परंतु वह क्षत्रानी के घर न मांगतो। कछू लौकिक कौ संबंध नाहीं। इतनी वह विरक्त के मन में आस ही, जो-कबहू मोकों कछू द्रव्य कौ काम परेगो तो अटकी न रहेगी, यह देइगी। सो यह अन्याश्रय तें श्रीठाकुरजी वा विरक्त कों सानुभावता न जनावत हे।

तब श्रीगुसांईजी बिचारे, जो-वैष्णव कों रंचक हू अन्याश्रय होंई तो भगवद् प्राप्ति न होंई। तातें याकों अन्याश्रय तें छुडावनो। सो वह विरक्त जब श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो, तब श्रीगुसांईजी उह वैष्णव सों कहे, जो-तू वह क्षत्रानी कौ स्नेह छोरीदे। तब वा विरक्त ने कह्यो, जो-महाराज ! वह क्षत्रानी कौ स्नेह तो मेरे प्रान के संग है। सो मोसों छूटे नाहीं। सो मैं आप के आगें झूठ काहे कों बोलूं ? और मेरे लौकिक संबंध कछू नाहीं। सो आप अंतरयामी हो। सो सब जानत हो। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी चुप होइ रहे। पाछें श्रीगुसांईजी दिन दस-पंद्रह वह विरक्त सो कहे, जो-वैष्णव ! हम कों रुपैया हजार पांच चहिए। सो हमारे दस-बीस दिन में हुंडी आवेगी। तब तुम कों देहिंगे। तुम्हारे काहू सों पहिचान होंई तो ल्याय देऊ। तब वह विरक्त ने कह्यो, जो-महाराज ! रुपैया चहिए सो तैयार है। मैं लाऊंगो। पाछें वह वैष्णव वह क्षत्रानी पास गयो।

और कह्यो, जो-आज मेरो एक काम पर्‌यो है। सो तासों तू नाहीं मति कीजो। तब वह क्षत्रानी ने कह्यो, जो-मैं तुम्हारी हों, सब घर तुम्हारो है, तुम कहो सो मैं करों। तब वैष्णव कही, हजार पांच रुपैया श्रीगुसांईजी मोसों मांगे हैं, सो दिन दसबीस में आप के यहां हुंडी आवेगी तब मैं ल्याय देउंगो। सो मोकों देऊ। तब वा क्षत्रानी ने कही, जो रुपैया चाहो सो तुम ले जाऊ। परंतु तुम ही मोकों ल्याय दीजो। मैं श्री गुसांईजी की सेवकिनी हूं। तासों मैं उन सों रुपैया नाहीं मांगूंगी। तब उन विरक्त वैष्णव ने कही, जो-तू चिंता मति करे। श्रीगुसांईजी कह्यो है सो हुंडी मैं तोकों ल्याय देउंगो। यह सुनि के वह क्षत्रानी पांच हजार रुपैया की थेली निकासि वा विरक्त कों दीनी। सो वह विरक्त वे थेली ले कै श्रीगुसांईजी पास महा आनंद सों आयो। मन में वैष्णव ने बिचार्‌यो, जो-आज क्षत्रानी बोहोत काम आई। जो-वह रुपैया न देती तो मैं श्रीगुसांईजी कों कहा देतो ? तातें यह क्षत्रानी बड़ी हितकारनी है। पाछें पांचो हजार रुपैया लेकै श्रीगुसांईजी के आगें धरि कै दंडवत् कियो। तब श्रीगुसांईजी (ने) उह वैष्णव की बोहोत बड़ाई करी। कह्यो, जो-वैष्णव ! तू भले समै रुपैया ल्यायो। हमारे जरूरी काम हतो। तब वैष्णव ने कह्यो, जो-महाराज ! वह क्षत्रानी के पास तें ले आयो हूं। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी कहे, जो-प्रीति स्नेह ऐसो ही चहिए। जो-मांगिये सो मिले। पाछें वैष्णव कों एक बीरा दे कै श्रीगुसांईजी बिदा किये। ता पाछें एक काठ कै सिंदूक

में पांचों थेली धरि तारौ लगाय कै धरती में गड़ाय दिये। और वैष्णव बीरा ले कै उह क्षत्रानी के पास आयो। आधो बीरा वह क्षत्रानी कों दियो। वह वैष्णव मन में बोहोत प्रसन्न भयो।

पाछें श्रीगुसांईजी कछू बोले नाहीं। कब हू रुपैया देवे की बात नाहीं कहे। सो महिना दोइ बीति गए। तब वह क्षत्रानी विरक्त सों कह्यो, जो-महिना दोई बीति गए तुम रुपैया ल्याये नाहीं। तब इन कह्यो, जो-जा दिन ते मैं रुपैया श्रीगुसांईजी कों दिये हैं ता दिन तें आप मोसों बोलत नाहीं। और काहू दिन उन रुपैयान की चर्चा हू नाहीं किये। सो अब मैं कैसी करों ? तब वह क्षत्रानी ने कही, तुम श्रीगुसांईजी सों पूछो तो सही। तब उह वैष्णव जाँइ कै श्रीगुसांईजी के पास बैठ्यो। परंतु संकोच करि कै पूछि न सक्यो। ऐसें ही दोइ दिन बीति गए। तब वह क्षत्रानी ने वैष्णव सों कह्यो, जो-ऐसें संकोच किये कैसें बनेगी? तुम जरूर आज श्रीगुसांईजी सों पूछो। तब वह वैष्णव आइ कै संकोच सहित श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! वह क्षत्रानी के पांच हजार रुपैया जो हैं, सो मैं उधार ल्याय कै दियो हूं। सो वह क्षत्रानी मोसों मांगति हैं। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-वैष्णव ! हमारे पांच हजार रुपैया अब ही कहां तें आए ? दोई-चार बरस कौ परदेस करेंगे। तब खरच बचेगो तब हम देइंगे। और तुम्हारी तो वह क्षत्रानी सों बड़ी प्रीति हैं। तुम सों वह क्यों मांगति है ? यह श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै वह वैष्णव सूकि गयो। मन में कह्यो, जो-मैं बोहोत बुरी करी। जो-उह क्षत्रानी कौ द्रव्य लियो। अब मैं क्षत्रानी कों कहा

जुवाब देउंगो ? पाछें वह वैष्णव उठि कै सोच करत उह क्षत्रानी के पास आयो। तब वा क्षत्रानी वा वैष्णव सो कही, जो-तुम श्रीगुसांईजी सों रुपैयान की पूछी हती ? तब वह वैष्णव ने कही, जो-मैं पूछी हती। सो श्रीगुसांईजी कहें, जो-दोइ-चारि बरस परदेस करेंगे तब कहूं परदेस तें दोई-चारि हजार आवेंगे। सो खरच तें रुपैया बचेंगे तब रुपैया मिलेंगे। अब ही तो रुपैया नाहीं है। तब वह क्षत्रानी ने कही, जो-मैं तुम सों पहिले ही कही हती, सो तुम मेरे रुपैया ल्याय देऊ। अब ही तुम श्रीगुसांईजी के पास जाऊ। कहूं तें उधार काढ़ि कै श्रीगुसांईजी देहिंगे। कब परदेस पधारेंगे सो कह्यो न जाँई। और तुम मेरे रुपैया ल्यावोगे तो मेरी तुम्हारी प्रीति रहेगी। तब वैष्णव ने उह क्षत्रानी सों कह्यो, जो-कदाचित् अब ही रुपैया न मिले तो कहां करूँ ? यह सुनि कै उह क्षत्रानी ने अपने दो मनुष्य बुलाय कै उह वैष्णव के पीछे करि दिये और कह्यो, जो-अब ही तो ये मनुष्य तुम्हारे पीछे किये हैं। और रुपैया न ल्यावोगे तो मथुरा में जाँइ कै बंदीखाने तुम कों देउंगी। तातें अब ही जाँई कै रुपैया कों ले आउ। तब वैष्णव श्रीगुसांईजी के पास चल्यो। और वे दोइ मनुष्य संग चले। सो श्रीगुसांईजी भोजन करि गादी तकिया पर बिराजे हते। ता समै यह वैष्णव जांई श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कियो। तब हँसि कै श्रीगुसांईजी उह वैष्णव कों पूछे, जो-वैष्णव ! तुम क्यों आये ? और ये दोई मनुष्य तुम्हारे संग कैसे आये ? तब वैष्णव कह्यो, जो-महाराज ! उह क्षत्रानी नें मेरे पीछे करि दिये हैं। और मोसों कह्यो है, जो-तुम रुपैया न

ल्यावेगो तो मैं तुम्है बंदीखाने मथुरा कों जाँइ कै दिवाउंगी, तातें रुपैया आज ल्याऊं। सो महाराज मोकों बड़ो संकट पर्‌यो है। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-हम तो तुम सों पहिले ही कही हती, जो-या क्षत्रानी सों स्नेह छोरि देहु। सो तुम नाहीं मानी। तब वैष्णवन कही, जो-महाराज ! आप की आज्ञा नाहीं मानी तो इतनो दुःख पावत हों। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-वैष्णव ! हम तुम कों उधार रुपैया कहूं ते ल्याय के देहि पांचों हजार, तो तुम फेरि वा क्षत्रानी सों स्नेह तो न राखोगे ? तब वैष्णव ने कही, महाराज ! मैं कबहू वाके घर को द्वार ऊपर नाहीं जाउंगो। जो-अब मेरो पीछो छूटे तो। तब श्रीगुसांईजी वह रुपैयान की सिंदूक मंगाइ कै कहे, जो-वैष्णव ! यह तेरे लाये रुपैया पांच हजार ज्यों के त्यों धरे हैं। हम कों तेरे और क्षत्रानी के रुपैया कहा करने हैं ? यह तेरो अज्ञान और अन्याश्रय दूरि करिवे के तांई उपाय कियो हो। तातें रुपैया ले जाऊ। तब वह वैष्णव पांच हजार रुपैया ले कै वह क्षत्रानी के पास आयो। तब वैष्णव ने कही, जो-ये अपने रुपैया ले। आजु पाछें तेरो मुख नाहीं देखुंगो। तब वह क्षत्रानी बोहोत ही कही, परि वैष्णव वाकी बात सुनी नाहीं। तहां ते तत्काल वह वैष्णव उठि कै अपने घर आयो। पाछें वह वैष्णव आय श्रीगुसांईजी के पास दंडवत् किये। कह्यो, महाराज ! मोकों बड़ो अन्याश्रय हतो। सो मैं अज्ञान करि कै कबहू न छोरतो। सो आपु कृपा करि कै छुरायो। तब श्रीगुसांईजी वह वैष्णव सों कहे, जो-तोकों भगवद् प्राप्ति में यह प्रतिबंध हतो सो दूरि भयो। अब तू भगवद् सेवा सुखेन

करियो। तब वह वैष्णव विरक्त मानसी सेवा आछी भांति सों करन लाग्यो।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव कों अन्याश्रय तें बोहोत डरपनो। सो अन्याश्रय कौ स्वरूप कहा है ? जो-काहू बात की अपेक्षा मन में आवें सोइ अन्याश्रय है। तातें भगवान सिवाय अन्य की कामना ना करे। और स्नेह कौ स्वरूप जताए। सो साँचे स्नेही तो एक नंदनंदन ही हैं। और सब मतलब ते हैं। सो भाव या पद में जाननो -

राग : सोरठ

सांचे स्नेही श्रीनंदकुमार।
और नहीं कोई दुःख कौ बेली सब मतलब के यार॥
मनुष्य जाति कौ नहीं भरोंसो छिनु बिहार छिनु पार।
चित बचन कौ नहीं ठिकानों छिनु छिनु पृथक बिचार॥
मातपिता भगिनी सुत दारा रति न निभत एकतारा॥
सदा एकरस तुमही निभावो 'रसिक' प्रीतम प्रतिपार॥

तातें श्रीगुसांईजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं। सोई साँचे स्नेही हैं। सो या वैष्णव कों या प्रकार अन्याश्रय तें छुडाये। तातें एक दृढ़ प्रीति उनही सों करनी।

सो वह विरक्त के उपर श्रीगुसांईजी आप ही ऐसी कृपा किये। तातें वह वैष्णव बड़ो भगवदीय है। सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता॥१३४॥

* * * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक क्षत्री वैष्णव आगरे में रहत हुतो, ताकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश -ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'नागर-रंजनी' है। सो नागर जो-श्रीठाकुरजी तिनके मन कों ये रंजन करत हैं। ये 'ब्रजमंगला' तें प्रगटी हैं। तातें इनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो वाके आगरे में बजाज की दुकान हती। सो वाके यहां वस्त्रन कौ व्यौपार हतो। सो वाकें वस्त्र बोहोत ही उत्तम ते उत्तम आवते। सो श्रीगुसांईजी एक समै आगरा पधारे। सो

मारग में याकों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो दरसन होत ही याके मन में आइ, जो–हों इन कौ सेवक होउं तो आछौ। पाछें श्रीगुसांईजी आप तो रूपचंदनंदा के घर पधारे। तब यह क्षत्री हू रूपचंदनंदा के घर आयो। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो–महाराज ! मोकों अपनो सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी इनकों दैवी जीव जानि नाम सुनाए। ता पाछें दूसरे दिन निवेदन कराए। पाछें श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री सो कहे, जो–वैष्णव ! तुम रूपचंदनंदा कौ संग करियो। तातें तुम्हारो कल्यान होइगो। तब यह क्षत्री नित्य रूपचंदनंदा के घर जातो भगवद्वार्ता सुनतो। पाछें श्रीगुसांईजी तो कछूक दिन में श्रीगोकुल पधारे। सो यह सरनि आयो। तब वाके मन में यह मनोरथ भयो, जो हों श्रीगुसांईजी के सब बालक बहू बेटीन कों उत्तम तें उत्तम वस्त्र पहिराउं। सो वाकी हाट में तो वस्त्र उत्तम तें उत्तम बोहोत आवे। सो सारी जरीन की तथा गुजराती कीनखाब तथा जरीन के थान, सो सब जूदे काढ़ि कै धरे। सो सब बरस दोई तीन में दोई गांठि भरि कै जो वस्त्र भेले किये सो एक में पुरुष के पहिरवे कै वस्त्र और दूसरी में स्त्रीन के पहिरवे कै वस्त्र, सो गांठि दोइ न्यारी न्यारी करि कै वह क्षत्री वैष्णव बजाज दोऊ गांठि वस्त्र की लेके आगरे सों चल्यो। सो श्रीगोकुल आयो। सो श्रीगुसांईजी गादी तकिया पर बिराजे हते। सो वह क्षत्री वैष्णव आइ कै श्री–गुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् कियो। तब श्रीगुसांईजी आपु वासों पूछे, जो–तू कब आयो ? तब वह वैष्णव क्षत्री ने कह्यो, जो–महाराजाधिराज ! आगरे तें अबही आवत हूं। सो महारा–

जाधिराज ! मोकों बहोत ही दिन तें महाराज के दरसन कौ मनोरथ हतो, जो–मैं अब के सब बालक बहू–बेटी सबन कों उत्तम तें उत्तम वस्त्र पहिराउं। सो महाराजाधिराज ! बोहोत दिन में वस्त्र इकठौरे कीने हैं। सो महाराजाधिराज ! आप अंगीकार कीजे। तब श्रीगुसांईजी नें कह्यो, जो–वह गांठि कहां है, ल्याउ। जो सब वस्त्र–बस्तु देखें। तब वह क्षत्री वैष्णव दोऊ गांठि मंगाइ कै श्रीगुसांईजी के आगें धरी। श्रीगुसांईजी ने दोऊ गांठि खोलि कै देखी। सो वे वस्त्र सब देखि कै उत्तम तें उत्तम, श्रीगुसांईजी आपु बोहोत ही प्रसन्न भए। और श्रीमुख तें कहे, जो–वस्त्र तो श्रीस्वामिनीजी लायक हैं। सो एक गांठि वस्त्र की स्वामिनीजी के वस्त्र की हती, तामें जरी के थान और धरि कै वह गांठि श्रीयमुनाजी के मध्यधारा में पधराय दीनी। पाछें दूसरी गांठि हू पधराय दीनी। तब वह क्षत्री वैष्णव तो बोहोत ही सोच करन लाग्यो। और अपने मन में कही, जो–ऐसें मैनें अपनो मनोरथ कियो हो। सो केतेक दिनन में तो सब एकठोरो करि के ल्यायो। सो श्रीगुसांईजी महाराज आप योंही श्रीयमुनाजी में पधराय दीने। सो मेरो तो मनोरथ मन कौ मन ही में रह्यो। सो भगवद्इच्छा। सो याहीं भांति सों सोच करत रात्रि भई। सो न कछू खायो न कछू पियो। भूखो उहां ही परि रह्यो। सो श्रीगुसांईजी आप तो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम ईश्वर, सो सब वाके मन में की बात जानी। जो–वह क्षत्री वैष्णव के मन में बोहोत ही खेद भयो है। सो श्रीगुसांईजी आप तो परम दयाल हैं। जो–भक्तवत्सल करुनासिंधु दयासागर हैं। सो खेद सहि न

सके। तब श्रीगुसांईजी आप बिचारे, जो–जामें या क्षत्री वैष्णव कों खेद निवृत्त होइ सो करिए। सो जब अर्द्धरात्रि भई, तब श्रीगुसांईजी आप मेवा कौ डबरा भरि कै अपने श्रीहस्त में ले कै उठे। तब पूछे, जो–वह क्षत्री वैष्णव आगरे तें आयो हो सो कहां है ? तब एक वैष्णव नें कही, जो–महाराजाधिराज ! वह तो बड़े सोच में है। सो क़हूं परि रह्यो है। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो वाकों जगाय ल्याओ। तब एक वैष्णव जाय कै वाकों जगाइ ल्याओ। तब वा क्षत्री वैष्णव सों श्रीगुसांईजी नें कह्यो, जो–यह काकड़ा ले कै श्रीठकुरानी घाट के उहां चलि। सो वह क्षत्री वैष्णव काकड़ा ले कै आगें चल्यो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप चले। तब और वैष्णव साथ आवन लागे। तब श्रीगुसांईजी आप सबन कों बरजे, जो–कोऊ साथ मति आओ। तब सब वैष्णव द्वार तें फिरि आए। सो श्रीगुसांईजी आप की बैठक में बैठे रहे। कहें, जो–श्रीगुसांईजी आप जब आवेंगे तब दरसन करि कै जाइंगे। तब श्रीगुसांईजी आप अकेले और वह क्षत्री वैष्णव, तीसरो कोऊ नाहीं। सो वा क्षत्री वैष्णव कों संग ले कै श्रीगुसांईजी आप ठकुरानी घाट पधारे। सो जब घाट ऊपर आए तब वा क्षत्री वैष्णव सों कह्यो, जो–देखि ! तेरे वस्त्र श्रीस्वामिनीजी अंगीकार किये हैं। सो वह क्षत्री वैष्णव देखे, तो–वेही वस्त्र, वेही साड़ी, लँहगा, चोली सब श्रीस्वामिनीजी अंगीकार किये हैं। सब पहिरि हैं। और श्रीठाकुरजी वही जरी कौ बागा पहिरे हैं। ता पाछें श्रीगुसांईजी वा क्षत्री वैष्णव सो कह्यो, जो–तू इहां ठाढ़ौ रहियो। हम आवत हैं। सो वा क्षत्री

वैष्णव कों घाट पर ठाढ़ौ राखि कै श्रीगुसांईजी आप लीला में पधारे। सो उह लीला में मेवा कौ डबरा लेकै गए। सो उहां जाइ कै मेवा कौ डबरा भोग धर्‍यो। और श्रीगुसांईजी आप उहां उन में ठाढ़े हैं। ता पाछें श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी आप मेवा आरोगे। ता पाछें नृत्य किये ! सो नृत्य उहां घाट उपर तें वह क्षत्री वैष्णव सब देखत हैं। सो देखि कै अपने मन में बोहोत ही प्रसन्न भयो। जो–मेरे बड़े भाग है। जो–मेरे वस्त्र ठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी सहित अंगीकार किये हैं। सो श्रीगुसांईजी की कृपा तें मोकों रासलीला कौ दरसन भयो। और श्रीगुसांईजी कों श्रीठाकुरजी ने मेवा कौ महाप्रसाद दियो। सो ले कै श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरानी घाट ऊपर आए। तब वा क्षत्री वैष्णव ने साष्टांग दंडवत् कियो। पाछें कह्यो, जो–महाराजाधिराज ! तुम बिना मो ऊपर इतनी कृपा कौन करें ! ता पाछें श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठक मैं पधारे। तब सब वैष्णव साष्टांग दंडवत् करि कै सोइ रहे। अपने अपने घर गए। तब वह क्षत्री वैष्णव हू साष्टांग दंडवत् करि कै सोई रह्यो। ता पाछें श्रीगुसांईजी हू आप पौढें। पाछें रात्रि घरी एक रही तब उठि कै देहकृत्य करि कै स्नान कियो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भीतर पधारे। और वह क्षत्री वैष्णव श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन मंगला आरति के करि कै श्रीगुसांईजी कों आइ कै दंडवत् कियो। और कह्यो, जो–महाराजाधिराज ! आज्ञा होंइ तो घर जाऊं। तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो–राजभोग के दरसन करि कै जैयो। ता पाछें राजभोग आरति करि कै श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में बिराजे।

तब वह क्षत्री वैष्णव आयो। तब श्रीगुसांईजी आप वासों कहे, जो–तुम महाप्रसाद ले कै जैयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप सब बालकन सहित भोजन कों पधारे। सो भोजन करि कै अपनी जूंठनि की पातरि वा क्षत्री वैष्णव कों श्रीगुसांईजी आप अपने श्रीहस्त सों धरे। तल वह क्षत्री वैष्णव महाप्रसाद ले कै पाछें श्रीगुसांईजी की बैठक में आयो, दंडवत् कियो। तब श्रीगुसांईजी आप वाकों बीरा दे कै बिदा कियो। सो वह क्षत्री आगरे में अपने घर आयो।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह हैं, जो–श्रीयमुनाजी के विषे सकल लीला विद्यमान हैं। सो श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी की कृपा होंई तब या प्रकार दरसन होंई। तातें उन कौ एक दृढ़ आश्रय करनो। और वैष्णव कों श्रीयमुनाजी कौ स्वरूप अलौकिक करि जाननो, यहू जताए।

सो वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१३५॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक मेहा धीमर रावल के पास गोपालपुर गाम है, तहां रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'मंजिरा' है। ये 'सुमन्दिरा' तें प्रगटी हैं। तातें इनके भावरूप हैं।

ये रावल के पास 'गोपालपुर' गाम है, तहां धीमर के जन्म्यो। सो बरस बीस कौ भयो तब याकौ ब्याह भयो। पाछें इनके मा–बाप मरे। सों ये मलाह कौ धंधा करन लाग्यो। सो ये श्रीयमुनाजी में मछली मारि अपनो निर्वाह करतो।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात कौ परदेस करि कै पाछें श्रीगुसांईजी गोवर्द्धन पधारे। तहां श्रीनाथजी की सेवा सिंगार

करि कै दिन तीन तहां रहे। पाछें चोथे दिन राजभोग आरति करि श्रीनाथजी कों अनोसर कराय कै श्रीगोकुल पधारिवे कौ बिचार कर्यो। तहां तें घोड़ापैं असवार होइ कै दसपांच वैष्णव संग ले कै पधारे। सो 'मई' के घाट पार उतरि कै संध्या समै श्रीगुसांईजी सगरे वैष्णवन सहित रावल पधारे। सो वा दिन श्रीगोकुल पधारिवे कौ मुहूर्त आछो नाहीं हतो। तासों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–आज मुहूर्त आछौ नाहीं है। तासों रावल के पास 'गोपालपुर' गाम है, तहां डेरा करो। प्रातःकाल श्रीगोकुल चलेंगे। तब सगरे वैष्णव सेवक टहलुवा भारकस ले कै गोपालपुर डेरा किये। वहां डेरा में श्रीगुसांईजी पधारे। पाछें आप वागा उतारि कै श्रीयमुनाजी के किनारे संध्यावंदन करन पधारे। तब वैष्णव दसपांच संग गये। सो घाट पै पहोंचे। तब श्रीगुसांईजी देखें तो एक मलाह जाल लिये मछली पकरत है। तब वैष्णव वह मलाह के पास जाँइ कै कह्यो, जो–तू इहां तें मछली मति पकरे। श्रीगुसांईजी यहां पधारे हैं। तातें तू उठि जा। तब मेहा धीमर ने कही, जो–आज प्रातःकाल तें कछू खायो नाहीं है। सो मैं जाल कैसें निकासों ? तब वैष्णव ने एक रुपैया मेहाधीमर कों दियो। और कह्यो, जो–बेगि तू जाल निकारि। तब धीमर ने तत्काल जाल निकार लियो। तब वैष्णव ने मेहा सों कह्यो, जो–तू डेरा तें नेक दूरि बैठ्यो रहियो। तब तोकों खाइवे कों देइंगे। अब तू इहां तें उठि जा। तब वह मेहा धीमर अपनो जाल लेकै बेगि ही उठि कै घर गयो। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजी के तीर बैठि कै संध्यावंदन किये। पाछें अपने डेरा

में वैष्णव सहित पधारे। सो पाक करि भोग धरे। पाछें आप आरोगे। तब सगरे वैष्णव हते तिनकों जूंठनि की पातरि श्रीगुसांईजी धरन लागे। तब वैष्णव श्रीगुसांईजी सो बिनती करी, जो–महाराज ! एक पातरि और धरनी है। या गाम में एक हीन जाति कौ रहत है। ताकों देन कहे हैं। सो वह भूखो रहेगो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–मैं जानत हों ! ताके लिये तो आज इहां डेरा किये हैं। यह सुनि कै सब वैष्णव चुप करि रहे। तब एक ब्रजबासी सों श्रीगुसांईजी कहे, जो–या गाम में मेहा धीमर रहत है। ताकों बुलाय कै बाहिर ठाढ़ो करो। तब ब्रजबासी डेरा सों बाहिर जाँइ कै गाम के पास मेहा कों पुकार्‍यो। सो मेहा पहिले ही तें महाप्रसाद के लिये दूर बैठ्यो हतो। वैष्णव प्रथम कहे हते। तासों डेरा बाहिर नेक दूरि बैठ्यो हतो। सो मेहा ब्रजबासी के पास आय कै पूछ्यो, जो–तुम मोकों काहे के लिये बुलावत हो ? तब ब्रजबासी ने कही, जो–तोकों श्रीगुसांईजी बुलावत हैं। तब मेहा ब्रजबासी के संग चल्यो। सो ब्रजबासी मेहा कों बाहिर ठाढ़ौ करि कै ब्रजबासी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! मेहा बाहिर ठाढ़ौ है। तब श्रीगुसांईजी पातरि भरि करि कै अपनी जूंठनि अपने श्रीहस्त में लेकै डेरा के बाहिर पधारे। सो मेहा कों दिये। और मेहा सों कहे, जो–तू अपनी स्त्री के संग लीजो। दोऊ मिलि कै। तब मेहा आधी पातरि अपनी स्त्री कों दियो। और आधी आप लियो। सो दोऊ महाप्रसाद लियो। सो महाप्रसाद लेत ही दोऊन की बुद्धि निर्मल होंइ गई। तब स्त्री मेहा सों पूछ्यो, जो–आज यह महाप्रसाद

कहां तें ल्याये हो ? तब मेहाने कही, जो–श्रीगुसांईजी श्री–विट्ठलनाथजी आगें मथुरा में रहते सो अब श्रीगोकुल में रहत हैं। सो आज इहां पधारे हैं। सों वैष्णव आज मोकों एक रुपैया दियो है। और श्रीगुसांईजी मोकों अपने श्रीहस्तकमल सों यह प्रसाद दियो है। ये साक्षात् ईश्वर कहियत हैं। तब स्त्रीने कही, जो–चलो इनकी सरनि जैये। तब मेहा ने अपनी स्त्री सों कह्यो, जो–हम तो ज्ञाति करि कै हीन हैं। हम कों सरनि कैसें लेइगें ? तब स्त्रीने कह्यो, जो–तुम चलो तो सही। जैसें प्रसाद दिये हैं कृपा करि तैसें ही सरनि लेइंगे। तब मेहा और मेहा की स्त्री दोऊ जनें श्रीगुसांईजी के डेरा पास रात्रि कों बैठि रहे। तब ब्रजबासी उन सों पूछी, तुम कौन हो ? और या समै रात्रिकों डेरा के निकट क्यों बैठे हो ? तब मेहा ने कही, जो–हम कों श्रीगुसांईजी महाप्रसाद दिये हैं। तातें हम बैठें हैं। तब वा ब्रजबासी ने कही, जो–अब तो तुम उठि जाउ। इहां मति रहो। कछु काम होंइ सो कहो। तब मेहा ने कही, जो–हम अब कहां जाँइ, सो कहो अब हम श्रीगुसांईजी की सरनि आए हैं। अब हम कों कहूं ठौर नाहीं है। यह हमारी बिनती है, सो श्रीगुसांईजी सों कहो, पाछें हम कों उठाइयो। तब ब्रजबासी श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराज ! मेहा धीमर स्त्री सहित बैठ्यो है। सो कहत है, जो–हम श्रीगुसांईजी की सरनि आये हैं। हम बोहोत कह्यो, परि वह जात नाहीं। मेहा ने यह कही, जो–हम कों और ठौर नाहीं है। यह भांति दोऊ जनें डेरा के बाहिर बैठे हैं। तब श्रीगुसांईजी ब्रजबासी सों कहे, जो–तू जाँइ कै मेहा सों कहि

आऊ, जो–आज तुम सोय रहो। काल्हि प्रातःकाल तुम्हारो अंगीकार करेंगे। तुम चिंता मति करो। तब ब्रजबासी डेरा सो बाहिर आय कै मेहा सों कह्यो, जो–आज तुम सोय रहो। काल्हि प्रातःकाल तुम दोऊ जनै कों अंगीकार श्रीगुसांईजी करेंगे। या भांति सों आप आज्ञा करी है। तब मेहा ने कही, जो–अब हम क़हां जाय। याही ठौर बैठे हैं। श्रीगुसांईजी के डेरा की चोकी देत हैं। नींद आवेगी तो इहां सोय रहेंगे। तुम हमारी चिंता मति करो। तब ब्रजबासी अपने कामकाज कों गयो। श्रीगुसांईजी आपु पौढे। और मेहा और वाकी स्त्री सगरी रात्रि जागत रहे।

पाछें प्रातःकाल श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजी कों पधारे। तब मेहा स्त्री सहित देहकृत्य करि कै बिनती करी, जो–महाराज ! मेरो अंगीकार करो। तब श्रीगुसांईजी मेहा सों कहे, जो–जीव की तू हत्या करत है। तेरो अंगीकार कैसें करे ? तब मेहा ने कही, जो–महाराज ! आज पाछें जीव कबहू न मारूंगो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–अपनो निर्वाह कौन प्रकार करेगो ? तब मेहा ने बिनती करी, जो–महाराज ! मैं खेती करि कै अपनो निर्वाह करूंगो। तब श्रीगुसांईजी मेहा सों पूछे, जो–स्त्री तेरे अनुकूल है ? तब मेहा ने कही, जो–मोसों अधिक धर्म स्त्रीमें है। याही की प्रेरना सों मैं आप की सरनि आयो हूं। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी प्रसन्न भए। तब आज्ञा करी, जो–तुम दोऊ जनें न्हाइ आओ। तब श्रीगुसांईजी दोऊन कों नाम सुनाये। तब मेहा ने रुपैया एक वैष्णव सों पायो हतो सो श्रीगुसांईजी की भेंट कर्‌यो। और कह्यो, जो–महाराज ! यह रुपैया आपही के वैष्णव

ने मोकों दियो है। तासों यह आप कौ है। और चारि चारि पैसा और दोऊ जनेंन और भेंट करे। पाछें मेहा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! मोकों भगवत्सेवा पधराय देऊ। तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो–तेरो मन वस्त्र–सेवा पै है कै स्वरूप–सेवा पै ? तब मेहा ने बिनती करी, जो–महाराज ! मेरो मन स्वरूप–सेवा पै हैं। जो–बालक की नांई सेवा करों। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–यहां तू एक हाथ धरती खोदि इहां स्वरूप निकरेगो। तब मेहा ने श्रीयमुनाजी के किनारे खोद्यो। सो एक छोटो सो स्वरूप गौर वरन परम सुंदर निकर्‌यो। सो श्रीगुसांईजी उह स्वरूप कों अपने डेरा पै ले आए। एक संपुट में पधराय कै भोग धरि कै पाछें मेहा कों दिये। सब सेवा कौ प्रकार कहे। और कहे, जो–सेवा में सावधान रहियो। तब मेहा स्त्री सहित श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। पाछें एक कीर्तन गायो–

राग : भैरव

श्रीविट्ठल प्रभु महा उदार।
महा पतित सरनागति लीनो निर्भै करि दिनो निर्द्धार।
वेद पुरान सार जो कहियत सो पुरुषोत्तम हाथ दियो।
'मेहा' प्रभु गिरिधर फिरि प्रगटे पुष्टि भक्ति सुदृढ़ कियो।

यह कीर्तन सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। जाने, याकों स्वरूप कौ ज्ञान भयो। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे। और मेहा गोपालपुर में भली भांति सों सेवा करे। कबहू संदेह

परे उत्सव में मार्ग की रीति में तो श्रीगोकुल जाँइ श्रीगुसांईजी सों पूछि आवें।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–सेवा गुरु की आज्ञा प्रमान करे। मन कल्पित प्रकार सों न करें। नाँतरु प्रभु प्रसन्न न होंई। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'नवरत्न' ग्रंथ में लिखे हैं। सो श्लोक–

'सेवा कृतिर्गुरौराज्ञा बाधनं वा हरिच्छया।'

तातें गुरु की आज्ञा प्रमान सेवा करें, यह सिद्धांत भयो।

और मेहा अकेले श्रीठाकुरजी कों कबहू छोरे नाहीं। एक दिन मेहा श्रीगोकुल आवें। श्रीगुसांईजी के दरसन करि जाँइ। एक दिन मेहा की स्त्री दरसन करि जाँई। और मेहा ने घर में मृतिका कौ मंदिर बनाय कै तामें किवाड़ काष्ट के रंगीन करे। सो तामें श्रीठाकुरजी कों सिंघासन पर पधराये। तहांई सिज्या रहे। सो रात्रि कों किवाड़ लगाय दोऊ अपने अपने ओसरे रखवारी करे। और मेहा ने श्रीयमुनाजी के किनारें खेती करी। सो मेहा खेत पर जाँई। तब मेहा की स्त्री अकेली रखवारी करे। या भांति दोऊ मिलि कै अत्यंत स्नेह सों सेवा करें। सो या भांति कछूक दिन बीते। सो एक दिन श्रीगुसांईजी बिचार कियो, जो–अन्नकूट के दिन दस रहे हैं। तब सब वैष्णव सेवक सों कहे, जो–अन्नकूट के दरसन कों श्रीजीद्वार चलनो है। सो कौन कौन चलेगो ? तब वैष्णव बिनती करी, जो–महाराज ! आपु जाकों आज्ञा देउगे सो चलेगो। तब श्रीगुसांईजी दस पांच वैष्णव और ब्रजबासी इन कों श्रीगोकुल राखे। और सबन कों आज्ञा दिये। ता समै मेहा श्रीगुसांईजी के दरसन कों आये हते। तब श्रीगुसांईजी मेहा सों पूछे, जो–तू अपने घर रहेगो के श्रीजीद्वार चलेगो ? तब मेहा ने

कही, जो–महाराज ! मेरे मन में यह है, जो–श्रीठाकुरजी कों पधराइ कै आप के संग चलों। और आप आज्ञा करें तैसैं करों ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–सुखेन चलो। पाछें मेहा आपने घर गयो। तब जाँइ कै बिचार कियो, जो–खेती करी है ताकों कहा करों ? सो वा गाम में एक गोरवा रहत हतो, भलो मनुष्य हतो। ताकों खेती घर सोंपि अपनी स्त्री, श्रीठाकुरजी सहित श्रीगोकुल आए। पाछें दिन द्वै–एक में श्रीगोकुल तें श्रीगुसांईजी श्रीजीद्वार पधारे। तब मेहा श्रीठाकुरजी कों लेकै स्त्री सहित गोपालपुर में आए। तब श्रीगुसांईजी गाँइ की खरिक में एक कौठा मेहा कों बतायो। तामें मेहा लींप कै खासा करि कै रह्यो। सो अन्नकूट की ठौर कर्‌यो। मृतिका कौ मंदिर बनायो। यथासक्ति थोरी थोरी साम्ग्री कर्‌यो। श्रीगुसांईजी, श्रीनवनीतप्रियजी सहित सातों स्वरूप ले श्रीगोकुल तें पधारें। गोवर्द्धन–पूजा श्री–नवनीतप्रियजी ने करी। पाछें सातों स्वरूप सहित श्रीनाथजी अन्नकूट आरोगे। सो मेहा श्रीनाथजी के अन्नकूट के दरसन करि विवस भयो। सो मेहा कों साक्षात् अनुभव भयो। सो भाव सहित मेहा अपने घर आयो। तब मेहा की स्त्री दरसन कों गई। सो वाहू कों साक्षात् अन्नकूट लीला कौ दरसन भयो। पाछें आप खरिक में आय कै अपने श्रीठाकुरजी कों अन्नकूट भाव सहित पूजे। सो साक्षात् दरसन श्रीठाकुरजी के मेहा और मेहा की स्त्री को भए। ता समै मेहा ने ये कीर्तन सारंग में गाये।

राग : सारंग

हमारो देव गोवर्द्धन पर्वत, गोधन जहां सुखारो।

सुरपति कौं बलि भाग न दीजे, कीजे मतो हमारो ॥
पावक पवन चंद जल सूरज, वर्तत आज्ञा लीने ।
ता सुरपति कौ कियो सब होत हैं, कहां ईंद्र के दीने ॥
जाके आसपास सब ब्रजकुल, सुखी रहें पसु पालें ।
जोरी सकट अछूतें लेले, भलो मती को टारें ॥
बडड़े बैठि बिचार मतो करि, पर्वत कों बलि दीजें ।
नंदराय कौ कुंवर लाड़िलो, कान्ह कहे सो कीजें ॥
माखन दूध दह्यो घृत पक लेले, चले सकल ब्रजबासी ।
मिट्यो भाग सुरपति जिय जान्यो, मेघ दियो मुकराई ।
'मेहा' प्रभु गिरि कर धरि राख्यो, नंदकुंवर सुखदाई ।

राग : सारंग

सुनिए तात हमारो मत, गोवर्द्धन पूजा कीजे ।
जो तुम जज्ञ रच्यो सुरपति कौ, सो सब इहां ले दीजे ॥
कंदमूल फल यह फल की निधि, जो मांगो सो पावो ।
यह गिरि बास हमारो निसदिन, निर्भै गाँइ चरावो ॥
दूध दही के माट भरावो, बिंजन अमृत अपार ।
मधु मेवा पकवान मिठाई, भरि भरि राखे थार ॥
बड़डे बैठि बिचारि मतो करि, कान्ह कहे सो कीजे ।
बिबिध भांति के अन्नकूट करि, पर्वत कों बलि दीजे ॥
यह नग नाना रूप धरत हैं, ब्रजजन कौ रखवारौ ।
देवन में यह बड़ो देवता, मोहू कों अति प्यारौ ॥
नंदनंदन यही रूप धरि, आपुन भोजन कीयौ ।
'मेहा' प्रभु गिरिधरन लाड़िले, मांगि मांगि कै लियो ॥

इत्यादि अन्नकूट के कीर्तन मेहा गावत हैं। सो सांझ होंई। सो देहानुसंधान भूलि गयो। मेहा की स्त्री हू कों कछू देह की सुधि रही नाहीं। सो एक वैष्णव खरिक में मेहा की दसा देखि कै श्रीगुसांईजी सों जाँइ कही। तब श्रीगुसांईजी आपु खरिक में पधारे। तब श्रीगुसांईजी मेहा के कान में कहे, जो–कहा समाचार है ? तब मेहा ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कियो। तब मेहा सों श्रीगुसांईजी ने कही, जो–बेगि भोग सरावो श्रीठाकुरजी बैठि रहे हैं। यह कहि कै श्रीगुसांईजी पधारे। सो स्नान करि कै पर्वत ऊपर पधारे। संखनाद करि कै श्रीनाथजी कों उत्थापन करे। पाछें सेनतांई पहोंचि अनोसर कराय कै पर्वत तें नीचे पधारे। सो महाप्रसाद सबन कों दिये। पाछें बालकन सहित आपु भोजन कियो। पाछें श्रीनवनीतप्रियजी कों पधराय कै सातों स्वरूपन सहित श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे। पाछें मेहा श्रीगुसांईजी सों बिदा होंई कै गोपालपुर में अपने घर आए। सो मेहा के ऊपर श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपा हती।

वार्ता प्रसंग–२

और कछूक दिन में मेहा की स्त्रीकों गर्भ रह्यो। सो पूरे दिन आये। तब मथुरा में मेहा की ज्ञाति कौ झगरो भयो। सो सबन ने कही, जो–मेहा भलो मनुष्य है उह आय कै कहे सो करिये। तब झगरो चुके। सो दोई मनुष्य मथुरा तें मेहा कों बुलावन आए तब मेहा ने अपनी स्त्री सों कह्यो, जो–मोकों जरूर अब मथुरा जानो पर रह्यो है। सो तेरे लरिका होयगो तब श्रीठाकुरजी बैठि रहेंगे। अब मैं कैसें करो ? तब स्त्रीने कही, अब ही तो पीर पेट में नाहीं

होत । तुम उत्थापन तें सेन पर्यंत पहोंचि कै जाउ । अटकियो मति । तब मेहा राजभोग पहोंचि अनोसर कियो । पाछें महाप्रसाद लियो । पाछें दोइ घरि पहिले उत्थापन कराय, सेन पर्यंत पहोंचि कै स्त्री सों कह्यो, जो–सावधान रहियो । तब मथुरा गयो । सो जात ही ज्ञाति कौ काम करनो हतो सो किये । रात्रि कों सब कियो । पाछें सबन सों कह्यो, जो–मेरे घर लरिका होनहार है । तासों अबही जाउंगो । तब सबन नें कही, अर्द्ध रात्रि गई है । सीतकाल कौ दिन है । या समै नाव नाहीं । घाटवारो नाहीं । और हम कैसें जान दे ? हमारे और दोय–तीन दिन तो रहो । तब मेहा ने कही, मैं प्रातःकाल जरूर उठि जाउंगो । तुम्हारो काम कछू होंई सो या समै करि लेउ । पाछें रात्रि मथुरा में रह्यो । और इहां स्त्री कों प्रहर एक रात्रि गई ता समै पुत्र भयो । तब मेहा की स्त्री कों महा खेद भयो । यह पुत्र महादुष्ट है । जो–मेरे पेट में आय कै बैर लियो । अब प्रातःकाल श्रीठाकुरजी की सेवा कौन करेगो ? या भांति स्त्री विलाप करन लागी । तब श्रीठाकुरजी सों यह दुःख सह्यो न गयो । तब श्रीठाकुरजी वा स्त्री सों कहे, जो–तू रोवे मति । मोकों नींद नाही आवति । काल्हि प्रातःकाल तू ही सेवा करियो । तब स्त्रीने कह्यो, जो–महाराज ! मैं तो अघोर नरक में परी हों । तुम्हारी सेवा कैसें करोंगी ? तब श्रीठाकुरजी कहे, गोबर, गोमूत्र, खड़ी लगाय आछी भांति न्हाय काछ बांधि कै चरनामृत ले कै मेरी सेवा करियो । मेरी आज्ञा है, तू चिंता मति करे । अब तू सोय रहे । तोकों कछू बाधक न होइगो । तब मेहा की स्त्री रोवत तें रही । पाछें प्रातःकाल भयो । तब वह स्त्री गोमूत्र, गोबर, खड़ी

लगाय कै सात बेर न्हाई। पाछें चरनामृत ले कै श्रीठाकुरजी कों जगाये। पाछें मंगलभोग आरोगाय आरति करि पाछें सिंगार कियो। पाछें राजभोग तें पहोंचि कै अनोसर कराय कै खाट पै आय कै परि रही। और उहां मेहा प्रातःकाल चलन लाग्यो तब ज्ञातकेन कह्यो; जो–आज और रहो। कछू काम और है। जो – रहो तो आछौ है। तब इन नाहीं करि। ता पाछें ज्ञातकेन कह्यो, जो–एक दिन न रहो तो आज ही एक प्रहर तो और रहो। तब मेहा एक प्रहर रहि कै ज्ञात कौ झगरो चुकाय कै ता पाछें तहां तें चल्यो। सो मथुरा के घाट उतरि कै पार आयो। तब मध्याह्न कौ समौ भयो। ताही समै गोपालपुर तें एक मनुष्य आयो। सो वह मनुष्य मेहा कों देखि कै कह्यो, जो–तोकों बधाई है। तेरे घर रात्रि कों पुत्र भयो है। यह सुनि कै मेहा कों बोहोत बुरी लागी। तब मेहा ने कही, जो–यह दुष्ट पुत्र कहां तें भयो ? मेरे श्रीठाकुरजी बैठि रहे होंगे। ऐसें कहि कै मेहा तहां ते दोर्‌यो। सो घरी एक में गोपालपुर आयो। तब तत्काल आय कै स्त्रीसों कहे, जो–श्रीठाकुरजी बैठे होंगे मैं बेगि न्हाऊं। तब स्त्रीने कह्यो, जो–श्रीठाकुरजी कौ सेवा सिंगार भयो है। मैं राजभोग तांई पहोंची हूं। तब मेहा कों महाक्रोध स्त्री पैं आयो। जो–ऐसें नरक में परी है तू, तामें कैसें श्रीठाकुरजी कों छियो ? तब स्त्री ने कह्यो, जो–मोकों श्रीठाकुरजी की आज्ञा भई है। तब में सेवा करी। तब मेहा ने कही, जो–श्रीठाकुरजी कबहू न कहे। मोकों गिलानी आवत है। तो तोकों श्रीठाकुरजी कैसें कहेंगे ? तू रांड बड़ी झूठी है। ऐसें कहि कै मेहा एक बड़ी लाठी ले कै मारन लाग्यो। तब

श्रीठाकुरजी जाने, जो–मेहा निश्चय मारेगो । तब मेहा सों श्रीठाकुरजीने कह्यो, जो–वाकों काहे कों मारत है ? यह तो मेरी आज्ञा तें सेवा करी है । और तू मोकों छोरि कै चल्यो गयो । तो सेवा को करे ? दोष तो तेरो है । तब मेहाने बिनती करी, जो– महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करो, मैं भूल्यो । और महाराज ! ऐसे में यासों सेवा कौन भांति कराई ? तब श्रीठाकुरजी कहे, जो–याकों रात्रि कों विरह ताप बोहोत भयो हतो । सो मोसों सह्यो न गयो । तब मैं आज्ञा दीनी । अब तोकों गिलानी आवे तो अपरस काढ़ि कै दूसरे दिन सिंगार करि राजभोग धरि । स्त्री कों काहेकों मारत है ? यह तो मेरी आज्ञा तें कियो है । यह सुनि कै मेहा श्रीठाकुरजी कों दंडवत् कियो । बोहोत बिनती कियो । जो – महाराज ! मैं चूक्यो । अब मेरो अपराध आप कृपा करि कै क्षमा करो । पाछें मेहा न्हाय कै सगरी अपरस काढ्यो ।

भावप्रकाश–यामें यह जनाए, जो–वैष्णव कौ सेवा में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की मर्यादा कौ पालन अवस्य करनो । तातें श्रीठाकुरजी प्रसन्न होत हैं । और जो कदाचित् प्रभुन की बिसेस आज्ञा होंई तो ता प्रकार करनो । तामें बाधक नाहीं ।

श्रीठाकुरजी कों श्रीयमुनाजल सों स्नान कराय कै फेरि कै मंगलभोग तें राजभोग तांई पहोंच्यो । या भांति सों मेहा की ऊपर, मेहा की स्त्री ऊपर, श्रीठाकुरजी कृपा करते ।

वार्ता प्रसंग – ३

पाछें कछूक दिन में मेहा की स्त्री की देह छूटी । सो श्रीगुसांईजी के चरनकमल कौ स्मरन करि कै वह स्त्री देह छोरि लीला में प्राप्त भई । तब मेहा कों महादुःख भयो । जो – अब भगवद्सेवा अकेले कौन प्रकार सों होइगी ? ता पाछें मेहा कौ

लरिका बरस दस कौ भयो। तासों मेहा बारबार कहे, जो – तू श्रीगुसांईजी कौ सेवक होऊ, भगवद् सेवा करि। तब वह पुत्र मेहा सों कहे, जो – मैं सेवक न होउंगो। वा पुत्र के बचन सुनि कै मेहा मन में जान्यो, जो–यह दैवी जीव नाहीं है। तातें श्रीगुसांईजी की सरनि नाहीं आवेगो। पाछें मेहा अकेलो भगवद्सेवा करें। सो एक दिन चारि वैष्णव मथुरा तें चले। श्रीगोकुल कों, श्रीगुसांईजी के दरसन कों। तब दिन थोरो रह्यो। तब वैष्णवन बिचार कर्यो, जो–मथुरा के घाट आज उतरि रहे। प्रातःकाल गोकुल पहोंचेंगे। सो पार मथुरा के घाट चारों जनें उतरे। तब एक वैष्णव ने कह्यो, जो–चलो गोपालपुर में मेहा श्रीगुसांईजी कौ भलो वैष्णव है। ताके घर में रात्रि कों रहेंगे। भगवद्वार्ता कछू सुनेंगे। यह सुनि कै सबन के मन में यह बात आई। सो चारों जनें चले। सो घरी दोइ रात्रि गई ता समै मेहा के घर आय पहोंचे। ता समै मेहा के इहां सेनभोग धर्यो हतो। तब मेहा ने वैष्णवन कों बोहोत सन्मान करि अत्यंत प्रीति सों उतारो दियो। पाछें सेनभोग सराय कै पाछें चारों वैष्णवन कों दरसन कराय भली जांति सों प्रसन्न किये। सो चारों वैष्णवन के मन में यह आई, जो– हमकों यह स्वरूप पधरावें तो हम सेवा करें। पाछें मेहा ने अनोसर करि कै वैष्णव के पास आय पूछ्यो, जो–महाप्रसाद लेऊ। दूध की सामग्री हैं। और अनसखड़ी हू हैं। सो तुम्हारो मन होइ सो लेऊ। तब वैष्णव ने कही, जो–हम महाप्रसाद लेकै चले हैं। और तुम्हारे इहां दूध की सामग्री हैं, सो लहिंगे। तब मेहा दूध के पेड़ा, खोवा, मलाई, दूध, यह

महाप्रसाद ल्याय दियो। घर में गाँइ भैंसि बोहोत हुती। तातें दूध बोहोत होतो। सो चारों वैष्णव ने महाप्रसाद लियो। पाछें मेहा महाप्रसाद लेकै वैष्णवन के पास आयो। सो भगवद् वार्ता करन लागे। सो चारों वैष्णव में तीन वैष्णव ब्राह्मन हते। और एक वैष्णव क्षत्री हतो। सो वह क्षत्री भलो वैष्णव हतो। तब भगवद् वार्ता में मेहा ने जान्यौ, जो–क्षत्री भलो वैष्णव है। तब मेहा ने वा क्षत्री सों कह्यो, मेरी देह दिन चारि पाछें छूटेगी। सो तुम श्रीठाकुरजी कों पधरावो तो बोहोत आछो है। तब क्षत्री ने कह्यो, जो–तुम्हारे लरिका है, सो वह सेवा भली करेगो। तब मेहा ने कही, जो– वह आसुरी जीव है। मोतें न्यारो रहत है। और श्रीगुसांईजी की सरनि नहीं आयो हैं। तब वैष्णव ने कही आछौ। पाछें उह तीन ब्राह्मन वैष्णव हते सो मेहा सों कहे, जो–हमारे माथे श्रीठाकुरजी पधरावो तो हम सेवा करें। तब मेहा ने कही, सो तो सांच। परंतु अब तो या क्षत्री वैष्णव के माथें पधराए। और मेहा के हृदय में महा दुःख भयो। नेत्रन में तें अश्रु चले। पाछें दूसरे दिन वह क्षत्री वैष्णव रसोई करि चुक्यो। तब श्रीठाकुरजी कों अत्यंत प्रीति सों अपने माथे पधरायो। भोग धर्‍यो। वे तीन ब्राह्मन न्यारी रसोई करि कै भोग धरि कै महाप्रसाद लिये। मेहा सगरो प्रसाद गायन कों खवाय दियो। आप विरह के दुःख करि कै रंचक हू न लीनो। पाछें वह क्षत्री वैष्णव अनोसर करि महाप्रसाद लियो। पाछें चारों वैष्णव मेहा सों बिदा भए। सो श्रीगोकुल आये। श्रीगुसांईजी कौ दरसन कियो, श्रीनवनीतप्रियजी कौ दरसन कियो। और इहां मेहा कों

महा विरह भयो। सो तत्काल घर में सगरी बस्तू भाव हती सो सब बेचि कै उह गोपालपुर कौ जमींदार गौरवा हुतो, ताकों द्रव्य दियो। कह्यो, जो–मेरी अब देह छूटेगी और मेरो पुत्र दुष्ट है। सो तुम यह श्रीगुसांईजी की भेंट करि आवो। तब वह गौरवा तत्काल श्रीगोकुल जाँइ श्रीगुसांईजी कों भेंट करि कै पत्र लिखाय मेहा के पास आय पत्र सांझ कों दीनो। तब मेहा यह पत्र माथें चढाय कै मेहा विरह के दुःख करि कै व्याकुल भयो। जो–अब भगवद् सेवा बिना वृथा जीवनो है। या भांति सगरी रात्रि रोवत बीती। इहां प्रातःकाल समै सगरे वैष्णव दरसन कों आये। तब चाचा हरिवंसजी हू आये। तब श्रीगुसांईजी काहू सों बोले नाहीं। तब सगरे वैष्णव आपुस में बिचार करन लागे, जो–आज कहा कारन है, जो–श्रीगुसांईजी काहू सों बोले नाहीं ? तब सगरे वैष्णव चाचा हरिवंसजी सों कहे, जो–तुम श्रीगुसांईजी कों पूछो। तब चाचा हरिवंसजी श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज ! आज काहू सों बोलत नाहीं ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–मेहा भलो वैष्णव है। सो विरह करि कै दुःखी है। सो वाकौ दुःख मोसों सह्यो नाहीं जात। जो–आजु दुपहरि कों वाकी देह छूटेगी। तब चाचाजी कहे, जो–आज्ञा होइ तो मैं उहां होइ आउं। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो चरनामृत लेते जाउ। तब श्रीगुसांईजी के न्हाइवे कौ समै हतो। सो चरनामृत दिये। सो चाचाजी एक लोटी में लेकै चले। और दस–बीस वैष्णव सो चाचाजी के संग चले। सो घरी चार दिन चढ़े गोपालपुर में गए। तहां देखे तो मेहा बिरह करि कै पर्‌यो है।

कछू सरीर की सुधि नाहीं है। तब चाचाजी मेहा कौ हाथ पकरि कै उठाये, तब सुधि भई। तब चाचाजी कहे, जो–श्रीगुसांईजी तोकों चरनामृत पठाये हैं। और तू काहू बात की चिंता मति करियो। मध्याह्न समै तेरी देह छूटेगी। बोहोत दुःख तू मति करे। श्रीगुसांईजी कों बोहोत दुःख होत हैं। तेरो दुःख नाहीं सहि सकत। तब मेहा उठि कै चरनामृत लियो। श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कियो। और कह्यो, चाचाजी ! अब मोकों धीरज भयो है। जो–या समै मोकों तुम सारिखे वैष्णव दरसन देने आये। और श्रीगुसांईजी मोकों सुधि किये। मैं तो महा पतित हों। प्रभु बड़े दयाल हैं। या भांति वार्ता करत मध्याह्न कौ समै भयो। तब मेहा ने सारंग में नयो कीर्तन कियो।

राग : सारंग

श्रीविट्ठल की सरनि न आयो जनम आपुनो खोयो हो।
जो सेवा–रस स्वाद न चाख्यो जनम जनम सो रोयो हो।।
यह कलिकाल कराल ब्याल सम महा अघन कौ मूल हो।
'मेहा' प्रभु गिरिधर बिनु सुमिरे सहे त्रिविध दुःख सूल हो।।

यह कीर्तन मेहा करि देह छोरि लीला में प्राप्त भयो। पाछें चाचाजी आदि सब मिलि कै मेहा कौ संस्कार कियो। पाछें मेहा के लरिका ने सुनी, जो–मेहा की देह छूटि गई। तब वह मेहा के घर में आयो। जो–घर में आय कै देखे तो श्रीठाकुरजी घर में नाहीं है। और हू कछू बस्तू घर में नाहीं है। तब उन वैष्णव सों पूछ्यो, जो– घरमें की बस्तू कहां गई ? तब चाचाजी कहे, जो–हम तो आज आए हैं। तू अपने गाम में पूछि देखि। तब

वह मेहा कौ लरिका वा गाम के लोगन के पास आयो। और कह्यो, जो–मेहा तो मर्‌यो, घर में कछू बस्तू नहीं है। सो इन वैष्णवन लीनी होइगी। तब वह गौरवा ने कह्यो, जो– मेहा तो वैष्णव हतो। सो अपनो काल आयो पहिले ही जान्यो। सो सब के दाम करि कै काल्हि मोकों दस–बीस रुपैया दियो। तातें तू अब खाली घर है वामें रहे, चाहे मति रहे। तब वह रोई कै बेठि रह्यो। पाछें चाचाजी आदि सब वैष्णव श्रीगोकुल आए। तब सब समाचार श्रीगुसांईजी सों कहे। तब श्रीगुसांईजी मेहा के ऊपर प्रसन्न होइ कै श्रीमुख सों सराहना किये।

भावप्रकाश–यामें यह जताए, जो–वैष्णव कों भगवत्सेवा बिना जीवनो व्यर्थ है। तातें भगवत्सेवा में काल कौ व्यतीत करनो।

सो मेहा और मेहा की स्त्री बड़े भगवदीय कृपापात्र हते तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ १३६ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक हृषिकेस क्षत्री, आगरा में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'मनआतुरी' है। ये 'सुमन्दिरा' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

ये आगरा में एक क्षत्री के जन्मे। सो बरस बीस के भए तब इनकौ विवाह कियो। पाछें कछूक दिन में माता–पिता मरे। तब हृषिकेस घोड़ान की दलाली करन लागे। सो ब्यौहार–काज में हृषिकेस कौ रूपचंदनंदा सों मिलाप भयो। सो ये रूपचंदनंदा के घर नित्य जाते। सो एक समै घरी दिन चढ़े श्रीगुसांईजी आगरा पधारे। तब रूपचंदनंदा के घर बिराजे। सो ता समै हृषिकेस रूपचंदनंदा के घर कछू ब्यौहार–काज कों आए हुते। सो इन कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो हृषिकेस दोऊ हाथ जोरि कै ठाढ़े रहे। श्रीगुसांईजी हृषिकेस की ओर देखें। पाछें हृषिकेस कों आज्ञा किये, जो–हृषिकेस ! अब कहा विलंब है ? तब ही हृषिकेस कों श्रीगुसांईजी आप साक्षात् श्रीमदनमोहनजी के स्वरूप सों दरसन दिये। सो हृषिकेस मूर्च्छित होंई गए। वह स्वरूप हृदय में धारन करि न सके। सो घड़ीभर मूर्च्छा रही।

पाछें जागे। तब हृषिकेस श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज! बेगि अंगीकार कीजिए। अब विलंब सह्यो जात नाहीं। तब श्रीगुसांईजी हृषिकेस कों नाम सुनाए। और कहे, जो–अब कहा समाचार है? तब हृषिकेस ने कही, जो–महाराज! जा स्वरूप सों आप दरसन दिए। उन की सेवा करों ऐसी ईच्छा है। तब श्रीगुसांईजी हृषिकेस कों कहे, जा न्हाइ ले। हम तोकों सेवा पधराई देइंगे। तब रूपचंदनंदा पास ठाढ़े हते। उन कह्यो, जो–चलो हों न्हवाइ देत हों। पाछें हृषिकेस रूपचंदनंदा के उहांई न्हाए। पाछें रूपचंदनंदा ने नए वस्त्र पहरिवे कों दिये। सो हृषिकेस पहरि के श्रीगुसांईजी आगें ठाढ़े भए। तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम–निवेदन करवाए। पाछें श्रीमदनमोहनजी कौ स्वरूप पास में हुतो। सो श्रीगुसांईजी आपु हृषिकेस कों पधराइ दिए। और आज्ञा किये, जो–ये मेरोई स्वरूप है। तातें इनकी नीकी भांति सों सेवा करियो। और रूपचंदनंदा कौ संग करियो। पाछें हृषिकेस यथासक्ति भेंट किये। ता पाछें घर जाँई स्त्रीपुत्रादि सब कों ले आये। सो उनकों हू श्रीगुसांईजी सों बिनती करि नाम निवेदन कराए। पाछें हृषिकेस प्रीतिपूर्वक श्रीठाकुरजी की सेवा करन लागे। और वे नित्य रूपचंदनंदा के इहां भगवद्वार्ता सुनिवे जाते।

वार्ता प्रसंग–१

सो हृषिकेस आगरे में घोड़ान की दलाली करते। ऐसे करत बोहोत दिन बीते। सो सोदागर बोहोत घोड़ा आगरे में ल्यावते। सो जितने वे घोड़ा आगरे में बिकते सो सब हृषिकेस की मारफत बिकते। सो एक दिन हृषिकेस के मन में यह आई, जो–मोकों बोहोत दिन घोड़ान की दलाली करत भए हैं। परंतु कोई घोड़ा श्रीगुसांईजी कों भेंट नाहीं कियो। तातें बिना ऐब कौ घोड़ा, एकहू दोष न होइ ऐसो घोड़ा एक श्रीगुसांईजी कों भेंट अवस्य करनो। सो हृषिकेस के घर में खरच बोहोत। स्त्री पुत्र कुटुंब बोहोत। सो पैसा घर में रहे नाहीं। जो दलाली कौ द्रव्य आवे सो सब उठि जाँई। सो हृषिकेस के मन में बोहोत आरति भई। जो–एक बोहोत सुंदर घोड़ा श्रीगुसांईजी की भेंट तो अवस्य करनो। सो ऐसो बिचार मन में करत बोहोत दिन भए।

तब एक सोदागर दो हजार घोड़ा ले कै आगरे में बेचन कों आयो। तब वह सोदागर हृषिकेस कों बुलाय कै कह्यो, जो–ये दोइ हजार घोड़ा हैं। सो सब कों देखि कै इनकी बिकरी कराय देऊ। तब हृषिकेस ने सब घोड़ान कों देखे, आछी भांति सों। तामें एक घोड़ा अबलख रंग कौ बोहोत सुंदर देखे। तामें एक हू ऐब नाहीं। तब हृषिकेस ने अपने मन में बिचार्‌यो, जो–यह घोड़ा श्रीगुसांईजी के लायक है, परंतु मैं अब कौन प्रकार यह घोड़ा श्रीगुसांईजी की भेंट करों? मेरे घर में तो कछू द्रव्य नाहीं है। पाछें हृषिकेस ने उह सोदागर सों कहे, जो–सगरे घोड़ा तुम कों इहां बेचि कै दाम करि कै देउंगो।

ता समै अकबर देसाधिपति आगरे में हतो। सो फोज हती। सो हृषिकेस सगरे जमातदारन सों पूछि कै हजार घोड़ा तो वह सोदागर के बेचाय दिये। और वह अबलख घोड़ा काहूँ कों दिखाए नाहीं। तब वह सोदागर हृषिकेस के ऊपर बोहोत प्रसन्न भयो। तब हृषिकेस सों वह सोदागर ने कही, जो–मेरे हजार घोड़ा और बेचि देऊ। तो तुम्हारी दलाली और एक घोड़ा मैं अपनी ओर तें देउंगो। तब हृषिकेस ने कही, जो– मैं तुम्हारे सब घोड़ा बिकाय देउंगो। परंतु अब मैं घोड़ा ले जाँइ कै दोइ–दोइ चार–चार मथुरा में, जहां तहां तें तुम्हारे दाम कराय देउंगो। तुम कहोगे तो तुम कों अपनो घर लरिका बताइ देउंगो। यह सुनि कै सोदागर ने कह्यो, जो–हमें तो तेरो विस्वास है। तातें जहां मन आवे तहां घोड़ा ले जाऊ। यह सुनि कै हृषिकेस मन में बोहोत प्रसन्न भए। तब वह अबलख रंग कौ घोड़ा वह सोदागर के ह्यां

तें ले कै अपने घर ल्याय पाछें बिचार कियो, जौ–घोड़ा तो हाथ में आयो। अब वाके ऊपर सुंदर जीन चाहिए। तब एक आगरे में सेठ हतो ताके घर गए। तब वह सेठ सों हृषिकेस ने कह्यो, जो–तुम्हारे घर नई मखमल के साज की जीन बनी है सो हम कों देउ, तो हम कों (ऐसी) दूसरी बनवानी है। फलाने सोदागर हजार दोइ घोड़ा ल्याये हैं। तामें तें हजार घोड़ा तौ बिक चुके हैं। सो कछूक घोड़ा एक उमराव ने लिये हैं। ताकों जीन हू बनवाय देनो है, सो तुम देउ तो आछौ है। तब उन सेठ ने कह्यो, जो–ले जाऊ, घर तुम्हारो है। दस–पांच दिन राखियो। हमारे अब ही असवारी कों दिन दस–पंद्रह की ढील है। तब हृषिकेस जीन ले कै आयो। सो घर में आइ वा घोड़ा पर जीन करि पाछें अपनी स्त्री लरिकान सों कहे, जो–मैं श्रीगोकुल जात हों। तुम नीकी भांति सों ठाकुरजी सों पहोंचियो। और कोई जो पूछन आवे तो ऐसें कहियो, जो– घोड़ा बेचन गये हैं। परि श्रीगोकुल,कौ नाम मति लीजियो। तब स्त्री–पुत्र ने कह्यो, जो–तुम सुखेन जाउ। हम ऐसें ही कहेंगे। तब हृषिकेस घोड़ा की लगाम पकरि चाबुक अपने हाथ में ले या भांति अबलक घोड़ा कों ले आपु पांइन सों श्रीगोकुल चले। मन में यह बिचारे, जो–यह घोड़ा श्रीगुसांईजी कौ है। सो यापैं हों कैसें चढो ? या प्रकार चले। सो श्रीगोकुल के साम्हे 'मोहनपुर' में आय पहोंचे। सो घरी दोइ रात्रि रही। तातें 'मोहनपुर' में रहे। पाछें प्रातःकाल भयो तब इहां श्रीगुसांईजी न्हाय कै श्रीनवनीतप्रियजी कों जगाए। पाछें मंगला करि सिंगार करि पाछें गोपीवल्लभ सों पहोंचि कै मन में यह बिचार किये,

जो–अबलख रंग कौ घोड़ा ता पर मखमल की जीन होंई ऐसो घोड़ा होंइ तो ता पर चढि श्रीनाथजीद्वार जइवे। सो इहां हृषिकेस प्रात ही मलाह कों कछूक पैसा दे बेगि ही पार उतरि कै श्रीगुसांईजी के द्वारें आइ कै घोड़ा ले कै ठाढ़े होंई रहे। तब विष्णुदास पोरिया ने कही, जो–तुम कौन हो ? कहां ते आए हो ? और घोड़ा लिये द्वार के पास ठाढ़े क्यों हो ? तब हृषिकेस ने विष्णुदास पोरिया सों कह्यो, जो–यह घोड़ा श्रीगुसांईजी की भेंट है। और मैं श्रीगुसांईजी कौ सेवक हों। हृषिकेस मेरो नाम है। आगरे में रहत हों। यह सुनि कै विष्णुदास श्रीगुसांईजी के पास आय कै बिनती कीनी, जो महाराज ! आगरे में हृषिकेस रहत हैं। सो आप कौ सेवक है। सो घोड़ा बोहोत सुंदर भेंट ल्यायो है। सो द्वार ऊपर ठाढ़ो है। यह सुनि कै आप श्रीगुसांईजी द्वार ऊपर पधारे। तब हृषिकेसने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि बिनती कीनी, जो–महाराज ! यह घोड़ा आपु की भेंट है। या प्रकार हृषिकेस की बिनती सुनि कै घोड़ा कों देखि कै बोहोत प्रसन्न भए, श्रीगुसांईजी। तब आपु श्रीमुख सों आज्ञा किये, जो–आजु मेरे मन में यह आई हती, जो–अबलख रंग कौ घोड़ा और मखमल कै साज की जीन ता पर चढि कै श्रीनाथजीद्वार चलिये। सो तू मेरे मन की जानी। तब हृषिकेस ने बिनती कीनी, जो–महाराज ! हम तो अज्ञानी जीव हैं। कछू जानत नाहीं। और आपु तो दयाल हो। सो हमारे ऊपर कृपा करत हो। यह दैन्यता के बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये। कहे, आज मेरे मन में हती सो भयो। पाछें श्रीगिरिधरजी सों आज्ञा किये,

जो–गोपीवल्लभ तांई मैं पहोंच्यो हूं । अब राजभोग में तुम पहोंचियो । मैं तो अब श्रीनाथजीद्वार जात हों यह सुनि कै तत्काल श्रीगिरिधरजी तो न्हाय कै मंदिर में पधारे । तब श्रीगुंसाईजी इह घोड़ा ऊपर असवार होंइ कै हृषिकेस कों आज्ञा किये, जो–तू मेरे संग पास पास चलि । तब हृषिकेस चाबुक अपने हाथ में ले श्रीगुंसाईजी के वाम चरनारविंद के पास परस करत चले । तब श्रीयमुनाजी उतरि कै पास जब चले तब मार्ग में श्रीगुंसाईजी ने वा हृषिकेस सों पूछ्यो, जो–हृषिकेस ! तू तो धन करि कै रहित है । और ऐसो सुंदर घोड़ा और ऐसे भारी साज की जीन कहां तें ल्यायो ? तब हृषिकेस डरपि कै मन में कह्यो, जो–श्रीगुंसाईजी तो अंतरजामी हैं । इहां मेरी झूठ चलेगी नाहीं । और गुरु के आगें झूठ कैसें बोलों ? यह बिचारि कै हृषिकेस ने श्रीगुंसाईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! एक सोदागर हजार दोय घोड़ा ल्यायो है । सो कछूक तो बिकाय दिये हैं । कछूक और बेचि देउंगो । तामें दलाली कौ द्रव्य बोहात आवेगो । सो जीनवाले कों देउंगो । और वा सोदागर ने मोकों एक घोड़ा देन कह्यो है । सो मैं अपनी महनत कौ ले आयो हूं । यह सुनि कै श्रीगुंसाईजी बोहोत ही प्रसन्न भये । ता समै दुपहरी की ताप बोहोत भई । सो सूर्य कों देखि कै श्रीगुसांईजी सों हृषिकेस ने बिनती करी, जो–महाराज ! श्रीनाथजी और श्रीनवनीतप्रियजी एक ठोर बिराजे तो आप कों श्रम न होंइ । ऐसें घाम में पधारत हो । सो हम कों देखि कै महादुःख होत है । यह सुनि कै श्रीगुसांईजी हृषिकेस सों कहे, जो–सदा श्रीजी और श्रीनवनीतप्रियजी पास

बिराजे तो इतनी आरति हम कों न होंइ । काहेतें, जब श्रीनवनीतप्रियजी के निकट हम रहत हैं तब तो श्रीनाथजी कौ स्मरन होत है । तब विरह होत है । पाछें जब श्रीजीद्वार जात हैं । तब श्रीनवनीतप्रियजी कौ स्मरन होत हैं, जो–बालक हैं, बेगि जायो चहिए । या प्रकार आरति सिद्ध होत है । तातें श्रीजी श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर सदा बिराजे । श्रीनवनीतप्रियजी श्रीगोकुल में सदा बिराजे । ताही में आछौ है ।

भावप्रकाश–यह कहि यह जताए, जो–सेवा में संयोग –विप्रयोग दोऊ भाव राखने, तातें रूचि बढें ।

यह सुनि कै हृषिकेस ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै बिनती करी, जो–महाराज ! हम तुच्छ बुद्धि हैं । तातें महाराज ! हम आप के भाव कों कहा जानें ? और आप करत हो सो तो हमारे हित के लिये अब आछी करत हो । या प्रकार सगरी राह श्रीगुसांईजी सों भगवद्वार्ता करत श्रीजीद्वार आए । तब श्रीगुसांईजी तत्काल स्नान करि कै उत्थापन की झारी भरि कै श्रीनाथजी के मंदिर में पधारे । श्रीनाथजी के दरसन करे । ता पाछें हृषिकेस कों दरसन कराए । सो हृषिकेस दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भए । ता समै हृषिकेस ने एक एक कीर्तन नट राग में गायो । सो पद –

परम कृपाल श्रीवल्लभनंद ।
भक्त मनोरथ पूरन कारन भुव पर आये आनंद कंद ॥
गिरिधरलाल प्रगट दिखराए पुष्टिभक्ति रसदान किये ।
'हृषिकेस' सिर सदा बिराजो यह जोरी सुख नैन दिये ॥

यह कीर्तन सुनि कै श्रीगुसांईजी हृषिकेस ऊपर बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें सेन तांई पहोंचि कै अनोसर कराय कै सेन कौ दूध श्रीगुसांईजी आपने श्रीहस्त में ले आये। सो एक मलरा में थोरो सो प्रसादी दूध हृषिकेस कों दियो। सो हृषिकेस ने श्रीगुसांईजी की बैठक में जाँइ कै लियो। सो लेत ही देहानुसंधान भूलि गये। सो बैठक ही में बैठि रहे। वाही ठौर परि रहे। और हृदय भीतर स्वरूपानंद कौ अनुभव होन लाग्यो। तब वैष्णव सब डरपन लागे, जो–हृषिकेस कों कहा भयो ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–कछू चिंता मति करो। काल्हि आछौ होइ जाइगो। तब सब वैष्णव बिदा होइ कै अपने डेरा गए। पाछें जब घरी दोई रात्रि पाछिली बाकी रही। तब हृषिकेस की मुर्छा बीती, सावधान भए। ता समै श्रीगुसांईजी उठे। जब हृषिकेस सों पूछे, जो–कहो, समाचार कहा है ? तब हृषिकेस ने बिनती करी, जो–महाराज ! आप की कृपा है तहां सदा जागत में सोवत में सब ठौर कल्यान है। जागत में आपकौ दरसन है सोवत में स्वप्न में आपकौ दरसन। और मैं कहा कहों ? मेरो सामर्थ्य कहिवे कौ नाहीं। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। श्रीमुख सों कहे, जो वैष्णव कों ऐसोइ चाहिए। या प्रकार तीन रात्रि श्रीजीद्वार श्रीगुसांईजी और हृषिकेस रहे। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल वह अबलख घोड़ा पै चढि कै पधारे। तब हृषिकेस संग ही श्रीगोकुल आए। तहां श्रीनवनीतिप्रयजी के उत्थापन के दरसन हृषिकेस ने किये। पाछें श्रीगोकुल ही में रात्रि कों रहे। पाछें प्रातःकाल हृषिकेस श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै कह्यो,

जो–महाराज ! मोकों घर जाँइवे की आज्ञा होंइ । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–राजभोग आर्ति पाछें तोकों बिदाय करेंगे । तब दंडवत् करि कै हृषिकेस स्नान करिवे कों गये । पाछें राजभोग तांई दरसन किये । पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर कराय कै बैठक में पधारे । पाछें आपु श्रीगुसांईजी सब बालकन सहित भोजन किये । ता पाछें हृषिकेस कों श्रीगुसांईजी ने जूंठनि की पातरि धरी । पाछें आप गादी पर बिराजे बीरा आरोगत भए । तब हृषिकेस महाप्रसाद ले कै पाछें आय कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कीनी । पाछें बिदा मांगी । तब श्रीगुसांईजी ने खवास सों प्रसादी उपरेना मंगाए । तब हृषिकेस ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै प्रसादी उपरेना की नाहीं कराई । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–तू प्रसादी उपरेनाकी नाहीं काहें कों करावत है ? तब हृषिकेस बिनती किये, जो–महाराज ! मोसों कछू राज की सेवा नाहीं बनि आई । और आप के घर कौ खरच अधिक करायो है । एक मनुष्य घोड़ा की चाकरी कों चाहिए । दाना घास भंडार तें खरच होइगो । सो कहा करों महाराज ! मेरो कछू बस नाहीं है । आप तो अंतरजामी हो । सब जानत हो । ऐसें हृषिकेस के दैन्यता के बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए । पाछें खवास सों उपरेना की नाहीं किये । पाछें हृषिकेस कों पास बुलाय कै अपने श्रीहस्त में उगारु ले कै हृषिकेस कों दिये । सो ले कै हृषिकेस बोहोत प्रसन्न भए । पाछें हृषिकेस श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै अत्यंत प्रीति सों बिदा भए । तब हृषिकेस की प्रीति देखि श्रीगुसांईजी कौ हृदो भरि आयो । जो–ऐसो वैष्णव पास रहे तो

अष्टप्रहर भगवद्भाव में मन रहे। या प्रकार हृषिकेस बिदा होंइ कै चलै। सो दूसरे दिन आगरे आय पहोंचे। तब हृषिकेस सोदागरन के पास गये। कहे, जो–तुम्हारे घोड़ा ल्यावो बेचि ल्याउं। तब सोदागर ने कह्यो, जो–तुम्हारे मन में आवे सो ले जाउ। तब हृषिकेस राजा टोडरमल की फौज में ले जाँइ कै सगरे घोड़ा बेचि ल्याये। सो सब के रुपैया हजार चारि की हुंडी कराय कै सौदागर कों दिये। तब सौदागर बोहोत प्रसन्न भए। तब सोदागर ने हृषिकेस तें कह्यो, जो–तुम अपनी दलाली लेहु। और एक घोड़ा मेरी पास तें लेउ। तब हृषिकेस ने कह्यो, जो–घोड़ा तो मैं ले चुक्यो हूं। अब मेरी दलाली होंइ सो देहु। तब सोदागर ने कह्यो, जो–मैं तो जानत नाहीं, जो तुम कहा लियो। और तुम लियो तो कहा भयो ? तुमने मेरो काम बोहोत कियो है। तातें एक घोड़ा और दोय सैं रुपया दलाली के लै जाऊ। तब हृषिकेस, दोय सैं रुपैया और एक घोड़ा ले कै चले। सो तहां तें चले सो जीनवाले सेठ के घर गए। तब सेठ ने कही, जो–जीन ल्याए। तब हषिकेस ने कही, जो–जीन तो गई। जीन के दाम लगे होंइ सो भरि लेहु। तब सेठ ने कही, जो–मेरी सुंदर जीन तुम क्यों बेचि डारी ? तब हृषिकेस ने कही, जो–जीन तो बेचि नाहीं। तब सेठ ने कही, जो–तुम साँच कहो, जीन तुम कहां करी ? तब हृषिकेस ने कही, जो–एक सोदागर हजार दोइ घोड़ा ल्यायो हतो। तामें एक अबलख रंग कौ घोड़ा बोहोत सुंदर हतो। सो मैं तुम्हारी जीन सहित श्रीगोकुल ले जांइ श्रीगुसांईजी की भेंट करी और वह सोदागर के घोड़ा बेचि दिये हैं। तामें रुपैया दोइसैं और

घोड़ा दोइ मेरी दलाली में मिले हैं। तामें एक घोड़ा तो श्रीगुसांईजी की भेंट कियो है। और एक घोड़ा और दोइसैं रुपैया तुम्हारे पास ल्यायो हूं। सो तुम लेऊ। और मैं कमाय कै भरि देउंगो। यह सुनि कै सेठ ने बिचार कियो, जो–जीन तो परमार्थ कियो है। अपने घर नाहीं राख्यो। अब यासों मैं कहां लेऊँ ? या प्रकार बिचार करि कै सेठ ने एक घोड़ा हतो सो हृषिकेस सों ले लीनो। और दोइसैं रुपैया हृषिकेस कों फेरि दीने। और सेठ ने हृषिकेस सों कह्यो, जो–तिहारे घर कछू खाइवे कों नाहीं है तासों ए रुपैया दोइसैं ले जावो। और जीन मेरी भेंट करी तामें यह घोड़ा लियो। परंतु आज पाछें ऐसो काम मति करियो। मैं तो तुम कों छोरि देत हूं। परि और कोई छोरेगो नाहीं। तब हृषिकेस दोइसैं रुपैया ले कै अपने घर आए। और मन में बोहोत प्रसन्न भए।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–जीव कों जा भांति बनि आवे ता भांति गुरु की सेवा करनी।

पाछें हृषिकेस ने अपने मन में बिचार कियो, जो–यह सर्व कार्य श्रीगुसांईजी की कृपा तें भयो है। मेरे घर में तो एक पैसा हू नाहीं हतो। और यह मनोरथ सिद्ध भयो। और दोइसैं रुपैया और हाथ आए। सो ये रुपैया तो श्रीगुसांईजी के हैं। सो मैं अपने घर में कैसें खर्च करों ? यह बिचार कै वे दोइसैं रुपैया गांठि बांधि कै घर तें चले सो मथुरा आए। पाछें दूसरे दिन श्रीगोकुल आइ राजभोग आरति के दरसन श्रीनवनीतप्रियजी के किये। सो हृषिकेस दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भए। ता समै

हृषिकेस ने सारंग में यह कीर्तन कियो। सो पद–

राग : सारंग

हरि कर माखन लीने नीके।

ब्रजबनिता सब बिवस भई हैं सोभा निरखि हरखि अति जीके ॥

किलकि हँसति प्रतिबिंब निरखि कै नैनन अंजन अतिसय भावै।

'हृषिकेस' मन अटकि रूप पर उपमा कों पटतर नहीं आवे ॥

यह कीर्तन कियो । ऐसो अनुभव ता समै हृषिकेस कों श्रीनवनीतप्रियजी ने जनायो । पाछें अनोसर कराय कै श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे । तब हृषिकेस ने दंडवत करि कै वे दोइसौं रुपैया श्रीगुसांईजी की भेंट किये । तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो–हृषिकेस ! यह तू कहा करत है ? तेरे घर में खरच कौ संकोच है। इतनी भेंट क्यों कियो ? तब हृषिकेस ने कह्यो, जो–महाराज ! यह तो आपके रुपैया हैं। भेंट तो मैं कछू अपनी सत्ता तें कमायो होऊ तो होंइ । तब श्रीगुसांईजी ने हृषिकेस सों पूछी, जो–ये रुपैया कैसें आये हैं ? तू बतावें तब भंडार में जाँय । तब हृषिकेस ने सब प्रकार भये सो कह्यो, जो–महाराज ! रुपैया मेरी दलाली के हैं । ये आप कृपा करी अंगीकार किये चाहिए। तब श्रीगुसांईजी खवास सो कहे, जो–ये रुपैया भंडार में दे आउ । तब खवास रुपैया ले भंडार में दे आयो। भंडारी कों सोंपि आयो। सो वंसत पंचमी के दिन दोइ बाकी रहे हते। तब श्रीगुसांईजी चापा संकर भंडारी सो कहे वसंत की सामग्री में और डोल उत्सव की सामग्री मे

हृषिकेस के दोइसैं रुपैया आए हैं सो खरच करियो। तब चापां संकर ने उह दोईसैं रुपैया की सामग्री ल्याइ राखी।

और हृषिकेस के मन में यह आई, जो–अब बसंत पंचमी आई है तासों डोल तांई श्रीगुसांईजी के पास रहों। तब एक दिन हृषिकेस ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! डोल उत्सव तांई मेरो मन आप के पास रहिवे कौ है। सो सेवा बिनु दिना बीते नाहीं। तासों आप कछू सेवा बतावो तो रहूं। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–चाहो तो फूलघर में रहो। चाहो भंडार में कछु सेवा करो। तब हृषिकेस बिनती करी, जो–महाराज ! मैं आप के संग श्रीजीद्वार जायो चाहुं। तातें अपने पास की कछू सेवा बतावो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–खवासी करो। तब हृषिकेस श्रीगुसांईजी की खवासी में रहें। सो बोहोत प्रीति सों सेवा करते। सो श्रीगुसांईजी हृषिकेस के ऊपर बोहोत प्रसन्न रहते।

सो श्रीगुसांईजी बसंतपंचमी के दिन इहां श्रीनवनीतप्रियजी कों खिलाय कै पाछें श्रीजीद्वार पधारे। सो उत्थापन की झारी भरे। तब हृषिकेस संग गये। सो श्रीनाथजीद्वार श्रीगुसांईजी होरीदांडा रोपनी तहां किये। पाछें पून्यो के दिन उत्थापन समै श्रीगोकुल पधारे। सो आठ दिन तांई होरी के, फेर श्रीनवनीतप्रियजी कों खिलाए। तब हृषिकेस श्रीगोकुल रहे। पाछें आठें दिन फागुन वदि ८ कों श्रीगुसांईजी श्रीजीद्वार पधारे। तब उत्थापन की झारी भरे। सो डोल तांई श्रीगुसांईजी श्रीजीद्वार रहे। सो एक दिन हृषिकेस ने यह धमार गाई, कल्यान राग में।

सो धमारि–

राग : कल्यान

ब्रजराज लडेंतो गाइये, बल मोहन जाकौ नाम हो।
खेलत फाग सुहावनो, रंग भींज रह्यो सब गाम हो ॥ १ ॥
ताल पखावज बाजहिं हो, डफ सहनाई भेरि हो।
श्रवन सुनत सब ब्रजबधु हो, झूंडन आई घेरी हो ॥२ ॥
इतहिं गोप सब राज ही हो, उत सब गोकुल नारि हो।
अति मीठी मन भामती हो, देति परस्पर गारि हो ॥३॥
चोवा चंदन छिरक रही हो, डारत अबीर गुलाल हो।
मुदित परस्पर खेल ही हो, हो हो हो बोलत ग्वाल हो ॥ ४॥
घेरि सखी मोहन गहि आने, प्यारी पकरे हाथ हो।
गोपी भेख बनाइ कै, रुचि बेनी गूंथी माथ हो ॥ ५
बहुरि मतो करि सुंदरी हो, हलधर पकरे जाय हो।
नव कुंकुम मुख मांडि कै हो, आए हैं आंखि अंजाय हो ॥ ६
पीतांबर मुख मूंदि कै हो, निरखि हँसि नंदलाल हो।
दाऊजी आजु भले बने, कूके दे सब ग्वाल हो ॥ ७ ॥
सिमिट सकल ब्रजसुंदरी हो, ब्रजपति पकरे आन हो।
भरत सकल ब्रजसुंदरी हो, नेक न राखत कान हो ॥ ८ ॥
तब नंदरानी बीच कियो सो, मेवा दियो है मँगाय हो।
पट भूखन पहिराय कै हो, 'हृषिकेस' बलि जाय हो ॥ ९ ॥

यह धमार हृषिकेस ने गाई। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत

ही प्रसन्न भए। सो श्रीगुसांईजी की कृपा तें हृषिकेस कों यह अनुभव भयो। पाछें डोल उत्सव तांई श्रीजीद्वार रहे। पाछें श्रीगुसांईजी गोकुल पधारे। तब हृषिकेस हू श्रीगोकुल आए। पाछें श्रीगुसांईजी सों आज्ञा मांगी, जो–मैं अपने घर जाउं। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइ कै एक गुलाब कौ फूल श्रीनाथजी कौ प्रसादी हृषिकेस कों दियो। तब हृषिकेस फूल ले दंडवत् करि श्रीगोकुल तें चले। सो दूसरे दिन आगरें में अपने घर आये। सो गुलाब कौ फूल हृषिकेस ने अपने जप के साज में राख्यो। नित्य दरसन करि कै उह फूल कों दंडवत् करे। ऐसें करत बोहोत दिन बीते।

वार्ता प्रसंग – २

और एक दिन हृषिकेस राजभोग तें पहोंचि कै महाप्रसाद ले कै उठे। ताही समै दोइ वैष्णव श्रीगुसांईजी के सेवक आगरे में आए। सो हृषिकेस सों भगवद्वार्ता स्मरन किए। तब हृषिकेस बोहोत प्रसन्नता सों कहे, जो – महाप्रसाद लेऊ। तब वैष्णवन ने नाहीं करी। तब हृषिकेस ने कही, जो–सीधो लेऊ, कोरे बासन लेऊ, रसोई करो। और कृपा करि हमारे यहां लेऊ तो सोऊ सिद्ध है। तब वैष्णव नाहीं करि कै उठि गए। तब हृषिकेस के मन में महादुःख भयो। जो – मैं बड़ो अभागो हूं। जो– वैष्णव मेरो नाहीं अंगीकार करत हैं। या प्रकार सगरी रात्रि खेद करत रहे। और वे वैष्णव आगरे में श्रीयमुनाजी के किनारे एक चोंतरा पर सोइ रहे। उष्णकाल कौ दिन हतो। सो खरची कौ खड़िया कुत्ता ले गयो। सो प्रातःकाल उठि कै उह वैष्णव

देखे तो खरची कौ खड़िया नाहीं है। तब वे वैष्णव चिंता करन लागे, जो–अब कहा करें। पाछें मन में बिचारे, जो–हम काल्हि हृषिकेस के घर गए। सो, वह वैष्णव (कों) बोहोत दुःख भयो होइगो। ता करि हमारी खरची गई। हम दुःखी भए। तातें आजु हृषिकेस के घर अवस्य चलनो। उह कहे तैसें करनो। हृषिकेस श्रीगुसांईजी के सेवक हैं, कृपापात्र हैं। यह बिचार करि कै दोऊ वैष्णव देह कृत्य करि पाछें श्रीयमुनाजी में स्नान करि कै पाछें जप पाठ करि कै हृषिकेस के घर आए। तब हृषिकेस देखि कै बोहोत प्रसन्न भए। सन्मान करि कै बैठाए। पाछें उन वैष्णव सों पूछे, जो –तुम काल्हि मेरे घर तें भूखे गए सो मेरो कहा अपराध है ? अब आजु कछू कृपा करि कै अंगीकार करिए। तो मेरो मन प्रसन्न होंइ। तब वैष्णव ने हृषिकेस सों कहे, जो–हम काल्हि तुम्हारो कह्यो नहीं मान्यो तासों हमारो खरच कौ खडिया रात्रि कों जात रह्यो। तातें अब आज तें जैसें तुम कहोगे तैसें हम करेंगे। तब हृषिकेस ने पूछी, श्रीठाकुरजी पाछें यहां प्रसाद लेहुगे कै न्यारी रसोइ करोगे ? तब वैष्णव ने कही, जो – हमारे मनमें तो न्यारी रसोई करिवे की है। परंतु अब आज तुम प्रसन्न होइ कै कहोगे तैसेंई हम करेंगे। तब हृषिकेस सीधो सामान सब ल्याये। कोरे बासन में जल भरि ल्याए। तब वैष्णव न्हाय कै रसोई किये। पाछें श्रीठाकुरजी कों भोग धरि कै पाछें महाप्रसाद लियो। पाछें रात्रि कों वे वैष्णव हृषिकेस के घर में रहे। भगवद्वार्ता कीर्तन भयो। पाछें प्रातःकाल वे वैष्णव चलन लागे। तब हृषिकेस ने कही, जो–आज तौ औरहू रसोई करि कै जाउ। तब वैष्णव

सीधो ले रसोई करी । पाछें श्रीठाकुरजी कों भोग धरि कै पाछें महाप्रसाद लियो । तब हृषिकेस अपने घर में तें कछू बासन गहने धरि कै रुपैया दस १०) वैष्णव कों दिये । और बिनती किये, जो–तुम बड़ी कृपा किये । फेरि बेगि आवोगे । तुम्हारी खरची गई सों हम कों बोहोत दुःख भयो । तब वैष्णवन कही, जो–धन्य तुम हो जो ऐसि भांति अपनो धर्म तुम राखत हो । या प्रकार बिदा होंइ कै वैष्णव हृषिकेस की बड़ाई करत गए ।

भावप्रकाश – या वार्ता में यह जनाए, जो – घर आए वैष्णव कों जा भांति बनि आवें ता भांति समाधान करनों । उन कों प्रसन्न करने ।

सो वे हृषिकेस श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते । सो उन की वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ।

॥ वार्ता ॥ १३७ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक पटेल, जानें दरांति बेचि कै टका भेंट धर्‌यो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये सात्विक भक्त हैं । लीला में इनकौ नाम 'ब्रह्म–विद्या' है । ये 'सुमन्दिरा' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं ।

ये गुजरात में एक पटेल के जन्म्यो । सो बरस बीस कौ भयो तब वाके माता पिता मरे । पाछें वह पटेल घास–लकरी ल्याई अपनो निर्वाह करन लाग्यो । ऐसें करत कछूक दिन में श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे । श्रीरनछोरजी के दर्सनार्थ । सो मारग में वाकौ गाम आयो । सो तहां डेरा किए । तब वा पटेल कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए । तब वह पटेल मन में कह्यो, जो–हों इन कौ सेवक होंउ तो आछौ । पाछें वह पटेल श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो – महाराज ! मोकों कृपा करि अपनो सेवक कीजिए । तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाकों नाम निवेदन कराय सेवक किये । पाछें श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे । सो श्रीरनछोड़जी के दरसन करि, ता पाछें आप श्रीगोकुल पधारे ।

वार्ता प्रसंग – १

पाछें एक गुजरात कौ संग श्रीगोकुल चल्यो । तब वाने बिचार्‌यो, जो–मैं हूँ श्रीगोकुल जाउं । सो वा पटेल अपनो घास लकरी बेचि कै निर्वाह करतो । सो वा दिन मार्ग में घास खोदत हतो । सो उन पटेल ने पूछी, जो–यह संग कहां जात है ? तब उन वैष्णवन कही, जो हम श्रीगोकुल जात हैं । तब उन पटेल ने मन में बिचारी, जो–चलो, श्रीगुसांईजी के दरसन आपुन करे तो भलो है । सो वह तो अपनो दरांत और बधना लेकै उन संग में चल्यो । और दूसरो तो कछू हतो नाहीं । एक दरांती हती सो लेकै चल्यो । सो नित्य मार्ग में तें घास लकरी ले कै वा संग के लोगन कों देतो । और अपनो महाप्रसाद लेतो । और कोई वैष्णव ऐसें ही महाप्रसाद देतो तो न लेतो । काहेतें ? जो–मैं तो या देह तें कछूक टहल सेवा करों तो महाप्रसाद लेउंगो । ऐसें कहतो । सो घास लकरी ल्याई देतो । अपनो निर्वाह करतो । सो ऐसें करत श्रीगोकुल आय पहोंचे । श्रीगुसांईजी के दरसन किये । पाछें सब वैष्णव भेंट करन लागे । तब इन पटेलने मन में बिचारी, जो अपने भेंट कहा करेंगे ? तब एक दरांती हती । सो बाजार में बेची । सो दोई पैसा आए । सो ले कै श्रीगुसांईजी कों भेट किये । तब श्रीगुसांईजी आप तो अंतरजामी हैं । सो जानि गए । सो आपने कही, जो–पटेल ! आगें आउ, बैठो । तब और वैष्णवन ने कही, जो–महाराज ! औरन तें नहीं बोले और याकों आपने बुलायो ताकौ कारन कहा ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–याने सर्वस्व भेंट कियो है । तब भंडारी कों बुलाय कै कही, जो–इन

दोई पैसान कौ लोंन लेकै, पीसि कै भंडार में लोन में लोन मिलाय देऊ। तब वैष्णवन ने कही, जो–महाराज ! याने सर्वस्व कहा भेंट कियो है ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–याकौ सर्वस्व दरांती हती। जातें याकौ निर्वाह होतो। सो याने बेचि कै वह टका आयो सो भेंट करि दियो है। सो इतनो नाहीं बिचार्‌यो, जो–मैं दरांती बेचूंगो तो सवेरे मेरो निर्वाह कैसें होइगो ? तातें जो–राज बलि न देखें होंइ तो मानिकचंद कों देखो। और जो–मानिकचंद कों हू न देखें होंइ सो इनकों देखो। और तो सर्व जन अपने घर तें ब्रज के निमित्त द्रव्य बांधि कै आए। ताही में यात्रा करोगे। ताही में भेंट बिदा और खरच–भारो हू करोगे। पाछें घर पहोंचोगे। तहां तांई खर्च करोगे। परि याकौ को सर्वस्व यही है। पाछें श्रीगुसांईजी ने उन पटेल कों जूंठनि पातरि धरी। पाछें वाकों उहांई राख्यो। सो सगरो दिन सेवा करे और महाप्रसाद मिले सोई ले। और कोई वैष्णव ऐसेंई महाप्रसाद लेवे कों बुलावतो, तो कहतो, जो –मोकों कछू टहल बताओगे तो प्रसाद लेउंगो। सो और कछू न बने तो उन के घर उपरा बीनि डारतो तब प्रसाद लेतो।

सो केतेक दिन पाछें उह संग श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ गुजरात कों चल्यो। तब वह पटेल हू श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ कै वा संग में चल्यो। सो वैष्णव तो श्रीगुसांईजी कौ कृपापात्र जानि कै आदर सों महाप्रसाद की कहते। परंतु ये तो उपरा लकरी ले आवतो। सो जो राखें तिनके महाप्रसाद लेतो। ऐसें करत घर–देस जांइ पहोंच्यो। सो वह पटेल सदैव अपनी

महिनत मजूरी करि कै महाप्रसाद लेतो। सो उन पै श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते। श्रीमुख तें उनकी सराहना करते।

भावप्रकाश–या वार्ता में निवेदन कौ स्वरूप जताए, जो–कोऊ वैराग्यवान् होंइ, प्रभुन कों अपनो सर्वस्व निवेदन करत हैं, ता पर प्रभु बेगि प्रसन्न होंत हैं। और यह हू जताए, जो–वैष्णव कों महिनत करि कै द्रव्य कमावनो। काहे तें ? जो–महिनत कौ द्रव्य प्रभु तत्काल अंगीकार करत हैं। और काहू के यहां प्रसाद ले तो वाके घर की कछू टहल करि कै ले। नाँतरु दासपनो रहे नाहीं, यहू कहे।

सो वह पटेल श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए ?

वार्ता ॥ १३८ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक स्त्री–पुरुष राजनगर के, जिनि अपने माथे गौहत्या लीनी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में पुरुष कौ नाम तो 'दीनवत्सला' है और स्त्री कौ नाम 'प्रेमवत्सला' है। ये दोऊ 'कंदर्पा' की सखी हैं। उनतें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

ये दोऊ राजनगर में रहते। सो एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे। सो तिरपोलिया आगें श्रीगुसांईजी कौ रथ आयो। तब वह पुरुष उहां ठाढ़ौ हतो, कछू कार्यार्थ। सो वाकों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो महा अलौकिक तेजःपुंज से दीसे। सो तत्काल वह मूर्छित व्है रथ आगें गिर्‌यो। तब श्रीगुसांईजी आप परम दयाल सो रथ कों ठाढ़ौ किये। पाछें नीचे उतरि आप वाके माथें श्रीहस्त फेरे। ता पाछें अंजुलि में जल लेई वेदमंत्र पढ़ि जल छिरके। तब वह पुरुष सावधान भयो। तब श्रीगुसांईजी मंद मंद मुसिकाई कै पूछे, जो–कहो ! कहा समाचार है ? तब वह बिनती कियो, जो–महाराज ! मैं तो राज के चरनारविंद के निकट परम सुख में हतो। आप यह कहा किये ? तब श्रीगुसांईजी मुसिकाई कै कहे, जो–अब ही तुम भगवद् सेवा करो। तब वह पुरुष कह्यो, जो–महाराज ! अब तो कृपा करि घर पधारि हम कों सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाके घर पधारे। सो उहां दोई दिन बिराजे। सो स्त्री–पुरुष दोऊन कों नाम–निवेदन कराए। पाछें भगवद् सेवा पधराइ सेवा की सब रीति सिखाए। ता पाछें तीसरे दिन स्त्री–पुरुष सों बिदा व्है आपु असारुवा भाईला कौठारी के उहां पधारे। सो जहां लों श्रीगुसांईजी असारुवा बिराजे तहांलों वे दोऊ स्त्री–पुरुष श्रीगुसांईजी के दरसन कों उहां नित्य आवे। सेवा–टहल जो–कछू बनि आवे सो करे। पाछें घर आई श्रीठाकुरजी की सेवा करते।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे दोऊ स्त्री–पुरुष भली भांति सों श्रीठाकुरजी की सेवा करते। सो प्रात ही उठि कै स्नान करि कै स्त्री जन सामग्री सिद्ध करें। और पुरुष श्रीठाकुरजी कौ सेवा सिंगार करे। पाछें राजभोग समर्पि कै कीर्तन करे। सम होंइ तब भोग सराय आर्ति करि कै अनोसर करि कै एक पातरि गाँइ कों देते। और एक वैष्णव कों नित्य महाप्रसाद लिवावते। ता पाछें आप लेते। इतनो तो वाके नेम हतो। ता पाछें जो कोई अचानक वैष्णव आवे तब पातरि उन कों धरते। आप सेन में श्रीठाकुरजी आरोगे सो लेते। ऐसें सेवा करते। सो एक समय काल पर्‌यो। सो अन्न धान महँगो। और घास चारो मिले नाहीं। सो गाँइ कों एक पातरि मिले तासों कहा होंई ? पेट तो घास तें भरे। सो तो मिले नाहीं। एक पातरि प्रसाद की मिले। सो तो पेट न भरे। सो गाँइ दूबली भई। सो बोहोत दूबली भई। तब एक दिन वैष्णव अनाज थोरो सो मोल लायो। सो घर में ढेरी करी। अपनी स्त्री सों कही, जो– झटकि फटकि कै भरि दे। सो स्त्री तो कछू बस्तू लेवे भीतर गई। और वह गाँइ बाहिर तें आई। सो अनाज खाँइवे लगी। सो वह गाँइ बोहोत भूखी हती। सो वा गाँई कौ मोहोंडो उठावे परि उठे नाहीं। खाँए जाँइ। और मारी जाँइ नाहीं। सो धक्का मारे। सो धक्कान तें गाँइ सरके नाहीं। सो कोइ ऐसो धक्का लग्यो, और गाँइ दूबली हती सो धक्कान तें गाँइ गिरि परी। सो गाँइ कौ अंत होंइ गयो। तब वह वैष्णव अपने मन में बोहोत धिक्कार करन लाग्यो। पाछें दोऊ स्त्रीपुरुष मिलि कै वा गाँइ कौ बाहिर

निकासे । ता पाछें बिचार करन लागे, जो–अपने कों तो गऊहत्या लगी । सो हाथ तें गऊहत्या भई । तातें यह हत्या गंगा स्नान तें हू न छूटेगी । ऐ तो बड़ो अपराध भयो । तातें याकौ निर्णय नाहीं । सो अब तो अन्न–जल त्यागि कै देह छोरनी । जहाँ ताँई देह चले तहाँ ताँई सेवा करेंगे । ऐसो बिचार करि कै बोहोत पश्चाताप करन लागे ।

सो ऐसें करत दोइ दिना भए । तीसरे दिना प्रातही श्रीगोकुलनाथजी श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै पाछें राजनगर पधारे । सो भाइला कोठारी के घर बिराजे । सो समस्त राजनगर के वैष्णव दरसन कों आए । सो श्रीगोकुलनाथजी के दरसन करि दंडवत् करि बैठे । परंतु वे दोऊ स्त्री–पुरुष नहीं आए । वे ऐसें कहते, जो–हमने गऊहत्या कीनी है । सो मैं गऊहत्यारो हूं । सो मोहोंडो कैसे दिखाऊं ? ऐसें रोवे, बिलबिलावे । तब और वैष्णव ने ये समाचार श्रीगोकुलनाथजी सों कहे । और बिनती करी, जो–महाराज ! श्रीकाकाजी महाराज के कृपापात्र हैं । भले वैष्णव हैं । सो अब तो उन मन में ऐसो संकल्प कीनो है, जो–अन्नजल त्यागि कै देह कौ त्याग करनो । ऐसें बिचारि कै आज वा वैष्णव कों तीन दिना भए हैं । जल हू नाहीं लियो है । तब श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा किये, जो–उनकों बुलावो । तब वैष्णव ने जाँइ कै उन दोऊ स्त्री पुरुष सों कही, जो–तुम कों श्रीगोकुलनाथजी बुलावत हैं । तब वे वैष्णव आए । दूरि ठाढे भए । तब श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा किये, जो–आगें आउ । पाछें श्रीगोकुलनाथजी पूछें, जो–कैसैं भई ? तब इन वैष्णवन कही,

जो–कृपानाथ ! दोष तो मेरो है। सो ए दोष कैसें मिटे ? तब आपने आज्ञा करी, जो–यामें तो तुम कों कछू दोष नाहीं। तैनें मारी नाहीं, दूबली हती सो धक्का तें गिरि परी। सो वाकौ अंतकाल भयो। यामें तुम्हारे कछू दोष नाहीं। तब वा वैष्णव ने कही, जो–महाराज ! मेरे हाथ तें मरी है। तब श्रीगोकुलनाथजी ने आज्ञा करी, जो–एक निष्कंचन अकासवृत्तिवारौ वैष्णव होंइ तिन कों बुलाई कै श्रीठाकुरजी पाछें महाप्रसाद लिवाय दीजो। तब इन वैष्णव ने कही, जो–महाराज ! मो हत्यारे के घर कौन वैष्णव आवेगो ? तब आपने आज्ञा करी, जो–हमारो नाम लेनो। पाछें वह वैष्णव अपने घर जाँई कै सुंदर भांति की सामग्री करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि कै पाछें एक निष्किंचन वैष्णव देखि कै उन तें हाथ जोरि कै कही, जो–श्रीगोकुलनाथजी की आज्ञा तें मेरे घर चलो। तब उन वैष्णव ने कही, जो–भले, आपकी आज्ञा चहिए। जो चाहे सो करे तातें चलो। सो उन वैष्णव कों घर ल्याये। पाछें जो–जो सामग्री श्रीठाकुरजी आरोगे सो–सो सामग्री वा वैष्णव के आगें धरी। तब वा वैष्णव निष्किंचन नें थोरो थोरो महाप्रसाद सब सामग्रीन में तें ले कै एक कौर ले के उठ्यो। तब इन वैष्णव ने कही, जो–महाराज कृपा करि कै आछी भांति सों लेऊ। तब उन निष्किंचन ने कही, जो–तोकों एक हत्या है, सो तो गई। याही के लिए महाराज ने आज्ञा करी हती। और लिवावनो होंई तो और दिना लिवाइयो। आज तो इतनोइ लेइंगे। ऐसें कहि उठि गयो। पाछें वह वैष्णव श्रीगोकुलनाथजी की पास आयो। दंडवत्

करी । तब आपने पूछी, जो-महाप्रसाद वैष्णव कों लिवायो ? तब वैष्णव ने कही, जो-महाराज ! आप की आज्ञा तें वह वैष्णव ने आय कै एक कौर लीनो । मैंने बोहोत निहोरा करे परि उन वैष्णव ने और न लीनो । तब श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा कीने, जो-अब तेरो दोष मिटि गयो । तब इन वैष्णव नें बिनती करी, जो-कृपानाथ ! और वैष्णव कैसें मानेंगे ? तब आपने आज्ञा करी, जो-न माने तो न्हाय आउ । पाछें वह वैष्णव न्हाय आयो । तब आज्ञा किये, जो-जा, जलधरा में तें चांदी की लोटी ले कै जलपान भरि ल्याउ । तब वह वैष्णव लोटी ले कै भरि ल्यायो । तब आप जल आरोगे । और बोहोत वैष्णव बैठे हते । आपने उन तें कही, जो-अब तो मानोगे ? तब समस्त वैष्णवने कही, जो-कृपानाथ ! आपकी आज्ञा ही तें दोष तो मिटि गयो । ता उपरांत वैष्णव ने महाप्रसाद लियो । और आप साक्षात् इनके हाथ कौ जल आरोगे । तब फेरि कहा संदेह रह्यो ? अब हम सब वैष्णव इन तें ब्यौहार करेंगे । तब श्रीगोकुलनाथजी कृपा करि कै इन वैष्णव तें आज्ञा किये, जो-अब घर जाँइ कै महाप्रसाद लेहु । तब यह वैष्णव गद्‌गद् कंठ व्है साष्टांग दंडवत् करि कै घर जाँई कै दोऊ स्त्री-पुरुष ने महाप्रसाद लियो । पाछें भलीभांति सों सेवा करन लागे । पाछें गाँई घर में न राखी । जहां गाँइ होंइ तहां पातरि दे आवते । पाछें श्रीगुसांईजी की कृपा तें श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे । जो चहिए सो मांगि लेते । तातें वे दोऊ भले वैष्णव भए ।

भावप्रकाश-या वार्ता में यह जताए, जो-वैष्णव कों सेवा में सावधान रहनो । काहेतें,

जो–सेवा करत अनेक अपराध होत हैं, तातें वासो बचनो। और दीनता कौ हू स्वरूप बताए। जो दैन्यता तें प्रभु प्रसन्न होत हैं। तातें सब दोष की निवृत्ति होत हैं।

सो वे स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥१३९॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक हरिदास, जिनने मोहनदास कों राखिवे कों अपने बेटा कों मार्‌यो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–सो हरिदास तामस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'श्रवनप्रिया' है। सो श्रवनप्रिया की श्रीठाकुरजी के गुनानुवाद सुनिवे में अत्यंत प्रीति है। और श्रवनप्रिया की दो अंतरंग सखी है। 'प्रीतिरूपा' और 'भावरूपा'। सो 'प्रीतिरूपा तो इहां हरिदास की स्त्री भई। और 'भावरूपा' हरिदास कौ बेटा भयो। सो श्रवनप्रिया 'कंदर्पा' की सखी हैं। उन तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

ये गुजरात में एक गाम है तहां एक बनिया के जन्मे। सो बरस पंद्रह के भए। तब माता–पिता ने इन कौ ब्याह कियो। स्त्री सुपात्र मिली। पाछें केतेक दिन में उन के एक बेटा भयो। ता पाछें हरिदास के मातापिता मरे।

सो हरिदास कौ एक मित्र हतो। उन कौ नाम मोहनदास हुतो। सो हरिदास के गाम तें कोस बीस पर रहतो। सो हरिदास वा मोहनदास सों मिलि कै ब्यौहार करन लागे। सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे। सो मारग में मोहनदास कौ गाम आयो। तहां आप डेरा किये। सो मोहनदास श्रीगुसांईजी कौ दरसन पायो। सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम देखें। तब मोहनदास अपने मनमें कहे, जो–देखो! जिनकों कन्हैया कहत हैं सो आज मेरे सन्मुख ठाढ़े व्है दरसन देत हैं। ताते अब तो इनके सरनि जाँइ कृतार्थ होंइ तो आछौ। पाछें मोहनदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए। आज मेरे बड़े भाग्य उदय भए, जो–मोकों साक्षात् कन्हैया के दरसन भए। तातें महाराज! अब बेगि कृपा कीजिए। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है वाकौं नाम निवेदन कराए। पाछें मोहनदास अपने घर आय स्त्री सों कहे, जो–बेगि चलि, साक्षात् कन्हैया के दरसन होत है। सो स्त्री हू दैवी हती। तातें मोहनदास के संग आई। सो श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें मोहनदास श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज! इन को नाम–निवेदन करवाइए। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि स्त्रीकों हू नाम–निवेदन कराइ सरनि लिये। तब फेरि मोहनदास बिनती किये, जो–महाराज! अब

हमकों कहां कर्तव्य है, सो कृपा करि कहिए। तब श्रीगुसांईजी दोऊन कों आज्ञा किये, जो–तुम दोऊ भगवत्सेवा करो। तब मोहनदास कहे, जो–महाराज ! श्रीठाकुरजी पधराइ दीजिए। तब श्रीगुसांईजी उन के माथे लालजी कौ स्वरूप पधराई दिए। पाछें सेवा की सब रीति कृपा करि बताए। मानसी कौ हू प्रकार सब कह्यो। पाछें आप तो श्रीद्वारिकाजी पधारे ता पाछें मोहनदास ब्रजभक्तन की भावनापूर्वक भगवद् सेवा करन लागे। सो सब लीला हृदय में स्फूर्त भई। श्रीठाकुरजी सानुभावना जनावन लागे।

पाछें एक दिन मोहनदास हरिदास सों मिले। तब हरिदास कों मोहनदासने कह्यो, जो–तुम श्रीगुसांईजी के सेवक होउ तो आछौ। मैं हू श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो हूं। श्रीगुसांईजी साक्षात् कन्हैया है। तब हरिदास कहे, जो–मोकों तुम सेवक करावो। मैं श्रीगुसांईजी कौ सेवक होउंगो। तब मोहनदास ने कही, जो–श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे हैं सो कछूक दिन में पाछें इहां पधारेंगे। तब मैं तुम सों कहूंगो। ता पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी सों फिरे। सो मोहनदास के गाम में डेरा किये। तब मोहनदास ने हरिदास कों खबरि पठाई। जो–श्रीगुसांईजी इहां पधारे हैं। तातें तुम इहां बेगि अइयो। और मोहनदास ने श्रीगुसांईजी कों अपने घर पधराए। सो दिन चारि लों राखे। पाछें हरिदास आए। तब मोहनदास श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज ! ये हरिदास दैवी जीव हैं। सो आप के सरनि आयो है। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै हरिदास कों नाम निवेदन कराए। पाछें हरिदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! कृपा करि कै मेरे गाम–घर पधारिए। स्त्री–पुत्र सब कों सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी मोहनदास कों संग ले हरिदास के गाम पधारे। सो हरिदास के घर बिराजे। पाछें हरिदास की स्त्री और हरिदास के पुत्र कों नाम निवेदन कराइ सरनि लिये। पाछें श्रीगुसांईजी सों हरिदास बिनती किये, जो–महाराज ! अब भगवद् सेवा पधराइ दीजिए, तो कछू आपकी कानि तें टहल करें। तब श्रीगुसांईजी हरिदास कों एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दिए। पाछें आज्ञा किये, जो–मोहनदास सों सेवा की सब रीति पूछि लीजो। और मोहनदास कौ संग करियो। तातें तोकों भगवद्भाव स्फुरायमान होइगो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें श्रीगोकुल पधारे। और हरिदास के घर मोहनदास दस–पांच दिन रहे। सेवा की सब रीति बताए। ता पाछें मोहनदास हरिदास सों बिदा व्है अपने घर आए। पाछें महिना में दस पांच दिन हरिदास मोहनदास के पास जाँई। भगवद्वार्ता सुने। सो मोहनदास के संग सो हरिदास मारग कौ सब सिद्धांत जानन लागे।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै हरिदास के घर मोहनदास आए। सो हरिदास देखि कै बोहोत प्रसन्न भए। तब दोऊ मिलि कै भगवद् सेवा

करते और भगवद्वार्ता करते। भगवद्रस में छके रहते। ऐसें करते केतेक दिन बीते। तब मोहनदान ने कही, जो–अब बोहोत दिन भए सो अब हम चलेंगे। तब हरिदास ने चलत चलत मोहनदास सों और हू पांच सात दिन अपने घर आग्रह करि कै राखे। तब फेरि मोहनदास ने कही, जो–अब तो अवस्य सवेरे जाइंगे। तब हरिदास ने अपनी स्त्री सों कही, जो–अब तो ये सवेरे जाइंगे। तो राखिवे कों कहा उपाय करनो ? तब स्त्रीने कही, जो–तुम कहो सो करे। तब हरिदास के बरस सात कौ एक लरिका हतो। सो हरिदासने अपनी स्त्री सों कही, जो–अपने बेटा कों मारि। तब इन वैष्णव कों सोच होइगो तब ये रहेंगे। तब स्त्री ने ऐसें ही कर्‍यो। पाछें मोहनदास सवारे जाँइवे लगे तब हरिदास और हरिदास की स्त्री ने कही, जो–बेटा तो मरि गयो। अब तुम कहां जाउगे ? तब मोहनदास देखे तो बेटा मर्‍यो है। तब मोहनदास ने अपने मन में बिचार्‍यो, जो–काल्हि रात्रि कों तो यह लरिका आछौ खाँत खेलत हुतो। सो सवेरे ही ये कैसें मर्‍यो ? पाछें मोहनदास ने जान्यो, जो–मोकों रोकिवे के तांई इन अपने बेटा कों विष दे मार्‍यो है। सो मोहनदास को रोमांच व्है आए। पाछें इन श्रीगुसांईजी कौ स्मरन करि चरनोदक मुख में मेलि अष्टाक्षर कहि कै वा लरिका कों जिवायो। ता पाछें लरिका कह्यो, जो–मैं जात हों मोसों जैश्रीकृष्ण तो करि। तब लरिका उठि कै गले सों लिपटि कै कह्यो, जो–मेरे घर सों मति जाओ। पाछें स्त्री–पुरुष दोऊ रोवन लागे। तब मोहनदास कह्यो, जो–लरिका मर्‍यो तब

तो तुम दुःख कियो नाहीं । और अब क्यों रोवन लागे ? तब हरिदास और हरिदास की स्त्रीने कह्यो, जो–आज हमारे घर तें तुम्हारे सारिखे भगवदीय जात हैं । अब हम कों भगवद्रस कौ पान कौन करावेगो ? तातें हम कों अत्यंत कष्ट होत है, सो रुदन आवत है । एते दिन तो हम कों भगवद्रस कौ पान कराय जिवाये । अब हम कैसें जियेंगे ? यह सुनि मोहनदास ने हरिदास और हरिदास की स्त्रीं सों कह्यो, जो–हम सदा सर्वदा तुम्हारे पास रहेंगे । जो–हम ठाकुरजी कों पधराय स्त्री कों संग ले तुम्हारे पास आय रहेंगे । तातें तुम कछू चिंता मति करो । पाछें मोहनदास ने जैसें कह्यो तैसेंई कियो । सो श्रीठाकुरजी कों पधराय अपनी स्त्री कों साथ ले अपने गाम तें हरिदास के घर आय रहे । पाछें जीये जहांलों और ठौर गए नाहीं । सो मोहनदास हरिदास के संग भगवत्सेवा भगवद्वार्ता अहर्निस करते । सो इन कौ सदा सर्वदा ऐसोई संग रह्यो ।

भावप्रकाश–या वार्ता में यहा जताए, जो–भगवदीयन कौ संग दुर्लभ है । सो भगवदीय के संग के लिए हरिदास ने बेटा कों मार्‍यो । सो लोक में बेटा तें ज्यादा ममत्व और काहू में होत नाहीं । तातें सत्संग कौ स्वरूप तो हरिदास नेई जान्यो ।

और मोहनदास लीला में 'प्रानवल्लभा' हैं । सो श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंग सखी हैं । सो 'श्रवन–प्रिया' की हितकारिनी हैं । तातें श्रवन–प्रिया कौ इन पर बोहोत भर भाव है । तातें यहां हू हरिदास की इन पर प्रीति बोहोत भई ।

सो वे हरिदास मोहनदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र सेवक हते । तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥ १४० ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक देवजीभाई बनिया, पोरबंदर के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'गुनप्रिया' है। सो गुनप्रिया अहर्निस ठाकुर के गुन–गावति है। इन की गुन में बड़ी प्रीति है। ये 'कंदर्पा' तें प्रकटी है, तातें उन के भावरूप हैं।

ये पोरबंदर में एक द्रव्यमान् बनिया के जन्मे। सो बरस पांच के भए ता दिन तें इन कौ मन भगवद्वार्ता–कथा सुनि में लग्यो। सो जहां कहूँ वार्ता–कथा होंई तहाँ ये जाँई, ऐसो व्यसन भयो। ऐसें करत ये बरस बीस बाईस के भए। तब इन के माता–पिता मरे। पाछें ये द्वारिकाजी, श्रीरनछोरजी के दरसन कों चले। सो कछुक दिन में ये द्वारिकाजी आए। सो श्रीरनछोरजी के दरसन किये। ता पाछें लोगन सों पूछ्यो, जो–यहां कहूँ कथा–वार्ता होत है ? सो ता समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी में बिराजत हुते। सो नित्य श्रीसुबोधिनीजी की कथा आप कहत हुते। सो देवजी सों काहू वैष्णव ने कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी आप नित्य कथा कहत हैं। तब देवजी वा वैष्णव सों कहे, जो–जहां श्रीगुसांईजी कथा कहत होंई तहां मोकों ले चलो। मोकों कथा सुने बिना चैन परत नाहीं। तब वह वैष्णव, श्रीगुसांईजी कथा कहत हुते तहां देवजी कों ले आयो। सो देवजी कथा सुने। सो सुनत ही वाके मन में आई, जो–ये कोई महापुरुष हैं। तातें इन की सरनि जइए तो आछो। पाछें कथा होंई चुकी तब देवजी श्रीगुसांईजी सो बिनती किये, जो–महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी देवजी कों नाम सुनाए। पाछें दूसरे दिन निवेदन कराए। तब देवजी कहे, जो–महाराज ! अब कहां कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–देवजी तुम सेवा करो। तब देवजी कहे, जो–महाराज ! मोतें सेवा निबहेगी नाहीं। और कछू आज्ञा करो सो हों करों। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–पुष्टिमार्ग में सेवा कथा दोई मुख्य हैं। सो तुम सों जीवन भरि जो निबहे सो करो। नागा न परनी चाहिए। तब देवजी कहे, जो–महाराज ! मोकों वार्ता–कथा सुनिवे कौ व्यसन है। तातें आप आज्ञा करो तो हों वार्ता–कथा सुनों। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–देवजी ! तुम नित्य वैष्णवन की मंडली में जांई के नित्य नियमपूर्वक भगवद्वार्ता सुनो। तामें कसर न परे। तो तुम कों यह मारग स्फुरेगो। पाछें देवजी उहां कछुक दिन रहि श्रीगुसांईजी के श्रीमुख की कथा सुने। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा व्है पोरबंदर अपने घर आए।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे देवजीभाई नित्य भगवद् मंडली में वार्ता सुनिवे कों जाते। सो नित्य नेम सों वर्षा में ठंड में सदैव जाते। सो एक दिना ज्वर आयो। तोऊ भगवद्वार्ता मंडली में गए। पाछें ऐसो

ज़्वर आयो सो पांच सात लंघन भए। तोऊ गए। पाछें बोहोत असक्त भए। सो वा दिन जानो न बन्यो। तब सब वैष्णवन ने सुधि करी, जो–आज देवजी भाई आय न सके। तब वैष्णव–मंडली में एक मुखिया हतो। सो उनने कही, जो–आज सब वैष्णव मिलि कै देवजी भाई के घर चलो। पाछें भगवद्वार्ता होंई चुकी। तब सब वैष्णव मिलि कै देवजी भाई के घर आए। सो उन में तें एक वैष्णव ने आगें जाँई कै खबरि करी। जो–आज सब मंडली तुम्हारे घर आवे हैं। सो देवजी भाई कों ता समै ज्वर चढ्यो हतो। सो इतने में वा वैष्णव ने कही। सो सुनि कै हरख सों उठि कै वैष्णवने के साम्हे आए। सो दंडवत् जैश्रीकृष्ण करि कै आदर सों अपने घर पधराए। अपनी पास आसन दे कै सन्मान सों बैठाए। पाछें हाथ जोरि कै बिनती कीनी, जो–आज मेरे अहोभाग्य है। जो–मेरे घर वैष्णव कृपा करि कै पधारे। तब उन वैष्णवन ने कही, जो–देवजीभाई ! तुम आज आय न सके तातें तुम कों देखिवे कों आए हैं। तब देवजी भाई बोले, जो–आज कौन सौ प्रसंग बांच्यो ? कौनसी वार्ता भई ? सो कृपा करि कै सुनावो। तब उन वैष्णवन ने सब सुनायो। तब देवजी भाई ने हाथ जोरि कै बिनती करि सब वैष्णवन सों कह्यो, जो–तुम कृपा करि कै देउ तो एक बस्तू की मोकों अपेक्षा है। तब उन वैष्णवन ने कही, जो–या समय श्रीगुसांईजी की कृपा सों जो मांगो सो सब सिद्ध है। तब देवजी भाई ने यह मांग्यो, जो–मेरो नित्य नेम भगवद् मंडली में वार्ता सुनिवे कौ न छूटे। और देह कौ दंड है सो भुक्तेंगे। सो कृपा करि कै यही

मोकों देउ। जो–भगवद्‌मंडली न छूटे। तब सब वैष्णव प्रसन्न होंई कै यह आसीर्वाद दियो। जो श्रीगुसांईजी की कृपा तें तुमकों भगवद्‌मंडली सदैव स्फुरेगी। पाछें सब वैष्णव उठि कै श्रीकृष्णस्मरन करि कै अपने घर कों गये। पाछें श्रीगुसांईजी की कृपा तें उनके आसीर्वाद तें वाही दिन तें उन कों ज्वर उतरि गयो। भोग निवर्त भयो। पाछें नित्य भगवद् वार्ता सुनिवे कों नेम सों जान लागे।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जताए, जो–वैष्णव मंडली कौ स्वरूप महा अलौकिक है। साक्षात् प्रभुन कौ ही स्वरूप है। तातें मंडली में अलौकिक बुद्धि सों नित्य नियम पूर्वक जानो। भगवद् वार्ता सुननों। और वाकौं फल रूप करि कै जाननो, तो सब कारज सिद्ध होंई।

सो वे देवजीभाई श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥१४१॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक डोकरी, जानें दांतिन भोग में धरि, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'भाव–प्रवीणा' है। ये भगवद् भाव में अत्यंत निपुन हैं। तातें श्रीचंद्रावलीजी की इन पर बोहोत प्रीति है। ये 'मधुएनी' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

ये राजनगर में एक बनिया के प्रगटी। सो बरस नौ की भई। तब याकौ ब्याह भयो। सो याकौ धनी निष्कंचन हतो। लकडी बेचि कै निर्वाह करतो। ता पाछें ये बरस साठ की भई तब वाकौ धनी मर्‍यो। तब ये चरखा कांति कै निर्वाह करन लागी। सो याके घर के पास एक वैष्णव रहत हुतो। सो वाके यहां भगवद् वार्ता नित्य होंई। सो या डोकरी ने बिचार्‍यो, जो–या वैष्णव के इहां बोहोत लोग कथा सुनिवे आवत हैं। तातें मैं हू नित्य कथा सुनिवे कों जाऊ तो आछो। पाछें दूसरे दिन वा वैष्णव सों डोकरी पूछ्यो, जो–तुम्हारे यहां बोहोत लोग भगवद्वार्ता कथा सुनिवे कों आवत है। सो मोकों हू सुनिवे की ईच्छा है। तातें जो–तुम कहो तो हो हूँ

तुम्हारे घर आयो करों। तब वा वैष्णव ने कही, जो–बाई! हमारे घर कथा – वार्ता होत है। सो तो हमारे मारग की होत हैं। तातें हमारे मारग कौ जो–कोऊ होंई सो सुनत है। तू यामें कहा समझेगी ? तब वा डोकरी ने कह्यो, जो–तुम्हारो कौनसो मारग है ? तब वैष्णव कह्यो, जो–हमारो वल्लभी मारग है। तब वा डोकरी ने वा वैष्णव सों बिनती करी, जो–तुम कृपा करि, मोकों वल्लभी करो। अब घर में अकेली बैठि रहति हूँ। तातें मेरो समय जात नाहीं। सो हों वल्लभी होऊं तो तुम्हारी कथा वार्ता नित्य सुनों। तातें तुम इतनी कृपा मोपें करो तो भलो है। तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो–बाई! हमारे गुरु श्रीविट्ठलनाथजी है। सो श्रीगोकुल में बिराजत हैं। उन की सरनि जाइवे तें वल्लभी होंई। सो तू उन की सरनि जाँई तब वल्लभी वैष्णव तोसों भगवद्वार्ता–कथा कहें। तब वा डोकरी ने कह्यो, जो मैं श्रीगोकुल कैसें जाऊं ? मेरे पास तो द्रव्य हू नाहीं है। और सरीर हू थक्यो है। तातें तुमही मोकों वैष्णव करो तो आछो। तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी थोरे दिन में यहां पधारेंगे। तब तू उन की सरनि जइयो। तब वा डोकरी ने कही, जो – जब लौं मेरे दिवस कैसें कटेंगे ? तातें तुम मोकों वैष्णव करो। तो मैं नित्य कथा सुनो। तब वा वैष्णव ने कही, जो–बाई तेरी आरति है तो तू नित्य कथा सुनिवे आइयो। परि हम तो तोकों वैष्णव करि सकत नाहीं। तब वा बाई ने कही, जो–भलो! कथा सुनिवे आउंगी। पाछें जब श्रीगुसांईजी पधारे तब तुम मोसों कहियो। मैं वैष्णव होऊंगी। पाछें वह डोकरी नित्य कथा सुनिवे वा वैष्णव के घर जाँई। सो याकौ भाव बोहोत बढ्यो। पाछें श्रीगुसांईजी के दरसन की हू आरति बोहोत भई। कहे, जो–कब श्रीगुसांईजी पधारे और हों सेवक होऊं, श्रीठाकुरजी की सेवा करों ? ता पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे। तब वा वैष्णव ने या डोकरी सों कही, जो–बाई श्रीगुसांईजी पधारे हैं। तेरे सेवक होनो होंइ तो चलि। हों बिनती करों। तब वह डोकरी तत्काल वा वैष्णव के संग चली। सो श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें वा वैष्णव ने बिनती करी, जो–महाराज! या डोकरी की सेवक होंन की बोहोत आरति हैं। तातें आप इन कों कृपा करि सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–या डोकरी के लिए ही तो हम यहां आए हैं। पाछें डोकरी कों न्हवाइ नाम निवेदन करवाए। तब वा डोकरी ने कही, जो–कृपानाथ! भगवत्सेवा पधराय दीजिए। तब श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करि एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दिये। तब वह डोकरी भक्ति–भाव संयुक्त श्रीठाकुरजी की सेवा करन लागी।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह डोकरी राजनगर में रहती। सो निष्कंचन हती। सो नित्य जो–बने सो सामग्री करि कै भोग समर्पती। सो एक दिना

'मिलमा' की सामग्री करी हती। सो सिद्ध भई हती। इतने काहू वैष्णवने कही, जो श्रीगुसांईजी पधारे है । सो श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै राजनगर पधारे हते । सो वा डोकरी ने श्रीगुसांईजी पधारे सुनि कै बेगिबेगि ताजी सामग्री समर्पि कै चमचा घर में न हतो सो एक दांतिन छिलि कै खासा करि के चमचा के बदले धरी। और श्रीठाकुरजी तें बिनती करी, जो–महाराज ! यातें सामग्री हलाय कै सीरी होंइ तब आरोगियो। मैं श्रीगुसांईजी के दरसन करि आउं। सो वा डोकरी कों दरसन की बोहोत आतुरता हती। सो भोग धरि कै दरसन कों गई। सो श्रीगुसांईजी के दरसन किये । पाछें आय कै भोग सरायो । आचमन मुख वस्त्र करायो । इतने में एक वैष्णव आयो, श्रीठाकुरजी के दरसन किये। सो देखे तो भोग में एक दांतिन धरी है । तब वैष्णव ने अपने मन में बिचारी, जो–ए पुरातन वैष्णव है। सो इनने दांतिन धरी है सो रीति होइगी। तातें एतो निष्कंचन है तातें एक धरी हैं। अपने दोइ धरेंगे। सो वा वैष्णव ने अपने घर राजभोग में सामग्री के संग दोई दांतिन धरे। सो उन के यहां और हू वैष्णव आवते। सो उननें हू यही जानी, जो–दांतिन धरन की रीति होगी। तातें उन ने चारि धरी। उनके चारि देखि कै चोथे वैष्णव ने आठ धरी। पाछें उन के आठ देखि कै पांचमे वैष्णव ने एक जूड़ी धरी। सो उन के यहां एक भगवदीय वैष्णव आए। सो उन ने देखी। सो इन तें पूछी, जो–तुमने यह दांतिन धरी ताकौ कारन कहा ? तब उन ने कही, जो–फलाने वैष्णव के यहां देखि कै मैनें धरी। तब उन वैष्णव

तें पूछी, जो–तुमने आठ दांतिन क्यों राखे ? तब उन कही, जो–फलाने वैष्णव के चारि दांतिन देखि कै मैनें आठ धरे। तब उन वैष्णव ने जाँइ कै पूछी, जो–तुमने चारि दांतिन क्यों धरी ? तब उन कही, जो–फलाने के दोइ देखी तासों मैनें चारि धरे। तब उन वैष्णव तें जाँई कै पूछी, जो–तुमने दोइ दांतिन क्यों धरी ? तब उन कही, जो फलानी डोकरी पुरातन है, सो उनने एक धरी तातें मैनें दोइ धरी। पाछें वह वैष्णव वा डोकरी के घर आए। तब डोकरी ने श्रीकृष्ण–स्मरन करि कै बैठाए। और पूछी, जो–आज मेरे घर कैसें आवनो भयो ? तब उन वैष्णवने कही, जो–तुमने सामग्री में दांतिन क्यों धरी ? तब वा डोकरी ने कही, जो–हों तो श्रीगुसांईजी के दरसन कों जात हुती, और सामग्री ताती हुती। सो घर में चमचा न हुतो। तातें चमचा के बदले में मैनें दांतिन धरी। जो–श्रीठाकुरजी के हाथ न दाझे। याके लिये दांतिन धरी। तब वह वैष्णव सुनि कैं प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी जब राजनगर में पधारे तब वैष्णवन श्रीगुसांईजी आप सों यह सब समाचार विस्तार सों कहे। तब श्रीगुसांईजी यह सुनि कै आज्ञा किये, जो–वैष्णवन कों जो कछू सेवा संबंधी कार्य करनो होइ सो भगवदीयन कौ सत्संग करि कै करनो। भगवदीयन तें पूछि कै करनो। जो–देखा देखी करे तो उलटा अपराध माथे पड़े। तातें बिचार कै करनो।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–सेवा भगवदीयन कौ संग करि, भाव समझि कै, प्रीति संयुक्त करनी। देखा देखी नहीं करनी।

सो वह डोकरी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय

हती। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ?

॥ वार्ता ॥१४२॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक स्त्री–पुरुष, मथुराजी के, जानें मंडली में चना बांटे, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'गेहनी' 'देहनी' हैं। ये दोऊ 'मधु एनी' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं। सो पुरुष कौ नाम तो 'गेहिनी' है। और स्त्री कौ नाम 'देहिनी'। ये दोऊ मथुरा में रहते। सो श्रीगुसांईजी मथुराजी में वास किये तब ये सेवक भए हैं। सो उन के माथें श्रीगुसांईजी आपु लालजी कौ स्वरूप सेवा कों पधराय। दिये हैं।

वाता प्रसंग –१

सो वे स्त्रीपुरुष श्रीठाकुरजी की सेवा बोहोत स्नेह सों करते। सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते। और उनके घर वैष्णव मंडली नित्य होती। और भगवद्वार्ता–कीर्तन नित्य होते। सो मथुरा के वैष्णव नित्य आवत हते। सो नित्य चनाचवेना कौ महाप्रसाद बांटते। तामें एक सेठ वैष्णव सुनिवे कों आवतो। सो उहां चवेना कौ महाप्रसाद बट्यो। सो सेठने लै कै वह महाप्रसाद डारि दीनो। सो वा मंडली में महादेवजी भगवद्‌गुनानुवाद सुनिवे कों आवते। सो तिन चना प्रसादी बीनि बीनि के लिये। तब वैष्णव ने पूछी, जो–ये कौन है ? तब देखें तो महादेवजी है। तब वैष्णव ने कही, जो–यह तुम कहा करो हो ? तब महादेवजी ने कही, जो–सेठ ने चना डारि दीने हैं सो मैं बीनत हों। सो नित्य ऐसें ही करे हैं। तब या क्षत्री वैष्णव ने सेठ तें पूछी, जो–तुम नित्य महाप्रसाद कौ अनादर करत हो ? तब सेठ ने नाहीं करी। तब वैष्णव ने कही, जो –महादेवजी कहत हैं

तुम झूठ क्यों बोलत हो ? तुम कों द्रव्य कौ अहंकार है। सो तुम्हारो अहंकार मिटेगो तब तुम कों वैष्णव-मंडली में बुलावेंगे। पाछें वा वैष्णव ने सबन सों कह्यो, जो-याकों कोई जैश्रीकृष्ण मति करियो। और वैष्णव-मंडली में मति आवन दीजो। ता पाछें कोई वैष्णव श्रीकृष्ण-स्मरन न करें। तब वह सेठ मथुरा तें श्रीगोकुल कों आयो। सो मन में कह्यो, जो-मैं श्रीगुसांईजी सों बिनती करूंगो। सो मोकों वैष्णव-मंडली मिले। पाछें श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी पीठि फेरि कै बैठें। तब सेठ ने बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! वैष्णव मंडली ने मेरो त्याग कियो है। और आप (हू) पीठि फेरि कै बिराजे हो। सो आप कृपा करि कै आज्ञा करिये, जो-मेरो कहा अपराध है ? तब आपने आज्ञा करी, जो-उहां वैष्णव मंडली ने त्याग कियो, तो मैनें ही त्याग कियो। तब वाने बिनती करी, जो-महाराज ! मेरो ठिकानो अब कहां ? तब आज्ञा करी, जो-जब वैष्णव, मंडली में लेंगे तब हम दरसन देइंगे। तब वह सेठ मथुरा आयो। पाछें कितनेक दिन में इन के द्रव्य कौ नास भयो। तब वाकों दीनता आई। पाछें उन वैष्णव मंडली में जाँइ बिनती करी, जो-अब मेरे द्रव्य कौ नास भयो। अब मेरो अहंकार मिट्यो। सो अब मोकों वैष्णव-मंडली में लेऊ। तब वैष्णवन ने कही, जो-अब महाप्रसाद कौ अनादर करोगे ? तब वा सेठने दोऊ हाथ जोरि कै बिनती करी, जो-अब मैं कबहू महाप्रसाद कौ अनादर न करोंगो। अनादर कर्‍यो ताको फल मैं भोग्यो। अब कृपा करि कै मोकों जैश्रीकृष्ण करो। जब आज्ञा

करो तब मैं मंडली में आउं। तब वैष्णवन कों दया आई। तब वैष्णवन ने जैश्रीकृष्ण कहि कै मंडली में बुलायो। और कही, जो–अब महाप्रसाद कौ अनादर मति करियो। तब वाने बिनती करी, जो–अब अनादर कबहु न करूंगो। सो ऐसें ही महाप्रसाद सों वैष्णवन कों डरपत रहनो। पाछें वह नित्य वैष्णव मंडली में आवे। भगवद्वार्ता सुने। तब वैष्णव सब प्रसन्न रहते। पाछें श्रीगोकुल आय कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी आप प्रसन्न भए। और आज्ञा किये, जो–वैष्णव प्रसन्न भए तब हम हूं प्रसन्न भए। सो यह सेठ मथुरा में रहि कै भगवद्सेवा करतो। और वैष्णव मंडली में नित्य जातो।

भावप्रकाश – या वार्ता में यह जतायो, जो – वैष्णव मंडली कों भगवद् स्वरूप करि जाननी। उहां जाँई दीनता सों भगवद्वार्ता सुननी। तो बेगि प्रभु कृपा करें। और द्रव्यादिक को अभिमान बाधक कहे। सो प्रभु जा पर कृपा करें ताके दव्यादि कौ नास करि अभिमान निवृत करत हैं। तातें वैष्णव द्रव्य पाय अभिमान न करें।

सो वह सेठ और वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए? वार्ता ॥ १४३ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक और डोकरी, जाने आठ बेर काल फेर्यो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'अभयपूर्णा' है। ये 'मधुएनी' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग – १

सो वह डोकरी राजनगर में रहती । सो जब श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे तब बोहोत से दैवी जीव वैष्णव भए हे । तामें येहू सेवक भई है । सो वा डोकरी के माथे श्रीबालकृष्णजी बिराजत हते । सो वह बालपने तें विधवा भई हती । सो बालपने तें सेवा करत करत वृद्ध भई ।

तब एक दिना काल आयो । सो अन्नकूट पैं आयो । सो वा डोकरी को श्रीगुसांईजी की कृपा तें वह काल मूर्तिमान दीसे । तब काल ने कही, जो – अब यहां तें चलो । तब वा डोकरी ने कही, जो–मेरे श्रीठाकुरजी के अन्नकूट कौ उत्सव आयो । तातें मैं नाहीं आऊँ । तब काल तो फिरि गयो । सो अन्नकूट पाछें फेरि काल आयो । तब डोकरी ने कही, जो – अब तो प्रबोधिनी आई तातें मैं तो नाहीं आऊँ । तब काल पाछौ गयो । सो केतेक दिन पाछें यह फेर आयो । तब डोकरी ने कही, जो अब तो श्रीगुसांईजी कौ उत्सव आयो, तातें मैं अबही नाहीं आऊ । ता पाछें काल फिरि गयो । पाछें वसंतपंचमी पैं काल आयो । तब डोकरी ने कही, जो–अब तो वसंतपंचमी कौ उत्सव आयो । तातें हों तो नाहीं आवति हूँ । तब काल फेरि गयो । सो काल फेरि डोल पैं आयो । तब डोकरी नें कही, जो–अब तो डोल उत्सव आयो है । तातें अब ही तो मैं नाहीं आउं । तब काल पाछौ गयो । पाछें काल फेरि श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के उत्सव पैं आयो । तब डोकरी ने कही, जो–अब तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी क

उत्सव पाछें आउंगी। तब काल फिरि गयो सो कितनेक दिन पाछें फेरि आयो। तब डोकरी ने कही, जो–जन्माष्टमी कौ उत्सव करि कै आउंगी। तब काल फिरि गयो। सो केतेक दिन पाछें फेरि आयो। तब डोकरी ने कही, जो–यह उत्सव राधाष्टमी कौ करि कै आउंगी। तब काल फिरि गयो। तब काल तो दिक होंइ कै धर्मराज तें कही, जो– महाराज ! वा डोकरी ने तो बरस दिन में आठ फेरा करवाए। जब मैं जाउं तब कहे, जो–अब तो फलानो उत्सव है। तातें नाहीं आऊंगी। सो मैं तो कायो होंइ गयो। तब धर्मराज ने कही जो–वह तो भगवदीय हैं। तातें उन पै मेरो दंड लगे नाहीं। मेरो बल चले नाहीं। तब काल तो सुनि कै अपने ठिकाने बैठ्यो।

भावप्रकाश – या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो कोऊ भगत्सेवा भाव प्रीति संयुक्त करत हैं तिन कों काल बाधा करि सकत नाहीं। ऐसो सेवा कौ प्रभाव है।

वार्ता प्रसंग –२

बहोरी एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे। सो भाईला कोठारी के घर बिराजे। सो वैष्णव सब दरसन कों आए। सो वह डोकरी हू आई। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीमुख तें कही, जो – आवो 'अष्टपदी'। तब वैष्णवन श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! अष्टपदी सो कहा ? तब श्रीगुसांईजी ने कही जो–भीष्मपिता ने एक बेर काल कों पाछौ फेर्यो। और या डोकरी ने आठ बेर काल कों पाछौ फेर्यो। पाछें श्रीगुसांईजी ने वा डोकरी तें कही, जो–भलो ! आठ बेर काल कों फेरा खवाए,

सो कछू तो दया बिचारि । भलो, काल कों मान देनो । तब डोकरी ने कही, जो–महाराज ! मैं तो आप के बस हों, काल के बस नाहीं । और मेरे लालजी की सेवा कौन करेगो ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–हमारे घर लालजी पधराऊ । तब डोकरी ने कही, जो–भले महाराज ! आप की निधि आप पधरावो । तब वा डोकरीने वैभव सहित श्रीठाकुरजी, श्री–गुसांईजी के घर पधराए । और जो घर में हतो, सो सब श्री–गुसांईजी कों समर्प्यो । तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–कछू तो राखि ले । तब वा डोकरी ने कही, जो–अब मेरे कहा करनो है ? पाछें थोरेसे दिन रहि कै वा डोकरी ने लौकिक देह छोरि कै अलौकिक देह तें काल के माथे पग दै कै व्यापि वैकुंठ के विषे प्रवेस करत भई ।

भावप्रकाश–यामें वह जतायो, जो–भगवदीय वैष्णव काल के आधीन नाहीं है । तातें गोपालदासजी गाए हैं –

'चित्रगुप्त कागद फांरि डारे सरन जो जन आइया ।'

तातें मन, बच, कर्म करि जो– जीव श्रीमहाप्रभुजी कौ सरन दृढ़ गहत हैं तासों काल हु डरपत है । यह सिद्धांत कह्यो ।

सो वह डोकरी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती । तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए । ॥ वार्ता ॥ १४४ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक विरक्त हतो, वह गुजरात में रहतों, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं ।

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं । लीला में इन कौ नाम 'पेंचु' गोप है । सो लीला में अनेक पशु पक्षी हैं । तिन सबन के एक–एक के न्यारे–न्यारे अनेक भाव हैं । सो सब

स्वरूपात्मक हें। तामें यह पेंचू 'तमचर' के भावरूप है। सो प्रातःकाल होंई तब वह नंदालय में आवत है। पाछें मधुर कोमल स्वर सों प्रभुन कों जगावत हैं। तातें श्रीठाकुरजी इन पर सदा सर्वदा प्रसन्न रहत हैं।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै श्रीगुसांईजी के दरसन करिवे कों एक साथ गुजरात कौ गोकुल आयो हतो। सो वा साथ में एक विरक्त हू हूतो। सो इन श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। सो दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भयो। ता पाछें वा विरक्त ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! मोकों नाम सुनाइए। तब श्रीगुसांईजी ने वाकों नाम सुनायो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वाकों कृपा करि निवेदन कराए। तब वा विरक्त ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! अब मोकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी वा विरक्त कों आज्ञा किये, जो–तुम नाममंत्र कौ हृदय में जप करो। तासों तुम कों भगवद्भाव सिद्ध होयगो। सो ता दिन तें वह विरक्त नित्य नाममंत्र कौ अपने हृदय में जप करन लाग्यो। सो केतेक दिन में वाकों श्रीगुसांईजी की कृपा तें भगवद्भाव उत्पन्न भयो। तब वह श्रीनवनीतप्रियजी के नित्य दरसन करे। पाछें श्रीगुसांईजी के दरसन करे। या प्रकार रहतो।

पाछें वह विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजी सों आज्ञा मांगि श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों गयो। सो दरसन करि कै उहां ते ब्रज परिक्रमा कों गयो। सो परिक्रमा करि श्रीगोकुल आयो। पाछें वह अहर्निस फिरिवोई करे। कहूं स्वतंत्र रहे नाहीं। सो उत्तम स्थल, उत्तम वार्ता में अहर्निस रहे। भगवदीय वैष्णव

होंइ ताकौ संग करे । पाछें वह विरक्त पृथ्वी पर्यटन करन लाग्यो।

ऐसें करत एक दिन वह एक ग्राम में आयो । सो तहां काहू वैष्णव के बेटा कों सर्प ने डस्यो । सो वह मर्‌यो । तब वाकी महतारी रोवन लागी । सो बोहोत विलाप करि कै रोवत हुती । सो ता मार्ग में वह विरक्त वैष्णव और औरहू वैष्णव भगवदीय चले जात हुते । तब वा विरक्त वैष्णव ने पूछी, जो–ये क्यों रोवत है ? तब दूसरे लोग ठाढ़े हते तिन सर्व वृत्तांत कह्यो । तब वा विरक्त वैष्णव कों दया आई । तब वा विरक्त वैष्णव ने भगवन्नाम कौ उच्चार कियो । सो वह जीयो । तब सब लोग वाके पाछें परे । और कहन लागे, जो–यह विद्या आपके पास है सो हमकों सिखावो । तब वा विरक्त वैष्णव ने कह्यो, जो–हों सिखाऊं तो सही, परंतु तुमकों हमारो विश्वास नहीं आवेगो । तब उन वा विरक्त वैष्णव सों कह्यो, जो विश्वास कैसें नहीं होइगो । प्रत्यच्छ देखि कै विस्वास न आवे सो कैसें मानें ? पाछें विरक्त वैष्णव ने कह्यो, जो–हम तुम कों यह मंत्र सिखावत हैं । सो तुम हू अहर्निस कहियो । जो– 'श्रीकृष्णः शरणं मम' अहर्निस कहते रहियो । तब उन, विरक्त वैष्णव सों ह्यो, जो –ए तो मंत्र हम जानत ही हैं । परि दूसरो मंत्र क्यों नहीं कहत हो ? तब वा विरक्त वैष्णव ने कह्यो, जो–यह मंत्र सर्वोपरि है । ता पाछें वह विरक्त वैष्णव उहां तें आगें कों चल्यो । सो ऐसें अहर्निस फिर्‌यो करतो । सो जहां तांई विरक्त वैष्णव की देह चली, तहां तांई फिरिवो कियो । सो ता पाछें वह विरक्त वैष्णव की देह

छूटी। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के चरनारविंद में प्राप्त भयो।

भावप्रकाश – या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–वैष्णव कों विश्वासपूर्वक अष्टाक्षर मंत्र कौ जप करनो। तातें सर्व कार्य की सिद्धि होत हैं। अविश्वास बाधक हैं। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'विवेकधैर्याश्रय' ग्रंथ में लिखे हैं। सो श्लोक –

'अविश्वासो न कर्तव्यः सर्वथा बाधकस्तु सः'।

तातें वैष्णव कों अविश्वास सर्वथा न करनो। काहेतें, जो–यह आसुर धर्म है। तातें भक्ति में बाधक कह्यो है।

सो वह विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ?

वार्ता ॥ १४५ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक नाऊ हुतो, सो वह गुजरात में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'अनन्या' है। ये तमचर के भावरूप हैं। सो या निकुंज की सेवा करति हैं। भोर होत ही सब वृक्षन कों सम्हारति हैं। सो एक समै आधी राति कों ये जगी। जाने, जो–भोर भयो। सो वृक्षन कों सम्हरान लागी। ताकौ आहट भयो। सो श्रीठाकुरजी सुने। तब जाने जो सवेरो भयो, सो उठे। तब ललितादिक सखी ने कही, जो–अबही रात्रि बोहोत है। तब श्रीस्वामिनीजी क्रोध करि कै अनन्या कों साप दिए। कहे जो–समै बिना मन कों खेद करायो। तातें जाऊ भूमि पर गिरो।

सो यह गुजरात में एक नाऊ के जन्म्यो। पाछें बरस पचीस कौ भयो। तब याके मा–बाप मरे। सो याकौ ब्याह तो भयो नाहीं हतो। सो ये अपनो धंधो करि निर्वाह करत हुतो।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात कों पधारे हुते, सो श्रीरन–छोरजी के दरसन कों। सो वा मारग में एक नाऊ ने एक दिन श्रीगुसांईजी की सींक लीनी। सो बोहोत भली भांति सों लीनी। तब श्रीगुसांईजी वापै बोहोत प्रसन्न भए। सो ता समै वा नाऊ कों श्रीगुसांईजी के ऐसें दरसन भए मानों साक्षात पूरन पुरुषोत्तम

हैं। तब वा नाऊ ने श्रीगुसांईजी कों बिनती कीनी, जो–महाराज! मोकों नाम सुनाइए। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै नाम सुनायो। तब वह नाऊ बड़ो भगवदीय भयो। सो ता पाछें और कौ वा नाऊ ने बूतो नहीं कियो। तब वैष्णवन उन तें पूछे, जो–तुम और की सींक क्यों नाहीं बनाओ। तब वा नाऊ ने कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी के नख ऊतारि कै और के कैसें ऊतारुं? और अपने राच हूते सो सब कुआँ में डार दिए। और कछू व्यौहार करि कै अपनो निर्वाह करन लाग्यो। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीरनछोड़जी के दरसन कों पधारे। सो दरसन करि कै श्रीगुसांईजी फेरि वा नाऊ के गाम आये। तब वा नाऊ ने जो कछू हुतो सो श्रीगुसांईजी कों भेंट करि दियो। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे। और वह नाऊ तो अपने गाम में रह्यो। सो जहां पर्यंत अपनी देह चली तहां ताँई और कछू वार्ता करी नाहीं। अष्टाक्षर कौ नित्य स्मरन करे। श्रीगुसांईजी कै स्वरूप कौ ध्यान नित्य करिवो करे। ऐसें करत कछूक दिन में याकी देह छूटी। सो लीला में प्राप्त भयो।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–वैष्णव कों अनन्यता ही बड़ो पदार्थ हैं। काहेतें, जो अनन्यता सों मन कौ निरोध सिद्ध होत है।

सो वह नाऊ श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ १४६ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक पठान कौ बेटा, दिल्ही में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं, लीला में ये 'रासों' गोप है। सो ए नंदरायजी कै संग हथियार बांधि कै चलतो। ये तमचर के भावरूप हैं।

सो यह दिल्ही में एक पठान के जन्म्यो। सो बरस बीस कौ भयो। तब याकों एक वैष्णव कौ संग भयो। तब वा वैष्णव ने उन सों कह्यो, जो–तू दैवी जीव हैं। ऐसें मोकों जानि परत हैं। तातें तू वैष्णव होंइ कै अपनो जनम कृतारथ करि। तब या पठान ने कही, जो–मैं कैसें मानों, जो–तुम साँच कहत हों। तब वा वैष्णव ने वाकों बालपने की सब बात कही। तब वा पठान ने जानी, जो–ये कोई महापुरुष है। तातें इन कौ कह्यो करनो। याही में मेरो भलो है। पाछें या पठान ने पूछी, जो– वैष्णव कैसें होउँ ? तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो–'निगमबोध' घाट पर श्रीगुसांईजी बिराजत हैं। उन की पास जाइ नाम सुनि। तब तू वैष्णव होइगो। तब वा पठान के बेटा ने दृढ़ निश्चै कियो, जो–श्रीगुसांईजी के पास जांइ उन कौ सेवक होनो।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी के पास वह पठान कौ बेटा नाम पाइवे कों आयो हुतो। सो वाकों श्रीगुसांईजी ने नाम दियो। सो वह पठान कौ बेटा वैष्णव भयो। ता पाछें वा पठान कौ पिता 'सेरसाह' पात्साह पास पुकार्‌यो। कह्यो, जो–मेरो बेटा हिन्दु के धर्म में गयो है। तब पात्साह ने पठान के बेटा कों बुलायो। तब पठान कौ बेटा आयो। तब पात्साहने पठान के बेटा सों कह्यो, जो–तू यह धर्म छोरि दे। तब उन पठान के बेटा ने पात्साह सों कह्यो, जो–हों यह मार्ग क्यों छोरों ? या मार्ग में मैं प्रीति करी है। सो जासों प्रीत करिये तासों छोरिए नाहीं। तब सेरसाह पात्साह ने माला–तिलक देखि कै कह्यो, जो–ये वेष कहा है ? तब उन पठान के बेटाने कह्यो, जो–ये वेष उन कों बोहोत प्यारो लागत है। तब पात्साह ने कह्यो, जो–तू नहीं छोरेगो ? तब वा पठान के बेटा ने कह्यो, जो–हों सर्वथा नहीं छोरूंगा। तब पात्साह ने कह्यो, जो–हे रे कोऊ ? मेरी तरवारि ल्याओ। याकों मारों। तब सबन ने जान्यो, जो–अब यह पठान के बेटा कों मारेगो। तब उन पठान के बेटा ने अपनी तरवारि निकारि पात्साह के हाथ में

दीनी। तब पठान के बेटा सों पात्साह ने कह्यो, जो–या मार्ग सों तें प्रीति करी है और मैं तोसों रिस करी है। अब देखे तेरी चौकी–रक्षा कौन करे है ? तब पठान के बेटा ने पात्साह सों कह्यो, ज़ो–तुम्हारे करनी होइ सो करिये। परि हमारे तो येही बात हैं। तब सेरसाह पात्साह ने वा पठान के बेटा कौ साँच देखि बोहोत प्रसन्न भयो। तब पात्साह ने वा पठान के बेटा कौ सिरोपाव देकै अपने घर पठवायो।

ता पाछें यह सब समाचार काहू वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों कहे। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो–वैष्णव कौ ऐसो ई धर्म है। जो–काहू सों कहिए नाहीं। गोप्य ही राखिए। वा पठान के बेटा नें अपनी देह कौ त्याग करनो आदर्यो परि अपनो धर्म न छोर्यो। सो वैष्णव कौ धर्म ऐसोई है। तातें वैष्णवन कों दृढ़ आश्रय चहिए। और एक आश्रय श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ होंइ तो वे अपनी रक्षा–पालन क्यों न करें ? तातें जीव कों विस्वास चहिए। सो 'निजेच्छात् करिष्यति'। श्रीप्रभुजी की ईच्छा होइगी सो कार्य होइगो। काहू बात की चिंता नहीं करनी। ऐसें श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें आज्ञा दीनी। तब सब वैष्णव सुनि के बोहोत प्रसन्न भए।

भावप्रकाश – यामें यह जताए, जो वैष्णव निर्भय व्है अपनो धर्म पालन करें ताकों प्रभु निश्चै सहाइ होंइ।

सो वह पठान कौ बेटा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ १४७ ॥

अब श्रीगुसांईजी के सेवक स्त्री–पुरुष, कनोजिया ब्राह्मन, आगरे में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में पुरुष 'मृदुभाषिनी' हैं, और स्त्री 'कोमलांगी'। ये दोऊ श्रुतिरूपा के जूथ के हैं। सो एक सेठ की वार्ता में आगें कहि आए हैं। दोऊ 'कमला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग –१

सो वे देवी के अनन्य सेवक हते। सो देवी तिनसों सानुभाव रहती। सो एक दिन चाचा हरिवंसजी आगरे में आये। सो रात्रि प्रहर एक गई। ता समैं आगरे में आइ पहोंचे। तब चाचा हरिवंसजी ने मन में बिचार्यो, जो–अब या समै कोई वैष्णव के घर जाइंगे तो वह वैष्णव रसोई करायवे कौ आग्रह करेगो। भूखे न रहन देहिगो। तातें वैष्णव के घर काल्हि जाइंगे। अब तो रात्रि बोहोत गई है सो रसोई न होइ सकेगी। तातें जो वैष्णव के घर जाइंगे तो वह दुःख पावेगो। तातें बनें तो यह आछो चोंतरा है। आज इहांई सोय रहेंगे। सो वा चोंतरा के पास कुआँ हतो। सो चाचाजी के संग वैष्णव चारि और हते। तिनसों चाचाजी कहे, जो–जल भरि लावो तो न्हाइ कै कछू महाप्रसाद लेहिं। तब वे दोइ वैष्णव तो खारी जल भरन गए। दोइ जनें श्रीयमुना जल लेन गए। सो जल ले आए। तब चाचा हरिवंसजी न्हाए। चारों वैष्णव हते सोऊ न्हाए। तब चाचाजी महाप्रसाद थोरो सो हतो सो चार्यों जनेंन कों बाँटि लियो। सो मथुरा के चले आगरे पहोंचे हते। सो चाचाजी सहित चारों वैष्णव हारि गए हते। सो सोइ रहे। इतने में चारों वैष्णव कौ नींद आइ गई। और चाचा जागत हते। सो वह चोंतरा देवी

उपासिक ब्राह्मन कनोजिया कौ हतो। सो जब अर्द्धरात्रि गई तब वह ब्राह्मन कनोजिया ने देवी की प्रार्थना करी। सो देवी आय कै देखे तो चाचा हरिवंसजी चारों वैष्णव समेत चोंतरा ऊपर सोये हैं। और ज्येष्ठ कौ दिन है। सो गरमी बोहोत हती। और पांचों वैष्णव हारे हते। यह देवी जानि कै बिचार्‌यो, जो–आज मेरी सेवा कौ दाव पर्‌यो है। श्रीगुसांईजी के अंतरंग सेवक हैं। इनकी सेवा करी चाहिये। तब देवी ने अपने चारि स्वरूप और प्रगट किये। सो चारों के हाथ पंखा दे तिन सों कह्यो, जो–तुम चारों वैष्णव की सेवा करो। मैं चाचा हरिवंसजी की सेवा करत हों। तब देवी के चारों स्वरूप वैष्णव की सेवा करन लागे। देवी चाचा हरिवंसजी की सेवा करन लागी। तब चाचा हरिवंसजी यह सब अभिप्राय जानें। तब आपने मुख ऊपर ऊपरेना डारि कै सोय रहे। और वे चारों वैष्णव नींद में उनकों कछू खबरि नाहीं है। सीतल ब्यार लागी सो और हू नींद आई गई। या प्रकार देवी तो इहां चाचा हरिवंसजी की सेवा करन लागी। और उहां वह ब्राह्मन न्हाय कै घी कौ दीयो बारि कै देवी की स्तुति अनेक प्रकार की कियो। सो देवी नाहीं आई। सो ब्राह्मन कों महा क्षोभ भयो। भय भयो। जो –आज देवी मेरे ऊपर अप्रसन्न हैं। सो मोसों कछू चूक परी। सो अब मैं कहा करों? या प्रकार सगरी रात्रि स्त्री–पुरुष देवी की स्तुति बैठे बैठे किये। मनमें अनेक प्रकार सों बिचार करत हैं। पाछें वे घरी रात्रि पाछली रही तब चाचा हरिवंसजी उठे। सो देखें तो देवी पंखा करत हैं। तब चाचा हरिवंसजी के पांयन परि गई और बिनती

करी जो–तू कौन है ? सगरी रात्रि सेवा करी। तब देवी चाचा हरिवंसजी बोले, जो– मैं देवी हों। सो मेरे मनमें मनोरथ बोहोत दिन सों हतो। जो – श्रीगुसांईजी की सेवा करों। सो श्रीगुसांईजी की सेवा में तो मेरो अधिकार नाहीं है। तातें श्रीगुसांईजी की सेवा कहां तें मिले ? जैसें श्रीकृष्ण की सेवा में देवतान कौ अधिकार नाहीं है। स्तुति करि, फूलन की वर्षा करि अपने लोक में चले जात हैं, तैसें ही हमकों अधिकार श्रीगुसांईजी की सेवा में नाहीं है।

भावप्रकाश–यह कहि यह जतायो, जो–श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप महा अलौकिक हैं। साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम कोटि कंदर्पलावन्य हैं। ऐसो स्वरूप हैं। तातें देवता हू भूमि पर आई, आप की टहल करिवे की ईच्छा करत हैं। परि उन कों मिलत नाहीं। तातें गोपालदासजी वल्लभाख्यान में गाये हैं। सो कारिका –

'विबुध वांच्छे वास वसुमति ऊपरे श्रीवल्लभकुंवर नी टहल करवा'

सो श्रीगुसांईजी आप कौ ऐसो स्वरूप है।

और आधिदैविक देवता जो हैं तिनकौ अधिकार है। सो जब पृथ्वी ऊपर प्रभु प्रगटे हैं तब उह देवता आधिदैविक सेवा के लिये प्रगट होत हैं। तिनके आगें हमारौ अधिकार नाहीं। तातें मेरे मन में बोहोत दिन तें ही, जो–श्रीगुसांईजी के अंतरंग सेवकन की सेवा मिले। सो कोई दिन तो मेरो जन्म सुफल होंइ। सो आजु मो पर भगवान कृपा करी, जो–तुम्हारी सेवा मिली। यह सुनि कै चाचा हरिवंसजी कहे, जो–तुम सक्ति हो। तुम कों हमारी सेवा करनी उचित नाहीं है। तुम कों सगरो जगत पूजत है। यह सुनि कै देवी ने बिनती करी, जो–भगवद्माया करि मोहित जो जीव हैं। सो हमारी सेवा करत हैं। सो मेरी पूजा करत

हैं। तिन कों मैं लौकिकासक्ति कराय, तीन गुन माया के हैं तिन में डारि देति हों। ता करि जीव सदा दुःख पावत हैं।

भावप्रकाश–काहे तें, जो–मेरी पूजा करत हैं तिन कों मैं जानति हों, जो–भगवान इन कौ अंगीकार नाहीं कियो है। तातें मैं इन कों संसार में डारत हों।

तातें आज मेरे बड़े भाग्य हैं, जो–तुम सारिखे बड़े भगवदीय कौ दरसन भयो। और कछूक सेवा मिली। तब चाचाजी कहे, अब तुम जाऊ। तब देवी पांचों स्वरूप कौ एक स्वरूप करि कै उह स्त्री–पुरुष ब्राह्मन पास आई। और चाचा हरिवंसजी ने यहां चारों वैष्णवन कों जगाये। कहे, इहां तें बेगि चलो। तब चारों वैष्णव सहित आगरे में संतदास के घर आए। तब संतदासजी चाचा हरिवंसजी कों बोहोत सन्मान करि भाव भक्ति सों अपने घर में राखे। तहां चाचाजी और चारों वैष्णव देहकृत्य करि दांतिन करि न्हाय कै चाचाजी रसोई किये। और उह देवी प्रातःकाल उठि कै वह स्त्री–पुरुष ब्राह्मन के पास गई। सो देखें तो घी कौ दीया धरि देवी के अर्थ होम करत हैं। देवी की स्तुति करत हैं। सो देवी कों देखि कै दोऊ स्त्री–पुरुष उठि कै ठाढ़े भए। साष्टांग दंडवत् करि कै देवी के पाँइन परि बोहोत बिनती करि पूछे, जो–माताजी ! आज तुम या समय आई ! सो तुम्हारी पूजा में मेरी कहा चूक परि है ? जो–अपराध पर्‌यो होइ सो बतावो। और अपराध छिमा करि कै मोकों अर्द्धरात्रि के समै दरसन दियो करो। सो मैं तुम्हारो दरसन करि कै सोयो करोंगो। सो सगरी रात्रि –दिन तुमही में मन रहे। यह ब्राह्मन–ब्राह्मनी के बचन सुनि कै देवी प्रसन्न भई। कह्यो, तुम्हारो स्नेह हमारे ऊपर

बोहोत है। सो तुम सों अपराध कब हू न होइगो। मैं तुम्हारें चोंतरा ऊपर चारि प्रहर रात्रि रही। तब स्त्री–पुरुष ने बिनती करी, जो–माताजी ! तुम हमारे द्वार पै सगरी रात्रि रही ताकौ कारन कहा ? हमारे घर में क्यों नाहीं आई ? तब देवी ने कही, जो–श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी के अंतरंग सेवक पांच मथुरा तें आज आये। सो इह चोंतरा ऊपर विश्राम रात्रि कों किये हे। सो मैं सगरी रात्रि उन पांचों वैष्णवन कों पंखा करत ही। सो वे सगरी रात्रि पाछें अब आज्ञा दीनी तब मैं तेरे पास आइ हों। तातें मैं तेरे पास आइ न सकी। यह देवी के बचन सुनि कै स्त्री–पुरुष चक्रत होइ रहे। कहे, माताजी ! हम तो यह जानत हते, जो–या जगत में तुम्हारे समान और कोइ नाहीं है। और तुम तो कहत हो, जो–श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी के सेवक की टहल मैं करि आइ हों। ताकौ कारन कहा ? तुम मोकों भ्रम उपजावत हो के साँच कहत हो ? सो मोकों समुझ नाहीं परत। सो मैं तो तुम्हारो दास हूं। तुम बिना मैं औरकों नाहीं जानत। और तुम्हारे कहे कौ मोकों आगे सों विस्वास है। तातें माताजी तुम सांच बात सगरी कहि देहु। यह सुनि कै देवी प्रसन्न होंइ कै कह्यो, जो–हे ब्राह्मन ! मैं सत्य कहति हों। मैं तीन कारज में झूठ बोलति नाहीं। झूठ तो या संसार में माया के जीव पडे हैं सो बोलत हैं। और में या जगत मैं या जगत मैं कोई जीव की आश्रित नाहीं हों, जो–झूठ बोलों। तातें तुम मेरे अनन्य सेवक हो और निष्कपट होंई कै मेरी सेवा करत हो। तातें में तुम सों कहति हों। तुम सावधान होंई कै यह बचन में विस्वास राखि कै

सुनियो। तब तो दोऊ जनेंन बिनती करी, जो–माताजी ! कृपा करि कै कहिये, हम सावधान हैं। तब दैवी बोली, यह कलियुग समान कोई युग उत्तम नाहीं भयो। जो–या युग में श्रीआचार्यजी और श्रीगुसांईजी प्रगट भये हैं। सो श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट होंइ पुष्टिमार्ग प्रगट किये हैं। और श्रीविट्ठलनाथजी प्रगट हों पुष्टिमार्ग कौ विस्तार किये हैं। सो दोऊ स्वरूप साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं। सो विट्ठलनाथजी प्रगट श्रीगोकुल में बिराजे हैं। तिनके सेवकन के दास तिनकी दास पदवी कों मैं वांछित हों। सो मोकों मिलत नाहीं। यह बात तुम हृदै में सत्य मानियो। यह देवी के बचन सुनि कै ब्राह्मन–ब्राह्मनी मन में कछू बिचारि, फेरि पूछ्यो, जो–देवीजी ! तुम आज्ञा प्रसन्न होंइ कै करो, तो हम श्री विट्ठलनाथजी की सरनि जांइ। उनके सेवक होंइ। यह सुनि कै देवी ने कह्यो, जो–तुम्हारे बड़े भाग्य हैं। जो–तुम मन में यह बिचारे। तुम पृथ्वी पर हो तातें तुम्हारो अधिकार है। हम देवता हैं हमारो अधिकार नाही हैं। तातें हम कों सरनि नाहीं लेत। तातें तुम सुखेन श्रीविट्ठलनाथजी की सरनि जाऊ। तब उन ब्राह्मन–ब्राह्मनीन ने देवी सों कह्यो, जो–हम कौन प्रकार श्रीविट्ठलनाथजी की सरन जाँइ सो उपाय बतावो। तब देवी ने कह्यो, जो–चाचा हरिवंसजी श्रीगुसांईजी के अनन्य सेवक हैं। सो वे आगरे में संतदासजी के घर उतरे हैं। तिनके सरन जाऊ। उन द्वारा तुम कों श्रीगुसांईजी के चरन प्राप्त होइंगे। तब उन ब्राह्मन–ब्राह्मनी ने देवी कों दंडवत् किये। और दोऊ जने उठे। तब देवी अंतरधान होइ गई। तब स्त्री–पुरुष द्वार पर तारो

लगाय कै पूछत पूछत संतदासजी के घर आये। ता समै चाचा हरिवंसजी संतदास, सगरे वैष्णव महाप्रसाद ले कै बैठे हते। सो दोऊ ब्राह्मन–ब्राह्मनी ने आय कै सगरे वैष्णवन कों दडवत् किये। तब संतदासजी और चाचा हरिवंसजी पूछे, जो–तुम कौन हो ? और काहे कों आए हो ? तब ब्राह्मन ने बिनती करी, जो–हम कों देवी ने पठाये हैं। हम आगरे में फलानी ठौर रहत हैं। कनोजिया ब्राह्मन हैं। सो तुम परम वैष्णव हो। हम तुम्हारी सरनि आए हैं। सो कृपा करि कै हमारो अंगिकार करो। यह सुनि कै चाचा हरिवंसजी ने और संतदास ने कह्यो, जो तुम तो ब्राह्मन हो और हम क्षत्री हैं। सो तुम हम कों दंडवत् करी सो बोहोत अनुचित बात करी। और हम तो श्रीविट्ठलनाथजी के सेवक हैं। तातें तुम कों सरनि जानो होइ तो श्रीगोकुल में श्रीविट्ठलनाथजी बिराजत हैं। तिन की सरनि जाऊ। ता करि कै तुम्हारो सकल कार्य सिद्ध होइगो। यह सुनि कै ब्राह्मन–ब्राह्मनी ने बिनती करी, जो–तुम कों दंडवत् किये तें हमारे कोटान कोटि प्रतिबंध–पाप दूरि होत हैं। सो हम सों देवी ने कह्यो है। और हम तो तुम्हारे सरनि आए हैं। सो तुम हम कों कृपा करि कै श्रीगुसांईजी के सेवक करावो। हम तो महादुष्ट हैं। जन्म जन्म तें दुष्ट कार्य करत आये हैं। सो तुम द्वारा हमारो उद्धार होइगो। यह सुनि कै संतदासजी चाचा हरिवंसजी सों कहे, जो–अब कहा कर्तव्य है ? जीव तो दोऊ दैवी हैं। और सरिन आइवे की आतुरता है। यह सुनत ही चाचा हरिवंसजी कों करुना आई। सो वाही समै उठि कै ठाढ़े भये। और कह्यो, जो–

ब्राह्मन–ब्राह्मनी हमारे संग चलेंगे। तब संतदासजी ने चाचा हरिवंसजी सों कहे, जो–ये जेष्ठ के दिन हैं दुपहरी कौ समै है। तातें आज तो आये हो, काल्हि जैयो। ये तो सरनि आय चुके हैं दोई दिन पीछे ले कै जैयो। यह बचन संतदासजी के चाचाजी सुनि कै कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी कौ प्रागट्य दैवी जीवन के उद्धारार्थ ही हैं। सो जीवन के लिये तहां तें जगत में पधारे हैं। इतनो श्रम कियो है। सो हम ढील करें सो उचित नाहीं हैं। तातें जीव कों ले कै अवस्य अब ही जानो उचित है। या बात में हमकों श्रम नाहीं है।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–भगवदीय परमार्थी होत हैं। जा भांति जीव कों भगवत्प्राप्ति बेगि होंई सोई कार्य करत हैं। तामें उन कों श्रम होत नाहीं। ऐसें उदार होत हैं। और उन कों स्वारथ लेस होत नाहीं। सो कृष्णदासजी गाए हैं। सो पद –

राग : मालव

श्रीविट्ठलनाथ बसत जीय जाकें ताकी रीति प्रीति छबि न्यारी।
प्रफुलित बदन कांति करुनामय नैनन में झलके गिरिधारी॥
उग्र स्वभाव परम परमारथ स्वारथ लेस नहीं संसारी।
आनंद रूप करत एक छिन में हरिजु की कथा कहत विस्तारी॥
मन बच कर्म ताही कौ संग कीजे पयत ब्रज युवतिन सुखकारी।
'कृष्णदास' प्रभु रसिक–मुकुटमनि गुन–निधान श्रीगोवर्द्धनधारी॥

यह सुनि कै संतदास कहे, धन्य चाचाजी! तुम ऐसें अंतरंग वैष्णव हो। हम तुम्हारे सत्संग के लिये दोइ दिन रहिवे की बात कही। तातें अब तो वेगि तुम इन जीवन कों कृतार्थ करो। तब यह चाचाजी की दयालता देखि कै ब्राह्मन और ब्राह्मनी के नेत्रन में तें आंसून की धार चली। जो–ऐसें दयाल श्रीगुसांईजीके सेवक हैं? जो परमारथ के लिये ऐसी दुपहरि में उठि चले। तब चाचाजी ने ब्राह्मन–ब्राह्मनी सों कह्यो, जो– तुम घर तें कछू

कामकाज होंई सो करि कै बेगि आओ। तहां ताई मैं ठाढ़ो हुं ? तब ब्राह्मन बिनती कियो, जो–महाराज ! अब हम कों घर तें कहा प्रयोजन है ? तुम कहोगे सो करेंगे। तातें चलो श्रीगोकुल चलिये। यह सुनि कै चाचाजी मन में बोहोत प्रसन्न भए ! जानें, घर आदि में इन कों वैराग्य अधिक है। तातें इन कों दान हू अधिक होइगो। पाछें चाचा हरिवंसजी कहे, जो–ब्राह्मन ! हम जानत हैं। जो–तुम कों अब घर तें कछू प्रयोजन नाहीं हैं। तातें श्रीगुसांईजी की कछू भेंट करन कों ले चलो। तब ब्राह्मन–ब्राह्मनी घर आये। सो ब्राह्मनी तो अपनो गहनो और रोक जो–कछू रुपैया हते सो लीने। और ब्राह्मन के पास कछू द्रव्य नाहीं हतो। जो पावे सो ब्राह्मनी कों देहि काहेतें, स्त्री पतिव्रता सत्य पवित्र हैं तातें। सो ब्राह्मन के घर श्रीभागवत और दुर्गा पाठ की पोथी और सालिग्राम और एक देवी की मूरति ही। सो यह ले कै घर के द्वार ऊपर तारौ लगाय तत्काल चाचाजी के पास दोरे आये। तब चाचाजी और चारों वैष्णव अपने संग ले कै संतदासजी सों अत्यंत स्नेह सों बिदा होइ कै श्रीगोकुल ब्राह्मन–ब्राह्मनी कों संग ले कै चले। सो मार्ग में भगवद्वार्ता पुष्टिमार्ग कौ सिद्धांत चाचाजी चार वैष्णवन सों कहत चले। सो चारों वैष्णव और दोऊ ब्राह्मन–ब्राह्मनी कौ मन महारस में जाँय पर्‌यो। सो काहू कों देहाध्यास बाधक न भयो। कोई कों तृषा लघी कछू न लगी। और रात्रि परी ताहू की सुधि नाहीं। सो अर्द्धरात्रि तें कछू दोइ चारि घरी ऊपर गई ता समै चाचाजी वैष्णव, ब्राह्मन सहित श्रीगोकुल साम्हे 'मोहनपुर' गाम है तहां

आय पहोंचे। तब वैष्णव कों सुधि राह की आई। सो चाचाजी सो कहे, जो-सो चाचाजी ! अपने श्रीगोकुल के साम्हे मोहनपुर गाम है तहां आय पहोंचे हैं। तब चाचाजी कहे, जो-रात्रि कों इहां रहिये। प्रातः श्रीगोकुल चलेंगे। तब दोऊ ब्राह्मन-ब्राह्मनी ने श्रीगोकुल कों साष्टांग दंडवत् किये। ताही समै मलाह बैठे हते, सो चाचाजी कौ बोल सुनि कै आपुस में बिचार किये, जो-श्रीगुसांईजी के सेवक चाचाजी आए हैं। या समै जो-पार चले तो नाव बंधी हैं। पार उतारि दीजे। तब मलाहन के मन में आई, जो-आछौ। तब वह मलाह चाचाजी के पास आइ बिनती कियो, जो-महाराज ! नाव तैयार हैं। तब चाचाजी कहे वैष्णवन सों और ब्राह्मन सों, जो-उठो चलो। या प्रकार अपने जीव कों श्रीगुसांईजी खेंचत हैं ? तब चारों वैष्णव, ब्राह्मन-ब्राह्मनी दोऊन कों लेकै चाचाजी नाव पर आये। तब मलहान नाव पार लगाय दीनी। तब चाचाजी कछू उतराई रुपैया एक प्रसन्न होंइ देन लागे। तब मलाहन चाचाजी सों कही, जो-महाराज ! आपकी कृपा तें हमारे सब कछू है। कोई बात की न्यूनता नाहीं है। सगरो जगत है, तहां लेवे कों थोरो ठिकानो है ? तब चाचाजी हँसि कै चूप व्है रहे। तब ब्राह्मनी रुपैया देन लागी। तब मलाहन कही, जो-हम श्रीगुसांईजी के सेवक सों कछू लेत नाहीं। हम सों कछू सेवा टहल नाहीं बनि आवत तो भलो कछू इन सों लियो तो न चहिए।

भावप्रकाश-यह कहि यह जतायो, जो- श्रीगोकुल के मलाहन में हू श्रीगुसांईजी की कृपा सों एसो भगवद्धर्म द्दढ़ हैं। तातें श्रीगोकुल सगरो अलौकिक जाननो।

यह सुनि कै चाचाजी उन मलाहन के ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। तब श्रीनवनीतप्रियजी कौ जो–महाप्रसाद पास हतो सो दियो। तब मलाहन कह्यो, जो–हां ! हमें यह चाहिये। पाछें चारौ वैष्णव ब्राह्मन–ब्राह्मनी सहित श्रीगुसांईजी के द्वार ऊपर जाँइ के द्वार कों नमस्कार किये। तब विष्नुदास पोरिया ने कही भीतर तें, जो–या समै को यहां आयो है ? तब चाचाजी विष्नुदास सों भगवद् स्मरन किये। तब विष्नुदास तत्काल उठि कै किवार खोलि कै चाचाजी और सबन कों भगवद्स्मरन किये। तब विष्नुदास ने चाचाजी सों कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी की बैठक में जाँइ कै वैष्णव सहित विश्राम करो। तब चाचाजी सब वैष्णवन कों लेकै श्रीगुसांईजी की बैठक कों नमस्कार किये। पाछें वैष्णव ब्राह्मन सहित सबन ने विश्राम किये। तब चाचाजी सब कौ समाधान करि कै आपहू विश्राम करे। सो ब्राह्मन–ब्राह्मनी के हृदय में ऐसो आनंद भयो। सो नींद नाहीं आई। पाछें जब घरी दोई रात्रि पाछिली रही बाकी तब चाचाजी उठे। ब्राह्मन–ब्राह्मनी कों उठाये। चारों वैष्णवन कों उठाये। सो देह कृत्य करि कै न्हाय कै सब बैठें। इतने में श्रीगुसांईजी उठि कै बैठक में पधारे। तब चाचाजी दोऊ ब्राह्मन–ब्राह्मनी कों दंडवत् कराये। चारों वैष्णव संग के हते सो दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी चाचाजी सों पूछे, जो–तुम तो आगरे गये हते सो अब आये ? और इन ब्राह्मन–ब्राह्मनी कों कहां तें लेत आए ? तब चाचाजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! ये ब्राह्मन–ब्राह्मनी आगरे में रहत हैं। सो इनकी आरत्ति आप के

सरन आयवेकी बोहोत है। तातें इन कों लेकै रात्रि कों हम आगरे तें आए हैं। तब ब्राह्मन–ब्राह्मनीन ने दंडवत् करि बिनती करी, जो–महाराज ! हम महादुष्ट हैं। सदा लौकिकासक्ति करि कै पसु की नांइ होइ रहे हैं। सो हम ऊपर कृपा करि कै सरनि लैकैं हमारो उद्धार करिये। यह दैन्यता के बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी प्रसन्न भए। तब उन ब्राह्मन सों श्रीगुसांईजी पूछे, जो–तुम कों ऐसो ज्ञान कहां तें भयो ? तब ब्राह्मन ने कही, जो महाराज ! हम देवी की पूजा अनन्य भाव सों करते। सो अर्द्धरात्रि समै देवी हम कों साक्षात् दरसन देती। ता पाछें हम खानपान करते। सो चाचाजी वैष्णव सहित हमारे द्वार पर चोंतरा ऊपर रात्रि कों रहे। सो वह देवी सगरी रात्रि चाचाजी कों पंखा किये। पाछें प्रातःकाल हमारे पास आई। तब हम पूछ्यो। तब देवी ने आप कौ प्रताप आप कौ स्वरूप कह्यो है। तातें हम कों ज्ञान भयो है। नाँतरु हम माया करि कै मोहित कलियुग के जीव हैं। सो हम कों ज्ञान कहां तें होइ ? यह सुनि कै श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–माहात्म्य ज्ञान सहित सरनि आवत हैं ताकौ दान विसेस होत हैं। ऐसें कहि कै श्रीगुसांईजी छीवे पधारे। पाछें दांतिन करि कै न्हाये। पाछें तिलक करि उन ब्राह्मन–ब्राह्मनी ने दंडवत् करि ब्रह्मसंबंध की बिनती किये। तब श्रीगुसांईजी कहे, एक उपवास की रीति है। तब ब्राह्मन–ब्राह्मनीन कह्यो, जो–महाराज ! दोइ उपवास भये हैं। एक दिन तो देवी नाहीं आई तातें उपवास भयो। और दूसरे दिन घर तें यहां आपके चरनारविंद के सन्मुख चले सो उपवास भयो है। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–पहिले दिन कौ उपवास

भयो सो तो देवी के लिये भयो। सो तो ब्रह्मसंबंध में काम न आवे। वा उपवास तें तो महाप्रसाद ले कै ब्रह्मसंबंध ले सो आछो। और काल्हि जो उपवास भयो सो ठीक है। तातें राजभोग सरे पाछें ब्रह्मसंबंध दोऊन कों करावेंगे। तब दोऊ जनें प्रसन्न होंइ कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। पाछें श्रीगुसांईजी मंदिर में पधारे। श्रीनवनीतप्रियजी कों जगाय कै पाछें मंगलभोग धरें। ता पाछें समै भये भोग सराइ कै मंगला आर्ति किये। सो सब वैष्णवन दरसन किये। वा ब्राह्मन ब्राह्मनी नें हू दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी सिंगार करि कै पालने झूलाए। पाछें राजभोग धरे। समै भये तब भोग सराय कै पाछें ब्राह्मन ब्राह्मनीन कों मंदिर में बुलाये। श्रीगुसांईजी दोऊन के हस्त में तुलसीदल दे कै ब्रह्मसंबंध कराये। पाछें तुलसीदल ले प्रभुन के चरनादविंद आगें समर्पन किये। ताही समै ब्राह्मन ब्राह्मनीन कों महारस कौ दान भयो। सो लीला सहित श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन भये। और श्रीगुसांईजी के निज स्वरूप कौ दरसन भयो। पाछें अनोसर भयो। तब दोऊ स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईजी की बैठक में आय बैठे। पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। गादी तकिया ऊपर बिराजे तब स्त्री अपनो गहनो और जो कछू रोकडि हती सो सब श्रीगुसांईजी की भेंट कियो। और पुरुष ने सालिग्राम देवी की मूरति, भागवत की पोथी और दुर्गापाठ की पोथी भेंट करी। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–तुम ब्राह्मन हो, अपनी पूजा और पोथी क्यों भेंट करत हों? तब स्त्री–पुरुषने कही, जो–महाराज! हम

इनकों सर्वस्व जानत हते सो हम अब समर्पन किये। स्त्री कौ सर्वस्व द्रव्य हतो सो भेंट कियो। अब हमकों आप के चरन कमल कौ आश्रय है। और काहू बात में मन नाहीं। तातें अब आपु जो-बतावोगे सो करेंगे। जा प्रकार हमकों पुष्टिमार्ग के फल की प्राप्ति होंई। अन्याश्रय न होंइ। सो उपाय आप कहोगे। सो हम करेंगे। हम अज्ञानी हैं कछू समझत नाहीं। तातें हमारो भलो होइगो सो आप करोगे। यह सुनि कै उह ब्राह्मन के ऊपर श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये। तब पंचामृत मंगाय कै सालिग्राम कों प्रथम न्हवाये। सो श्रीमदनमोहनजी कौ स्वरूप भयो। पाछें देवी कों पंचामृत सों न्हवाये। सो श्रीस्वामीनीजी कौ स्वरूप भयो, हस्तमें कमल लिये। तब श्रीगुसांईजी उह ब्राह्मन और ब्राह्मनी सों कहे, जो-यह स्वरूप पुष्टिमार्गीय कौ सर्वस्व हैं। इनकी सेवा पुष्टिमार्ग की रीति सों तुम करियो। पाछें श्रीगुसांईजी 'सर्वोत्तम' ग्रंथ अपनो किया सो दियो। और आज्ञा किये, जो याके पाठ तें वेदपुरान श्रीभागवत, गीता, सास्त्र सब कौ पाठ भयो जानिया। यह दोऊ पदार्थ पुष्टिमार्ग के फलरूप जानि करियो। ता करि कै तुम कों सदा पुष्टिमार्ग कौ अनुभव होइगो। तब अत्यंत प्रेम सों श्रीमदनमोहनजी श्रीस्वामिनीजी सहित पधराए। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करन कों पधारे। पाछें भोजन करि जूंठनि की पातरि इन दोऊ स्त्री-पुरुष कों धरी। सो दोऊ जनेंन महाप्रसाद लिये। पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में गादी तकिया ऊपर बिराजे। तब दोऊ स्त्री-पुरुष महाप्रसाद ले कै पाछें श्रीगुसांईजी के पास आय कै दंडवत् करी। तब

श्रीगुसांईजी दोऊन के ऊपर प्रसन्न होंइ कै अपने श्रीमुख तें चर्वित तांबुल कौ उगार दिये। सो दोऊ जनेन कों पुष्टिमार्ग कौ सिद्धांत हृदयारूढ भयो। पाछें दिन चारि दोऊ स्त्री-पुरुष श्रीगोकुल में रहे। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे। तब स्त्री-पुरुष श्रीगुसांईजी के संग श्रीजीद्वार गए। तहां श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन श्रीगुसांईजी की कृपा तें इन दोऊ स्त्री पुरुष कों लीला सहित भए। पाछें पांच रात्रि श्रीनाथजीद्वार रहे। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे। तब स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईजी के संग श्रीगोकुल आए। तब स्त्री-पुरुष दोऊ जनें अपने मन में बिचारें, जो-अब आगरे में चलिए। नित्य श्रीगुसांईजी के घर कौ महाप्रसाद लेनो उचित नाहीं है। तब दूसरे दिन प्रातःकाल ब्राह्मन-ब्राह्मनीने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज! वैष्णव के संग बिना हमारी बुद्धि दृढ़ कैसें रहेगी ? और अब आगरे जाइवे कौ बिचार है। सो आपकी कहा आज्ञा है ? यह सुनि कै श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है कहे, जो-आगरे में संतदासजी श्रीआचार्यजी के सेवक हैं तिनकौ संग नित्य करियो। और चाचा हरिवंसजी तुम्हारे संग जाइंगे। तिन सों सब प्रकार पूछि लीजियो। राजभोग के दरसन करि कै जइयो। तब स्त्री-पुरुष दोऊ जनें श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै पाछें न्हाए। मंगला आर्ति करि कै पाछें दरसन करे। ता समै श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-आजु तुम पालने के दरसन करियो। सो दोऊ जनें श्रीगुसांईजी की आज्ञा मानि कै जगमोहन में बैठि रहे। पाछें जब

पालने के दरसन कौ समय भयो तब श्रीगुसांईजी उन कों बुलाये। तब स्त्री–पुरुष दोऊ जनें भीतर जाँइ पालना के दरसन किये। सो नंदालय की लीला कौ सब दरसन भयो। ता करि कै परमानंद कौ अनुभव भयो। पाछें राजभोग आयो। समय भयो भोग सर्‌यो। राजभोग की आर्ति के दरसन दोऊन किये। पाछें स्त्री–पुरुष बैठक में आय बैठे। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनव–नीतप्रियजी कों अनोसर कराय कै पाछें अपनी बैठक में पधारे। तब दोऊ जनें बिदा होंइ कै आज्ञा मांगि कै दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–महाप्रसाद ले कै जैयो। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करन कों पधारे। तब भोजन करि कै दोऊ जनें कों दो पातरि जूंठनि की अपने श्रीहस्त सों धरी। पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। गादी तकिया पर बिराजि कै बीरा आरोगत भए। तब स्त्री–पुरुष कों आज्ञा किये, जो–महाप्रसाद की पातरि धरी हैं सो दोऊ जनें जांई कै महाप्रसाद लेऊ। तब दोऊ जनें जाँइ कै महाप्रसाद लियो। पाछें श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी दोऊ जनें कों कृपा करि कै चर्वित तांबुल कौ उगार दियो। तब दोऊ जनें अत्यंत प्रीति सहित श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी दोऊ जनेंन सों कहे, आछे स्नेहपूर्वक भगवद्‌सेवा करियो, नेम सहित। तैसें ही नेमपूर्वक संतदास के कहिवे में रहियो। और 'सर्वोत्तम' के पाठ नेम करि जो बने सो अवस्य करियो। या प्रकार दोऊ जनें कों सिक्षा परम कृपा करि कै श्रीगुसांईजी दिये। तब दोऊ जनें श्रीगुसांईजी के चरनकमल पर प्रेम विह्वल व्है

गिरि परे। पाछें कहे, जो– महाराज ! हम तो अज्ञानी जीव हैं। कछू नाहीं जानत। अब आप के चरनकमल कौ आश्रय कियो है। ताही करि कै हम कों सर्व पदारथ प्राप्त भयो है। और आप की कृपा तें और हू होयगो। या प्रकार दोऊ जनें की दैन्यता सुनि कै श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंसजी कों बुलाए। तब चाचाजी सों कहे, तुम इन वैष्णव के साथ आगरे जाउ। प्रथम गये जा कार्य कों। सो कार्य हू नाहीं भयो इन के संग उठि आए हो। सो आगरे जाँइ कै महिना एक संतदासजी वैष्णव के घर और रहियो। ये अब ही प्रथम वैष्णव भए हैं। इन कों सीख देइ मार्ग कौ सिद्धांत बताय कै पाछें वागा वस्त्र की सामग्री जन्माष्टमी के लायक की लेते आइयो। तब चाचा हरिवंसजी श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी। पाछें चाचाजी के संग के चार वैष्णव श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। पाछें चाचाजी चलिवे की तैयारी करी। पाछें स्त्री–पुरुष दोऊ जनें श्रीगुसांईजी के चरनकमल कौ बारबार नमस्कार करि कै बिदा भये। तब श्रीगुसांईजी कौ हृदय भरि आयो। जो–ऐसो स्नेह वैष्णव कौ हमारे में हैं। परि कहा करिये बिदा किये बिना नाहीं चलत। तातें बिदा करियत हैं। पाछें हरिवंसजी चारों वैष्णवन सहित और दोऊ स्त्री–पुरुष सब आगरे कों चले। सो मार्ग में भगवद्वार्ता में लीला के तरंग में रसाविष्ट होइ गए। या भांति भगवद्वार्ता करत पांच दिन में आगरे पहोंचे। तब हरिवंसजी उन दोऊ स्त्री–पुरुष सों कहे, जो–अब हम संतदासजी के घर उतारो करेंगे। तुम अब अपने घर जाऊ। तब दोऊ स्त्री–पुरुषने हरिवंसजी सों बिनती करी,

जो–महाराज ! हमारे ऊपर कृपा करो । तुम्हारी कृपा तें हम कों श्रीगुसांईजी के चरनारविंद प्राप्त भये हैं ।और हम अबही कछू पुष्टिमार्ग की रीति जानत नाहीं । तातें हमारे घर कृपा करि कै चलो । खासा–मर्यादा सेवकी सब सेवा कौ प्रकार रीतिभांति सब कृपा करि कै बतावोगे, तैसें हम करें । तातें दोइ चार दिन हमारे घर में कृपा करि कै रहो । पाछें संतदासजी के घर जइयो । या भांति सों दोऊ जनेंन की दीनता देखि कै चाचाजी बोहोत प्रसन्न भए । पाछें हरिवंसजी उन ब्राह्मन के घर गए । सो जात हीं सगरो घर पुताये । मृतिका के पात्र सब काढ़ि डारे । सो सब नये लेकै सब जल भराय कै खासा किये । कांसी पीतर के पात्र पलटाय कै नये लिये । कोरे मृतिका के पात्र में कोरो अन्न धरे । पाछें सखड़ी, अनसखड़ी चूल्ही चौको मंदिर कौ ठिकानो किये । तहां श्रीठाकुरजी कों पधराए । ता दिन हरिवंसजी रसोई किये । सामग्री सिद्ध भए पाछें भोग श्रीमदनमोहनजी कों आये । पाछें समै भए भोग सराय राजभोग आर्ति करि कै पाछें अनोसर कराय, पाछे हरिवंसजी के संग चार वैष्णव हते और ये दोऊ स्त्री–पुरुष सहित हरिवंसजी महाप्रसाद लिये । पाछें सिंघासन खंड पाट खिलोना पिछवाई वागा वस्त्र सब सिद्ध कराये । पाछें उत्थापन तें लेकै सेन तांई पहुंचे । या प्रकार पांच दिन लों हरिवंसजी ने सेवा कौ प्रकार स्त्री पुरुष कों बताये । पाछें हरिवंसजी संतदासजी के घर आए । तब संतदासजी बोहोत प्रसन्न भए । पाछें रात्रि कों संतदासजी के घर भगवद्वार्ता नित्य होती सो दोऊ स्त्री–पुरुष सेन मदनमोहनजी कों कराय कै

अनोसर करि कै संतदासजी के घर नित्यनेम करि कै आवते। सो उन पुरुष कों श्रीमदनमोहनजी सानुभावता जनावन लागे। चहिए सो मांगि लेते। या प्रकार उन स्त्री–पुरुष कों हरिवंसजी की कृपा तें और श्रीगुसांईजी की कृपा तें अनुभव होंन लाग्यो।

वार्ता प्रसंग–२

पाछें एक दिन ब्राह्मनी के मन में यह संदेह आयो, जो–सालिग्राम तें श्रीमदनमोहनजी कैसें भए ? और देवी सों श्रीस्वामिनीजी कैसें भए ? तब वह स्त्रीने अपने पुरुष सों पूछ्यो। तब ब्राह्मनने अपनी, स्त्री सों कह्यो, जो–चाचा हरिवंसजी परम भगवदीय है। तिन सों पूछेंगे। तब संदेह दूरि होइगो। पाछें रात्रि कों संतदासजी के घर स्त्रीपुरुष दोऊ जनें आये। सो भगवद्वार्ता चाचाजी और संतदासजी करि चुके तब उह ब्राह्मनने चाचाजी हरिवंसजी सों कही, जो–महाराज ! हमारे घर प्रथम सालिग्राम और देवी की मूरति हती। सो श्रीगुसांईजी जब पंचामृत स्नान कराये तब सालिग्राम तें श्रीमदनमोहनजी भए। और देवी तें श्रीस्वामिनीजी होंइ गए। सो कारन कहां ? तब चाचा हरिवंसजी उन ब्राह्मन सों समुझाय कै कह्यो, जो–सालिग्राम अक्षरब्रह्मकौ स्वरूप है। अक्षर के भीतर लोकवेद प्रसिद्ध पुरुषोत्तम हैं। लोकवेद प्रसिद्ध पुरुषोत्तम के भीतर लोक वेदातीत पुष्टि पूरन पुरुषोत्तम हैं। सो ऐसें पुरुषोत्तम के संबंधी श्रीगुसांईजी हैं। तातें इन के श्रीहस्त परस तें रसात्मक पुरुषोत्तम कौ प्रादुर्भाव भयो। तातें श्रीमदनमोहनजी भये। और देवी सो सक्ति हैं। सो सब लक्ष्मी कौ अंस हैं। सोऊ श्रीगुसांईजी के श्रीहस्त कमल के

परसतें देवी तें श्रीस्वामिनीजी कौ प्रादुर्भाव भयो। तातें ऐसी निधि श्रीगुसांईजी की कृपा तें मिली हैं। तातें सावधान व्हैं स्नेह संयुक्त सेवा करियो। यह सुनि कै स्त्री–पुरुष दोऊ जनें चाचाजी कों नमस्कार किये और मन में बोहोत प्रसन्न भए। पाछें अत्यंत स्नेह संयुक्त भगवद्सेवादोऊ जनें करते। भाव करि विप्रयोग दसा में अष्ट प्रहर रहते। या प्रकार चाचा हरिवंसजी महिना एक आगरे में रहि कै पाछें संतदासजी सों अत्यंत प्रीति संयुक्त बिदा होंई कै पाछें उन दोऊ स्त्री–पुरुष तें बिदा होंन आए। तब दोऊ ने चाचाजी की बोहोत स्तुति करी। जो–महाराज ! तुम कृपा करि कै हम सारिखे महाघोर संसार में परे हते तिन पर दया करी। सो कही जात नाहीं। या भांति बिनती बोहोत करि यथासक्ति दोऊ स्त्री पुरुषने अपनी अपनी न्यारी न्यारी भेंट दीनी। और चाचाजी सों कहे, जो–तुम हमकों अपने दास जानि कै बेगि ही फेरि दरसन दीजो। और श्रीगुसांईजी को सब लालजीन कों, बहू–बेटीन कों हमारी दंडवत् कहियो। समस्त वैष्णवन सों भगवद् स्मरन कहियो। सो या प्रकार दोऊ स्त्री–पुरुष के वचन सुनि कै चाचाजी मनमें बोहोत प्रसन्म भए। पाछें दोऊ जनें चाचाजी कों पहोंचावन चले। तब चाचाजी दोऊ जनेंन कौ बोहोत समाधान करि घ्ररकों पठाये। पाछें चाचाजी श्रीगोकुल आए। श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। पाछें उन ब्राह्मन–ब्राह्मनीन की दंडवत् करि भेंट आगें धरी। तब श्रीगुसांईजी हरिवंसजी कों पूछे, जो–वे दोऊ वैष्णव आछें हैं ? तब चाचाजी दोऊनके सब समाचार कहे,। और बोहोत प्रसंसा करी। जो–इन

दोऊ जनें कौ स्नेह बोहोत हैं। तब श्रीगुसांईजी कहे, सुद्ध पात्र में रस बेगि ठहरात हैं। उन माहात्म्य सहित जानि कै सरनि आए तातें बेगि उनकी सिद्धि भई। या प्रकार श्रीगुसांईजी कहे।

सो वे दोऊ स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईजी के परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ १४८ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसाईजी के सेवक एक साहुकार, ताकौ बेटा और ताकी बहू सूरत में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–सो बहू तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'नवोढा' है। इन कौ स्वरूप बोहोत सुंदर हैं। वे परम चतुर हैं। ये श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंग सखी हैं। ये 'कमला' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह साहुकार सूरत में रहत हतो। सो ताके बेटा की स्त्री कौ रूप बोहोत हतो। सुंदर हती, नवजोबन हती। सो एक समै स्त्री ऋतु–समै न्हाई कै अपने घर के पाछें वाड़ा में केस सुकावति हती। सो ता समै एक म्लेच्छ राजा कौ चाकर सो घोड़ा ऊपर बैठि कै तापी कौ जल प्यायवे कों जातो। सो घोड़ा ऊपर तें वाकी दृष्टि वा स्त्री पर परी। तब वाने घोड़ा कों एड मारी। सो घोड़ा वाड़ा उल्लंघि कै वा स्त्री के समीप जाँई कै ठाढ़ो भयो। पाछें वाने घोड़ा तें उतरि कै वाकौ हाथ पकर्‍यो। तब वह स्त्री चक्रत होंइ रही। परि वह स्त्री चतुर बोहोत ही हती। तातें मन में बिचारी, जो–अब इहां तो कोऊ नाहीं, और यह बात रीत विरुद्ध भई। परि अब तो पुकारोंगी तो सब कोई आइ कै जुरेंगे। तो

लोक में यह बात प्रसिद्ध होइगी। लोक तो दुराचारी हैं। और मेरे मन की तो प्रभु जानत हैं। ऐसें बिचारि कै वा तुरक सों वह बोली, जो–तुम मेरो हाथ छोड़ो, तुम कहोगे सो मैं करोंगी। तब वह तुरक प्रसन्न भयो और हाथ छोरि दीनो। इतने ही भरि जोर तमाचो मारि कै थपेड़ की वाके मुख पर दे कै और घर में भाजि गई। और घर के किवाड़ मारि लीने। तब वा तुरक कों घनो दुःख लाग्यो। कह्यो, जो देखो, स्त्री जन नें मोकों थपेड़ मारी। तो धिक मेरो जीयवो। ता पाछें बिचारी, जो–अब तो इहां कछू अर्थ नाहीं। ता पाछें वह तुरक घोड़ा कों ऐंड़ दे कै बाहिर निकर्‌यो। ता पाछें घोड़ा कों जल प्याय कै अपने घर गयो। ता पाछें बिचार्‌यो, जो–अब तो मेरो नाम सही तब जो वा स्त्री कों दासी करों। ऐसें बिचारि करि कै राजद्वार की चाकरी छोरी। राज में कह्यो, जो–हों अब मेरे देस जाउंगो। ता पाछें अपनी चाकरी कौ द्रव्य हो सो लै कै अपने घर आयो। ता पाछें वा स्त्री के घर के आसपास नित्य फिरे। सो एक डोकरी वाके घर नित्य जाति हती। सो वह डोकरी वाकों न्हावावें, चोटी करे। ऐसी टहल सब करे। सो वा डोकरी कों नित्य आवति जाति देखि कै वह तुरक वा डोकरी के घर गयो। और वासों मैया कहि कै बोल्यो। ता पाछें वा डोकरी पास जल मांग्यो, जो–मैया! मोकों थोरो जल पिवाय देऊगी? तब वाने जल पिवाय दिया। सो वानें एक रुपैया काढ़ि कै वा डोकरी के हाथ में दीनो। तब डोकरी घनी प्रसन्न भई। ता पाछें वहां बैठ्‌यो। तब डोकरी ने आदर कर्‌यो। आसन दै कै बैठार्‌यो। ता पाछें वाने कह्यो, जो–मोकों भूख लागी है।

तब वा डोकरी ने रसोई करि कै परोस्यो । तब दोइ रुपैया और दीने । पाछें वा डोकरी के घर नित्य आइ कै बैठे । बातें करे, वाकों पूछे पाछें । खान–पान करे । ता पाछें एक रुपैया वाकों नित्य देवे । ता पाछें वा डोकरी सों पूछयो, नित्य तुम कहां जात हो ? तब उन डोकरी ने कह्यो, जो– अमूके साह के घर जात हों । तिन के बेटा की बहू कों नित्य न्हवावत हों, चोटी करत हों । तब वह मोकों कछू अन्न देत है तासों मेरो निर्वाह होत है । तब तुरकने वा साहुकार कौ नाम पूछ्यो, ता पाछें कह्यो, जो– वह गोरी सी इतनेक बरस की, ऐसो मुख है, ऐसो रूप है, ताकौ नाम कहा है ? तब वा डोकरी ने बतायो और कह्यो, जो – वा साह के बेटा की बहू है । ता पाछें वाने नाम कह्यो । सो सब वा तुरक ने लिखि लियो । ता पाछें वा डोकरी सों नित्य वा स्त्री के संबंधी के दोइ–चार नाम पूछे । तब डोकरी ने कह्यो, जो– हों तो जानति नाहीं । तब वह तुरक कहे, जो – आज पूछि आइयो । सो डोकरी नित्य पूछे, जो–अमूकी ! तेरे पिता कौ नाम कहा है, तेरे दादा कौ नाम कहा है ? सो वह स्त्री बतावें । सो वह डोकरी वा तुरक सों कहे सो वह तुरक लिखतो जाँई । ऐसें दोइ चारि नाम नित्य लिखें । ऐसें करत सात पुरखा सुसरारि के और सात पुरखा पिता की ओर के नाम लिखे । ता पाछें आसपास के गाम में तें ढूंढि कै एक वेस्या की छोरी वेसेही समान वय की वैसी ही रूप की देखि कै वाकों कछूक द्रव्य देनो करि कै वाकों लायो । ता पाछें वाकों वे नाम सब पढ़ाय सिखाय कै सावधान करि कै ता पाछें वा साह की बहू की साड़ी चोली, वाकी रीति प्रमान सिंगार

खोटो खरो करि कै ता पाछें वाके सरीर की चिबुक पै कारो तिल हो, सो वा डोकरी सों पूछि राख्यो हतो। सो वेसोई स्याई कौ तिल कर्‌यो। हरत कौ ठाढ़ो कर्‌यो। ता पाछें सब वाकों सीखाई कै कह्यो, जो–तुम ऐसें राजद्वार में बोलियो। ऐसो कहियो। ता पाछें साहुकार के घर के पाछें वा वेस्या कों ठाढ़ी करि कै कह्यो, जो–तोकों राजद्वार के मनुष्य बुलावन कों आवेंगे। तब तू वाके साथ चली आइयो। ता पाछें तोकों पूछे तब तोकों सिखायो है तेसो ताकों उत्तर दीजियो। यह कहि वह तुरक राजद्वार में गयो। तब पुकार्‌यो। कह्यो, जो–साहिबजू ! एक साह अमूके की बहू कौ मेरे संग मिलाप है। सो मेरे संग बिटली है। सो अब हों मेरे देस चलिवे कों कहत हों, तब वह कहत है, जो–हों तेरे संग चलूंगी। सो घनी लागू भई है। परि न जानें काल्हि कहा बात है ? स्त्री जाति कौ विश्वास नाहीं। तातें सिपाई भेज कै वाकों बुलाइए। और बुलाइ कै पूछिये। मोकों लिख्यो दरबार कौ करवाय दैहु। और तुम अपने लागे कौ द्रव्य मो पास तें लेहु। तब हाकिम ने कह्यो, जो–वे कहां है ? तब वा तुरक ने कह्यो, जो–वाके घर है। सो वाकों मनुष्य बुलायवे कों पठवाइ देऊ। तब वह स्त्री आवेगी। तब वाकों पूछि कै लिखो करि दीजिए। तब हाकिम ने वाकों बुलायवे कों मनुष्य पठायो। तब वा तुरक ने मनुष्य सों कह्यो, जो–तुम अमूके साहूकार के घर के पाछें वह वाकी बहू ठाढ़ी है सो बुलाय ल्याउ। तब वह मनुष्य बुलावन कों गयो। तब वह उहां ठाढ़ी ही। सो वासों मनुष्य ने कह्यो, जो– तोकों राजद्वार बुलाई है। तब राजद्वार में आई कै वह ठाढ़ी भई। तब

हाकिम ने पूछ्यो। जो–तू याके संग जायवे में राजी है ? तब वा स्त्रीने कह्यो, जो–हों याके संग जाइवे में राजी हूं। मेरे आजु बरस दोय कौ संग है। सो हों बिटल गई हों। सो हों याके संग जाउंगी। तब हाकिमने नवींसदान सों कह्यो, जो– तुम याकौ नाम सब कुटुंब कौ नाम, और याके सरीर के चिन्ह सब लिखि लेहु। सो वा तुरक ने उन नवींसदान सों कह्यो, जो–तुम मोकों लिखो याकौ करि देहु। ता पाछें उन सब वाकौ नाम, कुटुंब कौ, सात पुरुखा पिता कौ और सात पुरखा सुसरार के नाम, और सबन के नाम लिखे। और वाके मुख के बचन सुनि कै सब चिन्ह लिखे। पाछें सब राजद्वार के लोग और भले मानस के लोग सबन की गवाई करवाई। और राज की मोहोर छाप करवाई। ता पाछें लिख्यो करि कै वा तुरक कों हाथ में दीनो। विन कों बिदाय कीनो। तब यह अपने डेरा आय कै वेस्या की छोरी कों वाके गाम पहोंचाय आयो। सो वाकों द्रव्य बद्यो हतो सो वाकों दीनो। ता पाछें दिन चारि–पांच बीते तब राजद्वार जाँइ कै फिरि कै पुकार्यो, जो – साहिब ! वह स्त्री अब फिरि वा साहुकार के घर में गई। मोसों कछू बात करत में बदल गई। सो अब कहत है, जो–तेरे संग सर्वथा न आउंगी। मोसों मिलि खायो, मोसों जल पियो और बिटल के पाछें वाके घर में गई। मेरो द्रव्य खायो और राजद्वार में इतनो द्रव्य भर्यो। तातें तुम हमारो न्याव करो। नाँतरु हों मरोंगो। तुम्हारे माथे जीव देउंगो। तब हाकिमने मनुष्य पठवाई कै वा साहुकार कों बुलायो। तब वासों हाकिम ने एकांत में ले जाँइ कै सब बात समाचार कहे। और वह लिख्यो

बतायो। और कह्यो, जो–तुम कों इतनी घर की सुधि नाहीं ? ऐसी कहा है ? भले, भई सो भई। परि तुम भली जानो तो वा स्त्री कों घर में राखो मति। वह स्त्री बिटल गई है। वाने यहां आइ कै सब कह्यो है। तातें तुम वाकों या तुरक के साथ करि देऊ। याही में तुम्हारो भलो है। तब वा साहुकार ने कह्यो, जो–हों घर में जाँई कै पूछों। पाछें कहूंगो। मोकों या बात की ठीक नाहीं। तब हाकिम ने कह्यो, जो–अब कहा ठीक करोगे ? वह तो राजद्वार में आई कै इह लिख्यो करवाई कै गई है। और अब स्त्री की जाति कै इतबार नाहीं। तातें हम अब कैसें छोरेंगे ? सर्वथा याकों दिवावेंगे। पाछें तुम राजी होऊ सो करो। ऐसो कहि कै हाकिम ने अपने चार मनुष्यन सों कह्यो, जो–वा साहूकार के साथ तुम चार जनें जाँइ कै वाके बेटाकी बहू जो–तुम्हारे कहे सूधी आवे तो भली और नाहीं तो तुम याके घर भीतर धसि कै वाकी चोटी पकरि कै इहां ल्याउ। पाछें उन मनुष्यन के साथ साहूकार ने जाँई कै घर में यह बात सबन सों कही। तब वह स्त्री तो कहे, जो–हों तो घर के बाहिर हू नाहीं गई। सो तुम घर की स्त्रीन सों घर के लोगन सों पूछो। और हों तो कछू या बात में जानति नाहीं। और घर के हू सब स्त्री–लोगन ने कह्यो, जो–ऐतो कहूं घर के बाहिर जात नाहीं। हमारे पास आठों पहर बैठि रहति है। ऐसें कही। परि वे राज के मनुष्य माने नाहीं। और कह्यो, जो–हम याकों तुम्हारे पीछवारे तें बुलाय कै लै गए हे। और याने सब लिख्यो करवायो है। तातें हम तो याकों लिए बिनु नाहीं जाँहि। हमारे धनी की आज्ञा है। ऐसें कहि कै वाके घर में धसि कै वा स्त्री की

चोटी पकरि कै घीसी । तब वह स्त्री रोवे । घनो बिलाप करें । कोऊ सुने नाहीं । वाकों तो राजद्वार ले जान लगे । तब वाने अपने ससुर सों कह्यो, जो–भले ! तुम मेरे साथ राजद्वार में आवो । और मेरे पिता कों बुलाउ । तुम सब ढींग ठाढ़े रहो । ता पाछें जुवाब तो सुनोगे । पाछें तुम कहोगे सो हों करोंगी । ता पाछें वाकों राजद्वार में ले जाँइ कै ठाढ़ी करी । तब तो घूंघट लाज कछू कर्यो नाहीं । और बूझ्यो सो सब कह्यो । पाछें वा तुरक ने कही, जो–अब यह स्त्री–चरित्र कहा फेलायो है ? अब चले नाहीं । यह कछू ख्याल नाहीं । इतनेकी गवाही हैं । ऐसें लिख्यो तैं करवायो है । ता पाछें वह लिख्यो और पुरुषान कौ नाम और देह के चिन्ह सब बांचि सुनायो । तब वा स्त्री ने कह्यो, जो–हों तो कछू जानति नाहीं, जो–यह कैसे भयो है । और यह कहां कौ ? ऐसें कहि कै रोवे और मूंड पीटे । तब राजद्वार के सब कोऊ कहे, जो–यह स्त्री झूठी है । तातें याकी कोऊ कछू मानो मति । स्त्री जन कौ विश्वास नाहीं । तब हाकिमने कही, जो–याको या तुरक कों देहु । और दोउन कों बाहिर काढ़ि देहु । तब वा स्त्री ने कह्यो, जो–न जाने यह कहा कोप भयो है ? और कैसें लिख्यो भयो है ? परि प्रभुन कौ कछू कोप है । परि भले, हों अब तो झूठी भई हों । तातें मेरो कह्यो कौन माने ? परि पृथ्वीपति पास हम दोऊन कों दिल्ली आगरे पठवाउ । उहां पृथ्वीपति पात्साह पास चलो । काहे तें, जो– हों तो कछू जानत नाहीं और कछू देख्यो हू नाहीं । और न जाने यह लिख्यो कैसें भयो ? परि हों मेरी देह त्याग करूंगी । मेरो भोग पूर्व जन्म कौ आयो है । परि हों याकों

मेरे सरीर कों हाथ लगावन नाहीं देउंगी। हों तो देह त्याग करूंगी। तुम्हारे यावद् जीवन लों यह कलंक टरेगो नाहीं। तातें तुम मेरी साथ चलो। कदाचित् पृथ्वीपति में प्रभु कौ अंस है और उहां जो या बात की समझि परे तो तुम्हारो और मेरो कलंक मिटे। पाछें साहुकार ने हाकिम सों कही, जो–पृथ्वीपति पास न्याव होयगो। तातें हमकों पृथ्वीपति पास भेजो। तब हाकिम और राजद्वार के लोग मिलि कै वे तुरक कौ पत्र लिखि दीनो। ता पाछें वे सब उहां तें चले। सो केतेक दिन में पृथ्वीपति पास आये। तब पृथ्वीपति ने घनो न्याय कियो, चतुराई करी। और राजकाज के लोगन सों मिलि कै बिचार्‌यो। परि कछू समुझ परे नाहीं। तब वा स्त्री सों पूछ्यो, जो–यह कहा है ? तब वाने कही, हों तो कछू जानत नाहीं, जो–यह कहा कोप है ? पाछें वा तुरक ने तो सबन कों लिख्यो दिखायो। तब वह लिख्यो साँचो भयो और वह स्त्री झूठी भई। ता पाछें वाके संग पृथ्वीपति ने वह स्त्री करि दीनी। तब वह ले कै चल्यो। सो जमनाजी के पार उतर्‌यो। तब आगें वह तुरक चल्यो जात है पाछें वह स्त्री चली जात है। सो पाछें देखत जाति है और रोवत जाति है। और भाटे सों मूड फोरे है। सो रुधिर निकस्यो है। सो सारी रुधिर सों भरी है। और मन में प्रभुजी कौ चिंतन करे है। ऐसें कल्पत चली जात है।

सो ता समै 'निगमबोध' श्रीजमनाजी कौ घाट है। सो किला के नीचे ही है। सो श्रीगुसांईजी ता समै उहां पधारे हे। सो निगमबोध घाट ऊपर स्नान करत हे। ता समै पृथ्वीपति और बीरबल और राजा टोडरमल झरोखा में बैठे देखत हैं। ता समै

श्रीगुसांईजी की दृष्टि वा स्त्री पर गई सो वाने पाछें फिरि कै देख्यो, तब ही श्रीगुसांईजी ने पहिचानी। जो–यह दैवी जीव है। ता पाछें ओर लोग उहां ठाढ़े हते। तिन सों श्रीगुसांईजी ने पूछ्यो, जो–यह स्त्री कौन है ? क्यों रोवत है ? और याके साथ में म्लेच्छ है सो कौन है ? तब मनुष्यन ने सब समाचार कहे।

सो इतने ही पृथ्वीपति ने राजा (टोडरमल) सों कह्यो, जो–देखो। हम याकों स्त्री दीनी। परि कछू संदेह रह्यो है। काहेतें, वह अपने सरीर कों घनो कल्पांत करत है। माथो भाटा सों फोरत है और रोवत है। तातें कछू कारन है। सो ऐसो कह्यो, सो श्रीगुसांईजी ने सुन्यो। तब श्रीगुसांईजी ने पृथ्वीपति के सन्मुख देख्यो। तब श्रीगुसांईजी ने पृथ्वीपति सों कह्यो, जो–तुम ऐसो न्याव कहा कियो ? वह तुरक तो झूठौ है। और स्त्री साँची है। वह तो प्रान त्याग करेगी। परि वाकों परस नाहीं करेगी। ऐसी पतिव्रता है। सो तुम्हारे सिर देह त्याग करेगी। तातें तुम इन दोऊन कों मनुष्य पठवाइ कै पाछें बुलाय मँगावो। याकौ न्याय हम आय कै करेंगे। तब पृथ्वीपति तो प्रसन्न भयो। और अपने चाकर चारि चोपदार पठवाए। और कह्यो, जो–वे दोऊ स्त्री और तुरक कों पाछें फेरि ल्याओ। तब वह चोपदार तुरत ही दोरे। सो दोउन कों पाछें फेरि ल्याए। सो दोउन कों न्यारे न्यारे राखे। और ऊपर चोकी राखी। ता पाछें पृथ्वीपति ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो आप पाँव धारिये। ता पाछें श्रीगुसांईजी संध्यावंदन करि कै पोहोंचि कै ता पाछें पाँव धारे। जहां पृथ्वीपति हतो तहां पधारे। सो पृथ्वीपति उठि कै

श्रीगुसांईजी के सन्मुख हाथ जोरि कै ठाढ़ो रह्यो । तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो–तुम बैठो । तब पृथ्वीपति बैठ्यो । पाछें श्रीगुसांईजी पृथ्वीपति सों कह्यो, जो–याकौ न्याव या प्रकार करो । जो–कोऊ एक मनुष्य सों कहो, जो–तुरक सों तुम छिपि जाँइ कै किवाड़ मारि कै आज हमारी आज्ञा तें भीतर जागत बैठियो । परि वह तुरक जानें नाहीं, जो–इहां कोऊ जागत है । और रात्रि में यह दोऊन की बातें होंहि सो सब सुनि कै याद राखियो । सब बात राजद्वार में सवारे आइ कहियो । ए काम हमारो जानि कै करनो, ऐसो वासों कहो । सो आज कौ दिन लौकिक प्रतीति के लिये हम कहें सो करियो । तब पृथ्वीपति ने एक साहूकार भलो मनुष्य हो ताकों बुलाइ कै सब बात समझाय कह्यो । सो वह वैष्णव हतो ।

ता पाछें श्रीगुसांईजी नें वा स्त्रीकों एकांत बुलाय के वासों कह्यो, जो–तुम्हारे दोइ पींजरा न्यारे या वैष्णव के द्वारे बांधेंगे । सो जब सब कोउ सोवे तब तुम वा तुरक सों हँसि कै बोलियो । इतने वह घनो मन में प्रसन्न होइगो । ता पाछें तुम कहियो, जो–सुनोजू ! अब तो पृथ्वीपति ने तुम कों दीनी । सो तो हों होई चुकी । परि तुम यह लिख्यो कैसें कीनो । सो बात मोसों कही चहिए । जो–हों तुम्हारे पुरुषार्थ जानों तो तुम्हारे संग प्रसन्नता सों चलोंगी । ऐसी बात करि कै वा पास सब कहवाइयो । और वह सब मेरी ईच्छा तें कहेगो । वाकौ पाप पूरो होंइ गयो है, सो फूटेगो । सो यह सुनि कै राजद्वार में कहियो । सो इतने ही प्रतीत होइगी । सो तू तो चतुर है ।

पाछें श्रीगुसांईजी वा स्त्रीकों लै कै राजद्वार गए। ता पाछें वे पींजरा दोइ मँगाये। वामें दोऊ कों बैठारे। ता पाछें तारौ दोऊ पींजरा कों मारि कै पाछें एकांत में वा साहुकार वैष्णव कों बुलाय कै पाछें पृथ्वीपति कों देखाइ कह्यो, जो–जागत रहियो। और जो–बात होंइ सो सब हम सों सवारे कहियो। ता पाछें दोऊ पींजरा साहूकार के द्वारे लै जाँइ कै धरे। ता पाछें संध्या रात्रि भई और सब लोग तो सोये। तब वा स्त्रीने वा तुरक कों पुकार्‌यो, कह्यो, जो–तुम काहे कों सोय रहे हो ? जागो तो कछू बात करें। तब वा तुरक ने जान्यो, जो–आज मेरो बड़ो भाग्य है, जो–मोसों यह स्त्री बोली। ता पाछें वा स्त्रीने कह्यो, जो–अब तो पृथ्वीपति ने हों तुम कों दीनी। परि एक बात हों तुम तें पूछत हों, जो–तुम लिख्यो कौन भांति सों करवायो है, सो बात मोसों कहिये। जो–हों जानों, जो–ऐसो तुम्हारो पराक्रम है, ऐसें तुम चतुर हो। और तो कोऊ नाहीं, जो सुने। तब भगवद् इच्छा सों वाकौ मन भ्रमित भयो। तातें पाप गोप्य रह्यो नाहीं। ता पाछें वा तुरक ने कह्यो, जो–यह बात तोसों हों कहोंगो पाछें। तब वा स्त्रीने कह्यो, जो–अबही काहे नाहीं कहो ? यहां तो तुम हम दोऊ हैं। और तीसरो तो कोऊ नाहीं। तातें जो हों तुम्हारो सामर्थ्य जानों तो सुखेन तुम्हारे साथ चलूं। ता पाछें वा तुरक ने कह्यो, जो–वे दिना की तुम कों सुधि है ? जो–मोकों तू थपेड मारि कै घर में भाजि गई। तेरे घर के पाछें उहां तुम बार सुखावति हती तब मेरी दृष्टि परी। सो हों घोड़ा कों ऐंड दै कै भीतर आइ कै उतर्‌यो। उतरि कै हाथ पकर्‌यो तब वा स्त्रीकों सुधि आई। तब

कह्यो, जो–हां ! अब तो सुधि आई । परि हों थपेड याही तें मारी, जो–याकों याद रहे । और तुम करोगे भले । तब और कहे, जो–ता पाछें कौन उपाय कीने ? तब वा तुरक ने कह्यो, जो–मेरे वाही समै मन में दुःख लग्यो । जो–देखो स्त्री जन मोकों थपेड मारे तो मेरो जीवनो वृथा है । तातें मैं ऐसो उपाय कियो । तब वा स्त्रीने कह्यो, जो–तोसों इतने नाम किन कहे ? और कैसें लिखे ? और वह ऐसो लिख्यो और यह सब कैसें भयो ? सो बात कहिये । तब वा तुरक ने कह्यो, जो–वह अमूकी डोकरी तुम्हारे घर आवति हती सो वासों मिलि कै नाम सब तोसों पूछि आवती । सो मोसों कहे सो हों लिखत जाते । वाकों हों मैया कहि बोल्यो । और वाकों द्रव्य हू दीनो । पाछें जो प्रकार वा तुरक ने कीने सो सब बात विस्तार कै कही, जो–ऐसें एक वेस्या की छोरी ल्यायो, ऐसें वाकों सिखायो । सो सब बात कही ।

ता पाछें सब विगत कहि रह्यो तब वह साहुकार वैष्णव रखवारो खांस्यो । तब वा स्त्री ने कह्यो, जो–तुम सुनते होंहि तो सुधि राखियो । तब वा साहुकार ने कह्यो, जो–मैं सब सुन्यो है और सब सुधि है । तातें तुम अब काहू बात की चिंता मति करियो । तेरे सन्मुख प्रभुजी ने देख्यो । ऐसें कह्यो । सो सुनत ही वा तुरक कौ तो प्रान उड़ि गयो । और मन में कह्यो, जो–यह ऐसो कहा भयो ? ता पाछें थोरीसी देर में प्रातःकाल भयो । ता पाछें श्रीगुसांईजी बेगि ही दंतधावन करि कै पधारे । तब राजद्वार आये । तब पृथ्वीपति ने बोहोत ही सन्मान कियो । ता पाछें वे दोऊ पींजरा खोलि कै मँगवाये । पाछें जा वैष्णव के द्वार पींजरा

बांधे हते वाकों बुलायो। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने मनुष्य पठवाये। वा स्त्री के पिता–सुसर कों बुलाये। ता पाछें प्रधान राजा टोडरमल तथा बीरबल तथा और हू सब कामदारन कों बुलाय कै सभा सब सिद्ध करि कै ता पाछें पृथ्वीपति सों श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–अब तुम या साहुकार सों पूछो, जो–रात्रि कहा बात भई ? तब पृथ्वीपति ने कह्यो, जो–सेठजी ! इन दोऊन के पींजरन में परस्पर कहा बातें भई ? तुमने कहा सुन्यो, सो सब कहिए। तब वा साहुकार ने कह्यो, जो–मैं तो सब बात समाचार सुने हैं। यह स्त्री साँची है। और वह तुरक तो महापतित हैं परि या तुरक सों पूछो, जो–वह कहा बात करी ? और यह भूले तब हों कहोंगो। ता पाछें वाकों पूछ्यो। तब वा तुरक के मुख सों उत्तर नाहीं निकसे। वे तो पींजरा में बिन मारे ही मरि रह्यो। मरे भए के से सुखाई गयो। ता पाछें वा वैष्णव साहुकार नें सब बात कही, विस्तारि कै। तब वह वाड़ा में आई कै याकौ हाथ पकर्यो, पाछें स्त्रीने छुडायो सो कही। वाकों थपेड मारी सो कही। ता पाछें वा डोकरी के समाचार सब कहे। वाकों नाम और याके सरीर के चिन्ह लिखवाये, सो बात कही। ता पाछें वह वेस्या की छोरी लायो और वाकों सब सिखायो, सो सब कह्यो। ता पाछें राजद्वार जाँइ कै वा वेस्या की छोरी कों बुलाय कै लेखो सब करवायो। और राजद्वार में जाँइ कै द्रव्य दीनो, सो सब बतायो। ता पाछें वे आई कै वा वेस्या कों अपने गाम में पोहोंचाइ कै आयो, सो कह्यो। और वाकों द्रव्य दीनो। ता पाछें दिन चारि पांच में फिरि कै राजद्वार में आय कै पुकार्यो, सो

कह्यो। और सब बात बिस्तारि कै कह्यो। और कह्यो, जो–यानें जो बात कही सो तो मैं तुमसों कह्यो। और अब या बात कौ तुम विवेक करि लेहु। ता पाछें पात्साह वा तुरक पर कोप्यो, कह्यो, जो–याकों खरच करो। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें पात्साह सों कह्यो, जो–हम या बात में आए तातें अब काहु कों जीवते तो मति मारो। और एक बात हों कहों सो सुनो। और ऐसें करो, जो–तुम एक मनुष्य पठवाय कै उहां के हाकिम कों बुलावो। वा डोकरी कों बुलावो, जो–या बात की प्रतीति सबन कों पूरी होई। और न्याव तो पूरो ही करो। जिन जिन द्रव्य लै कै ऐसो न्याय खोटो कर्‌यो है उन कों ठीक पारि कै दंड देहु। तब लों हम रहेंगे। ता पाछें वा तुरक कों बंदीखाने में दियो। ता पाछें पृथ्वीपति ने श्रीगुसांईजी सों बोहोत ही स्तुति करि कै कह्यो, जो–मेरो धर्म राख्यो। नाँतरु यह दोष और या स्त्री की हत्या मेरे माथें पड़ती। तातें आप बड़े ही ईश्वर हो। जो–ईश्वर बिनु ऐसो न्याय कौन करें ? ता पाछें उनकों एक मनुष्य पठवायो। और कह्यो जो–उनकों तुरत ही ल्याऊ। ता पाछें श्रीगुसांईजी डेरा पाँव धारे। ता पाछें वा स्त्री सों कह्यो, जो–तू तेरे पिता, सुसर के पास जा। तब स्त्रीने कह्यो, जो–महाराजाधिराज ! हों अब कहां जाउं ? मेरे तो राज बिना और कोऊ नाहीं। कदाचित् मेरे कोऊ और जो होतो तो मोकों छोरि कै कैसें जातो ? तातें अब तो राज कै चरन कमल बिनु और आश्रय नाहीं। तब श्रीगुसांईजी ने वा स्त्री सों कह्यो, जो–तू हमारी बेटी है। तातें अब तू काहू बात की चिंता मति करे। परि हम कहें सो करि। तू अपने घर जाहि। और अब

तेरे सन्मुख प्रभु ने देख्यो है। अब तोकों सब स्फुरत हैं। तातें तू अपने घर जाँई कै श्रीठाकुरजी की सेवा करि। ता पाछें वाके पिता, सुसर कों बुलाय कै श्रीगुसांईजी ने उन सों कह्यो, जो–यह कोऊ अलौकिक जीव है। याकों धीरज धन है। या समान धीरज कोऊ नाहीं। तातें तुम याकों समुझाय कै घर लै कै जाउ। और यह कहे सो तुम करियो। ता पाछें वा स्त्री ने कह्यो, जो–महाराज! हम तो कोऊ वैष्णव नाहीं। और अब तो हों इन के संग नाहीं जाउं। ता पाछें वह सब श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै सरनि आए। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वाकौं आत्म- निवेदन करवायो। और वाके घर कों, सब कों सरनि लिए। तब ये वैष्णव भए। ता पाछें ये सब श्रीगुसांईजी पास उहांही रहे। पाछें वा हाकिम वा डोकरी सब आए। तब पृथ्वीपति ने श्रीगुसांईजी कों बुलाये। तब श्रीगुसांईजी पधारे। पाछें सब सभा जुरी। तब राजा ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–अब इन कों कहा पूछनो, कहा करनो ? सो आपकी आज्ञा प्रमान करिए ? तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–वा डोकरी सों सब बात पूछो। तब वा डोकरी सों पूछ्यो, जो–सब साँची कहि। तब वा डोकरी ने जो बात भई सो सब कही। और कह्यो, जो–हों तो भोरी, सो मैं तो दगा ना जान्यो। सो ये तुरक मोसों कहे ता प्रमान नाम या स्त्री सों पूछिपूछि कै यासों कहती। और याके देह के लक्षन चिन्ह हू मैं बताये। ऐसे कीनो। अब आपकी ईच्छा में आवे सो मोकों करिये। ता पाछें वा वेस्या कों पूछ्यो, तब वाहू ने जो प्रकार कर्‌यो सो सब कह्यो। जैसें इन सिखायो और इन

नाम सिखाए। तैसे ही मैं कह्यो। और कीनी, जो–हमारो तो यह उद्यम है। जो–द्रव्य देहि ताकौं कहों। जो–कछू कहि सों करनो। ऐसी सुंदर देह द्रव्य की लालच तें उन के अर्पन करते हैं। ता पाछें हाकिम सों पूछ्यो, और कह्यो, जो–तैंनेइ द्रव्य की लालच सों न्याव कियो है ? तब हाकिम ने कह्यो, जो–साहब ! मोकों याके कपट की कछू समुझि परी नाहीं। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–तैं पाछें तें याके सुसर कों काहेकों बुलायो ? तैं पहिले ही याके सुसर संबंधीन कों बुलाय पूछ्यो क्यों नाहीं ? जो–यह कहा कहत हैं ? सो सत्ता तें उन्मत होइ कै ऐसोई न्याय करत है ? तब हाकिम ने कह्यो, जो–हों चूक्यो तो सही। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–तुम तो चूके परि इन कौ तो सर्वस्व गयो ? और या स्त्री के प्रान जाते। ऐसो करम कियो। पाछें पात्साह ने हुकम कियो, जो–यह सबन कों खरच करो। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–ऐसें मति करो। हों कहों सो करो। पाछें श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–वा डोकरी कों तो कछू द्रव्य कौ दंड करो। और या वेस्या कौ घर सब लूटि लेहु। और या हाकिम कों हटाई कै और हाकिम करो और सब द्रव्य लूटि लेहु। जासों और कोऊ ऐसो न्याय करे नाहीं। और वा तुरक की नाक काटि कै सब द्रव्य छिन लेहु। और याको छोरि देहु। ता पाछें जैसें श्रीगुसांईजी ने कह्यो वैसे ही पात्साहने कियो। पाछें पात्साह श्रीगुसांईजी कों भेट द्रव्य बोहोत देन लाग्यो। परि कछू लीनो नाहीं। ता पाछें पात्साह नें घनी प्रनपति करि कै कह्यो, जो–हों आप कौ चाकर हौं। जो–कार्य मो लायक जैसो होइ तैसो आप कृपा करि कै

कहोगे ! और आप मो पर कृपा राखोगे । मेरी राज–काज की लाज आप राखी हैं, सो हों आप कौ दास हों । ता पाछें श्रीगुसांईजी उहां तें विजय किये । सो श्रीनाथजीद्वार पाँव धारे । और वह स्त्री और वाकौ पिता–सुसर सब साथ ही हैं । सो इन सबन ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । ता पाछें ब्रज की परिक्रमा करी । पाछें केऊ दिन श्रीगोकुल में रहि कै श्रीगुसांईजी पास श्रीमुख की कथा सुनी । ता पाछें मारग की रीति श्रीगुसांईजी सों पूछी, सो श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै कही । ता पाछें वा स्त्रीने श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै, लालजी की सेवा पधराय कै, श्रीगुसांईजी सों बिदा होइ कै अपने देस कों सब चले । तब श्रीगुसांईजी वा स्त्री कौ घनो समाधान कियो । और वाके सुसर, धनी सों कह्यो, जो–तुम सुनो । तुम्हारो धर्म और लौकिक लाज या स्त्रीने राखी है । और याकौ ताप श्रीठाकुरजी सहि ना सके । और याकी आर्ति सों तुम हू वैष्णव भये । तुम या बाई कहे सो, और जा बात में यह बाई राजी रहे सो करियो । याही मैं तुम्हारो भलो है । यह अलौकिक जीव है, आधिदैविक है । या समान धीर कोऊ नाहीं । जो–अत्यंत दुःख पड़े धीरज राख्यो । अपनो धर्म खोयो नाहीं । ताही कों दैवी कहिये । ता पाछें सब लोग बिदा होंइ कै अपने घर आये । ता पाछें जैसें श्रीगुसांईजी की आज्ञा ही तैसें ही सेवा करन लागे । आज्ञा प्रमान सब कारज करे । ऐसें करत थोरेसे दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे । और वा स्त्री के सकल मनोरथ पूरन करे । और घर के लोग हू सब याकी आज्ञा में चलन लागे । ऐसें जो अपनो धर्म

राखे वाके आधीन सब होंई।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जताए, जो–वैष्णव कैसोहू संकट आमें तामें धीरज न छोरे। जानें जो, प्रभु सब भली करत है। तातें या प्रकार विस्वास राखि उन ही कौ आश्रय करे। तातें सब कारज सिद्ध होंई।

सो वह स्त्री श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥ १४९ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक उद्धव त्रवाडी नागर ब्राह्मन, गुजरात में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'रेणुका' हैं। ये 'कमला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात कों पधारे हुते। तब उद्धव त्रवाडी कौ नाम दियो हतो। पाछें ये श्रीगुसांईजी के पास रहे। सो बड़े कृपापात्र भगवदीय भये। जिनके ऊपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते।

सो कितनेक दिन पाछें उद्धव त्रवाडी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! जिनके ऊपर आप की कृपा होंइ तिन कों अन्य संबंध कैसें होंई ? सब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–जिनके हृदय में स्वरूप दृढ़ भयो है तिन कों अन्य संबंध उपजे नाहीं। यह सुनि कै उद्धव त्रवाडी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें उद्धव त्रवाडी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! आपकी कृपा जीव कों बताओ तब जानि परे। और आपकौ स्वरूप हृदयारूढ होइ तब अन्याश्रय करे नाहीं। तब

जानिए, जो–जीव कों श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कौ स्वरूप हृदयारूढ भयो। मार्ग सगरो स्फुर्‍यो। तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो–त्रवाडी ! है तो ऐसेंई।

वार्ता प्रसंग–२

बहोरि एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे। तब उद्धव त्रवाडी संग हुते। सो श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भए। सो केतेक दिन श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजी के दरसन किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे। तब उद्धव त्रवाडी हू श्रीगोकुल आये। सो श्रीगुसांईजी तो स्नान करि कै श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे। सो राजभोग पर्यंत की सेवा सों पहोंचि कै अपनी बैठक में पधारे। तब उद्धव त्रवाडी श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करि कै श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी ने उद्धव त्रवाडी सों पूछी, जो–त्रवाडी ! तुमने श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये ? तब उद्धव त्रवाडी ने कही, जो–महाराज ! आपकी कृपा तें दरसन किये है। परि श्री–गोवर्द्धननाथजी के दरसन करवाओ तो बोहोत आछौ है। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन कों पधारे। और त्रवाडी कों महाप्रसाद की पातरि धरवाई। ता पाछें तत्काल श्रीगुसांईजी उद्धव त्रवाडी कों संग ले श्रीगोवर्द्धननाथजी आए। सो स्नान करि कै श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में पधारे। सो सेन भोग के दरसन किये। तब उद्धव त्रवाडी ने हू दरसन किये। सो दरसन करि कै दंडवत् कीनी। तब त्रवाडी देह कौ अनुसंधान भूलि गए। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ चरनामृत दै कै सावधान

किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। तब उद्धव त्रवाडी हू बैठक में आये। सो आय कै दंडवत् कीनी। तब श्रीगुसांईजी श्रीसुबोधिनी की, टिप्पनी की, कथा कहे। सो सुनि कै उद्धव त्रवाडी बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढे। तब त्रवाडी हू सोय रहे। पाछें प्रातःकाल त्रवाडीजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो– महाराज ! आप की आज्ञा होंई तो ब्रजपरिक्रमा करिए। तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा दीनी, जो–परिक्रमा अवस्य करनी। पाछें उद्धव त्रवाडी के संग एक वैष्णव पठायो। सो वा वैष्णव सों कह्यो, जो–इन उद्धव त्रवाडी कों ब्रजयात्रा करवाय ल्याओ। तब वह वैष्णव और त्रवाडी प्रथम तो बिदा होंई के चले। सो श्रीगिरिराजजी की परिक्रमा कीनी। पाछें केतेक दिन में चोरासी कोस की परिक्रमा करि कै फेरि श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। ता पाछें उद्धव त्रवाडी ने श्रीगुसांईजी दरसन करि कै बिनती कीनी, जो–महाराज ! आप की कृपा तें सर्व मनोरथ सिद्ध भये हैं। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीमुख तें कह्यो, जो– श्रीगोवर्द्धननाथजी तो भक्त के मनोरथ पूरन करत हैं। यह सुनि कै त्रवाडी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें उद्धव त्रवाडी श्रीगुसांईजी सों बिदा व्हे अपने देस आये।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के स्वरूप में दृढ निष्टा होंई तब सगरो पुष्टिमार्ग स्फुरायमान होई। और अन्य संबंध हू न होंई।

सो वे उद्धव त्रवाडी श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥१५०॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी, सीताबाई और उनकी माता अचलबाई नागर ब्राह्मनी, बड़नगर में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये सीताभाई तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'गोवर्द्धनी' है। और गोवर्द्धनी की एक सहचरी है। वाकौ नाम 'शिला' है। सो यहां माता भई। ये 'इश्वरी' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

ये बड़नगर में एक द्रव्यपात्र नागर ब्राह्मन के घर जन्मी। सो बरस आठ की भई। तब इन कौ ब्याह एक जाति के लरिका सों भयो। ता पाछें महिना एक पाछें लरिका सीतला के रोग में मर्‌यो। सो सीताबाई ने लौकिक कछू जान्यो नाहीं। सो वह बोहोत ही मुग्ध हूती।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारकाजी कों श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे हुते। तब मार्ग में बड़नगर आयो। सो श्रीगुसांईजी ने तहां डेरा किये। तब वह सीताबाई नागर ब्राह्मनी कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भई। सो ता समै और हू वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों उहां ठाढ़े हुते। सो कोऊ नाम पावत हुतो। कोऊ बिनती करत हुतो। सो सीताबाई देखे। तब सीताबाई ने हू श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! मोकों सेवक कीजिए।

और सीताबाई की महतारी हती। वाकौ नाम अचलबाई हुतो। सो वह बोहोत वृद्ध हती। सो हू सीताबाई के संग हती। सो श्रीगुसांईजी सीताबाई कों आज्ञा किये, जो–तुम दोऊ स्नान करि कै आवो। तब सीताबाई और वाकी महतारी अचलबाई दोऊ स्नान करि कै आई। तब श्रीगुसांईजी ने उन के ऊपर कृपा करि कै नाम सुनायो। ता पाछें वाकी महतारी नाम पाइवे कों बैठी। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें महावाक्य अष्टाक्षर मंत्र कौ उच्चार कियो। सो वह मंत्र तीनि बेर कह्यो। ता पाछें उन श्रीगुसांईजी

सों कह्यो, जो–महाराज ! ऐसी रीति के बचन तो मोकों आवत नाहीं है । तब श्रीगुसांईजी मुसिक्याय कै उन सों कहे, जो–मेरो नाम तो जानत है ? तब वा बाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! ए तो मैं जानत हूं । ता पाछें श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–मेरो नाम कौ जप करियो । ऐसें वा बाई सों कहे । पाछें सब वैष्णवन कों जतायो, जो–तुम सब हमारे नाम कौ सुमिरन मति करियो । काहेतें, जो–तुम कों तो अष्टाक्षर कौ दान कियो है । तातें तुम अष्टाक्षर जपियो ।

भावप्रकाश–यह कहि श्रीगुसांईजी आपु अपने नामकी गोप्यता जताए । सो श्रीगुसांईजी कौ नाम परम फलरूप है । तातें जाकों वे कृपा करि दान करे वाही कों वा नाम कौ अधिकार प्राप्त होंई ।

ता पाछें वा बाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! हम कों निवेदन कराइए । पाछें सेवा पधराइ दीजिए । तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै उन बाईन कों निवेदन कराइ भगवत्सेवा पधराइ दीनी । सो सीताबाई श्रीठाकुरजी कौ मंदिर बनवाय कै श्रीठाकुरजी कों पाट बैठाये । सो भली भांति सेवा करन लागी । सो श्रीगुसांईजी वा बाई कों सखड़ी, अनसखड़ी के प्रकार कौ ज्ञान बताए । और उहां केतेक दिन बिराजे । ता पाछें श्रीगुसांईजी वा बाई सों बिदा होंइ कै श्रीद्वारिकाजी कों आए । सो श्रीरनछोरजी के दरसन किये । ता पाछें उहां केतेक दिन रहि कै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे ।

ता पाछें वा बाई कों श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे । और बातें करते । जो चहिए सो मांगि लेते । सो ऐसें करत बोहोत-

दिन बीते। तब इनकी माता मरी। ता पाछें वा बाई की देह हू असक्त भई। सो इन ने हू देह छोरी। सो समाचार केतेक दिन में वैष्णवन श्रीगुसांईजी के आगें आय कै कहे। तब श्रीगुसांईजी सीता बाई की बोहोत सराहना किये। और कह्यो, जो–वा बाई कौ स्वभाव तो बोहोत आछो हतो। जो–कछू बात में समुझति नाहीं

सो वह सीताबाई और उनकी माता श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए? वार्ता ॥१५१॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक श्रोता, एक वक्ता, दोऊ राजनगर असारवा में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में श्रीचंद्रावलीजी की दोऊ सखी है। 'बचनमाधुरी' और 'श्रवनमाधुरी' इन के नाम हैं। सो श्रोता तो श्रवनमाधुरी है और वक्ता बचनमाधुरी। ये 'ईश्वरी' तें प्रगटी हैं। तातें उन के भावरूप हैं।

ये दोऊ राजनगर असारवा में बनियान के जन्मे। सो दोऊन के घर भाईला कोठारी के घर के पास हते। सो दोऊन की बालपने ते प्रीति बोहोत हुती। सो दोऊ संग रहते। कथा–वार्ता सुनते। पाछें दोऊन कौ ब्याह भयो। ता पाछें कछूक दिन में दोऊन के माता–पिता मरे। तब ये भाईला कोठारी के घर जाँइवे लगे। सो भाईला कोठारी दोऊन कों दैवी जानि उन पर बोहोत प्रीति करते। नित्य भगवद्वार्ता कहते। सो दोऊन की प्रीति श्रीगुसांईजी के स्वरूप में भई।

वार्ता प्रसंग–१

बहोरि श्रीगुसांईजी राजनगर असारवा पधारे तब भाईला कोठारी के घर बिराजे। तब भाईला कोठारी के संग तें वे दोऊ जनें श्रीगुसांईजी के सेवक भए। नाम–निवेदन पाए। पाछें स्त्रीन कों हू सेवक कराए। सो भाईला कोठारी के घर दोऊ जनें

नित्य भगवद्वार्ता सुनिवे कों जाते। सो उहां तें भगवद्वार्ता सुनि कै जब घर आवते तब ये दोऊ जनें मिलि कै उहां सुनि होंई सो बार्ता करते। सो वक्ता कहतो, श्रोता सुनतो। पाछें केतेक दिन में ये दोऊ जनें अपनी स्त्रीन कों संग ले कै श्रीगोकुल कों आए। श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी ने इन तें पूछी, जो–वैष्णव ! तुम कब आए ? तब इन कही, जो–महाराज की कृपा तें श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग के दरसन आय करे। तब श्रीगुसांईजी ने उन वैष्णवन पै कृपा करि के कही, जो–महाप्रसाद यहांई लीजो। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन कों पधारे। सो सब भोजन करि चुके तब आचमन करि कै बीड़ा आरोगे। गादी ऊपर बिराजे। ता पाछें उन वैष्णवन नें महाप्रसाद जूंठन लीनो। पाछें पांच सात दिन श्रीगोकुल में रहि कै पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, महाराज की आज्ञा होंई तो ब्रजयात्रा करें। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–आछो, करि आवो। तब वे दोऊ ब्रजयात्रा करि कै श्रीनाथजीद्वार आए। श्रीनाथजी के दरसन करि कै पाछें फेरि श्रीगोकुल आए। सो श्रीनवनीतप्रियजी के सेन के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी कथा कहन लागे। सो इन वैष्णवन श्रीमुख के बचन सुने। पाछें कथा होंइ चुकी, तब दोऊ वैष्णवन तें श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो–वैष्णव तुम कब आए ? तब उन कही, जो–महाराजाधिराज ! श्रीनवनीतप्रियजी के सेन के दरसन किये। पाछें वे दोऊ वैष्णव उठि कै अपने ड़ेरा कों गए। पाछें पांच–सात दिन श्रीगोकुल में रहि कै पाछें वे दोऊ वैष्णव श्रोता और वक्ता इन बिचार कियो। जो–ब्रज में

कोई एकांत स्थल होंइ तहां चलो। तब वे दोऊ जनें श्रीगोकुल तें चले। और उन दोऊन की स्त्री श्रीगोकुल में रही। पाछें वे दोऊ श्रोता और वक्ता सुंदर एकांत स्थल देखि कै उहां बैठे। सो भगवद्वार्ता करन लागें। सो श्रोता सुने और वक्ता कहे। सो दोऊ जनें भगवद्रस में लीन भए। सो उन कों देहानुसंधान कछू न रह्यो। सो कछू लौकिक संबंधी कछू देह कौ बाधा न करें। सो ऐसें करत चालीस दिन बिते। पाछें एक दिन ग्वारिया गाँइ चरावन आवते सो उन ने कही, जो–ये दोऊ महापुरुष हैं। देखो, इन कों चालीस दिना भए। कछू अन्न जल लीनो नाहीं। तातें इन कों कछू दूध देइ तो आछो। पाछें इन ग्वारियान ने अपने लोटा में गऊ दुहि कै दूध सों लोटा भरि कै उन के आगें धर्‌यो। तब उन वैष्णवन कही, जो– भगवद् इच्छा तें आय प्राप्त भयो है। तब उन वैष्णवन ने भोग धरि कै वह प्रसादी दूध लियो। पाछें भगवद् वार्ता करन लागे। सो ऐसें ग्वारिया नित्य दूध दे जाँय। सो उतनो दूध लेनो। और बैठे भगवद्वार्ता करनी। सो ऐसें करत छह महिना ब्यतीत भए। ता पाछें एक दिन उन दोऊ वैष्णवन की भगवद्वार्ता करत देह छूटि गई। दोऊ भगवल्लीला में प्राप्त भए। पाछें उनकी देह कों जीव–जंतु भक्षण करि गए। और उन के अस्थी उहां परे रहे। पाछें उन दोऊन की स्त्री श्रीगोकुल में हती। सो दोऊ जनीं उनकों ढूंढत ढूंढत वाही ठौर जाँई निकली। सो देखो तो उहां उन ग्वारियान गाँइ चरावत हते। तब इन वैष्णव बाईन नें वा ग्वारियान तें पूछी, जो–यहां कोइ दोइ वैष्णव देखे ? तब उन कही, जो–हां हां!

दोई वैष्णव इहां बैठे हते। सो हमने छह महिना तांइ देखे। पाछें उन जोऊ जनेंन की देह छूटि गई। ऐसें ग्वारियान ने कही। तब उन वैष्णवन की स्त्री नें पूछी, जो– वे कहां बैठे हते ? तब उन ग्वारियान ने वह स्थल बतायो। सो उहां देखे तो अस्थी परी हैं। तब उन स्त्रीन नें कही, जो– अब कैसें खबरि परे ? तब वा श्रोता की स्त्री ने कही, जो मैं तो अपने पति की अस्थी पहचानि लेउंगी। तब उन वक्ता की स्त्रीने कही, जो–कैसें पहचानेगी ? तब श्रोता की स्त्री ने कही, जो–मेरे पति तो श्रोता है। सो भगवद्वार्ता सुनि कै उनकी अस्थी में छेद परे हैं। पाछें श्रोता की स्त्री ने छेद वारे अस्थी सब बीनि लीने। और वक्ता की स्त्री ने विना छेद के लीने। पाछें उन दोऊन कौ अग्नि–संस्कार कीनो। पाछें वे दोऊ स्त्री श्रीगोकुल में आय रही। और वे दोऊ वैष्णव नित्य लीला में जाँइ प्राप्त भए।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है,–जो वैष्णब कों भगवद्वार्ता या प्रकार कहनी सुननी। काहे तें, जो भगवद्वार्ता स्वरूपात्मक है। तातें उनकों प्रीति पूर्वक हृदय में धारन किये तें देह के अध्यास सब छूटि जात हैं। सो भगवद्वार्ता ऐसो पदार्थ है।

सो वे श्रोता और वक्ता दोऊ श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥ १५२॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक कायस्थ आगरे कौ, सूरत के सूबा पास दीवानगीरी करतो, तिनको वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'दर्शनातुरी' हैं। ये बड़े उपनंदकी बेटी हैं। सो यह श्रीठाकुरजी के स्वरूप में आसक्त हैं। तातें यह 'दर्शनातुरी' श्रीयसोदाजी के घर बार बार श्रीठाकुरजी के दरसन कों आवति हैं। सो श्रीयसोदाजी वाकों बरजति हैं। कहति

हैं, जो–तू मेरे मंदिर में मति आवें। तू बावरी भई है। तातें मेरे लाला कों दीठ लगेगी। या प्रकार श्रीयसोदाजी 'दर्शनातुरी' कों श्रीठाकुरजी के दरसन करावति नाहीं। ये 'ईश्वरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह कायस्थ सूरत के सूबा के पास दीवानगीरी करतो। सो एक समै वह कायस्थ राजनगर कछू कार्यार्थ आयो। सो ता समै श्रीगुसांईजी राजनगर में बिराजत हुते। तब इन कायस्थ कों श्रीगुसांईजी के दरसन भये। तब इन श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! मोकों सरनि लीजिये। तब श्रीगुसांईजी ने वाकों नाम सुनायो। पाछें वह कायस्थ तो सूरत गयो। और श्रीगुसांईजी ब्रज में पधारे। ता पाछें देसाधिपति ने सूरत के सूबा कों बुलायो। सो सूबा देसाधिपति क पास आयो। तब वह कायस्थ दीवान संग हतो। सो देसाधिपति सों मिलि कै पाछें चले। सो श्रीगोवर्द्धन में डेरा भए। तब सूबा ने कही, जो–तीसरे पहर कों यहां तें कूच करेंगे। तब यह कायस्थ ने बिचारी, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करें तो आछौ। तीसरे पहर कूच होइगो। तब वह कायस्थ गोपालपुर आयो। श्रीगुसांईजी के दरसन किये। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की राजभोग आर्ति तो होंइ चुकी हतो। पाछें श्रीगुसांईजी कों भेंट धरि बिनती करी, जो–राज के पास मैनें राजनगर में नाम पायो हतो। ता दिन आप के दरसन भए, के आज भए। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये ? तब कायस्थ ने कही, जो–महाराज ! मोकों तो जनम भरि में एक हू बेर दरसन नहीं भये है। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–अब तो राजभोग होंइ

चुके हैं। अब तो सांझ के उत्थापन के दरसन करियो। तब कायस्थ ने कही, जो–महाराज! पराई चाकरी है। सो तो तीसरे पहर कूच करेंगे। जो–आज रहूंगो तो दरसन करूंगो। और श्रीगुसांईजी के आगें कछू कहि न सक्यो। पाछें वह कायस्थ जाँइ कै चांपाभाई भंडारी सों मिल्यो। सो भंडारी तें पूछी, जो–दरसन कौन समै होइंगे? तब भंडारी ने कही, जो–पाछिलो दिन घरी छह रहेगो तब होइंगे। तब कायस्थ ने कही, जो–हमारे सूबा कौ पहर दिन तें कूच होइगो। सो आज पहर दिन तें पहिल दरसन होंइ तो पचीस हजार रुपैया श्रीनाथजी के आगें भेंट करों। और दस हजार रुपैया तुम कों देउंगो। तब चांपाभाई ने आय कै श्रीगुसांईजी कों चरनारविंद दाबि कै जगाए। तब श्रीगुसांईजी ने भंडारी तें कही, जो–या समै कैसें आयो? तब भंडारी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! दीवान आयो है, सो ऐसें कहे हैं, जो–नित्य तें घरी दोइ पहिले उत्थापन होंइ तो पचीस हजार रुपैया भेंट करों। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–हमारे पास आयो हतो। पहर दिन तें कूच होइगो। तब भंडारी ने कही, जो–पहर दिन तें पहिले उत्थापन होंइ तो आछौ। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–आछौ। तब भंडारी ने आय कै कायस्थ तें कही, जो–श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी है। सो आज बेगि उत्थापन करेंगे। पाछें श्रीगुसांईजी तो नित्य तें दोइ घरी अवेरे जागे। और यहां तो सूबा के तो कूच के नगारे बजे। सो सूबा नें मनुष्यन तें कही, जो–दीवान कों बुलाय ल्यावो। सो हलकारा गए। सो गोपालपुर आय कों बुलाय कै ले गए। पाछें

इन कों तो कूच होंइ गयो। तब दीवान कों तो श्री गोवर्द्धननाथजी के दरसन कौ बोहोत ताप भयो। सो मारग में देह छोरी। और इहां श्रीगुसांईजी स्नान करि कै ऊपर मंदिर में पधारे। पाछें संखनाद करवाए। उत्थापन भोग के दरसन भए। तब श्रीगुसांईजी ने भंडारी तें कही, जो–बुलाओ, वह कहां है कायस्थ ? तब भंडारी ने कही, जो–महाराज ! उनकौ तो कूच होइ गयो। और आपने तो नित्य तें दोइ घरी अवेरी करी। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–रुपैयान के लिये बेगि उत्थापन करें ? पाछें आप बोले नाहीं। ता पाछें संध्या सेन के दरसन भए।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो–द्रव्य अर्थ भगवद्सेवा करे तो बाधक होंई। सेवा कौ विक्रय होंई। तातें द्रव्य के लालच सों प्रभुन कों बेगि जगावने नाहीं। और या दीवान कों श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन यातें नहीं कराए, जो–याने द्रव्य कौ आश्रय कियो। द्रव्य के बल पै दरसन कियो चाह्यो। सो प्रभु तो द्रव्य के आधीन नाहीं। तातें दरसन न कराए।

पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग धरि कै गोविंदकुंड संध्यावंदन करिवे कों पधारे। तब आप भंडारी कें आज्ञा किये, जो–दोइ मजूर और फावडा ले कै तुम गोविंदकुंड पै आइयो। ऐसें कहि कै आप गोविंदकुंड पधारे। पाछें चांपाभाई भंडारी दोइ मजूर और फावडा लिवाय कै गए। तब श्रीगुसांईजी संध्या करि चुके। पाछें आप खेत में जाँइ कै उन मजूरन कें कही, जो–यह ठौर खोदो। तब मजूरन नें उहां खोद्यो। सो निरे सोने की ईंट निकसी। तब श्रीगुसांईजी भंडारी तें आज्ञा किये, जो–तेरे चहिए जितनी ले ले। तब भंडारी कहन लाग्यो, जो–महाराज ! लक्ष्मी आप के चरनारविंद में हैं। तब

श्रीगुसांईजी ने कही, जो–लेनो होंइ तो अब ले, नहीं तो पछतावेगो। ता समय भंडारी तो संकोच तें बोल्यो नाहीं। पाछें श्रीगुसांईजी ने मजूरन तें वापें माटी डरवाय कै आप तो मंदिर में पधारे। ता पाछें दूसरे दिन भंडारी सवारे अँधियारे ही में आय कै वा ठौर खोदि कै देखे तो उहां कछू नाहीं। तब भंडारी अपने मन में पछितान लाग्यो। मन में कही, जो–काल्हि लेतो द्रव्य मुकतो हतो। ऐसे कहि कै पछितान लाग्यो।

भावप्रकाश–यामें यह जताए, जो–गुरु आगें साँचो रहे तो कार्य होंई।

सो वह कायस्थ श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र हतो। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥ १५३ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक ब्रजबासी, एक मोची–बनिया, एक ब्राह्मन तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में ब्रजबासी तो 'रोहित' गोप हैं। और मोची–बनिया 'कालिका' हैं। और कालिका की एक सहचरी हैं तिन कौ नाम 'संसया' है। सो 'संसया' यहां ब्राह्मन कौ प्रागट्य जाननो। ये 'सुगंधिनी' तें प्रगटी हैं, तातें इन कै भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीद्वारिकाजी कों पधारे। सो ब्रजबासी आप के संग हते। सो एक गाम में डेरा भए। सो वा गाम में एक बनिया जोड़ा बेचतो। सो वासों मोची कहते। सो वा मोची–बनिया कों देवी कौ वरदान हतो। सो वह जासों कहे, जो– मरि जा, सो मरि जातो। देवी वा मोची सों बोलती। सो वा मोची–बनिया की दुकान पै एक ब्रजबासी जोड़ा पहरिवे गयो। सो वा मोची ने ब्रजबासी सों मोल ठहराय कै जोड़ा पहराय दियो।

इतने में पांच –सात ग्राहक आय गए। सो उन कों जोडी दिखायवे लाग्यो। और वा ब्रजबासी ने कही, जो–तेरे दाम ले। परि वह तो लेऊ लेऊ करे और लेई नाहीं। औरन कों जोड़ी पहिरावें। सो दोइ चारि बार वा ब्रजबासी ने कही, जो–दाम ले। परि वह तो सुने नाहीं। तब वा ब्रजबासी कों रिस चढ़ी। सो जोडा सहित वा मोची कों लात मारी। तब वाने कही, जो–मरि, मरि, परि कछू न भयो। पाछें ब्रजबासी तो दाम दे कै डेरा गयो। और वह मोची उठि कै घर में जाँई कै देखे तो देवी कांपे हैं। तब इन मोची ने देवी सों कही, जो–तू कांपे क्यों है ? तेरो बचन तो नहीं चल्यो। तब देवी बोली, जो–ये तो वैष्णव ब्रजवासी श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। औरन कों सराप लगे। तैनें इन सों ऐसो कह्यो तातें मैं कांपत हूं। तब मोची ने कही, जो–तुम हू तें और बडे हैं ? तब देवी बोली, जो–मोतें बड़े वैष्णव हैं। वैष्णव तें बड़े श्रीगुसांईजी। तब उन मोची ने कही, जो–मैं उनही की सरनि जाउंगो। पाछें वह मोची जहां श्रीगुसांईजी के डेरा हते तहां आयो। सो इन ब्रजबासी के पाँइन परि कै कही, जो–मोकों वैष्णव करो। तब वा ब्रजवासी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! मोची सरनि आवत है। सो याकों सरनि लेऊगे ? तब श्रीगुसांईजी ने कही जो–मोची है ? जोड़ा बेचे हैं ? तब उन मोची ने कही, जो– महाराज ! बनिया हूं उद्यम मोची कौ है। सो अब यह उद्यम न करूंगो। कपड़ान की दुकान करूंगो। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वाकों नाम सुनायो। पाछें वा मोची ने घर आय कै जोड़ा सब बेचि डारे। रातोरात सब घर लीप्यो

पोत्यो। सवारे स्त्री कों श्रीगुसांईजी के पास नाम सुनवायो। ता दिन ब्रत किये। पाछें देवी कों तो खाड में पटकी। दूसरे दिना श्रीगुसांईजी ने स्त्री–पुरुषन कों ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछें इन बिनती करी, जो–महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–श्रीठाकुरजी की सेवा करो। पाछें आप तो एक ब्रजबासी तें आज्ञा किये, जो–याके घर जाँइ कै खासा सेवकी, सेवा की विधि कराय आउ। पाछें ब्रजबासी ने जाँइ कै सब घर खासा करवाय कै पाछें वासन बदलाए। जलघराकी बिधि सब बताई। पाछें श्रीगुसांईजी ने सेवा पधराय दीनी। और पांच सात दिन आप (वाही गाम में) डेरा राखे। सब सेवा की बिधि सिखाई। पाछें आप तो श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै ब्रज में पधारे। और ये दोऊ स्त्री–पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागें। सो एक दुकान कपड़ान की करी। पाछें नित्य सवारे उठि कै स्त्री–जन सामग्री करे। आप मंगला करि कै सिंगार धराय कै पाछें दुकान पें जातो। पाछें स्त्री सिंगार भोग, राजभोग धरे। सो यह राजभोग आर्ति समै जाँइ कै राजभोग आर्ति करे। अनोसर करि कै गाँइ कों दे कै महाप्रसाद ले कै दुकान पैं जातो। सो वाकी कपड़ान की दुकान हती।

सो एक दिना एक ब्राह्मन वैष्णव वा गाम में आयो। सो उनकी दुकान के आगें होंइ कै निकस्यो। तब मोची देखि कै, उठि कै मिल्यो। श्रीकृष्ण– स्मरन करि कै दुकान पै ल्यायो। भाव सहित बोहोत आदर कियो। पाछें अपने घर वा ब्राह्मन वैष्णव कों ले गयो। सो आप तो न्हाइ कै राजभोग आर्ति करी।

इन ब्राह्मन वैष्णव ने श्रीठाकुरजी के दरसन किये । पाछें अनोसर करि कै इन ब्राह्मन वैष्णव कों अपने घर में सब दिखाए। जो ये खासा, ये सेवकी, ये हमारी सेवकी न्यारी है। और यह श्रीठाकुरजी की खासा । यह सखड़ी, अनसखड़ी, दूधघर सब दिखायो। प्रसादी और भोग न्यारे न्यारे धरतो। सो बोहोत उज्ज्वलता सों करतो । तब यह ब्राह्मन वैष्णव उज्ज्वलता देखि कै बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें इनकों न्हवायो और पूछी, जो–तुम्हारी ईच्छा होइ तो दूधघर की सामग्री लेउ। तब इन ब्राह्मन–वैष्णव कों कछू लौकिक जाति–व्यवहार की सूधि न रही । न जाति पूछी । उज्ज्वलता देखि कै कही, जो–सखड़ी लेउंगो। न उनने इन तें पूछी। पाछें सखड़ी अन सखड़ी भली भांति सों महाप्रसाद लिवायो। पाछें बीरी ले कै ये तो गाम में गयो। मोची अपनी दुकान पै गयो। पाछें गाम में एक और वैष्णव ने ब्राह्मन वैष्णव कों देखि कै श्रीकृष्ण–स्मरन कर्‌यो। और पूछी, जो–तुम कब आए हो ? तब ब्राह्मन ने कही, जो–मैं तो सबेरेही कौ आयो हूं। तब इन पूछी, जो–उतारो कहां कियो ? तब कही, जो–अब तांई तो फलाने वैष्णव के घर है। तब कही, जो–चलो! महाप्रसाद लेउ। तब इन ब्राह्मन ने कही, जो–उनके घर महाप्रसाद लियो । तब इन वैष्णव ने कही, जो–तुम तो ब्राह्मन हो और वे तो मोची है, जोड़ा कौ ब्योपार करतो। अब सेवक भयो है। तब तें कपड़ान की दुकान कीनी है। तब यह सुनि कै इन ब्राह्मन के मन में ग्लानी आई। सो संदेह होत मात्र कपाल में सुफेद कोढ निकस्यो । तब उन कही, जो–संदेह कियो तातें यह कोढ़ भयो। पाछें बिचार कियो,

जो–अब तो श्रीगुसांईजी के पास जानो । वे कृपा करेंगे तब आछो होइगो । पाछें वह ब्राह्मन वैष्णव श्रीगुसांईजी के पास आयो । सो श्रीगुसांईजी कौ दरसन कियो । पाछें विधिपूर्वक सब समाचार श्रीगुसांईजी के आगें कहे । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–तेनें संदेह कियो तातें यह कोढ़ भयो । अब ब्रज–परिक्रमा करो । सब कुंड में न्हाइ कै सब कुंड की रज याके ऊपर लगावो । सो इन ब्राह्मन वैष्णव ने ब्रजयात्रा करी । सब कुंड की रज लगाई । सो आधो कोढ़ मिट्यो । आधो रह्यो । तब फेरि श्रीगुसांईजी के पास आई बिनती कीनी, जो–महाराज ! आधो कोढ़ तो गयो है और आधो अब हू है । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो – द्वारिकाजी के मार्ग में हरिदास की बेटी है । उनके पास जाऊ । वे आछो करि देइंगे । तब वह वैष्णव हरिदास की बेटी के पास आयो । तब उन आदर सों भली भांति सों उतारो दीनो । पाछें पूछी, जो–कहां तें आये हो ? तब इन कही, जो–श्रीगुसांईजी ने तुम्हारे पास पठायो हूं । तब वह बोहोत प्रसन्नता सों कही, श्रीगुसांईजी ने बड़ी कृपा करी । पाछें राजभोग–आर्ति करि कै दरसन करवायो । पाछें वैष्णव तें कही, जो–उठो न्हाओ । महाप्रसाद लेउ । तब वह ब्राह्मन स्नान करी कै अपरस ही में आय बैठ्यो । तब हरिदास की बेटी ने वा ब्राह्मन सों पूछ्यो, जो–सखड़ी लेउगे के अनसखड़ी लेउगे ? तब इन कही, जो–सखड़ी लेउंगो । तब इन सखड़ी महाप्रसाद धर्‍यो । सो वा ब्राह्मन ने प्रसन्नता सों लियो । पाछें महाप्रसाद ले कै वह ब्राह्मन बैठ्यो । तब हरिदास की बेटी ने पूछी, जो–तुम्हारो आवनो कैसें

भयो ? तब उन ब्राह्मन वैष्णव ने सब समाचार कहे। तब उन हरिदास की बेटी ने अपने धनी मानिकचंदजी सों जाँइ कै कही, जो–श्रीगुसांईजी ने पठाए हैं। ताते इनकों आछो कर्‌यो चाहिए। तब मानिकचंद ने कही, जो आछो होंइ सो करो। तब वह हरिदास की बेटी ने कही, जो–रुपैया दोइ हजार चाहिए। तब वैष्णव भलो होंइ। तब मानिकचंद ने कही, जो–भलो, जो खर्च होंइ सो करेंगे। तब हरिदास की बेटी ने कही, जो–सब गामन में 'कंकोत्री' लिखि कै सब वैष्णव कों बुलाओ। तब मानिकचंद ने वैसेही कियो। सो सब वैष्णव बुलाए। ध्वजा ठाढ़ी करी। मंडप रोपे। सब वैष्णव आए। सबन कों महाप्रसाद लिवायो तब हरिदास की बेटी ने इन ब्राह्मन वैष्णव तें कही, जो–सब वैष्णव महाप्रसाद ले उठे तब एक डबरा में थोरी थोरी सबन की जूंठनि भेली करि लीजो। ऐसें तीन दिन तांई लेनी। सबन की पातरि उठावनी, सब सुद्ध करनो। पाछें उन ब्राह्मन वैष्णव ने विश्वा–सपूर्वक वैसें ही एक डबरा में सबन की जूंठनि भेली करि कै आप ले गयो। सब जगह सुद्ध करी। सो दूसरे जिन कोढ़ आधो रह्यो। फेरि दूसरे दिन लीनी। तब कोढ़ चोथाई रह्यो। पाछें फेरि तीसरे दिन लीनी। तब देह कंचन सी भई। पाछें वह ब्राह्मन–वैष्णव हरिदास की बेटी सों बिदा व्है श्रीगुसांईजी के पास आयो। सो सब समाचार श्रीगुसांईजी के आगें कहे। और कह्यो, जो–महाराज ! उहां बड़ो आनंद भयो। हजारन रुपैया श्रीगोव–र्द्धननाथजी की भेंट भए। पाछें श्रीगुसांईजी की भेंट हू बोहोत भई ही सो सब श्रीगुसांईजी के पास पहोंचाए।

तातें वैष्णव कों जो करनो सो बिचारि कै करनो। और जो – बिना बिचारे करे तो संदेह न करनो।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–भगवदीय वैष्णवन में जाति–बुद्धि सर्वथा न करनी। किये तें अपराध होंई। तातें भगवदीय वैष्णव को स्वरूप अलौकिक जाननो।

सो वे ब्रजबासी, ब्राह्मन, मोची, ए तीन्यो श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ १५४ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक बनिया, एक ब्राह्मन, देवी के किवाड़ उतारि लिये, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश–ये बनिया राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'रसावेसिनी' है। और रसावेसिनी की तीन सखी और हैं। तिन के नाम 'सरसासनी', 'प्रकासिनी', 'बिलासिनी'। सो सरसासनी या बनिया की स्त्री भई। और प्रकासिनी, बिलासिनी दोऊ ब्राह्मन–ब्राह्मनी कौ प्रागट्य जाननो। ये रसावेसिनी, 'सुगंधिनी' तें प्रगटी हैं। तातें उन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे। सो मारग में या बनिया कौ गाम आयो। सो तहां आप ड़ेरा किये। सो या बनिया कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए। तब यह बनिया अपनी स्त्री सहित सरनि आयो। नाम–निवेदन पायो। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करि श्रीठाकुरजी पधराय सेवा करन लाग्यो। पाछें वा गाम में और हू वैष्णव हते, सो उहां भगवन्मंडली नित्य होंई। सो तहां ये दोऊ स्त्री–पुरुष भगवद्वार्ता सुनिवे कों जाइवे लगे। सो ऐसें करत या बनिया कों वैष्णव पर भाव बोहोत भयो। सो यह बनिया और उन की स्त्री उन के घर

जो कोऊ वैष्णव आवतो तिन कों वे आग्रह करि महाप्रसाद लिवावते । ता पाछें जो बचे तो आप लेतें, नाँतरु सेन में श्रीठाकुरजी आरोगे सो लेते । और जो कहूं अचानक वैष्णव आवते तो रसोई करि कै पुस्तक कों भोग धरि कै वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवावते । और जो रात्रि कों सेन भए पाछें मध्यरात्रि कों वैष्णव आवते तो वाही समै रसोई करि कै पुस्तक कों भोग धरि कै वैष्णव कों महाप्रसाद लिवावते ।

सो एक दिन वर्षा भई । सो उपरा लकरी सब भीजि गए । और रात्रि घरी चारि गई । तब अचानक वैष्णव आए । तब उन [illegible]-वैष्णव ने स्त्री सों कही, जो–न्हाय कै सामग्री रसोई सिद्ध करो । तब उन स्त्रीने कह्यो, जो–उपरा लकरी तो सब भींजि गए हैं । सो कैसें रसोई करें ? सो तुम जाँइ कै कहूं तें सूकी लकरी ले आवो तो रसोई सिद्ध करूंगी । तब वैष्णव ने कही, जो–या समै रात्रि कों लकरी कौन पै तें ले आउं ? परंतु तुम सामग्री काढ़ि कै स्नान करो । तैयारी करो । मैं जाऊं हूं । पाछें वैष्णव कुल्हारी बगल में ले कै गाम तें बाहिर निकस्यो । सो एक देवी कौ मंदिर हतो तामें दोइ किवाड लगे हते । सो यह वैष्णव जाँई कै सांकरि खोलि कै एक किवार उतारि, फारि कै पिछोरी में बांधि कै ले आयो । सो अपुनी स्त्री कों दीनी । तब वा स्त्रीने कही, जो–या समै सूकी लकरी ऐसी कहां तें ल्याए ? तब वा वैष्णव नें कही, जो–मैं तो देवी कौ किवार उतारि कै ले आयो, फारि–तोरि कै लकरी करि ल्यायो । परि काहू सों कहियो मति । ता पाछें रसोई करी । तब रसोई सिद्ध भई । तब भोग धरि

कै वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। पाछें भगवद्वार्ता–कीर्तन किये। पाछें बिछोना करि कै वैष्णवन कों सुवाय कै आप सोय रहे। सो उन बनिया–वैष्णव की श्रीठाकुरजी पै तथा वैष्णव पै ऐसी वात्सल्यता हती। पाछें सवेरो भयो। तब दोऊ स्त्री–पुरुष सेवा में न्हाए। मंगला सिंगार करि कै राजभोग समर्पे। समय भए भोग सराय कै आर्ति करि कै वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। पाछें आप महाप्रसाद लियो। पाछें वह वैष्णव चलन लागे। तब वह बनिया–वैष्णव उन कों बिदा करि कै नेक दूरि लों पहोंचावन गयो।

वार्ता प्रसंग–२

और इनके पारोस में स्त्री–पुरुष ब्राह्मन रहते। सो वे देवी के पुजारी हते। सो वा ब्राह्मन की स्त्री ने इन बनिया–वैष्णव की स्त्री तें पूछी, जो–तुम्हारे घर उपरा लकरी सो सब भींज गए हते और तुमने रात्रि रसोई तो बेगि करी। सो लकरी कहां तें ल्याए ? तब वा वैष्णव की स्त्रीने कही, जो–मेरो धनी जाँई कै देवी के एक किवार तोरि कै ले आयो। तब उन कही, जो–देवी तो जागती ज्योति है। सो तुम तें कछू न बोली ? तब इन कही, जो–हम तें तो न बोली।

सो वह ब्राह्मन कों नित्य दोऊ बेर ताती रसोई भाँवती। ठंडी न लेतो। सो यह वैष्णव न्हाय कै सेवा में गए तब सांझ परी। तब वा ब्राह्मन नें आय कै अपनी स्त्री तें कही, जो–तुम सूकी लकरी ले आवोगे तो हों रसोई करोंगी। तब उन ब्राह्मन ने कही, जो–अब रात्रि परी, या समय लकरी कहां तें लेह आउं ? तब इन

स्त्रीने कही, जो–काल्हि यह वैष्णव जाँइ कै देवी कौ ऐक किवार तोरि कै ले आयो है और एक है सो तुम ले आवो। तो रसोई होंई। तब उन ब्राह्मन कही, जो–देवी रूठेगी। तब उन स्त्रीने कही, जो–देवी तो गरीब है। वह तो कछू बोलेगी नाहीं। अपने पै तो त्रुठमान् है। तातें तुम जाँइ कै बेगि ले आवो। पाछें वह ब्राह्मन कुल्हारी ले कै गयो। सो जाँइ कै देवी के किवार में एक घाव कुल्हारी कौ कियो। तहां कुल्हारी वाही किवार में चिपक गई। और वा ब्राह्मन के हाथ वा कुल्हारी तें चिपकि रहे। सो बोहोत बल करे उपाइ करे। परि छूटे नाहीं। तब वह अपने मन में धिक्कार करन लाग्यो। और कही, जो–मैंने स्त्री की कही करी तातें देवी मोपै रूठी। ऐसें करत पहर रात्रि गई। तब वा स्त्रीने कही, जो–ब्राह्मन कब कौ गयो सो आयो नाहीं। तातें मैं जाँइ कै खबरि तो काढों ? सो वह ब्राह्मनी आय कै देखे तो ब्राह्मन पर्‍यो है। तब वा स्त्री ने कही, जो–लकरी फारत तुम कों नींद आइ गई कहा ? तब वा ब्राह्मन ने कही, जो–रांड ! मेरो करम फूट्‍यो है, जो तेरी कही मानी। तातें देवी मोपै रूठी। मेरे तो हाथ चिपके हैं। तब वा ब्राह्मनी ने कही, जो–मैं छुडाऊं। ऐसें कहि कै वह छुराइवे लगी। सो वाहू के हाथ चिपकि गए। तब दोऊ बोहोतेरो बल करे, परि छूटे नाहीं। तब देवी तें दोऊ बिनती करन लागे। तब देवी बोली, जो–ले जा ! मेरो किवार लेवे आयो है ? सो अब को तेरे हाथ न छूटेगें। तब इन ब्राह्मन कही, जो–न छूटेंगे तो भूखे मरि जाइंगे। तो तोकों हत्या लगेगी। तब देवी ने कही, जो–तू मेरे किवार नए करि देउ। और वा

वैष्णव के घर दोई भारा लकरी नित्य ल्यायो करि । तब वा ब्राह्मन ने कही, जो–ऐसें ही करेंगे । परि मैयाजी ! हमारे हाथ काहू तरह छूटे । तब देवीने कही, जो–हाथ तो तबही छूटेंगे जब हों तुम्हारी आछी भांति फजीती करोंगी । काहेंतें ? जो–फेरि कोऊ ऐसें न करे । ऐसें करत सवेरो भयो । तब सब गाम के मनुष्य आये । राजा आयो । सब लोग हँसन लागे और कहन लागे, जो–देवी के किवार लेवे आयो । एक तो ले गयो तोहू देवी न बोली । आज और दूसरो लेवे आयो । अब ले जा ! और वा स्त्री तें कही, जो–अब पति के हाथ छुराइ ले ! देखो, देवी कौ ऐसो प्रताप है । ऐसें सगरे दिन वा ब्राह्मन की भली भांति सों फजीती भई । सो वे तो मूंड दे कै नीचो माथो करि कै सुनिवो करे । जो–जाके मन आवे सोई कहे । ऐसें करत रात्रि भई सब मनुष्य गए । पाछें वा ब्राह्मन ने देवी तें बिनती करी, तब देवी ने कही, जो–पहिले तो तू मेरे मंदिर के किवार कराय दे । और नित्य दोई भारा लकरी वा वैष्णव के घर पहोंचायो करि । नाहीं तो खडग ले कै दोऊन के माथे काटोंगी । तब ब्राह्मन तो डरव्यो । तब हाथ छूटि गए । सो घर गए । तब उन ब्राह्मन ने देवी के किवार कराय दिये । और दोइ भारा लकरी नित्य उन बनिया–वैष्णव के घर पहोंचावे । ऐसें करत केतेक दिन भए । तब उन वैष्णव ने कह्यो, जो–अब तो सगरो घर लकरीन तें भर्यो है, राखिवे कों ठौर नाहीं । तातें अब तुम मति ल्यावो । तब उह ब्राह्मन नें हाथ जोरि कै कही, जो–हम लकरी न लावे तो देवी मारि डारेगी । तब ऊन वैष्णव ने कही, जो–तुमने देखा देखी

करी। तातें इतनो दुःख पाए। और देखो श्रीगुसांईजी कौ ऐसो प्रताप है। तब उन ब्राह्मन ने कही, जो–कृपा करि कै मोहू कों श्रीगुसांईजी कौ सेवक करि वैष्णव करो। तब उन वैष्णव कही, जो–तुम दोऊ मिलि कै श्रीगोकुल जाँई कै श्रीगुसांईजी पास नाम–समर्पन पाय आवो। और श्रीठाकुरजी की सेवा पधराय ल्यावो। तब उन ब्राह्मन ने कही, जो–देवी! हमारो पिंड नहीं छोरे हैं। तब इन वैष्णव कही, जो–हम देवी तें कहि आवेंगे। पाछें वह वैष्णव जाँय कै देवी सों कही, जो–हमारे तो लकरी बोहोत है। अब वा ब्राह्मन कौ नाम मति लीजो। तब वा देवी ने कही, जो–अब तो तुम मेरो किवार न लेउगे? तब वैष्णव ने कही, जो–अब न लेइंगे। और वह वैष्णव होइगो। तब देवी ने कही, जो–अब नहीं बोलूंगी। पाछें वा वैष्णव ने आइ कै वा ब्राह्मन तें कही, जो–देवी ने कही, जो–अब नहीं बोलूंगी। तातें अब तुम श्रीगोकुल जाँइ कै श्रीगुसांईजी के पास नाम–समर्पन करवाय कै ब्रजयात्रा करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै पाछें सेवा पधराय कै आज्ञा मांगि कै यहां आइयो। तब दोऊ स्त्री–पुरुष ब्राह्मन श्रीगोकुल आए। श्रीगुसांईजी के दरसन किए। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–तुम तो देवी के पुजारी हो। तातें सवेरे ब्रत करियो। परसों श्रीयमुनाजी में न्हाय कै अपरस में चले आइयो। पाछें दोऊ जनेंन ब्रत कियो। पाछें श्रीयमुनाजी में न्हाय कै अपरस में दोऊ जनें आय ठाढ़े भए। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै उन दोऊन कों समर्पन करवायो। पाछें वे दोऊ

आज्ञा मांगि कै ब्रजयात्रा, श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। फेरि श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, श्रीठाकुरजी की सेवा करो। पाछें श्रीगुसांईजी उन कों वस्त्र–सेवा पधराय दीनी। पाछें उन ब्राह्मन वैष्णवने श्रीगु–सांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! मैं कछू सेवा की रीति भांति जानत नाहीं। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–तोकों वह वैष्णव सब सिखाय देइगो। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ के वे दोऊ अपने घर आए। सो वा बनिया–वैष्णव तें श्रीकृष्ण–स्मरन करि कै अति प्रसन्न भए। ता पाछें वा बनिया वैष्णवने वाकों सेवा की रीति सब सिखाय दीनी। ता पाछें वह स्त्री–पुरुष ब्राह्मन वैष्णव श्रीठाकुरजी की तथा वैष्णवन सेवा आछी भांति करन लाग्यो। जो–कोई वैष्णव आवें तिन कों आदर सन्मान करि कै महाप्रसाद लिवावें। रात्रि कों भगवद्वार्ता करते। सो वा बनिया वैष्णव के संग तें वे दोऊ ब्राह्मन स्त्री–पुरुष भले वैष्णव भए।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–घर आए वैष्णव कौ समाधान जा भांति बनि आवे ता भांति अवश्य करनो। और वैष्णव कौ स्वरूप जताए, जो–वैष्णव सर्वोपरि है। तातें निशंक रहत हैं। देवी–देवता सब उन तें डरपत हैं।

सो वे बनिया वैष्णव तथा ब्राह्मन वैष्णव श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१५५॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक बीनकार, श्रीनाथजीद्वार में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'वीणा' है। ये सुंदर गावति हैं। इनकौ स्वर बीन जैसो है। तातें श्रीठाकुरजी कों ये अत्यंत प्रिय हैं। ये 'सुगंधीनी' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

ये गोपालपुर में एक सनाढ्य ब्राह्मन के जन्म्यो। सो बालपन में ये श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो, नाम पायो। पाछें ये बरस दस कौ भयो तब इनके माता पिता मरे। तब ये अपने नाना के यहां मथुरा जाँई रह्यो। सो वह बीनकार हुतो। सो बीन बोहोत आछी बजावतो। सो वानें इनकों बीन सीखायो। सो कछूक दिन में यह बीन बोहोत सुंदर बजावन लाग्यो। पाछें यह बरस बीस कौ भयो। तब याकौ ब्याह भयो। तब वह बहू कों ले अपने घर गोपालपुर में आय रह्यो। पाछें लरिका–लरिकी भए। तब इन को खान–पान कौ संकोच भयो। तब काहू ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराज! अमूको बीन बोहोत आछी बजावत है। और वह आप कौ सेवक हू है। परि वह गृहस्थी है। वाकों खान–पान कौ संकोच बोहोत है। तब श्रीगुसांईजी वाकों बुलाय कहे, जो–तू श्रीनाथजी के आगें बीन बजायो करि, और तेरो नेग लियो करि। तब या बीनकार ने बिनती करी, जो–महाराज! मोहू कों यही इच्छा ही।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह बीनकार श्रीनाथजी के सन्निधान बीन बजावतो। सो सबेरे संखनाद तें पहिले चारि घरी तें बजावतो। और सेन पाछें घरी चारि तांई बजावतो। सो ऐसी सुंदर बीन बजावतो सो उन पै श्रीनाथजी रीझ प्रसन्न भए। और श्रीगुसांईजी हू प्रसन्न रहते। सो वह बीनकार अपने घर में गृहस्थ हतो। सो उनके घर ब्याह–काज के दिन आए। सो उनकौ कछू रोजगार को हतो नाहीं। कछू महिना न हतो। श्रीनाथजी के यहां तें नेग महाप्रसाद मिलतो। सो पहिले प्रसाद कोऊ न्योछावरि सों न देते। जो कछू नेग दे तामें बचे सौ वैष्णवन कों लिवावते। सो उन बीनकार ने मन में बिचारी, जो–अब कछू गुजराति के परदेस जाँई कै द्रव्य ले आवे। तो ब्याह–काज होंइ। ऐसें अपने मन में परदेस जाइवे कौ बिचार कियो। तब श्रीनाथजी ने बिचार कियो, जो–ये तो

गुजरात जायेगो। तो बीन कौन बजावेगो ? और गृहस्थी कों तो द्रव्य बिना चले नाहीं। सो सेन पाछें जब सब अपने अपने घर गए तब श्रीनाथजी ने एक सोने की कटोरी हती सो ले कै बीन में धरि कै आप तो पोढें। पाछें जब प्रातःकाल भयो। तब बीनकार आइ कै बीन बजाइवे लग्यो। सो ये देखे तो, भीतर एक सोने की कटोरी परी है। तब बीनकार ने बिचारी, जो ये तो श्रीनाथजी की कटोरी है। ता पाछें जब श्रीगुसांईजी ऊपर पधारे। सो संखनाद करवाय कै आप भीतर पधारे। सो देखे तो सैया के पास सोने की कटोरी नाहीं। तब श्रीगुसांईजी ने मन में कही, जो–जहां होइगी तहां तें आई जाइगी। पाछें आप मंगल भोग धरि कै तिवारी में बिराजे। तब बीनकार ने वह कटोरी ले कै श्रीगुसांईजी के आगें धरी। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो–ये तेरे पास कैसें आई ? तब इन कही, जो–महाराज ! बीना में धरी हती। तब श्रीगुसांईजी आप तो अंतरयामी हैं। सो जानि गए, जो–श्रीनाथजी इन पै रीझि कै दीनी है। तब श्रीगुसांईजी ने बीनकार तें कही, जो–कटोरी श्रीनाथजी ने तोकों दीनी है सो तू राखि ले। तब बीनकार ने कही, जो–महाराज ! मैं श्रीनाथजी की कटोरी कैसें राखों ? ये तो श्रीनाथजी के पास रहेगी। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–हमारी आज्ञा है तू राखि। तब बीनकार ने कही, जो–महाराज ! आप की आज्ञा है तो ये मैनें लीनी, और मैं तो आप कौ सेवक हों। तातें मैनें भेट करी। ऐसें कहि कै आगे धरि कै दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी ने खासा करवाय कै भीतर धरी। पाछें श्रीगुसांईजी ने बीनकार के मन की जानी। सो आपने

बीनकार तें पूछी, जो–तैनें कहूं जाइवे कौ मन कियो है ? तब बीनकार ने कही, जो–महाराज ! गृहस्थ हैं सो ब्याह काज के लिए द्रव्य चहिए । तातें परदेस जाइवे कौ मन हतो । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–तू परदेस जाइवे कौ मन हतो । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–तू परदेस मति जाहि । तो पै श्रीनाथजी प्रसन्न हैं । तोकों द्रव्य चाहिए तो श्रीनाथजी के भंडार में तें दिवावे । तब बीनकार ने कही, जो–महाराज ! मैं श्रीनाथजी कौ देव–द्रव्य कैसें लेउ ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो–हमारे यहां तें देइ ? तब इन कही, जो–आप कौ गुरु द्रव्य कैसें लेउ ? तब आप कहे, जो–तोकों वैष्णव द्वारा करवाय देइंगे । परि परदेस मति जा । पाछें एक गुजरात कौ संग आयो । तामें एक वैष्णव द्रव्यपात्र हतो । सो उन तें श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, जो–यह बीनकार है, सो श्रीनाथजी कौ द्रव्य लेत नाहीं । श्रीनाथजी ने सोने की कटोरी दीनी सो याने लीनी नाहीं । हमारो हू लेत नाहीं । और श्रीनाथजी यापैं रीझे हैं । और यह तो गृहस्थ है । ब्याह में द्रव्य चहिए तातें ये तो परदेस जात है । और श्रीनाथजी कों सुहात नाहीं । सो तुम इन को ब्याह में द्रव्य लगे सो देउ । पाछें वा सेठ ने बीनकार कों द्रव्य दियो । सो उन ब्याह–काज में लगायो । पाछें जब ब्याह–काज आवे तब श्रीगुसांईजी आप वैष्णवन में सों कराय देते । उन बीनकार कों परदेस नहीं जाइवे दियो । सो उन बीनकार पै श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा श्रीगुसांईजी आप सदा प्रसन्न रहते ।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जताए, जो–श्रीनाथजी के निकट जो बस्तू रहत हैं सो सर्व

स्वरूपात्मक हैं। तातें वैष्णव कों उन में लौकिक बुद्धि करनी नाहीं। और वैष्णव कों देव-द्रव्य, गुरु-द्रव्य सर्वथा न लेनो, यह कहे।

सो वह बीनकार श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ १५६ ॥

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक प्रेमजी लुहाणा, हालार कौ वासी तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है-

भावप्रकाश-ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ भाव 'प्रेम-प्रकाशिका' हैं। ये 'सुंदरी' तें प्रगटी है, तातें उन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै हालार कौ संग श्रीगोकुल कों आयो। तामें वह प्रेमजी हू आयो। सो श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें प्रेमजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! कृपा करि कै सरनि लीजें। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै नाम सुनायो। पाछें दूसरे दिन ब्रत करवाय कै ब्रह्मसंबंध करवायो। ता पाछें संग तो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों चल्यो। तब प्रेमजी हू श्रीगुसांईजी सों आज्ञा मांगि कै गयो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। फेरि संग श्रीगोकुल आयो। तब दस-पांच दिना रहि कै संग तो ब्रजयात्रा करिवे कों चल्यो। तब प्रेमजी हू श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि कै ता संग के साथ ब्रजयात्रा कों गयो। सो केतेक दिन में संपूरन ब्रजयात्रा करि कै श्रीगोकुल आयो। पाछें श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-प्रेमजी ! ब्रजयात्रा करि आयो ? तब प्रेमजी ने कही, जो-महाराज ! आप की कृपा तें ब्रजयात्रा करी। पाछें प्रेमजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! अब

कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी प्रेमजी सों आज्ञा किये, जो–भगवत्सेवा करो। तब प्रेमजी ने बिनती करी, जो–महाराज ! सेवा सूक्ष्म होंइ तो करों। तब श्रीगुसांईजी वस्त्र–सेवा पधराय दीनी। और आज्ञा किये, जो–यही सूक्ष्म है और यही असाधारन है। जो सिंगार करो तो सिंगार करो। न बने तो वस्त्र धरावो। भोग धरो। ता पाछें प्रेमजी केतेक दिना श्रीगोकुल में रहि कै सातों स्वरूपन के दरसन किये। पाछें संग बिदा भयो तब प्रेमजी हू श्रीगुसांईजी सो बिंदा होंई कै अपने घर हलार में आयो। सो भली भांति सों सेवा करन लाग्यो। मंगला, सिंगार राजभोग करि कै अनोसर करि पाछें जो कोई वैष्णव आवे ताकों महाप्रसाद की पातरि धरतो। ता पाछें आप मेहनत–मजूरी करिवे जातो। सो उत्थापन के समै आय जातो। इतने में खरच लायक मिलि जातो। फेरि न्हाय कै उत्थापन–भोग, सेन करि कै पाछें भगवद्वार्ता में जातो। या प्रकार भली भांति सेवा करतो।

सो एक दिना प्रेमजी के मन में ऐसी आई, जो–और वैष्णव के इहां तो श्रीठाकुरजी बोलत हैं। और मैनें तो श्रीगुसांईजी सों कही, जो–सूक्ष्म साधारन सेवा पधरावो। परंतु श्रीगुसांईजी ने कही, जो–यही सूक्ष्म साधारन है और यही असाधारन है। सो ये तो कछू बोलत नाहीं। पाछें उत्थापन के समै न्हाय कै उत्थापन किये। ता समय देंखे तो समस्त ग्वालमंडली के दरसन भए। वस्त्र के तार–तार स्वरूप देखें। सगरे गादी पै स्वरूप के दरसन भए। तब मन में बिचारी , जो–मेरे मन में जो मनोरथ हतो सो श्रीगुसांईजी पूरन किये। देखो, यही असाधारन हैं। और

यही साधारन है। परि इतने स्वरूपन कौ सेवा-सिंगार मोतें कैसे बनेगो ? पाछें भोग धरे। ता पाछें भोग सरायवे गयो। सो देखें तो प्रथम हतो तेसैंई वस्त्र-सेवा हैं। तब प्रेमजी मन में कहे, जो-श्रीगुसांईजी तो परम दयाल हैं। जैसें भक्तन के मन कौ मनोरथ होंई सो पूरन करे हैं। पाछें प्रेम-भाव सहित प्रेमजी भली भांति सों सेवा करतो। भगवद् मंडली में जातो। सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे।

भावप्रकाश-यामें यह जताए, जो-वैष्णव कों श्रीगुसांईजी के बचन में विस्वास राखनो। और सेवा भाव-प्रीति संयुक्त करनी। तो प्रभु अनुग्रह करि सानुभावता जनावें।

सो वे प्रेमजी श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इन की वार्ता पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ १५७ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक वृंदावनदास, छबीलदास, आगरे के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश-ये तामस भक्त हैं। लीला में वृंदावनदास 'आराधिका' है, और छबीलदास 'प्रबोधिका' है। ये दोऊ 'सुंदरी' ते प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग-१

सो उन वृंदावनदास छबीलदास कौ आपुस में बड़ो सनेह हतो। सो ये दोऊ सेवक न हते, परि संतदास के घर नित्य मंडली में रात्रि कों भगवद्वार्ता सुनिवे कों जाते। सो एक दिन वार्ता में ऐसो प्रसंग आयो, जो-जिन कों नाम(दीक्षा) न होंइ तिनके हाथ कौ जल नहीं लेनो। सो सुनि कै वृंदावनदास और छबीलदास ने बिचारी, जो-अपने हाथ कौ जल कोई वैष्णव न लेइगो। तातें अब तो श्रीगुसांईजी के पास नाम पावनो। तब ही

जल लेनो। ऐसें वृंदावनदास ने कही। तब छबीलदास ने कही, जो–ऐसें कैसें बने ? मोकों तो जल लिये बिना न चलेगो और श्रीगोकुल तो यहां मँजलि एक है। सो जल बिना क्यों चले ? तब वृंदावनदास ने कही, जो–तुम लीजो। परि मैं तो नाम पाउंगो तब ही जल लेउंगो। ता पाछें सवेरो भयो तब दोऊ जन श्रीगोकुल कों चले। सो सेन पाछें श्रीगोकुल आये। सो श्रीगुसांईजी अपनी बेठक में बिराजे हते। सो ये दोऊ जनें आय कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो–वृंदावनदास ! कब आये ? तब कही, जो–राज के दरसन अब ही आय कै किये हैं। पाछें दोऊन बिनती करी, जो–राज ! आपकी सरनि आए हैं। सो कृपा करि कै सरनि लेउ। नाम सुनावो। तब आपने कही, जो–सवारे नाम सुनावेंगे। तब छबीलदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! वृंदावनदास ने तो जल हू नाहीं लीनो है। उह तो कहत है, जो–जब नाम पाउंगो तब जल लेउंगो। इनकौ गलो सूक्यो है। बोल्यो हू नाहीं जात है। और मैनें तो जल लीनो है। तब इनकी ताप–आतुरता देखि कै श्रीगुसांईजी ने कही, जो–आगें आउ। ता पाछें दोऊन कों नाम सुनायो। पाछें खवास तें आज्ञा करी, जो–उनको प्रसादी जल लिवाउ। तब खवास नें प्रसादी जल लिवायो। सो गुलाब जल पधराय कै श्रीनवनीतप्रियजी कों अरोगावते, सो प्रसादी जल लेत ही इन कों बड़ो सुख भयो। सीतलता भई। पाछें श्रीयमुना जल लिवायो। तब दोऊन कों तृप्ति भई। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–महाप्रसाद लेउ।

तब वृंदावनदास नें कही, जो–महाराज ! जल तें मन तृप्त होंइ गयो है। अब तो आप आरोगो पाछें धीरे धीरे लेइंगे। पाछें आप पोथी खोली, कथा कही। सो दोऊ जनें सुनि कै अत्यंत प्रसन्न भए। पाछें आप भोजन करिवे कों पधारे। सो भोजन करि आप पधारे पाछें दोऊन कों जूंठिन की पातरि धरी । सो इनने महाप्रसाद लियो। पाछें जगह बताई तहां। दोऊ सोय रहे। सो सवेरे उठि कै श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब वृंदावनदास छबीलदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! कृपा करि कै निवेदन कराइए। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो ब्रत करो। तब दोऊन बिनती कीनी, जो–महाराज ! जो– आज्ञा। परि कृपानाथ ! बीच में एक दिन जायगो। तातें आज ही कृपा करो तो आछो। तब इन कौ विरह–ताप देखि के आप तो कृपाल है सो आज्ञा दिये, जो–तुम मंगला के दरसन करि कै यहां बैठे रहियो। और खवास तें आज्ञा करी, जो–सिंगार के दरसन समय दोऊन कोन न्हवाय कै अपरस में, पाछें खबरि करियो। पाछें मंगला के दरसन भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप तो श्रीनवनीतप्रियजी के सिंगार करन लागे। पाछें खवास ने इन कों अपरस में न्हवाय के बैठाए। तब सिंगार करि कै दोऊन कों श्रीगुसांईजी आप कृपा करि निवेदन करवायो। पाछें राजभोग धरि आप बाहिर पधारे। समय भये भोग सराय राजभोग आर्ति किये। ता पाछें अनोसर करि कै श्रीगुसांईजी आप बैठक में पधारे। तब वहां वृंदावनदास छबीलदास ने भेट करी। पाछें आप भोजन कों पधारे। सो भोजन करि कै वृंदावनदास

छबीलदास कों जूंठिन की पातरि धरी । सो दोऊ जनेंन ने महाप्रसाद लियो । ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, जो–सेवा करो । तब वृंदावनदास छबीलदास ने बिनती कीनी, जो–महाराज ! कृपा करि कै श्रीठाकुरजी पधराय देउ । तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै सेवा पधराय दीनी । और आज्ञा कीनी, जो–हृषिकेस कौ सत्संग करियो । तब इन कही, जो–राज ! हृषिकेस हमारे काका लगत हैं । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो तब तो तुम्हारो घर एक है सो तुमकों सेवा की विधि सब बताय देइंगे । पाछें वृंदावनदास छबीलदास दोऊ श्रीगु–सांईजी सों बिदा होंइ के आगरा आए । सो हृषिकेस तें सब समाचार कहे, जो–श्रीगुसांईजी आज्ञा किये हैं तातें सेवा की रीति भांति सब सिखावो । तब हृषिकेस ने सब विधि पूर्वक खासा सेवकी सब सेवा कौ प्रकार बताय दिए । पाछें दोऊ जनें भली भांति सों सेवा करन लागे । सो ओसरे सों सेवा करते । एक दिन सिंगार वृंदावनदास करे, एक दिन छबीलदास करे । तब वृंदावनदास सामग्री करे । दूसरे दिन सिंगार वे करे तब सामग्री वे करें । ऐसें एक तें ऐक चढती सामग्री–सिंगार होडा होडी सों हुलास तें करते । प्रहर दिन चढ़े राजभोग आर्ति करि कै गाँई कौ महाप्रसाद दे कै वैष्णवन कों भाव सहित महाप्रसाद लिवावते । वैष्णवन पैं बड़ी प्रीति राखते । पाछें महाप्रसाद ले उद्यम–ब्योपार करिवे जाते, सो उत्थापन के समै तांई जो प्राप्त होंई सो ले कै घर आवते । पाछें न्हाय कै सेन पर्यंत सेवा सों

पहोंचि पाछें भगवद्वार्ता मंडली में जाते। सो उहां वार्ता सुनि कै बडे प्रसन्न होते। गदगद कंठ रोमांच होइ आवते। पाछें दोऊ जनें घर आई कै घोखते। ऐसें बड़ो प्रेम उत्पन्न दोउन कों भयो। सो वृंदावनदास की अनेक वार्ता है।

पाछें एक समय श्रीगुसांईजी आगरे पधारे। सो रूपचंदनंदा के घर उतरे। तब सब वैष्णवन ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो– महाराज ! वृंदावनदास छबीलदास आप के सेवक भए हैं। सो ये दोऊ जनें श्रीठाकुरजी की सेवा–सामग्री में बड़े चतुर हैं। और भगवद्वार्ता में बड़ो प्रेम विस्वास है। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। सो उन पै श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जताए, जो–वैष्णव कों टेक चहिए। और भगवत्सेवा कौ स्वरूप बताए, जो–नित्य–नौतन सामग्री सिंगार उत्साहपूर्वक करने।

सो वे वृंदावनदास छबीलदास श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ १५८ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक स्त्री–पुरुष, ब्राह्मन, गुजरात के, सो स्त्री रूख के नीचे द्रव्य लेइवे गई, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये दोऊ सात्विक भक्त हैं। लीला में इन को नाम 'कलसिका' 'कर्णिका' हैं। सो स्त्री 'कलिसिका' कौ प्रागट्य है और पुरुष 'कर्णिका' कौ प्रागट्य जाननो। ये दोऊ 'सुंदरी' तें प्रगटी हैं। तातें उन के भावरूप हैं।

ये दोऊ गुजरात में ब्राह्मन के जन्मे। सो दोऊन कौ ब्याह भयो। पाछें दोऊन के माता–पिता मरे। तब दोऊ बरस पचीस–तीस के हे। सो दोऊन आपुस में बिचार किये, जो–होंई तो कासी विस्वेस्वर के दरसन करि आवे। पाछें दोऊ कासी विस्वेस्वर के दरसन कों गुजरात तें चले। सो केतेक दिन में कासी आए। सो ता समै श्रीगुसांईजी आप कासी बिराजत हुते। सो उहां विस्वेस्वरजी के मंदिर आगें मायावादिन तें सास्त्र–चर्चा कर रहे हते।

तहां इन स्त्री–पुरुष कों श्रीगुसांईजी आप के दरसन भए। सो महा अलौकिक दरसन भए। तब दोऊन के मन में आई, जो,–इन के सेवक हूजिए तो आछो। पाछें श्रीगुसांईजी मायावादिन कों निरुत्तर करि सेठ पुरुषोत्तमदास के उहां पधारे। तब ये दोऊ स्त्री–पुरुष हू श्रीगुसांईजी के संग आए। पाछें पुरुष बिनती कियो, जो – महाराज! कृपा करि हम कों सेवक कीजिए। हम आप के सरनि आए हैं। तब श्रीगुसांईजी हँसि के आज्ञा किये, जो–ब्राह्मन! तुम तो विस्वेस्वरजी के दरसन कों आये हो? सो दरसन क्यों नाहीं किये? तब पुरुष बिनती कियो, जो–महाराज! आप के दरसन भए पाछें अब कौन के दरसन करें? तातें कृपा करि बेगि सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी इन की आतुरता देखि दोऊन कों नाम दे कै सेवक किये। पाछें दूसरे दिन निवेदन कराए। तब पुरुष ने बिनती कीनी, जो–महाराज! अब कहा कर्तव्य है? तब श्रीगुसांईजी आप दोऊन कों आज्ञा किये, जो–तुम माहात्म्य प्रीति संयुक्त भगवत्सेवा करो। तब उन बिनती कीनी, जो– महाराज! सेवा कौ स्वरूप कृपा करि समझाइए तो आछौ। तब श्रीगुसांईजी वाकों 'सेवाफल' ग्रन्थ पढाए। ता पाछें वाकौं सेवा कौ स्वरूप समझाए। तब पुरुष बिनती कियो, जो–महाराज! कृपा करि भगवत्स्वरूप पधराय दीजिए, तो सेवा करें। तब श्रीगुसांईजी वाकों एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दिये। और आज्ञा किये, जो–निष्कंचन भाव सों परम प्रीति संयुक्त इन की सेवा करियो। पाछें वे दोऊ स्त्री–पुरुष भगवत्स्वरूप पधराइ, श्रीगुसांईजी सों बिदा व्है अपने देस कों चले। सो कछूक दिन में अपने घर आए।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे दोऊ निष्कंचनता सों सेवा करते। सो श्रीठाकुरजी की सेवा बोहोत प्रीति–भाव सों करते। सो पुरुष कौ श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे। सो ऐसें करत केतेक दिन भए। सो एक दिन श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक सेठ, तिन के घर दरसन करिवे कों स्त्री गई हती। सो उहां वैभव बोहोत देख्यो। सो देखि कै घर आय कै स्त्री न्हाई नाहीं। ओर सोइ रही। तब बाहिर सों वाकौ पुरुष आयो। तब वाने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो–तू सेवा में न्हाई क्यों नाहीं? तब स्त्री वातें कह्यो, जो–आज तुमही न्हाउ। तब पुरुष न्हाय कै सेवासों पहोंचि कै स्त्री के पास आय

कै पूछ्यो, जो–तोकों भयो कहा ? तब स्त्रीने कही, जो–मैं तो सेवा तब करूं जब वैभव सों करों। तब पुरुष ने कही, जो–आछो ! वैभव सों करियो। पाछें दोऊ स्त्री–पुरुष सवेरे उठे। सो उठि कै पुरुष ने स्त्री सों कह्यो, जो–तू एक काम करि। तब स्त्रीने कही, जो– कहा ? तब पुरुष ने कही, जो–यहां तें कोस एक ऊपर एक रूख है। सो तहां जाँय कै ता रूख के नीचे खोदियो। सो द्रव्य निकसेगो। सो टोकरी भरि, ल्याय कै वैभव सों सेवा करियो। तब स्त्री वा रूख नीचे गई। तब द्रव्य निकस्यो। सो टोकरी भरी। तब रूख में सों बानी भई। जो–हम कों तू कछू दे जा। तब द्रव्य ले जा। तब स्त्रीनें कही, जो–तुम कों कहा चहिए ? तब वाने कही, जो एक झारी कौ फल दे जा, तब यह द्रव्य की टोकरी ले जा। तब याने कही, जो–येतो न देउंगी। तब वाने कही, जो–अधिक होंइ सो तू राखियो। घटती होंइ सो मैं राखूंगो। अब तू अपने मन सों बिचारि, जो–तू कितनी झारी भरे है ? तब वह स्त्री अपने घर आई। सो सब समाचार अपने पुरुष सों कहे। तब पुरुष ने कह्यो, जो–निष्कंचनता सों झारी भरे, सेवा करे, ताके फल कौ कहा कहनो। एक एक पेंड कौ फल सौ अश्वमेध यज्ञ तें ही ज्यादा है। अब तू बिचारि, जो–झारी कौ फल कितनो है और ये द्रव्य कितनो है ? पाछें वह स्त्री ने कबहू द्रव्य की कामना कीनी नाहीं। और अपने मन में कहे, जो– मैं झारी ही भरिवो करूंगी। सो वह स्त्री निष्कंचनता सों झारी भरे, और सेवा करे। तब श्रीठाकुरजी इन कों हू अनुभव जतावन लागे। सो वे स्त्री–पुरुष निष्कंचनता सों सदैव सेवा करते।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो– कोऊ निष्कंचन दीन व्है निष्काम भाव सों भगवत्सेवा करत है, तापें श्रीठाकुरजी आप प्रसन्न होत हैं। और झारी कौ माहात्म्य जताए, जो–वाके बराबरि कोऊ फल नाहीं।

सो वे स्त्री–पुरुष श्रीगुसांईजी के ऐसें भगवदीय कृपापात्र सेवक हते। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ १५९ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक भगवदीय, एक तादृसी, गुजरात के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश–ये दोऊ राजस भक्त हैं। लीला में 'कमलाक्षी' और 'हिरणाक्षी' इन के नाम हैं। सो भगवदीय तो 'कमलाक्षी' कौ प्रागट्य जाननो और 'हिरणाक्षी' तादृसी हैं। ये 'मधुरा' तें प्रगटी है, तातें उन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब ये दोऊ भगवदीय, तादृसी सेवक भए हैं। सो श्रीगुसांईजी की कृपा तें दोऊन में भगवद्धर्म दृढ़ हतो। सो वे भगवदीय वैष्णव 'राजनगर' में रहते। और वे तादृसी वैष्णव 'धोलका' में रहते। परि उन दोऊन कौ मिलाप न भयो हतो। परंतु भगवदीय के मन में हती, जो–उन तादृसी वैष्णव सों मिलनो। सो एक समै इन भगवदीय वैष्णव की बेटी कौ विवाह आयो। तब इन भगवदीय वैष्णव ने 'कंकोत्री' वैष्णवन कों लिखि पठाई। सो उन तादृसी वैष्णव कों हू लिखी। जो–अपने बेटी कौ विवाह है। सो तुम कृपा करि कै पधारोगे।

सो ए दोऊ स्त्री–पुरुष सेवा सों पोहोंचि कै राजभोग–आर्ति करि कै एक दोय वैष्णवन कों नित्य महाप्रसाद लिवावते। पाछें आप महाप्रसाद लेते। फेरि उत्थापन तें सेन पर्यंत सेवा करि कै

पाछें श्रीठाकुरजी कों सेन करावते। पाछें और गाम कै वैष्णव आवते। सो भगवद्वार्ता कीर्तन नित्य करते। उनके घर मंडली होती।

पाछें ब्याह के दिन आय पहोंचे। तब सवारे बेगि उठि कै सेवा सिंगार राजभोग सों पहोंचि कै पाछें लौकिक कार्य कियो। पाछें सब वैष्णव कों बुलाए। सो उन ताद्दसी वैष्णव के मन में ऐसी हती, जो–इन भगवदीय वैष्णव की परीक्षा लेनी। तातें जब कन्यादान कौ समय होइ तब चलेंगे। ऐसें बिचारि कै उहां तें निकसे। सो या वैष्णव भगवदीय के गाम के बाहिर आय बैठे। और पांच– सात वैष्णव संग आए हते। तामें तें एक वैष्णव कों पठायो। और कही, जो–जा समै कन्यादान कौ समै होंइ ता समै उन कों खबरि करियो। सो वह वैष्णव उहां जाय बैठ्यो। पाछें जब कन्यादान कौ समै भयो तब उन कही, जो–वह ताद्दसी वैष्णव आये हैं। तब यह सुनि कै वह भगवदीय वैष्णव उठे। सो पांच–सात वैष्णव संग ले कै उन ताद्दसी के साम्हे जाँइ कै श्रीकृष्ण –स्मरन करि कै अति हरख सों मिलि कै अपने घर पधराय ल्याये। पाछें उन कों स्नान करवाय कै सबन कों महाप्रसाद लिवायो। बिछौना करि कै सबन कों सुवाए। पाछें आप विवाह कार्य में गए। तब ब्राह्मन ने कही, जो–लगन घरी तो निकसि गई। तब भगवदीय वैष्णव ने कही, जो–और लगन घरी देखो। तब ब्राह्मन ने और घरी देखी। सो घरी दोइ पाछें मुहूर्त हतो । सो वा समै लगन कन्यादान करि कै पाछें जब पाछिली रात्रि घरी छह रही तब वे दोऊ स्त्री–पुरुष सेवा में न्हाए।

सो स्त्री ने तो सामग्री सिद्ध करी । उन भगवदीय वैष्णव ने श्रीठाकुरजी कों सिंगार करि कै राजभोग समर्प्यो । समय भए भोग सराय राजभोग–आर्ति करि कै इन तादृसी वैष्णव कों श्रीठाकुरजी के दरसन कराये । पाछें श्रीठाकुरजी कों अनोसर करि कै पाछें इन वैष्णवन कों न्हवाय कै महाप्रसाद सब वैष्णवन कों लिवायो । पाछें लौकिक कार्य करन लागे । तब उन तादृसी ने मन में बिचारी, जो– मैं इन भगवदीय की परीक्षा लीनी । सो लौकिक कार्य में तो यह भगवदीय कुसल है । परंतु अब अलौकिक में परीक्षा लेनी । पाछें जब उत्थापन कौ समय भयो तब दोऊ स्त्री–पुरुष न्हाय कै सेन पर्यंत सेवा तें पहोंचि कै फेरि इन वैष्णवन कों ब्यारु करवाय कै बिछौना करन लागे । तब इन तादृसी ने कही, जो–हम तो श्रीठाकुरजी की देहरी में सिरहानो धरि कै सोवेंगे । तब उन भगवदीय ने उहांई बिछोना करि दियो । पाछें उन वैष्णवन कों सुवाय कै पाछें आप लौकिक कार्य करन लागे । ता पाछें सवेरे बेगि न्हाय कै वह स्त्री जन तो रसोई में गई । और यह वैष्णव आप न्हाय कै अपरस पहरि कै आय कै देखे तो यह तादृसी वैष्णव सोवे हैं । तब इन मन में बिचार कियो, जो–अब मैं इन तादृसी कों नींद में तें कैसें जगाउं ? और ये जागे तब श्रीठाकुरजी के किवाड़ खुले । देहरी ऊपर माथो है । सो मंदिर में कैसें जाँय ? ऐसें बिचार करि कै पाछें तिलक–मुद्रा करन लागे । पाछें जप करन लागे । और इन तादृसी के मन में इन की परीक्षा लेनी, तातें जागें तो हैं परि बोले नाहीं । ऐसें करत रसोई होइ चुकी और जप हू करि चुके । पाछें

ठाढ़े रहे। परंतु उन वैष्णव कों जगावे नाहीं। ऐसें बिचारे, जो–यह वैष्णव नींद में सोवत है। सो मैं इनकों कैसें जगाऊं? ऐसें बिचार कै ठाढ़े होंय रहे। सो ठाढ़े ठाढ़े पहर एक भयो। तब इन तादृसी ने मन में बिचारी, जो–यह तो संपूरन भगवदीय है। तातें अब तो श्रीठाकुरजी के नित्य कौ राजभोग कौ समय भयो है। तातें अब उठें। पाछें यह तादृसी वैष्णव अचानक उठे। सो उन भगवदीय वैष्णव तें कही, जो– तुम ठाढ़े होंइ रहे? तब इन वैष्णव ने कही, जो–मैं तो अब ही न्हाय कै आयो हूं। ऐसें कहि कै पाछें धोती–उपरेना पहरि कै मंदिर के किवाड़ खोले। पाछें श्रीठाकोरजी कों जगाय कै मंगल–भोग धरि कै बेगि बेगि सिंगार करि कै राजभोग समर्पे। समय भए भोग सराय आर्ति करि अनोसर करि कै पाछें इन वैष्णवन कों स्नान करवाय कै महाप्रसाद लिवायो। पाछें इन तादृसी ने मन में बिचारी, जो–मैं तो इन की परीक्षा लीनी। सो यह पूरो भगवदीय है। तातें अब ब्याह तो होंइ चूक्यो है। तातें अब अपने घर कों चले। सो इन भगवदीय तें कही, जो–हमने तुम्हारी परीक्षा लीनी सो तुम भगवदीय हो तामें संदेह नाहीं। अब हम अपने घर जाँइगे तातें आज्ञा देऊ। तब इन भगवदीय ने तादृसी वैष्णव सों कह्यो, जो–कृपा करि मेरे घर दोइ–चार दिना और हू रहो। तब उन तादृसी ने कही, जो–अब तो चलेंगे। पाछें दोऊ स्त्री–पुरुष उनकों बिदा किए। सो कोस दोइ लों वे दोउ स्त्री–पुरुष तथा और हू वैष्णव उनको पहोंचावन गए। पाछें बिदा करि कै सब अपने अपने घरकों आए। पाछें इन भगवदीय ने अपने मन में

बिचारी, जो–इन तादृसी नें तो परीक्षा लीनी । परि अब तादृसी की परीक्षा आपुन लेइंगे । ता पाछें केतेक दिन भए । तब उन तादृसी वैष्णव की स्त्री की देह छूटी । तब तादृसी वैष्णव ने मन में बिचारी, जो–श्रीठाकुरजी की सेवा तो दोइ बिना आछें नहीं होंइ । तातें अब और विवाह करे तो आछो । सेवा में सहाय होंइ । सो वाही गाम में एक कन्या हती । सो प्रोहित कों बुलाय कै लगन लिखाए । और सब वैष्णवन कों पत्रिका लिखी । सो इन भगवदीय वैष्णव कों हू लिखी । तब इन भगवदीय वैष्णव ने मन में बिचारी, जो–अब इन तादृसी वैष्णव की परीक्षा लेनी । सो जा समै वरघोड़ा में चढ़ि कै लगन करिवे कों जाँइ ताही समै पहोंचनो । ऐसें बिचारि कै पांच–सात वैष्णव और संग ले कै भगवदीय वैष्णव चले । सो वरघोड़ा पैं चढ़े ताही समै खबरि पहोंची, जो–भगवदीय वैष्णव आये हैं । तब वह तादृसी घोड़ा छोरि कै साम्हे गए । सो श्रीकृष्ण–स्मरन करि आदर सों अपने घर में पधराए । पाछें स्नान भोजन, करवाय कै बिछौना करि कै इन कों सुवाय कै ता पाछें ब्याह करिवे गए । तब ब्राह्मन ने कही, जो–लगन घरी तो बीति गई । तब इन कही, जो–और दूसरो लगन काढ़ो । पाछें लगन, घरी दोइ पाछें मुहूर्त हतो । सो ब्याह करि कै अपने घर आए । ता समै घरी चारि रात्रि हती । तब यह तादृसी वैष्णव न्हाय कै श्रीठाकुरजीकी रसोई की सेवा करन लागे । सो रसोई बालभोग की सामग्री सिद्ध करि कै पाछें श्री–ठाकुरजी कों जगाय कै मंगला भोग धरि कै सिंगार करि राजभोग समर्प्यो । पाछें यह भगवदीय वैष्णव देह कृत्य करि कै

दंतधावन किये। पाछें इन सबन कों न्हवाये। पाछें समय भए भोग सराय कै आर्ति करि कै इन भगवदीय वैष्णव कों श्रीठाकुरजी के दरसन करवाए। पाछें अनोसर करि कै इन वैष्णव कों महाप्रसाद लिवायो। तब इन भगवदीय वैष्णव ने मन में बिचारी, जो–ये तो पूरे तादसी हैं। लौकिक में तो इनकी परीक्षा लीनी। परंतु अब अलौकिक में देखें, ये कैसें है ? पाछें उत्थापन कौ समय भयो। तब यह तादसी वैष्णव स्नान करि कै उत्थापन–भोग, संध्या–भोग सेन–भोग धरि कै सेन–आर्ति करि कै श्रीठाकुरजी कों पोढ़ाय कै पाछें भगवद्वार्ता करते। सो भगवदीय वैष्णव भगवद्वार्ता करन लागे। सो करत करत सवेरो होइ गयो। घरी दोइ चारि दिन चढ्यो। ऐसें नित्य करें। तब इन भगवदीय ने मन में बिचारी, जो–ये तो संपूरन तादसी हैं। तातें अब श्रीठाकुरजी कों अवेर होंइ, जो–नित्य या समय राजभोग आर्ति होंइ। सो अब उठो स्नान करो। तब तादसी उठि कै स्नान करि कै श्रीठाकुरजी कों जगाय कै मंगल–भोग धरि कै रसोई की सामग्री बालभोग की सब सिद्ध करी। पाछें सिंगार करि कै राजभोग समर्पि कै आर्ति करि कै श्रीठाकुरजी कों अनोसर करि कै पाछें उन वैष्णवन कों स्नान करवाय कै महाप्रसाद लिवायो। पाछें वह भगवदीय ने चलिवे की तैयारी करी। तब उन तादसी ने कही, जो–मेरे घर दोइ चारि दिना कृपा करि कै रहो। तब उन कही, जो–अब तो चले तो आछौ है। पाछें उन सों बिदा भए। अति प्रसन्नता सों अपने घर आए। सो उन वैष्णवन कों श्रीगुसांईजी पै, श्रीठाकुरजी पै, वैष्णवन पै, ऐसो भाव हतो।

भावप्रकाश–या वार्ता में बड़ो संदेह है, जो– तादृसी, भगवदीय वैष्णवन की परीक्षा सर्वथा नाहीं करनी, जो–करें तो अपराध होंई । ऐसो श्रीआचार्यजी आप कुंभनदास प्रभृति वैष्णवन कों आज्ञा किये हैं । और इन तादृसी–भगवदीय दोऊन आपुस में परीक्षा किये ? ताकौ कारन कहा ? तहां कहत हैं, जो–इन दोऊ परीक्षा के मिष तादृसी भगवदीय के धर्म प्रगट किये हैं । जो–तादृसी, भगवदीयन के धर्म ऐसें होत हैं । तातें आगें के जीवन को अहंकार न होंई । और जो–कोऊ साधारन वैष्णव होंइ (कै) तादृसी भगवदीय की परीक्षा करे तो वाकों बाधक होंई । परि ये तो दोऊ असाधारन वैष्णव हैं, तातें आगें के जीवन कों सिक्षार्थ या प्रकार चरित्र किये । यह भाव जाननो ।

सो वे दोऊ तादृसी और भगवदीय श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥ १६० ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक, एक वैष्णव, जाकों श्रीगिरिराज ऊपर चढ़ते देखि श्रीगुसांईजी ने अपनो मस्तक हलायो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं । लीला में इन कौ नाम 'मुक्ता' है । ये 'मधुरा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं ।

ये गुजरात में एक बनिया के जन्म्यो । सो यह बरस दस कौ भयो तब इनके माता–पिता मरे । पाछें गाम में वैरागी आए । सो याकों वैरागीन कों संग भयो । सो कछूक दिन में वे वैरागी वा गाम तें कासी कों चले । सो येहू इन के संग चल्यो । सो कासी आयो । सो वह वैरागीन के संग कासी में रह्यो । ता पाछें वह बरस सत्ताईस कौ भयो । तब याके मन में आई, जो–हों कबहू मथुरा–वृन्दावन देख्यो नाहीं । तातें व्रज–यात्रा करों तो भलो है । सो ये कासी तें चल्यो सो मथुरा आयो । तहां विश्रांत स्नान कियो । पाछें श्रीगोकुल कों चल्यो । सो श्रीठकुरानी घाट पै आयो । सो ता समै श्रीगुसांईजी आप ठकुरानी घाट पै संध्यावंदन करत हे । सो इन दरसन पायो । सो दरसन करत ही याके मन में आई, जो–इनके सेवक होंइए तो आछौ है । पाछें ये बिनती कियो, जो–महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए । तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो–श्रीयमुनाजी में न्हाय लेऊ । तब यह श्रीयमुनाजी में स्नान कियो । पाछें श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करि कै नाम–निवेदन कराए । ता पाछें यह वैष्णव कछूक दिन श्रीगोकुल में रहि कै श्रीगुसांईजी के दरसन किये । ता पाछें यह श्रीगुसांईजी सों बिदा व्है श्रीगोवर्द्धन आयो । सो

तहां श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । पाछें गोवर्द्धन पर्वत की सोभा देखे । सो वाकौ मन उहां लगि गयो । सो उहांई रह्यो । और कहूं गयो नाहीं ।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप श्रीजीद्वार पधारे है । तहां सब वैष्णव साथ हुते । सो तहां देखे तो श्रीगुसांईजी आप या वैष्णव कों पर्वत के ऊपर चढ़त देख्यो । सो उतार पर दोऊ गेल पर गोबर देख्यो । तब उह वैष्णव राह छोड़ि कै गोवर्द्धन कों पग लगाय उपर चढ्यो । तब श्रीगुसांईजी देखि कै सिर हलायो । तब और वैष्णव पास बैठे हुते तिन पूछी, जो–महाराजाधिराज ! यह सिर हलायो सो कारन कहा है ? सो कह्यो, चहिए । तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों कहे, जो–श्रीगोवर्द्धन मनिमय जटित साक्षात् भगवद्स्वरूप हैं । ता पर मूढ–मूरख हैं सो या भांति सों श्रीगिरिराज के ऊपर चढ़त हैं । और श्रीगोवर्द्धन पर्वत के ऊपर दोड़त हैं । सो तहां 'ब्रह्मवैवर्त पुरान' कौ एक इतिहास है । सो श्रीगुसांईजी आप कहे–

जो– एक बार श्रीकृष्णचंद्रजी और नारदजी आप बैठें हते । तब श्रीकृष्णचंद्रजी ने नारद सों कह्यो, हम पानी–प्यासे हैं । तब श्रीनारदजी पानी कों चले । सो आगें जाँइ कै देखें तो एक बड़ो सरोवर है । ताके पास दोई लरिका बैठे हैं । सो तपस्या करत हैं । और पास बड़ो पर्वत हाड़न कौ ढेर पर्‍यो है । जो–वह देखि कै नारदजी फिर आए । तब श्रीठाकुरजी पूछे, जो–जल ल्याए नाहीं ? तब इन सब वृत्तांत कह्यो । सो सुनि कै आप मुसिकाए । तब श्रीनारदजी ने पूछ्यो, जो–महाराजाधिराज ! याकौ कारन

कौन भांति सों है ? सो आप कहिये। तब श्रीठाकुरजी आप श्रीमुख सों कह्यो, जो–ये दोऊ योगेस्वर हैं, सो गोवर्द्धन पर्वत के दरसन के लिये तपस्या करत हैं। सो ऐते जन्म भए हैं। सो इन के अस्थिन कौ पर्वत भयो है। सो जब कृपा होइगी तब दरसन होइंगे। अज हू ढ़ील है। सो श्रीगोवर्द्धन लीलात्मक भगवत्स्वरूप आनंदमय हैं। सो ऐसें हैं। सो गोवर्द्धन पर्वत आपुन कों श्रीआचार्यजी महाप्रभुन आपकी कानी करि कै दरसन देत हैं। परि जीव कों ज्ञान नाहीं है। तातें हमने माथो हलायो। जो–श्रीगोवर्द्धन हरिदासवर्य हैं। सो ऐसें कहि कै या वैष्णव के मिष सब वैष्णवन कों सिक्षा दीनी।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जताए, जो–श्रीगोवर्द्धन पर्वत महा अलौकिक हैं। काहेतें, जो उन में सकल लीला विद्यमान हैं। तातें ये आनंदमय भगवत्स्वरूप ही हैं। सो वैष्णव कों उनके ऊपर पाँव धरनो नाहीं। भगवत्सेवा, भगवत्दर्सनार्थ ऊपर चढनो परे तो हू दंड़वत करि पाछें गेल–गेल जानों। और ठौर पाँव नहीं धरनो। नाँतरु लीलान कौ अतिक्रम होंई। तो जीव लीला तें बाहिर परे।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ १६१ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक विरक्त ब्राह्मन वैष्णव, गुजरात कौ, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है–

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'भाव–निपूणा' हैं। ये श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंग सखी हैं। 'मधुरा' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

ये गुजरात में एक ब्राह्मन के जन्म्यो। सो बालपने सों विरक्त दसा में रहे। सो बरस बीस कौ भयो तब इनके माता–पिता मरे। सो याकौ ब्याह भयो नाहीं। तब ये तीरथ को चल्यो। सो पहिले मथुराजी में आयो। तहां इनकों एक वैष्णव सों मिलाप भयो। सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ सेवक हुतो, विरक्त हुतो। सो या ब्राह्मनने वासों पूछ्यो, भाई ! कोई ऐसो

महापुरुष है, जो–या जन्म–मरन की व्याधि तें छुडावे ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो–हां हां ! श्री विट्ठलनाथजी गुसांई ऐसें ही हैं। उनके सरनि जाँइवे तें सगरो अज्ञान दूरि व्है महासुख की प्राप्ति होत हैं। मैं हू इन कौ सेवक हूं। जो–तुम्हारी ईच्छा होंई तो श्रीगोकुल जांई उनके सेवक होऊ। तब वह ब्राह्मन वा वैष्णव सों कहे, जो–तुम संग चलो तो आछो। तब वह वैष्णव वा ब्राह्मन के संग श्रीगोकुल आयो। पाछें श्रीगुसांईजी के पास जाँई बिनती कीनी, जो–महाराज ! या ब्राह्मन कौ सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाकों नाम–निवेदन कराय सेवक किये। पाछें श्रीगुसांईजी वाकी ओर कृपा –दृष्टि भरि चिते।

वार्ता प्रसंग–१

सो वा विरक्त ब्राह्मन वैष्णव कों भगवद्‌लीला कौ ज्ञान भयो। सो गोप्य वार्ता जानवे लाग्यो। तब वा विरक्त ब्राह्मन वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! अब मोकों ऐसो उपदेस देउ सो दुःखरूपी संसार तें छूटों, और भगवल्लीला में प्राप्ति होंई। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीमुख तें आज्ञा दीनी, जो ये बात तो बोहोत कठिन है। जो– श्रीठाकुरजी कृपा करें तब यह दसा की प्राप्ति होंइ। तब वा विरक्त वैष्णव ने सब वैष्णव के उद्धार निमित्त पूछी, जो–महाराज ! आप की कृपातें कितनीक बात है ? राज के अधरामृत कै बचन सुनि कै जीव कृतारथ होंइ जाँइ है। सो ऐसें बचन वा विरक्त ब्राह्मन वैष्णव के सुनि के श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–पहिले तो वैष्णव ऐसें हते, जो–अवकास होंइ तब श्रीयमुनाजी के तीर के विषे बैठि के क़ीर्तन करते। और अब कै वैष्णव तो ऐसें है, जो–कीर्तन–वार्ता सुनत नाहीं और लौकिक–वार्ता बोहोत सुनत हैं। सो ताके ऊपर कह्यो, सो श्लोक –

नूनं दैवेन विहताः ये चाच्युत–कथासुधाम्।
हित्वा श्रृण्वन्त्य सद्‌गाथाः पुरीषमिव विड्‌भुजः ।।

और कह्यो, जो– 'सर्वधर्मान्परित्यज्य' सो कैसें होंई ? सो ऐसें कहे, जो–हों अकिंचन हों। और मन में बिचार करे, जो–हों तो श्रीठाकुरजी के चरनारविंद कौं आश्रय करत हों। तो सर्व दोष सहजही में छूटे। और लौकिक धर्म हैं सो सब वृथा हैं। ऐसो जाने तब सेवक कौ धर्म सहज में प्राप्त होंई। और भगवदीय वैष्णव, जो–सेवा के धर्म आचरे तो बाधक नाहीं उपजे। सो काहेतें, जो–श्रीठाकुरजी जानें, जो–मेरी सेवा करत हैं। सो ताही तें श्रीठाकुरजी आप सेवाही कौ फल देत हैं। और ब्रजभक्तन की जैसी प्रीति होंइ, तब अंगीकार होंइ। लौकिक प्रपंच कौ लेस ही मन में न राखे। सर्वस्व करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जाने, और सर्व बात कौ त्याग करे। और वेनुनाद सुने। सो ये भगवदीय वैष्णव की लीला– प्राप्ति के लक्षन। ताही तें कुसुमित फल है, सो फलित होंइ। और रोमांचित होंइ। और अपने मन में हरखे। मधुर धारा (बचन) बरखे। तातें भगवदीय वैष्णव कौ धर्म ऐसोई है, जो–भगवद् प्राप्ति तथा भगवदीय वैष्णवन के अर्थ सर्व समर्पत हैं। यह तो सर्व बात एकबार होत है। सो श्रीठाकुरजी तथा ब्रजभक्तन कौ बोहोत भयो। तातें या प्रकार सों भगवदीय वैष्णव कों सदा रहनो।

और वैष्णव कों तीन बस्तू की रक्षा करनी। सो प्रथम तो विवेक, ता पाछें धैर्य, ता पाछें आश्रय। सो इन तीनोंन कौ जतन करनो। सो प्रथम तो विवेक कौ तात्पर्य कहत हैं, जो– श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा करत हैं, जो–प्रभु ! सब आछोही करत हैं। ऐसो विस्वास राखनो। कैसी ही स्थिति प्राप्त होंइ परि

श्रीठाकुरजी सों प्रार्थना करनी नाहीं। प्रभुजी की इच्छा होइगी सोई करेंगे। तातें सर्वथा करि कै भगवदीय वैष्णव कों प्रार्थना नहीं करनी। मन में एक निर्द्धार करनो, जो–श्रीप्रभुजी सब जानत हैं। प्रार्थना काहेकों करिए ? प्रार्थना कौ तो प्रथमही सिद्ध करि कै राखे हैं। और मनुष्य अपने मन की हू नाहीं जानत, जो–कहा है ? और अपने अदृष्ट हू जानत नाहीं, जो–अदृष्ट में कहा लिख्यो है ? तो श्रीप्रभुजी के धर्म कैसें जानिए ? तातें सर्वथा करि कै काहू बात की प्रार्थना नहीं करनी। श्री–गोवर्द्धननाथजी ने बिचार्‍यो होइगो सोई होइगो। सो सब भलो करेंगे। ता पाछें वा विरक्त वैष्णव सों कह्यो, जो–जीवकों अभिमान सर्वथा नहीं करनो। और ऐसो नहीं बिचारनो जो हों तो ऐसी रीति सों सेवा करत हों और प्रभुजी को हमारी ईच्छा तें कार्य करे नाहीं हैं। आपकी इच्छा प्रमान कार्य करत हैं। सो ऐसो मेरे सरीर की सेवा कौ कष्ट है। मैं कहा करों ? मैं तो अब बैठ्यो रहोंगो। ऐसो जीव जो बिचार करि कै पर्‍यो रहे, तब वा जीव कौ कार्य सिद्ध कहांतें होई ? सो ऐसो नहीं करनो। सो वैष्णव कों गुरु की आज्ञा प्रमान चलनो। गुरु की आज्ञा लोप नहीं करनी। आज्ञा कौ उल्लंघन करे तो बड़ो अपराध है। तातें सेवक कों तो सदा स्वामी के आधीन रहनो। जब सेवक निवेदन कर्‍यो है, पुत्र, दारा, गृह धनादिक सब समर्पन कर्‍यो है, तब अब या जीव कौ कहा है ? सो अभिमान करत है ? तातें प्रभुजी जो करेंगे सो आछी ही करेंगे। ऐसो निश्चय राखनो।

और दूसरो, हौं सेवक हों तातें सेवा ही करनी मेरो धर्म है।

तामें तीनों प्रकार के दुःख कों सहन करे। ऐसो विवेक, धैर्य जिन कों आयो होइ ताकों प्रार्थना सर्वथा नाहीं करनी। और कोई कहे, जो–श्रीमुख देखिवे की प्रार्थना नहीं करनी ? तहां कहत हैं, जो–ये तो भगवदीयन कौ मुख्य धर्म है। जो–श्रीमुख निरखनो। जो–बैठ्यो नहीं रहनो। प्रयत्न करनो। श्रीठाकुरजी कौन भांति सों अगीकार करत हैं, जो–एक तो अपने घर बैठे अंगीकार करते हैं। और एक निकट आवे तब अंगीकार होई। तातें श्रीप्रभुजी की इच्छा जानिवे कों कोई समर्थ नाहीं है। तातें या जीव कों सर्वदा सेवा में रहनो, यह आश्रय है। और काहू बात की चिंता नहीं करनी। बैठी नहीं रहनो।

पाछें 'अंतःकरण प्रबोध' वर्णन कियो, जो–निवेदन भक्ति कौ प्रकार जाकों दृढ़ होंई ताकों कैसो हू दोष न उपजे। सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीमुख तें अध्रामृत रूप वचन कहे हैं। जो–मैं आज्ञा दोइ कौ भंग कियो है। तिनकौ पश्चात्ताप नाहीं करनो। जानिये, जो–मैं हू सेवक हूं। मैं तो सर्वस्व श्रीप्रभुजी कों समर्प्यो है। तातें कहा चिंता है ? सो ताके ऊपर और हू कह्यो है, जो–देह कौ वात्सल्य जानि कै रहिवे कौ प्रयत्न करें, और सेवा में सावधान न रहे, तो श्रीप्रभुजी आपु अप्रसन्न होई। ताके उपर दृष्टांत कहें, जैसें वधू प्रौढ भई होंइ तब माता–पिता स्नेह करि कै घर राखे, और वाके बर कौ आदर समाधान बोहोत करे, परि बहू कों घर न पठावे तो बर कौ मन संतोष पावे नाहीं। और पुत्री कों वाके घर पठवावे तब वाकौ बर बोहोत संतोष कों पावत है। ताही प्रकार अपनी देह कों

समझि कै सेवा में सावधान रहे तो प्रसन्न होंई।

ऐसे श्रीगुसांईजी ने वा विरक्त वैष्णव सों कह्यो। सो वह विरक्त वैष्णव वचनामृत सुनि कै बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। तब विरक्त वैष्णव हू श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूप के दरसन करि कै श्रीगुसांईजी के पास आय कै दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो– वैष्णव! श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये? तब वा विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! आप की कृपा तें सातों स्वरूप दरसन किये। सो ताकी बडाई कहां तांई जीव करि सके? परि महाराज! इन के स्वरूप–भाव जानिए तो आछी। तब श्रीगुसांईजी ने वा वैष्णव सों कह्यो–

श्रीयसोदाजी के इहां प्रभुन ने बाललीला करी है। सो स्वरूप श्रीनवनीतप्रियजी कौ है।

और श्रीजसोदाजी के इहां बड़े भये तब गौचारन लीला किये हैं सो स्वरूप श्रीमथुरानाथजी कौ है। सो जा समै श्रीमथु–रानाथजी श्रीगोपीजनन ते घर माखन की चोरी कों जात हैं तब सखान कों ले कै श्रीस्वामिनीजी के घर जात हैं। तहां दूध, दहीं माखन की चोरी करत हैं। तहां एकांत में आय कै श्रीस्वामिनीजी ने कह्यो, जो–आज मैं पकरि कै श्रीनंदरायजी श्रीयसोदाजी की आगें ले जाउंगी। तब श्रीमथुरानाथजी की दोई भुजा श्री–स्वामिनीजी ने पकरी। तब श्रीमथुरानाथजी आप दोई भुजा और प्रगट करि कै श्रीस्वामिनीजी सों बिनती कीनी, जो–मैं तो तुम्हारे बस हों। तुम कों पास ही राखत हों। सो मेरे नीचे श्रीहस्त में

संख है। सो तुम्हारी ग्रीवा के आकार है। तातें में धारन किये हों। दूसरे श्रीहस्त में पद्‌म है। सो तो कमलवत् है। और तुम्हारो मुख है सो हू कमल है। तातें मैं तिनके आकार में धारन किये हों। और ऊपर वाम हस्त में गदा है। सो तुम्हारे कुच कै आकार रूप है तातें राखे हों। और एक श्रीहस्त में चक्र है। सो तुम्हारे आभूषन जो कटि किंकनी हैं तथा श्रीहस्त मैं कंगन हैं, सो ताकी आरति करि कै मैं अपने श्रीहस्त में राखे हों। तातें मोकों छोरि दहु। तब रंचक अधरामृत कौ पान करि कै छोरि दिए। सो ऐसी लीला श्रीमथुरानाथजी में हैं।

और जब कात्यायनी व्रत कियो, तब आप 'चीरहरन' लीला करी है। सो स्वरूप श्रीविट्‌ठलेसजी कौ है। सो श्रीस्वामिनीजी के भाव में मगन हैं। सो ताहीतें गौर स्वरूप प्रगट हैं। और वस्त्रन में जो स्याम स्वरूप होंइ तो सब गोपिका श्रीठाकुरजी कों जानि जाँइ। तातें श्रीठाकुरजी गौर होंइ कै, श्रीगोपिका के सद्दस होंइ कै, वस्त्रचीर चोरी कै कदंब पै जाँइ बैठे। ता पाछें उहां गोपिकान के मन में लज्जा रूप अंतराय रह्यो है। सो श्री-विट्‌ठलेसरायजी दूरि कै सबन के वस्त्र दिये। सो लीला श्री-विट्‌ठलेसरायजी में है।

अब 'रासपंचाध्याई' में सब ब्रजभक्तन कों पुलिन में बैठाए सो स्वरूप श्रीद्वारकानाथजी कौ है। और उहां गोपी सब पुलिन में बैठी हैं। तहां मध्य में श्रीस्वामिनीजी बिराजति हैं। तहां श्री-ठाकुरजी आपु अचानक पधारे। सो तहां सखीयन को समस्या तें बरजी हैं। और पाछें श्रीहस्त कमल करि कै श्रीस्वामिनीजी

के नेत्र मूंदे हैं। और दोइ हस्त सों वेनुनाद किये हैं। सो याही प्रकार सो रसमय लीला हैं सो श्रीद्वारिकानाथजी में है।

अब श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोवर्द्धनधारन किये हैं। और सब ब्रजभक्तन की रक्षा किये। वाम श्रीहस्त करि श्रीगोवर्द्धन कों उठायो है। ता पाछें जेंमने श्रीहस्त में धारन कियो है। और दोऊ श्रीहस्त सों वेनुनाद करत है। सो सब ब्रज कों सुधा कौ पान करावत हैं। कबहूक बेनु की फूंक पर श्रीगोवर्द्धन कों राखत हैं। और वाम भाग के नीचे के श्रीहस्त में संख है। सो आधिदैविक जलरूप है। सो इह लीला गोवर्द्धनधर श्रीगोकुलनाथजी में प्रगट हैं।

मनमथ–मेनमेथ
। ता पाछें श्री–
सो ललितत्रिभंगी
प दोऊ हस्त करि
दान करत हैं। सो
ी धरी हैं। सो तो
म्हारी भक्ति के मैं
श्रीगोकुलचंद्रमाजी
है।

।–निकुंजादिक के
तहां कोटि–कोटि
ी लीला करत हैं।
ब ब्रजभक्तन कों

अब श्रीगोकुलचंद्रमाजी को स्वरूप साक्षात्
है। सो जब 'पंचाध्याई' में आप अंतर्धान भ
गोपिकान ने रुदन कियो। तहां प्रगट भये।
कौ स्वरूप हैं। ता पाछें रास भयो है। तब आ
मुरली बजाई है। और सब ब्रजभक्तन कों रस
तहां छह धर्म एक धर्मी। सो ताके ऊपर अंगु
यह ब्रजभक्तन कौ समाधान करत हैं, जो–तु
बस हूं। मैं तुम्हारो रनिया सदा हूं। सो ऐसें
के रासादि लीला हैं। सो ताकों प्रादुर्भाव बोहोत

अब श्रीमदनमोहनजी कौ भाव कहत है, जो
भीतर है, सो नाना प्रकार की लीला करत हैं।
कामदेव लज्जा पावत हैं। तहां भांति–भांति क
अरु 'रासपंचाध्याई' में मुरली बजाई कै स

बुलाये । ता समै उद्दीपन भावरूप आप भए । सो स्वरूप श्रीमदनमोहजी कौ हैं । या प्रकार सातों स्वरूपन की भावना है । तातें उनके दरसन करे ता समै या प्रकार भावना करनी, ऐसें श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये ।

और श्रीगोवर्द्धननाथजी निकुंज–नायक हैं । सो निकुंज के द्वार पर ठाढ़े होंई स्वकीय जन कों उंची भुजा करि बुलावत हैं । या प्रकार श्रीगोवर्द्धननाथजी के स्वरूप की भावना करनी ।

सो सुनि कै विरक्त वैष्णव बोहोत प्रसन्न भयो । ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोर्द्धननाथजी के दरसन कों पधारे । तब विरक्त वैष्णव हू संग हुतो । सो श्रीगुसांईजी गोपालपुर पधारे । पाछें स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में पधारे । तब भोग कौ समय हुतो । सो पधारि कै भोग समर्प्यो । पाछें भोग सरायो । राजभोग–आरती करि । तब या विरक्त वैष्णव ने श्रीगोव–र्द्धननाथजी के दरसन किये । और अपने मनमें बिचार कियो, जो–श्रीगुसांईजी ने श्रीमुख तें बचन कहें तेसेंई दरसन श्रीगो–वर्द्धननाथजी के भए । ता पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर करि कै अपनी बैठक में पधारे । तब वह विरक्त वैष्णव हू श्रीगुसांईजी के पास आयो । ता पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिवे कों पधारे । तब वा विरक्त वैष्णव की पातरि धराई । सो भोजन करिवे कों बैठ्यो । ता पाछें श्रीगुसांईजी पोढ़े । पाछें वह विरक्त वैष्णव महाप्रसाद ले कै उठ्यो । तब श्रीगुसांईजी कों पंखा करन लाग्यो । पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि ब्रजयात्रा कों गयो । सो कहूं स्वस्थ होइ कै बैठे नाहीं । सो श्री–

गोवर्द्धननाथजी इनकों सानुभावता जमावते । पाछें वा विरक्त वैष्णव की देह छूटी । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के चरनाकविंद में प्राप्त भयो ।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–भगवत्सेवा, भगवद्दर्शन भावपूर्वक करने । सो पुष्टिमार्ग में स्वरूप भावना, लीला भावना, भाव भावना मुख्य हैं । सो वा प्रकार निरंतर भावना करनी । तातें मन अलौकिक होंई । तब निरोध सिद्ध होंई ।

सो वह विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।

॥ वार्ता ॥१६२॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक क्षत्री, पूरब कौ बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं । लीला में इन कौ नाम 'कीरति' है । यो 'मोहनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं ।

ये पूरब में 'पीपरी' तें उरे कोस दोइ पर एक गाम है, तहां एक द्रव्यमान् क्षत्री के जन्म्यो । सो यह बालपने सों वैराग्य दसा में रहे । मन में कहे, जो–लौकिक सुख तो क्षणिक हैं । जब या देह सों भगवान के साक्षात् दरसन होंई तब ही जीवन सार्थक जाननो । परि माता–पिता के डर तें यह अपने मनकी बात काहू सों कहें नाहीं । ऐसें करत यह बरस तीस कौ भयो । तब याके माता–पिता मरे । सो याने ब्याह कियो नाहीं । सो यह क्षत्री सुंदरदास गंगापुत्र कौ जजमान हतो । सो सुंदरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक हे । सो उनकी वार्ता आगें कहि आए है ।

सो एक समय सुन्दरदास वा क्षत्री के घर कछू कार्यार्थ आए । तब या क्षत्रीने सुंदरदास कौ बोहोक आदर सन्मान कियो । पाछें कह्यो, जो–प्रोहितजी ! कछू ऐसो उपाय बतावो, जातें याही देह सों भगवान के साक्षात् दरसन होंई । तब सुंदरदास कहे, जो–तू श्रीगुसांईजी कौ सेवक होउ तो तेरो मनोरथ सिद्ध होंई । आजकाल्हि तो ठाकुर श्रीगुसांईजी के आधीन हैं । तब वह क्षत्रीने पूछ्यो, जो–प्रोहितजी ! श्रीगुसांईजी कौन हैं ? कहां रहत हैं ? तब सुंदरदास कहे, जो–श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पुत्र है । श्रीगोकुल में रहत हैं । उनके आधीन श्रीगोवर्द्धननाथजी आप रहत हैं । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी गोवर्द्धन पर्वत में सों प्रगट भये हैं । साक्षात् कृष्ण कौ स्वरूप हैं । सो जो कोउ उन के सरनि जात है तापैं ये कृपा करत हैं । सब या

क्षत्री ने कह्यो, जो–प्रोहितजी ! अब तो मोकों बेगि श्रीगुसांईजी कौ सेवक कराइए। मैं उनके सरनि जाऊंगो। तब सुंदरदास कहे, जो–आजकाल्हि में श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों पधारेगें। तब तू पुरुषोत्तमपुरी में जाँइ उनकौ सेवक हूजियो।

वार्ता प्रसंग–१

सो बोहारि श्रीगुसांईजी पुरुषोत्तमपुरी श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों पधारे। सो वा क्षत्री ने सुनी, जो–श्रीगुसांईजी श्री–जगन्नाथरायजी के दरसन कों पधारे हैं। तब वह क्षत्री घर में जो हतो सो सब ले कै श्रीगुसांईजी के दरसन कों चल्यो। सो पुरुषोत्तमपुरी आयो। पाछें श्रीगुसांईजी के पास जाँइ बिनती कीनी, जो–महाराज ! कृपा करि कै मोकों सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी ने वाकी बहोत आरति जानि कृपा करि के वाकों सरनि लियो। वाको नाम सुनायो। ता पाछें एक ब्रत करवाय कै समर्पन करवायो। पाछें वा क्षत्री वैष्णव ने बिनती करी, जो–महाराज ! मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–श्रीठाकुरजी की सेवा करो। तब वा क्षत्री वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! मो तें इकले तें भगवत्सेवा कैसें बने ? तातें महाराज ! हों तो आप की सेवा करोंगो। और आप के संग ब्रज कों चलूंगो। श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–आछो। ता पाछें वा क्षत्री वैष्णव ने जो–कछू पास हतो सो सब श्रीगुसांईजी की भेंट कीनो। पाछें श्रीगुसांईजी के संग रह्यो। और जो–सेवा देखे सो करन लाग्यो। सो सेवा भली भांति सों करतो। पाछें महाप्रसाद लेतो। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे। सो यह क्षत्री वैष्णव हू संग आयो। सो केतेक दिन श्रीगोकुल रहि कै

ता पाछें श्रीगुसांईजी घोड़ा पर बिराजि श्रीनाथजीद्वार पधारे। सो उह क्षत्री वैष्णव हू श्रीनाथजीद्वार गयो। सो श्रीगुसांईजी तो उत्थापन के समै पहोंचे। सो श्रीनाथजी के उत्थापन किये। और उह क्षत्री वैष्णव तो पाँवन चलतो। सो पाछें रहि गयो। सो सेन के दरसन होंइ चुके पाछें आयो। सो देखे तो सेन होंइ चुकी है। तब उह क्षत्री वैष्णव अपने मन में बोहोत ही पश्चाताप करन लाग्यो, जो–आज मैं प्रथम ही आयो। सो मोकों दरसन नहीं भए। और वह क्षत्री वैष्णव के मन में ऐसी हती, जो–दरसन करि कै महाप्रसाद लेनो। सो दरसन तो भए नाहीं। तब उह क्षत्री वैष्णव श्रीनाथजी के मंदिर बाहिर ड्यौढ़ी पै बैठ्यो। सो दरसन न भये तातें वाके मन में अत्यंत ताप भयो। सो ताप श्रीनाथजी सों सह्यो न गयो। तब आपु श्रीठाकुरजी मध्यरात्रि के समय झारी बंटा ले कै मंदिर के बाहिर वा क्षत्री वैष्णव के पास पधारे। सो वा तें श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु ने कही, जो– वैष्णव दरसन करि लै। तब वा क्षत्री वैष्णव ने श्रीगोव– र्द्धननाथजी आपु के दरसन किये। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप झारी बंटा वा वैष्णव कों सोंपे। और आज्ञा किये, जो–यामें तें महाप्रसाद लीजियो। सो ऐसें कहि कै आप मंदिर में पधारे। और वा वैष्णव ने महाप्रसाद लीनो। और झारी में तें जल पियो। सो एक तो पंथ कियो, दूसरो भूखो, सो प्रसाद लेतही वा क्षत्री वैष्णव कों आलस आयो। सो उह झारी–बंटा उहांही धरि कै एक ओर जांइ कै पर्वत पै सोय रह्यो। तब प्रातःकाल संखनाद भए तब उठ्यो।

और श्रीगोवर्द्धननाथजी बाहिर पधारे पाछें भीतर पधारे। सो मंदिर के किवार खुले परे हैं। सो जब श्रीगुसांईजी न्हाय कै ऊपर पधारे तब देखे तो मंदिर के किवाड़ खुले परे हैं। तब श्रीगुसांईजी ने सेवकन सों कही, जो–वस्तू भाव सम्हारो। पाछें श्रीगुसांईजी भीतर पधारि कै देखे तो झारी बंटा नहीं हैं। तब श्रीगुसांईजी तो मंगल भोग धरि कै बाहिर पधारे। तब उह वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। तब श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै झारी बंटा श्रीगुसांईजी के आगें धरे। तब श्री–गुसांईजी ने वा वैष्णव सों पूछी, जो–ए तेरे पास कैसें आए? तब वा वैष्णव ने हाथ जोरि कै बिनती कीनी, जो–महाराज! श्रीगोवर्द्धननाथजी राति कों धरि गए हैं। पाछें सब विधिपूर्वक समाचार कहे। तब श्रीगुसांईजी भीतरिया सेवकन कों आज्ञा किये, जो–यह वैष्णव जा समय महाप्रसाद मांगे सो ता समय देनो। और आप ने या वैष्णव सों आज्ञा कीनी, जो–जो समय तोकों भूख लागे ताही समय अनसखड़ी महाप्रसाद मांगि लीजो। और तोसों बने सो सेवा करियो। पाछें केतेक दिन रहि कै श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे। और उह क्षत्री वैष्णव श्रीनाथजीद्वार में रह्यो। सो भली भांति सों स्नेहपूर्वक प्रेम चित्त लगाय कै सेवा करतो। श्रीगोवर्द्धननाथजी इनके ऊपर सदा प्रसन्न रहते। सो वा वैष्णव ने भली भांति सों सेवा करी। पाछें वाकी देह छूटी। तब श्रीगुसांईजी के अनुग्रह तें उन कै नित्य लीला में प्रवेस भयो। अलौकिक देह पायो। लौकिक देह पर्यो रह्यो। अलौकिक देह तें नित्य लीला में प्रवेस कियो। सो

भितरियान नें श्रीनाथजी के मंदिर में वाकों देख्यो । सो श्रीगुसांईजी जब श्रीनाथजीद्वार पधारे तब आप यह बात भीतरियान के मुख तें सुनि । सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए । और श्रीमुख तें कहे, जो–प्रभु, थोरी सेवा करे तोऊ बोहोत मानत हैं । और देखो, या वैष्णव के भाग्य ! थोरेसे दिनन में श्रीगोवर्द्धननाथजीने अत्यंत कृपा कीनी ।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–प्रभु ताप–आतुरता देखि बेगि प्रसन्न होत हैं । तातें वैष्णव कों ताप राखनो । और प्रीतिपूर्वक कोऊ रंच हू सेवा करत है ताकों प्रभु बोहोत मानत हैं यहू जताए ।

सो यह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हो । तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ?

वार्ता ॥ १६३ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक अन्यमारगी, जाने स्मसान में बैठि कै खायो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं । लीला में इन कौ नाम 'कांता' है । ये 'मोहनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनकी भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समय वैष्णव दोइ चारि श्रीगोकुल में इकठौरे होंई कै निरधार करत हुते । जो–भाई ! आज के समय में तो श्रीगुसांईजी कौ प्रताप ऐसोही है । जो–कोई पापी दुष्ट कर्म करिवे वारो होंइ, पाखंडी होंइ, परि जो सरनि आवे तिन सबन के पाप दूरि करत हैं । सो उन वैष्णवन में एक अन्यमारगी बैठ्यो हतो । सो वाने कही, जो– वैष्णवन ! तुम कहत हो सो साँची बात होंइ तो मैं हूं ऐसें

दुष्ट कर्म कीने हैं। सो अब मोकों श्रीगुसांईजी की सरनि लिवाव और मेरे पाप दूरि करवावो। तब में जानो, जो ठीक बात है। तब वैष्णवन कही, जो–आज तू हमारे संग चलि। पाछें उह वैष्णव अन्यमारगीय कों संग ले कै श्रीनाथजीद्वार श्रीगुसांईजी के पास आए। पाछें सबन ने दंडवत् करी। और उनन सब समाचार श्रीगुसांईजी आगें कहे, जो–महाराज! यह अन्यमारगी है। सो आपु सों बिनती करत है, जो – मोकों कृपा करि कै सरनि लीजे। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–स्नान करि आउ। तोकों हम नाम दे सरनि लेइंगे। फेरि तेरे मन में आवे सो करियो। हम तोकों कबहू छोरेंगे नाहीं।

भावप्रकाश–यह कहि यह जताए, जो–पुष्टिमार्ग में जीव सरनि आवत हैं, ताकों प्रभु आप सर्वथा छोरत नाहीं। काहेतें, यह प्रमेयमार्ग है। तातें जीव की कृति देखत नाहीं। सो श्रीगुसांईजी आप साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं। तासों या प्रकार कहे।

तब उह स्नान करि कै आयो। और बिनती करी, जो–महाराजाधिराज! मोकों नाम दीजिए। तब आपु वाकों नाम दियो। पाछें श्रीगुसांईजी आप स्नान करि कै श्रीनाथजी के मंदिर में पधारे।

ता पाछें राजभोग के दरसन खुले। तब सब वैष्णवने श्रीनाथजी के दरसन किये। पाछें याहू ने दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी की सेवा तें पहोंच कै श्रीगिरिराज तें नीचे अपनी बैठक में पधारे। सो गादी तकियान के ऊपर बिराजे। तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै अपने घर कों गए। तब वा वैष्णव ने दरसन करि दंडवत् करि भेंट कीनी।

तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो–तू आज महाप्रसाद यहां ही लीजियो। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन कों पधारे। सो श्रीगुसांईजी भोजन करि कै बीड़ा आरोगि कै श्रीगुसांईजी आपुने श्रीहस्त सों जूंठनि की पातरि धरी। पाछें वा वैष्णव नें महाप्रसाद लियो। ता पाछें आज्ञा माँगि अपने घर श्रीगोकुल कों गयो। सो उन घर आइ बिचार कियो, जो–अब परीक्षा करिए। पाछें वह स्मसान में जाँइ रह्यो। सो उहां मुरदा की आंच में दारि बाटी करि खाँतो। और मन में अहर्निस यही कहे, जो–देखों, श्रीगुसांईजी मेरो कैसें उद्धार करत हैं ?

वार्ता प्रसंग – २

सो एक राजा और कोई देस में रहत हुतो। सो वाके गलित कोढ़ हुतो। सो वा राजा ने अनेक औषधि कीनी, परि वाकौ कौढ़ न गयो। तब काहू ने कही, जो– तुम तीर्थयात्रा करो तो तुम्हारो कोढ़ जाँइ। और लाखन रुपैया खर्चे परि वाकौ कोढ़ न गयो। तब उह राजा तीर्थ यात्रा करिवे निकस्यो। सो तीर्थयात्रा करत करत केतेक दिन में श्रीगोकुल आयो। परि यात्रा करि कै हू वाकौ रोग न गयो। सो तब वा राजा ने श्रीगुसांईजी के दरसन किये। सो दरसन करि कै बिनती कीनी, जो–महाराज ! मैनें लाखन रुपैया खरचे और सब तीर्थन में स्नान किये। परि मेरो रोग न गयो। और आप ईस्वर हो। सो यह बिचारि कै मैं आप के पास आयो हूं। सो आपु मेरो रोग न खोवोगे तो मेरो रोग और कौन खोवेगो ? तातें आपकों छोरि कै और कौन के पास जाऊं ? सो ऐसी वा राजा की दीनता देखि कै श्रीगुसांईजी आप तो परम

दयाल सो आज्ञा किये, जो–यह तेरो रोग तो यहां स्मसान में हमारो सेवक रहत है, सो उनके पास जाँई के उनकी जूंठनि ले कै खाईयो तब तेरो रोग जाइगो। परि उह वैष्णव जूंठनि देइगो नाहीं। तातें तू जोरावरी सों लीजियो। मन में ग्लानि मति ल्याइयो। तब उह राजा आप की आज्ञा प्रमान स्मसान में जाँई कै वा वैष्णव सों जूंठनि माँगी। सो वाने न दीनी। तब वा राजा ने जोरावरी ले कै खाई। सो जूंठनि भीतर गई। तब तत्काल वाकौ कोढ़ निवृत भयो। सुंदर दिव्य नौतन सरीर भयो। ता पाछें उह राजा बहोत ही प्रसन्न भयो। पाछें वा वैष्णव ने राजा बहोत ही प्रसन्न भयो। पाछें वा वैष्णव ने राजा सों कही, जो–तुमने मेरी जूंठनि क्यों खाँई ? तब राजाने वा वैष्णव सों कही, जो – मोकों श्रीगुसांईजी की आज्ञा हती, जो–तू स्मसान में जाँइ कै वा वैष्णव की जूंठनि खाइगो, तब तेरो रोग जाइगो। सो मैं आपुकी आज्ञा मानि कै आयो हूं। सो तुम्हारी जूंठनि खाँई। तब मेरो रोग गयो। तब वा वैष्णव ने कही, जो अज हू श्रीगुसांईजी मेरी सुधी करत हैं ? पाछें वा वैष्णव ने अपने मन में यह निश्चय कियो, जो–श्रीगुसांईजी तो साक्षात् ईश्वर हैं। और मैंनें दुष्टता बोहोत ही कीनी। परि प्रभु बड़े दयाल हैं। जो–मेरो दोष न बिचारे, जो–उलटो गुन करि कै माने। तातें मोकों छोरे नाहीं। सो मेरो कृत्य आपु न देखे। तातें अब मैं आपु के पास जाँइ प्रभुन की आज्ञा प्रमान सेवा करूंगो। सो उहां सों स्नान करि अपने घर आय वस्त्र पहरि कै श्रीगुसांईजी के पास आयो। पाछें बिनती करी, जो–महाराज ! आप तो पूरन पुरुषोत्तम हो

और मैं तो दुष्ट स्वभाव करि कै दुष्ट जीव हों। और दुष्ट कर्म बोहोत ही किये हैं। परि आपु तो परम दयाल हो। तातें अब मेरे ऊपर कृपा अनुग्रह करिये। तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करि कै आज्ञा किए, जो–काल्हि एक ब्रत करि ब्रह्मसंबंध करियो। तब श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान वह ब्रत करि कै दूसरे दिन स्नान करि अपरस वस्त्र पहरि कै श्रीगुसांईजी के पास आयो। और बिनंती करी, जो–महाराज ! कृपा करि कै मोकों ब्रह्मसंबंध करवाइए। तब श्रीगुसांईजी आपु वा वैष्णव कों ब्रह्मसंबंध करवायो। और वाकौ नाम 'वैष्णवदास' धर्‍यो। ता पाछें आपु वा वैष्णव के माथे सेवा पधराये। और सेवा की रीति भांति सिखाये। तातें उह वैष्णव श्रीठाकुरजी कों पधराय कै पाछें नयो मंदिर सिद्ध करवाय कै अपरस वस्त्र काढ़ि सुद्ध करि बासन पलटाय श्रीगुसांईजी आप की आज्ञा प्रमान सेवा करन लाग्यो। पाछें श्रीगुसांईजी कों घर पधराय श्रीठाकुरजी की आरति करवाई। पाछें श्रीगुसांईजी आपु कों यथासक्ति भेंट करी। ता पाछें वा दिना श्रद्धा प्रमान वैष्णवन कों बुलाय कै महाप्रसाद लिवायो। पाछें उह वैष्णव श्रीमहाप्रभुजी की प्रनालिका सों सेवा करन लाग्यो। सो कितनेक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे। जो–चहिए सो मांगि लेते। सो उह भलो भगवदीय भयो। तब ऐसें करत कितनेक दिन में याकी देह असक्त भई। तब याने अपने श्रीठाकुरजी तथा घर में जो–कछू द्रव्य हतो सो सब श्रीगुसांईजी के घर पहोंचाए। पाछें वाकी देह छूटी। सो भगवल्लीला में प्रवेस भयो। ता पाछें वैष्णवन ने

याकौ अग्नि संस्कार कियो।

भावप्रकाश – या वार्ता कौ यह अभिप्राय है, जो वैष्णव कों श्रीगुसांईजी के वचन ऊपर विश्वास राखनो। सो या राजाने श्रीगुसांईजी की आज्ञा कौ बिचार करि वैष्णव की जूंठनि खाई, सो राजा कौ कोढ़ निवृत भयो। तातें विस्वास बड़ो पदार्थ है। विस्वास होंइ तो सर्व बस्तू की सिद्धि होंई। और वा वैष्णव ने परीक्षा में हू श्रीगुसांईजी कौ अहर्निस स्मरन कियो, तो श्रीगुसांईजी वाकी बुद्धि फेरे।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इन की वार्ता कहां ताई कहिए। वार्ता ॥ १६४ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक राजा, पूरव कौ, जाने स्मसान में जूंठनि खाई, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला मैं इन कौ नाम 'सुव्रता' है। ये अंतर्गृहगता में है। ये 'मोहिनी' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग –१

सो उह राजा पूरव कौ हतो। सो वाकों गलित कोढ़ हतो। सो राजाने घने घने वैद्यन कों बुलाइ कै औषधि करवाई। और बोहोत इलाज करवायो। और जोतिसीन कों बुलाइ पून्यदान बोहोत किये। और लाखन रुपैया खर्चे। परि वाकौ रोग न गयो। तब एक ब्राह्मन ने कही, जो–राजा ! तीर्थयात्रा करिवे कों निकसो। तब वह तीर्थयात्रा कों निकस्यो। सो तीर्थयात्रा करत केतेक दिन में श्रीगोकुल आयो। सो तीर्थ यात्रा किये, परि रोग न गयो। ता पाछें श्रीगोकुल में आइ कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी। पाछें उह राजा श्रीगुसांईजी के आगें हाथ बांधि कै ठाढ़ो रह्यो। तब श्रीगुसांईजी तो परम दयाल अंतरजामी। सो वा राजा के ऊपर दया आई। तब खवास सों आज्ञा करी, जो–तू यासों

पूछि, जो–तू काहे कों हाथ बांधे ठाढ़ो है ? तब वा खवास ने राजा सों कही, जो–तुम काहे कों हाथ बांधे ठाढ़े हो ? तब राजा ने दंडवत् करी, पाछें बिनती कीनी, जो–महाराज ! मैं पूर्व में अमूक गाम है तहां रहत हों। और महाराज ! मेरे सरीर में बोहोत रोग उत्पन्न भयो है । और बोहोत वैद्यन कों बुलाए और औषधादि करवाई। तथा ग्रहन कौ दान–पून्य हू बोहोत कियो। लाखन रुपैया खर्चे और बोहोत उपाय किये । जो–जाने कह्यो सो सब कियो। परि मेरो रोग न गयो। तब एक ब्राह्मन ने कही, जो–तुम तीर्थयात्रा करो तो तुम्हारो रोग जाँइ । सो महाराज ! मैं तीर्थयात्रा करत करत तुम्हारे पास आयो हूं। और महाराज ! मैं दोई–चारि बार जहर खायो । काहेतें, जो–मैं जान्यो, जो–ऐसें तीर्थन में मेरी मृत्यु होंइ तो आछौ। परि मेरो काल आयो नाहीं। तातें महाराज ! मैं बोहोत कायर होंइ रह्यो हूं। और यहां आयो हूं। तातें अब आपु की इच्छा में आवे सो करिये । और अब आप कों छोरि कै कहां जाऊं ? ऐसें राजा ने कह्यो। सो सब खवास ने श्रीगुसांईजी के आगें कह्यो । और बिनती करी, जो–महाराज ! ऐसें राजा बिनती करत हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु वा राजा कौ दुःख सहि न सके । तब खवास सों कह्यो, जो–तू राजा सों कहियो। जो–तुम हाथ छोरि देऊ, हाथ बांधो काहेकों ठाढ़े हो ? तुम स्मसान में जाऊ। उहां हमारो एक सेवक रहत है। सो ताकी जूंठनि तुम खावो। तब तुम्हारो रोग जाँइ। परि उह जूंठनि देइगो नाहीं। सो तुम जोरावरी सों लीजियो। मन में ग्लानी मति लाइयो। तब राजा तें खवास ने कह्यो । पाछें उह राजा अपने मन में

निश्चय करि कै श्रीगुसांईजी आपु कों दंडवत् करि स्मसान में गयो। तब वा राजा ने वा वैष्णव सों जूंठनि मांगी। तब वाने जूंठनि दीनी नाहीं। तब राजा ने जोरावरी सों ले कै खाई। सो भीतर उदर में पहोंचत ही तत्काल वा राजा कौ कोढ़ निवृत भयो। और सुंदर आछौ सरीर भयो। तब राजा ने मन में जान्यो, जो–श्रीगुसांईजी आप साक्षात् ईश्वर हैं। तब ऐसें मन में निर्द्धार करि कै श्रीगुसांईजी आप के पास आयो। सो श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में गादी–तकियान पर बिराजे हते। और श्रीसुबोधिनिजी की कथा कहत हते। और सब वैष्णव सुनत हते। तब वा राजा ने आय कै हाथ जोरि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! मैं श्रीभागवत में सुन्यो हतो, जो–श्रीठाकुरजी ने अवतार लीनो। सो मैनें आज देख्यो है। और आप साक्षात् श्रीठाकुरजी कौ अवतार हो। सो प्रभु ! मेरे ऊपर कृपा कीजिए। नाम निवेदन कराईए। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–हमारो धर्म बोहोत कठिन हैं। और तुम अभक्षाभक्ष करत हो। सो तातें नाम कैसें दियो जाँई ? तब राजाने बिनती करी, जो–महाराज ! अब तें अभक्षाभक्ष न करूंगो। अब आपु आज्ञा करोगे सोइ मैं करोंगो। अब आप के पास रहूंगो। देस कों न जाउंगा। पाछें श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो स्नान करि आऊ। तब वा राजा स्नान करि, आइ कै बिनती कीनी, जो–महाराज ! मेरे ऊपर कृपा करिये। तब श्रीगुसांईजी आपु ने वा राजा कों बैठारि कै नाम सुनायो। पाछें श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किये, जो–तुम काल्हि ब्रत करियो। परसों

ब्रह्मसंबंध करवावेंगे । ता पाछें ब्रत करि कै स्नान करि कै अपरस बस्त्र पहरि कै वह राजा श्रीगुसांईजी आगें आय ठाढ़ौ भयो । कह्यो, जो – महाराज ! मेरे ऊपर कृपा करि कै ब्रह्मसंबंध करवाईये । पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कौ राजभोग सरायो । तब राजा कों श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान ब्रह्मसंबंध करवायो । पाछें राजाने दरसन किये । ता पाछें श्रीगुसांईजी राजभोग–आर्ति करि अनोसर करि अपनी बैठक में पधारे । सो गादी तकियान कै ऊपर बिराजे । तब या राजाने आय कै दंडवत् कीनी, पाछें भेंट धरी । तब श्रीगुसांईजी वा राजाकों आज्ञा किये, जो–आज महाप्रसाद यहां ही लीजो । ता पाछें आपु भोजन करि कै मुख सुद्धार्थ आचमन करि कै बीड़ा आरोगि कै वा राजा कों अपने श्रीहस्त सों जूंठनि की पातरि धरी । तब राजा ने महाप्रसाद लीनो । पाछें राजा ने बिनती करी, जो – महाराज ! अब आज्ञा होंइ तो मैं यहां रहों । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–तुम राजा लोग हो । तातें अपने घर जाऊ । अब तुम्हारो कष्ट निवर्त भयो । तब राजा ने बिनती करी, जो–महाराज ! मेरी बुद्धि न फिरे । आपु के ऊपर रहे । ऐसी कृपा करिये । तब श्रीगुसांईजी आप ने वस्त्र मँगाय के अपने चरन रोरी सों छाप दिये । और वा राजा कों आज्ञा किये, जो – तुम नित्य इन कों भोग धरि कै महाप्रसाद लीजियो । तुम्हारी बुद्धि ठिकाने रहेगी । और वैष्णव के ऊपर ममत्व राखियो । जो –वैष्णव आवें सो तिनकी भली भांति सों सेवा करियो । ता पाछें वा राजा कों ले कै श्रीगुसांईजी आप श्रीजीद्वार पधारे । तब राजाने श्रीनाथजी के

दरसन किये। ता पाछें राजा आज्ञा मांगि कै ब्रजयात्रा कों गयो। सो कितनेक दिन में संपूरन ब्रजयात्रा करि कै आयो। तब श्रीगुसांईजी आपु कों दंडवत् करी। तब कितनेक दिन तांई श्रीनाथजी के दरसन किए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप सों बिदा होंइ कै अपने देस कों चल्यो। सो कितनेक दिन में जाँइ पहोंच्यो। तब आपु की आज्ञा प्रमान त्योंही सेवा करन लाग्यो। और वैष्णवन की सेवा करतो, महाप्रसाद लिवावतो। वैष्णव के ऊपर बोहोत ममत्व राखतो और श्रीगुसांईजी तथा श्रीनवनीतप्रियजी की प्रतिवर्ष भेंट पठावतो। श्रीनाथजी ऊपर बोहोत ममत्व राखतो। सो जीवन पर्यंत या भांति कियो। सो उह राजा भलो भगवदीय भयो।

भावप्रकाश–तातें भगवदीय कौ संग ऐसो पदार्थ है। जो वैष्णव की जूंठनि तें वा राजा कौ कोढ़ निवृत्त भयो। और वैष्णव हू भयो। तातें भगवदीय कौ संग करनो।

सो उह राजा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ १६५ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक रूपा पोरिया, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की सिंघ पोरि पै रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'रासो' गोप है। ये श्रीनंदरायजी के घर की रखवाली करत हैं। ये 'रसात्मिका' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरुप हैं।

ये गोपालपुर में एक सनाढ्य ब्राह्मन के जन्म्यो। सो बरस बीस कौ भयो। तब इनके माता–पिता मरे। पाछें घर में कोऊ रह्यो नाहीं। तब यह श्रीगुसांईजी पास आइ बिनती कियो, जो–महाराज ! मोकों सेवक कीजिए। और कृपा करि कै कछू टहल दीजिए। तब श्रीगुसांईजी रूपा कों नाम दे सेवक कियो। पाछें श्रीनाथजी की सिंघपोरि की सेवा सोंपी। और कह्यो जो–रूपा ! तू श्रीनाथजी की सिंघपोरि की रखवारी करियो। और श्रीनाथजी की प्रसादी रसोई में तें महाप्रसाद लीजो।

वार्ता प्रसंग-१

सो उह रूपा पोरिया श्रीनाथजी के मंदिर की द्वारपाल की सेवा करे। सो एक समय दुपहरि कों श्रीनाथजी ने रूपा पोरिया कों लात मारि कै जगायो। और श्रीमुख तें कहे, जो-मोकों भूख लगी है। तब रूपा पोरिया तुरत ही उठि कै श्रीगुसांईजी की सिज्या के पास आयो। सो श्रीगुसांईजी के चरनारविंद दाबि कै जगाये। सो आप जागे। सो देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ सिंघपोरिया ठाढ़ो है। तब श्रीगुसांईजी रूपा पोरिया सों पूछे, जो-तू या बिरियाँ क्यों आंयो है ? तब रूपा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! मैं तो याके लिये आयो हूं, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भूखे हैं। तब श्रीगुसांईजी तुरत ही उठि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी मंदिर में जाँई कै श्रीगोवर्द्धननाथजी कों फेरि राजभोग समर्प्यो। ता पाछें भोग सराय कै सब सेवा तें पहोंचि कै श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठक में पधारे। सो पोढे। तब रूपा पोरिया अपनी द्वारपाल की सेवा किये। सो रूपा पोरिया सों श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसें सानुभाव हते। सो जो कछू चहिए सो रूपा पोरिया सों कहते। और रूपा पोरिया सों उष्णकाल में पंखा करावते। ऐसी कृपा श्रीनाथजी रूपा पोरिया के ऊपर करते। सो ऐसी रूपा पोरिया की कितनिक वार्ता हैं। सो ऐसें करत पाछें केतेक दिन में वा रूपा पोरिया की देह छूटी। तब वैष्णव मिलि कै अग्नि-संस्कार कियो। ता पाछें उह बात श्रीगुसांईजी सुनि कै श्रीमुख तें कहे, जो-भगवद् ईच्छा होंइ सो होंइ। जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी की ईच्छा प्रबल है। सो वे रूपा

पोरिया श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो।

वार्ता प्रसंग–२

पाछें एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों पधारे हते। सो श्रीनाथजीद्वार पधारे। सो गोविंदकुंड पै स्नान करि कै श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में पधारत हते। सो ताही समै एक स्वान श्रीगुसांईजी कों देखि कै सन्मुख आयो। सो आय कै चरन–परस की ईच्छा करत हुतो। तब सब वैष्णव लाठी ले कै मारन लागे। सो ऐसो मार्यो सो वा स्वान के रुधिर निकस्यो। परंतु उह स्वान जाँइ नाहीं। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–याकौ मारो मति। तुम दूरि रहो। ता पाछें श्रीगुसांईजी ज्ञानदृष्टि सों मन में बिचार कियो, तब पहचान्यो। पाछें श्री–गुसांईजी आप वा स्वान कों चरन–स्पर्स करवाए। और वाके मस्तक के ऊपर चरन धरे। सो श्रीगुसांईजी आप वा स्वान के ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप सब वैष्णवन सों कहे, जो–यासों दूरि रहो। इतने ही में वा स्वान की देह छूटी। तब वा स्वान के मुख में तें तेज कौ पुंज निकस्यो। सो श्रीठाकुरजी आप के चरनारविंद में लीन भयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें वैष्णवन कों आज्ञा किये, जो–तुम याकौ संस्कार करि आओ। तुम कों कछू बाधक नाहीं। यह मेरी आज्ञा है। ता पाछें वैष्णवन ने याकों अग्निसंस्कार कियो। ता पाछें फेरि कै श्रीगुसांईजी आप स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में पधारे। सो सब सेवा सों पहोंचि कै श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। सो गादी–तकियान के ऊपर बिराजे। तब

वैष्णवने बिनती करी, जो–महाराज ! पूर्व जन्म में यह स्वान कौन हतो ? और कोन अपराध तें यह स्वान की जोनि प्राप्त भई ? सो कृपा करि कै हम सों कहिए ? तब श्रीगुसांईजी वैष्णवन प्रति श्रीमुख सों कहे, जो–यह पूर्वजन्म में श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ सिंघपोरिया हतो। रूपा पोरिया। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की राजभोग आरती की बाती करत हतो। सो उह बाती भेली भई हती। तब भंडार में जाँइ कै घृत लेइ कै तातो करि कै तामें बाती हाथ में भीजोय कै ता पाछें रूपा पोरिया ने मृत्तिका सों हाथ धोय डारे। परंतु अनजाने नख में घृत रहि गयो हतो। पाछें उह महाप्रसाद लेवे कों बैठ्यो। तब रसोइया ने ताती कढ़ी परोसी। सो उह नखन कौ घृत ताती कढ़ी में आयो। सो श्रीनाथजी कौ अनप्रसादी द्रव्य पेट में गयो। तातें या अपराध तें यह स्वान भयो। सो श्रीठाकुरजी कौ द्रव्य ऐसोई है।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जताए, जो–ठाकुर की अनप्रसादी वस्तू सामग्री द्रव्यादिक सों वैष्णव कों सर्वथा सावधान रहनो। काहेतें, जो–अनजाने हू वह काहू भांति सों उदर में जाँइ तो यह गति होंइ। सो बात रूपा पोरिया के मिष करि सब वैष्णवन कों श्रीगुसांईजी आप जताए, नाँतरु रूपा पोरिया जैसेंन की ऐसी गति सर्वथा न होंइ। परि स्वकीय सिक्षार्थ यह प्रभुन कौ कौतुक है।

पाछें केतेक दिन में रूपा पोरिया की मृत्यु आई। तब उह मनुष्य–देह छोरि कै स्वान के उदर में आयो। पाछें जन्म भयो। परि वाने भगवत्सेवा बोहोत करी हती। सो याकों पूर्वजन्म कौ ज्ञान रह्यो हतो। तातें अपनी ज्ञाति कौ देह संबंधी माता–पिता आदि सब कौ अभाव करि कै उन कौ संग छोड़ि कै पर्वत के नीचे उतरि कै, श्रीनाथजी की ध्वजा के सन्मुख यह स्वान

बैठ्यो हतो। तातें मेरे चरन–स्पर्स के निमित्त इतनो यत्न कियो। और इतनो मार खायो। तब वे वैष्णव इतनो अपराध कौ बचन सुनि कै सिक्षा मानत भए। और कहन लागे जो–भाई ! आपुन ऐसें वैष्णव कों ऐसो मार्यो ? अनजाने भई सो बुरी भई। परि आपुन तो बिचार कियो हतो, जो–यह श्रीगुसांईजी कों छुवेगो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपुन यह बात उन वैष्णवन के मन की जानी। तब श्रीगुसांईजी ने उन वैष्णवन सों कह्यो, जो–तुम अपुने मन में चिंता–कलेस मति करो। यह तो जो कछू भयो है सो तो ईच्छा तें भयो है। सो यह इतनो मार खायो है, सो तो अपराध कौ दंड भयो है। और कह्यो, जो–याकों पूर्व जन्म में कोऊ वैष्णव श्रीनाथजी के दरसन की पूछतो, सो यह वाकों तामस करि कै उत्तर देतो। या अपराध तें यह इतनो मार खायो है। परि अब याकों कछू बाधक रह्यो नाहीं है। सो अब यह श्रीगोवर्द्धननाथजी के चरनारविंद में लीन भयो। याही तें वैष्णव कों बिचारि कै बोलनो। जैसे उज्ज्वल वस्त्र होंइ सो तुरत ही दाग लागत हैं और मलीन कों दाग नाहीं है। ऐसें आपने वैष्णव प्रति कह्यो।

सो ऊह रूपा पोरिया श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपा पात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥ १६६ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक चूहडा हतो, सो श्रीगोवर्द्धन में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'बन–रानी' है। ये 'कुसुम' बन में

रहति हैं। सो ये पुलिंदिनी के यूथ में हें। ये 'रसात्मिका' तें प्रगटी हैं, तातें उन कै भावरूप हैं।

सो एक समै श्रीठाकुरजी आप गाँइ चराबन कों सखान सहित बन में पधारे है। सो एक गाँई टोला में सों बिछुटी। सो कुसुम बन में गई। सो श्रीठाकुरजी ने जानी। तब सखान कों कहे, जो–तुम यहां गाँइन कों देखत रहियो। मैं अब ही वा गाँइ कों ले कै आवत हूं। यह कहि आप तो कुसुम बन में पधारे। तहां बनरानी कों श्रीठाकुरजी के दरसन भए। ता समें 'बन–रानी' ने बिनती कीनी, जो–महाराज! मैं आप के लिये बोहोत दिनन तें या बन कौ सेवन करति हूं। सो आज आप एकांत में मोको मिले हो। तातें आप ये बन के सुंदर फल–फलादि आरोगिए। और मेरो मनोरथ पूरन कीजिए। तब श्रीठाकुरजी कहे, जो– मोकों अवेर होइगी तो यहां सब सखा आवेंगे, ढूंढन कों। तातें तू मोकों रोके मति। और 'श्यामलाजी' हूं याही बन में हैं। तातें वे जाने तो हू ठीक नाहीं। या प्रकार श्रीठाकुरजी बनरानी कों समझाय कहे। परि 'बन–रानी' हठ परी। कह्यो जो महाराज! ये वन के सुंदर फल आरोगिए और मेरो मनोरथ पूरन कीजिए। ऐसो समय फेरि कहां मिलेगो? सो श्रीठाकुरजी तो आप भक्तवत्सल हैं। सो नाना भांति के मेवा बनरानी ल्याई सो बोहोत प्रसन्नतापूर्वक हास्य–विनोद सों आरोगे। पाछें आप वनरानी की कुंज में पधारे। सो बोहोत भांतिन सों बनरानी कों सुख दिये। सो बात एक सखी ने देखी। सो उह स्यामलाजी सों जाँइ कही। तब स्यामलाजी उहां पधारी। सो देखे तो बनरानी श्रीठाकुरजी के साथ एकांत में बैठी हास्य–विनोद करति हैं। सो स्यामलाजी नेक दूरि ओट में ठाढ़े रहे। सो ताही समै श्रीठाकुरजी की दृष्टि उन पर परी। तब श्रीठाकुरजी बनरानी सों कहे, जो–हों तो जात हूं। श्रीस्यामलाजी यहां पधारी हैं। तातें तू सावधान व्है। पाछें श्रीठाकुरजी आप पाछिले द्वार व्हैं बन कों पधारे। और बनरानी वस्त्र–सिंगार सँवारि उठी। तब स्यामलाजी उहां पधारी। पाछें बनरानी सों कहे, जो–श्रीठाकुरजी तेरे उहां कबके पधारे हे? तब बनरानी कहे, जो यहां तो श्रीठाकुरजी पधारे हे नाहीं। तु कहा कहत हो! तब बनरानी सों स्यामलाजी कहे, जो–झूठ काहे कों बोलत है। मैने अपनी आंखिन तें देखे हैं। तब बनरानी कहे, जो–वे तो गाँई ढूंढ़िवे कों बन में आये हते सो गाँई ढूंढ़ि के ताही समै पधारे। तब स्यामलाजी कहे, जो–तू मो आगें असत्य बोलति हैं। तातें भूतल पर गिरि। हीनयोनि कों प्राप्त होंऊ।

सो ये गोवर्द्धन में एक चूहडा के जन्म्यो। सो ये बरस दस कौ भयो। तब एक समै ये गोवर्द्धन की गेल में जात हुतो। सो उहां एक सर्पने वाकों काट्यो। सो वह गेलही में गिर्यो। सो ताही समै श्रीगुसांईजी आप घोड़ा पै बिराजे श्रीगोकुल तें पधार रहे हे। सो श्रीगुसांईजी गेल बीच में या लरिका कों देखि खवास सों पूछे, जो–यह कौन है? गेल में कैसे पर्यो है? तब खवास ने पास जाइ देख्यो। पाछें कह्यो, जो–महाराज! काहू कौ लरिका है। तो कोई प्रानी काट्यो दीसत है, तातें ये मर्यो पर्यो है। तब श्रीगुसांईजी आप घोड़ा तें नीचे उतरि वाके पास पधारे। पाछें वाके ऊपर वेदमंत्र पढ़ि जल छिरके। तब वह लरिका जागृत भयो। तब

श्रीगुसांईजी पूछे, जो–तू कौन है ? तब इन कह्यो, जो–महाराज ? मैं चूहडा हूं। सो मोकों स्यॉंपने काट्यो हो। सो आप कृपा करि जिवायो। अब मैं आप के सरनि आयो हूं। तब श्रीगुसांईजी वाकों दैवीजीव जानि अष्टाक्षर मंत्र सुनाइ सेवक किये। पाछें वासों कह्यो, जो–तू यह मंत्र कौ नित्य जप करियो। ता पाछें श्रीगुसांईजी तो आप गोपालपुर पधारे। पाछें वह लरिका अपने घर आयो। परि काहू सों कह्यो नाहीं। पाछें श्रीगुसांईजी कौ नित्य ध्यान करे और अष्टाक्षर मंत्र कौ जप करे। या प्रकार रहे। और कछू कार्य करे नाहीं। ऐसें करत कछूक दिन में माता–पिता मरे। तब यह खेती करन लाग्यो। सो श्रीगुसांईजी की कृपातें श्रीनाथजी वाकों दरसन देन लागे। वा सों बातें करन लागे।

वार्ता प्रसंग–१

सो उह चूहडा श्रीगोवर्द्धन में रहतो। सो वह श्रीगुसांईजी कौ सेवक हुतो। सो वा चूहडा की ऐसी लगन हती। सो उह चूहडा श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन बिना रहि सकत नाहीं हतो। सो वा चूहडा कों श्रीगोवर्द्धननाथजी बाहिर पधारि कै दरसन देते। सो एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी वाके पास ठाढ़े श्रीगुसांईजी ने देखे। सो वा चूहडा सों श्रीगोवर्द्धननाथजी वार्ता करत देखे। ता पाछें चूहडा सों श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी तोसों कहा बात करत हते ? तब चूहडा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज की कृपा तें नित्य मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देत हैं। और जो–कछू बन में खेलिवे की, गायन की, ग्वालन की वार्ता भई होंई सो वार्ता करत हैं। पाछें वा चूहडा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! आपकी कृपा तें मोकों दरसन दिये बिना श्रीगोवर्द्धननाथजी आप रहि सकत नाहीं। और काहू दिन भगवद् ईच्छा तें दरसन न होंई तो ता दिन मैं अन्न–जल हू नाहीं लेत हों। ऐसें भूखो रहत हों। ऐसें मेरे नित्य नेम है। ता पाछें दूसरे दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु बाहिर

पधारि कै मोकों दरसन देत हैं। तब हो अन्न–जल लेत हों।

तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुख तें कहे, जो–राजभोग के समय माला बोले तब मंदिर के किवाड़–दरवाजे पर बैठियो। तब सबन तें पहले दरसन करवाय देंगे। ता पाछें श्रीगुसांईजी झापटिया कों बुलाय कै आज्ञा दिये, जो–या चूहडा कों सबन तें पहिले दरसन करवाय दियो करो। तब वाने कही, जो–महाराज ! जो–आज्ञा। ता पाछें ऐसी कृपा वा चूहडा के ऊपर करते। सो नित्य श्रीठाकुरजी की कृपा तें माला के समय नित्य दरसन कों श्रीगिरिराज ऊपर जातो। सो मंदिर के द्वार सन्मुख नेक दूरि, न्हाय कै सुद्ध वस्त्र पहरि बैठतो। पाछें सबन तें पहिले झापटिया याकों बुलाय कै दरसन करवाय देतो। सो उह श्रीनाथजी के दरसन नित्य नेम सों करतो। सो ऐसें कितनेक दिन भए। सो तब कबहूक एक समै भगवद् इच्छा सों कामकाज में अटक रह्यो। ता पाछें वह आय कै देख्यो तो तारा मंगल भयो है। और कोऊ वैष्णव तहां नाहीं है। सो उह मंदिर के पिछवारे आय कै पर्‍यो रह्यो। सो बोहोत ही आतुर भयो। और ज्वर होंइ आयो। सो महा कष्ट भयो। तब श्रीगो–वर्द्धननाथजी आपु सिंघासन तें उठि कै चले। सो पिछली ओर एक मोखा करि कै वा चूहडा कौ नाम ले पुकारे। सो उह सब्द सुनत मात्र ही उठि ठाढ़ो भयो। वा दिन मोखा में तें श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ दरसन भयो। ता पाछें श्रीनाथजी ने वा चूहडा कों दोई लडुवा दिए। और श्रीगोवर्द्धननाथजी ने वासों श्रीमुख सों कहे, जो–ये हमारे प्रसादी लडुवा तू खाँय ले। तब

वा चूहडा ने एक लडुवा तो खायो। ता पाछें एक लडुवा चादर में बांधि कै अपने घर आयो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ उत्थापन कौ समै भयो। तब संखनाद भये। ता पाछें श्रीगोवर्द्धनाथजी के मुखिया भीतरिया स्नान करि कै श्रीगिरिराज ऊपर मंदिर में गए। सो उहां देखे तो पिछली ओर मोखा है। तब सब महा सोच करन लागे। ता पाछें भीतरिया ने सब वस्तु श्रीगोवर्द्धननाथजी की देखी। सो सब वस्तु श्री-गोवर्द्धननाथजी की ज्यों के त्यों हैं। तब ए समाचार भीतरिया ने श्रीगुसांईजी सों कहे। जो–महाराजाधिराज! आज श्रीगोव-र्द्धननाथजी के मंदिर के पिछवारे काहू ने मोखा कीनो है। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी आप महा खेद करन लागे। सो यह बात चूहडा ने सुनी। सो श्रीगुसांईजी की बैठक के द्वारे आइ कै चूहडा ने श्रीगुसाईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! इन सबन कों दूरि करो तो एक बात कहनी है। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–कहो! कहा कहत है? तब वा चूहडा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! आज अनमने से क्यों हो? तब श्रीगुसांईजी कह्यो, जो आज श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर के पिछवारे काहू ने मोखा किनो है। तातें हम तो उदास है। तब श्रीगुसांईजी सों वा चूहडा ने बिनती करी, जो– महाराजाधिराज! ऐसी बातन कों आप भले उदास बैठे हो? तुम अपने लरिका कौ सुभाव जानत नाहीं? जो–आज काहू कार्यार्थ मैं 'गोवर्द्धन' गयो हतो। ता पाछें द्वार पै आय के देख्यो तो तारा–मंगल है। पाछें मंदिर के पिछवारे पर्‍यो रह्यो। सो मोकों विरह–ताप

बोहोत भयो। सो ताही समै श्रीगोवर्द्धननाथजी हाथ में लकुटिया ले कै मोखा कियो। पाछें मेरो नाम ले कै पुकारे। सो मैं अरबराय कै उठि बैठ्यो। और अपने मन में बिचार कियो, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी पुकारत हैं। तब फेरि कह्यो, तू दरसन करि। तब मैंने दरसन किये। और श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीमुख तें कहे, जो–लडुवा तू खाय ले। सो एक लडुवा तो मैनें खायो है। और एक मेरी चादर में बंध्यो है। ता पाछें वा चूहडा ने कह्यो, जो–महाराज ! आप ऐसी बात में भले उदास बैठे हो। तब श्रीगुसांईजी आप ऐसें बचन सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए। तब श्रीगुसांईजी पोरिया, झापटिया कों बुलाय कै कहे, जो–यह चूहड़ा कबहू दरसन बिनु रहि न जाँइ। और चूहडा आठों बेर जब आवे तू दरसन करवाय दियो करो। सो सबन तें पहिले वा चूहडा कों दरसन करवाय देते। ता पाछें दूसरे दिन कारीगर बुलाय कै वा मोखा कों मूंदन लागे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा किये, जो–यह मोखा तुम मति मूंदो। ऐसेही रहन देउ। ता पाछें वेसेही रहन दियो। सो अब हू श्रीगिरिराज पर मोखा है।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो–जाकों प्रेमभक्ति स्फूर्त भई होंई ताके विषे ज्ञाति–मर्यादा तथा और हू मर्यादा रहत नाहीं। सो जीव कों श्रीगुसांईजी कौ दृढ़ आश्रय होंई तब ऐसो प्रेम स्फुर्त होंई। तातें वैष्णव कों श्रीगुसांईजी कौ दृढ़ आश्रय कर्तव्य है।

सो वह चूहडा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। सो वाकों श्रीगुसांईजी की कृपादृष्टि तें प्रेम स्फुर्त भयो हतो। तातें श्रीगुसांईजी वासों मर्यादा राखे नाहीं। सो इनकी वार्ता कहां ताई कहिये। वार्ता ॥ १६७ ॥

अब श्रीगुसांईजी के सेवक स्त्री–पुरुष राजनगर में रहते, जाके पैसा की गिनती में पांच रत्न निकसे, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में 'पीतवर्णी', 'कुंकुम्वर्णी' दोऊन के नाम हैं। सो पीतवर्णी तो यहां पुरुष भयो और कुंकुम्वर्णी स्त्री भई। ये दोऊ 'रसात्मिका' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समय श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे हते। तब भाइला कोठारी के घर उतरे हते। तब इन स्त्री–पुरुषन ने श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब इन ने बिनती करी, जो–महाराजाधिराज हमकों कृपा करि कै नाम दीजिए। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–तुम स्नान करि आवो। तब वे स्नान करि आए। ता पाछें हाथ जोरि कै बिनती करी, जो–महाराज ! कृपा करि कै सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी आपुने कृपा करि कै नाम दोऊन कों सुनायो। पाछें एक ब्रत करवाय ब्रह्मसंबंध करवायो। तब इन स्त्री पुरुष ने बिनती करी, जो–महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्री- गुसांईजी ने आज्ञा करी, जो–तुम दोऊ भगवत्सेवा करो। तब इन कही, जो–महाराज ! कृपा करि कै हमारे माथे सेवा पधराइ दीजिए। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीठाकुरजी की सेवा पधराई। पाछें सब सेवा की रीति भांति सिखाई। पाछें आज्ञा कीनी, जो–नित्य एक वैष्णव कों प्रसाद लिवाय कै प्रसाद लीजो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु तो श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे। तब वे स्त्री–पुरुष श्रीठाकुरजी की सेवा भली भांति सों करन लागे। और नित्य एक वैष्णव कों महाप्रसाद लिवाय कै आप महाप्रसाद लेते। सो कितनेक दिन में श्रीठाकुरजी

सानुभावता जतावन लागे। जो चहिए सो माँगि लेते। और बहोत कृपा करते।

सो ऐसें करत कितनेक दिन बीते। पाछें उह वैष्णव तो परदेस गयो। सो वाने अपनी स्त्री सों कही, जो–जा भांति नित्य एक वैष्णव कों महाप्रसाद लिवावत हैं ता भांति लिवाय कै पाछें महाप्रसाद लीजियो। और गिनती राखियो। तब कह्यो, जो–ऐसेंही करूंगी। तब उह वैष्णव तो परदेस गयो। तब वह स्त्री सों कही तैसेंही नित्य वह एक वैष्णव कों महाप्रसाद लिवावे। और ऐसें नित्यही ता भांति एक पैसा धरत जाँइ। तब ऐसें करत बरस दिन में वैष्णव आयो। तब अपनी स्त्रीसों कही, जो–तैंनें कितने वैष्णव कों महाप्रसाद लिवायो ? सो मोकों उह गिनती करवाय। तब स्त्रीने कही, जो–पैसा गिनो। तब वाके पति ने पैसा गिने। सो तिनसें साठ निकसे। और पांच रत्न निकसे। तब पुरुष ने पूछ्यो, जो–यह कहा ? यह रत्न कैसे हैं ? तब स्त्रीने पति सों कह्यो, जो–मैनें तो पैसा डारे हैं ? पाछें सब ले कै वह स्त्री पुरुष श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी के पास आए। तब श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! यह कहा कारन है ? जो–स्त्री तो नित्य एक पैसा धरती और एक वैष्णव कों महाप्रसाद लिवावती। और इन में तो पांच रत्न निकसे हैं। ताकौ कारन कहां है ? तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो–ऐ पांच भगवदीय तादृसी आए है। पाछें श्रीगुसांईजी आप कहे, जो–वैष्णव कों यही चहिए।

भावप्रकाश–सो या वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो–नित्य एक वैष्णव कों महाप्रसाद

लिवाय कै पाछें आप महाप्रसाद लेई। सो वैष्णव कौ यही धर्म है, जो–वैष्णव कों महाप्रसाद लिवाये पाछें आप लेई तो मारग कौ सिद्धांत हृदयारूढ होंई। प्रभुन के ऊपर रूचि होंइ। तब प्रभुन की भली भांति सों सेवा होंई।

सो वे स्त्री–पुरुष श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ १६८ ॥

द्वितीय खण्ड समाप्त